



श्रीसामवेदस्य

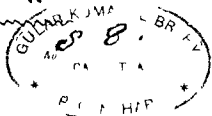
संहिता

श्रीभार्गवज्वालाप्रसादशर्मा रचितब्रह्मभाष्यसहितशाधिदेवाध्यात्मार्थसमन्विता

रसवेदाङ्कचन्द्रसङ्घान्विते विक्रमादित्यसम्बलसरेकन्याद्वीपान्तर्गताय्यावर्तदेशे आगराख्यनगरे सत्यप्रकाशयन्त्रालये मुद्रयितुमारब्धा

व्या

52143
SWA I



मार्चसन् १९६० ई०

सामभाष्य भूमिका

ॐ श्री गणेशाय नमो नमः •

महानारायणं देवं सर्वशक्तिमयं प्रभुम् ।
देवं जगन्नाथं प्रणमामि मुहुर्मुहुः १ ॥

श्री गणेशाय नमो नमः मैं सर्वशक्तिमान आदिदेव जगन्नाथ प्रभु
महानारायण देवता को बारं बार प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

सच्चिदानन्दरूपस्य तस्य सर्वगतस्य वै वेदोऽपी
त्यं कथयति प्रभावं परमात्मनः २

वेद भी उस सच्चिदानन्द रूप सर्वगत परमात्मा के प्रभाव को इस प्र-
कार कहता है २

श्रीणि पैदा विचै क्रमे विष्णु गौपी अदाभ्यः शैतो
धर्म्माणि धारयन् ३

अविनाशी श्री गोपाल महा विष्णु ने अपने चतुर्थ भाग से ब्रह्माण्ड
को धारण करते हुए विपाद विभूति को व्याप्त किया ॥ ३ ॥

तस्य पादे प्रादुरभूद्ब्रह्माण्डं रूपमद्भुतम् एजनि
तस्य शक्त्या तद्देहस्तस्यैव विष्णुतम् ४

उसके चतुर्थ भाग में अद्भुत रूप वाला ब्रह्माण्ड प्रकट हुआ और उसी की
शक्ति से चेष्टा करता है और वह उसी का शरीर विख्यात है ४

सर्वभूतनिकेतन्तं वन्धमोक्षपरायणाम् कर्मो
पासनज्ञानानामालयं देव रूपिणाम् ५ नमा
मि परया भक्त्या दातारं सर्वसम्पदाम् वेदोपी
त्यं कथयति स्वरूपं जगदात्मनः ६

सब प्राणियों के स्थान बंध मोक्ष के परायण कर्म उपासना ज्ञान के



आलय सब संपत्तियों के दाता देव रूप को परा भक्ति से नमस्कार कर
रता हूँ वेद भी उस जगदात्मा के स्वरूप को इस प्रकार कहता है ५.६

अभि विष्टुष्टु चषणा वयो धामैर्द्रोषिणो मवाव
शन्ते वाणीः वनो वसनेनो वरुणानि सिन्धु विरे
त्नर्धा दयते वायो णि ७

भूमि अन्तरिक्ष स्वर्ग नाम एए वाले षष्टि कर्त्री अन्नधारक विराट् देह
में वसने वाले पुरुष को वेद वाणी चाहती हैं वह रत्नधारक पुरुष का
म्यधनों को स्तोताओं के लिये देता है जैसे वरुण और समुद्र जलों
को धारण करते रत्नों को देते हैं ७

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सी मतेः सुरुचो
वेन श्रवः सवुध्या उपमा अस्य विष्टोः सते श्र
योनि मसत श्रविवः ८ ॥

पहिले सृष्टि की आदि में प्रादुर्भूत सूर्य रूप ब्रह्म ने ब्रह्माण्ड के मध्य
इन शोभन लोकों को अपने प्रकाश से विवृत किया वह कामनीय
मेधावी सूर्यश्रवकाश वान और इस जगत की विविधिरूप दिशाओं
को तथा मूर्त्त घट पट आदि और अमूर्त्त वायु आदि के प्रभव ब्रह्माण्ड
को प्रकाशित करता है ८

महानारायणो देवो भूतानां रक्षणाय वै ब्रह्म
विष्णु महेशानां रूपैः प्रादुर्भव ह ९

महानारायण देवता प्राणियों की रक्षा के लिये ब्रह्मा विष्णु महेश
रूप से प्रकट हुआ ९ -

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक

आसीत् सदा धार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवा
यहा विषा विधेम १०

प्रपंच की उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्म ज्योति रूप गर्भ वाले ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए अकेले उत्पन्न होते ही सब जगत के स्वामी हुए वे इस पृथ्वी स्वर्ग को धारण करते हैं उस प्रजापति देवता के लिये हम हवि देते हैं।

विषाः कस्मीणि पश्यते यतो ब्रतानि पस्पशे
इन्द्रस्य युज्यः सखो ११

श्रीविष्णु के स्तुति पालन संहार आदि चरितों को देखो जिस कारण यजमान के संयोग योग्य सखाने यज्ञ कर्मों को भक्तों की मोक्ष के लिये निर्माणा किया ११

याने रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी तयान
स्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचा कशीहि १२

हे कैलास वासी रुद्र जो आपकी मंगल रूप सौम्य पुण्य फलदाता शक्ति है उस परमानन्द रूप देहा कारके द्वारा हमको देखो १२

उत्पत्तिं पालनं नाशं कर्त्तारो जगतश्च ये तेषां

पाद रजं स्पृष्ट्वा प्रणामामि सुहृमुहुः १३

जो विदेव जगत की उत्पत्ति पालन नाश को करते हैं उनकी पाद रज को स्पर्श करके वारम्बार नमस्कार करता हूँ १३-

वैवस्वतस्य नौकायः समुद्रे समधारयत् वेदोद्धा

रञ्च कृतवान्तस्मै मत्स्यात्मने नमः १४

जिसने वैवस्वत मनु की नाव को समुद्र में धारण किया और वेदों का उद्धार किया उस मत्स्य रूप के लिये नमस्कार १४-

स्मिन्मतेन गावः परीणासङ्कुण्णुते तिग्म षट्कोटिः
वा हारिर्दृष्टेनक्तमृजः ॥ २० ॥

वह वाराह जी विष्णु की गति को अपनी देह में युक्त करते हैं इन्द्रियां उस माया रूपसे जीडा करने वाले को नहीं जान सकतीं वह तीक्ष्ण षट्ग वाला पृथिवी को बहु पदार्थ बनी करता है दिव अर्थात् देवसं चार काल में विष्णु रूप दीखता है और रात्रि अर्थात् असुर संचार काल में वराह रूप दीखता है ॥ २० ॥

रक्षाञ्च कारभक्तस्य प्रहादस्य स्वरूपतः हि
रायकाशिपुं हत्वा तस्मै नृहरये नमः २१

अपने रूपसे हिरण्यकाशिपु को मारकर महालादभक्त की रक्षा की उस नृसिंह जी के लिये नमस्कार ॥ २१ ॥

श्रौत्वा सोमस्य गल्दयो सदा याचन्नेहं ज्ञया ।
भूर्गिां स्मृगन् सवने पुचुक्रुधे कर्द शाने नया
चिषत २२

हे परमेश्वर वराह और नृसिंह रूप तुमको योग यज्ञों में आत्म प्रति- विंव सम्बंधी महावाक के द्वारा सदा याचना करता में क्रोधित हुआ जिस कारण क्षय शील बुद्धि से युक्त कामने तुम ईश्वर को याचना नहीं किया ॥ २२ ॥

वामनं रूपमास्थाय त्रैलोक्यं विक्रमैः स्वकैः वले
गृहीतं तं वध्वा तस्मै ब्रह्मात्मने नमः २३

वामन रूप होकर बलि को बांधकर अपने तीन पैड से तीनों लोक लिये उस ब्राह्मण रूप के लिये नमस्कार ॥ २३ ॥

इदं विष्णुं विचक्रमे त्रैधा निदधे पदम् समूढम्
स्य पाथं सुतैः २४

शमरेश त्रिविक्रमावतारवामन जी इस विष्वको उलंघन करते हैं
तीन पग रखते हैं एक भूमि पर दूसरा अन्नरिक्ष में तीसरा स्वर्ग में इ-
सका चरन चतुर्दश भुवन मय ब्रह्मांड में सम्यक् अन्नभूत होता है २४

सहस्रबाहुं हत्वा यो देवाहृतो महाबलः वीर्यं
प्रकाशयामास तस्मै रामात्मने नमः २५

देवताओं से बुलाये हुए जिस महाबली ने सहस्रबाहु को मारकर
अपने बलको प्रकाशित किया उस परशुराम रूपके लिये नमस्कार

शोषिवन् कैद्रुवः सुतमिन्दुः सहस्रबाहुर्तत्रो
दादिष्ट पाथं स्यम् २५

परशुराम रूप परमेश्वर ने सहस्रबाहु के लिये क्रोधको धारण कि-
या उस समय उनका पराक्रम प्रदीप्त हुआ २६-

भद्रया सहितो भद्रो रावणं लोकरावणम् । स्व
लंघात यामास तस्मै रामात्मने नमः २७

श्री सीता सहित रामचन्द्र जी ने लोकके रुलाने वाले रावण को
सेना सहित मारा उन श्री रामचन्द्र जी के लिये नमस्कार २७

भद्रो भद्रयो संचेमानं शो गौत स्व सारञ्जौरो
संभ्यात् पञ्चात् सुप्रकेतं द्युभि रग्नि विनिष्ठे न्तु
षोडशैर्वर्णै रग्नि रग्ने मस्थ्यात् २८

श्री रामचन्द्र जी श्री सीता जी के साथ प्रकट होते हैं तब रावण अर-
धियों के रुधिरसे उत्पन्न होने के कारण अपनी वहन सीता को हर

ताहें फिर अन्त काल पर क्रोध से प्रज्वलित रावण सन्मुख हो कर कुंभंकरण आदि के सुद्धज्ञानी जीवात्माओं के साथ श्री राम की सामिप्य को प्राप्त करता है ॥ २८ ॥

भूभारहरणा यैव प्रादुर्भूतो महाप्रभुः । देवारी

न्नाशया मास तस्मै कृष्णात्मने नमः २९

महाप्रभुने भूभारहरण के लिये असुरों का नाश किया उस कृष्णरूप के लिये नमस्कार २९-

इ^३नो^२ र^३ज^३न्^३ र^३तिः^३ सा^३मि^३द्धो^३ र^३द्रो^३द^३सो^३य^३ सु^३षु^३मा^३थं^३
 अ^३दा^३श^३ि चि^३कि^३द्वि^३ भा^३ति^३ भा^३सो^३ वृ^३ह^३ता^३ सि^३क्रो^३मे^३ति^३
 रु^३श^३ती^३म^३ पौ^३ज^३न् ३०

हे दीप्यमान ब्रह्माग्ने तुम अवतार लेते राग भून्य ईश्वर कृष्ण रूप होते हो वह आपका रूप कुंभंकाभयंकर औरज्ञानी पिता के लिये सुन्दर दीखता है सर्वस्तुम वैष्णव तेज से प्रकाश करते हो फिर वैष्णव तेज को अन्तर्धान करते कृष्णरूप को प्राप्त करते हो ३०

कृ^३ष्णा^३ य^३दे^३नी^३ मा^३भि^३व^३प^३सा^३ भू^३ज्ज^३न^३ य^३न्यो^३षां^३ वृ^३ह^३तः^३
 पि^३तु^३ज्ज^३ाम् । ऊ^३र्द्ध^३म्भानु^३थं^३ सूर्य^३स्य^३स्त^३भा^३यो^३न्दि^३
 वी^३व^३सु^३भि^३र^३र^३ति^३ वि^३भा^३ति ३१

जब महानारायण की शक्ति महामाया को नन्द गृह में प्रगट करते और जन्म शील गमन स्वभाव रूपावर्णादेह रूप प्रकृति को अपने तेज से प्राप्त करते हो तब मानस सूर्य के आत्मा को ऊंचा धारण करते अर्थात् योग निष्ठ होते धन देहाभिमान से भून्य होते नाना रूप से प्रकाश करते हो अर्थात् भक्तों पर अनुग्रह दृष्टि से और शत्रुओं पर क्रोध दृष्टि से ३१

सामभाष्यभूमिका

योमानु रूपदेशाय कापिलं रूपमास्थितः शास्त्रं
प्रवर्तयामास तस्मै योगात्मने नमः ३२

जिसने माना के उपदेशार्थ कापिल रूप धारण किया और शास्त्र बना
या उस कापिल रूप के लिये नमस्कार ३२

दशा नामैकं कापिलं समानं तं हि न्वन्ति कर्तव्यं
पार्य्याय गर्भं माता सुधितं वृक्षणा स्वर्वेनंतं
तुषयन्ती विभर्ति ३३

दशा वतारों के समान अद्वैत कापिल जी को परिसमाप्ति योग्य ब्रह्मयज्ञ के
लिये प्रेरणा करते हैं और माता जी प्रजापति द्वारा गर्भ में स्थापित निवास
वाहने वाले बाल को अपना उपदेशक जानकर प्रसन्न होती धारण करती
है ॥ ३३ ॥

अशक्तान्वेदज्ञाने तान्मत्वा देवहिताय वै देवा
रीन्वञ्च यामास तस्मै बुद्धात्मने नमः ३४

असुरों को वेदज्ञान में अपसमर्थ जानकर देवताओं के हितार्थ उन असु
रों को रगा उस बुद्ध रूप के लिये नमस्कार ३४

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमः
यजुः ३५

असुरों के बंचक दैत्याश भूत मनुष्यों के बंचक बुध रूप के लिये नमस्कार दे
तापिनरों को नदेकर स्वयं भक्षण करने वाले जो मनुष्य हैं उनके स्वामी को
नमस्कार ॥ ३५ ॥

युगान्ते कल्पाकारे देवारीणां भवे सति आगमि
ष्यति भू भुङ्क्ष्ये तस्मै कल्कात्मने नमः ३६

११
सामभाष्यभूमिका

कलुषरूपयुगान्त में असुरों का जन्म होने पर भूभृद्धि के लिये आवेग
उसकालिकरूपके लिये नमस्कार ३६

निषद्भिः एोककुभायस्तेनानांपतयेनमोनमः यजुः ३७
खड्गधारी महद्गर्ण और युगान्त परस्तेनभावप्राप्तभक्तों के स्वामी त्रिष्क-
लंकरूपके लिये नमस्कार ३७

याविद्यासर्वविद्यानांमहानिद्राचदेहिनाम् ।

यास्वयंमुखपद्मेनवेदेकथयतीदृशम् ३८

सर्वविद्याओं में जो विद्या रूप है और देहधारियों में महा निद्रा रूप है और
जो आपवेद में कमल मुखसे ऐसा कहती है ३८

अहमेवस्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुतमानु
षेभिः यं कामयेतंतमुग्रं कृणोमि तब्रह्माण्तमृ
षितंसुमेधाम् ३९

में ही देवता मनुष्यों से सेवित वेद को स्वयं कहती हूं जिसको चाहती हूं उ-
सको सबसे अधिक करती हूं उसको ब्रह्मा करती हूं उसको ऋषि करती
हूं उसको ऋषि बुद्धि वाला करती हूं ३९

अहमेववातं द्वा प्रवास्यारभमाणामुर्वनान्निवि
ष्वा परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती माहिना सं
वभूव ४०

सर्वभुवनों को उत्पन्न करती में ही वायु के समान चलती हूं स्वर्ग से परे और इस
पृथिवी से परे जो महा पुरुष है उतनी ही और उससे संयुक्त में माहिमा से ना-
नारूप वाली हुई हूं ४०

सर्वाधारां सर्वबीजां सर्वकारणाकारणाम् प्राञ्ज

लिः शुद्धभावेनतां देवीं प्रणतोऽस्म्यहम् ४१

वह्नां जली में शुद्ध भाव से उस सर्वाधार सर्वबीज सर्वकारणों की कार
णदेवी को नमस्कार करता हूँ ४१

शिवं भृगुञ्च च्यवनं भार्गवं राममेव च पञ्चमीं

कुलदेवीञ्च सद्गत्या प्रणामाम्यहम् ४२

में सद्गति सहित शिव भृगु च्यवन परशुराम और पांचवीं कुल देवी को
प्रणाम करता हूँ ४२

द्वावर्थौ ब्रह्मणाः ख्यातौ ब्राह्मणेषु एथ क एथ क

आध्यात्मञ्चाधिदैवञ्च भोगमोक्षप्रदायकौ ४३

ब्राह्मणों में एथक २ अध्यात्म और अधिदैव नाम दो अर्थ कहे हैं जो कि
भोगमोक्षके दाता हैं ४३ ॥

यजुर्वेदस्य द्वावर्थौ ब्रह्मभाष्येरुतौ मया अधु

ना सामवेदस्य द्वावर्थौ कथयाम्यहम् ४४

मैंने ब्रह्मभाष्य में यजुर्वेदके दोनों अर्थ किये अब मैं सामवेदके दोनों
अर्थ कहता हूँ ॥ ४४ ॥

नारिन् विद्यान बुद्धिर्मै समर्थं भाष्य कर्म्मरीति

देवे नैवोपदिष्टो हं लिखामि प्रीति पूर्वकम् ४५

मेरी विद्या और बुद्धि भाष्यकर्म में समर्थ नहीं है मैं देवता से उपदेश
किया हुआ प्रीति पूर्वक लिखता हूँ ४५

ये विप्रा गुण सम्पन्ना ब्रह्मविद्या परायणाः तेऽ

मन्त्व परार्थं मे यो भवेदत्र लेखने ४६

जो ब्राह्मण गुण सम्पन्न और ब्रह्मविद्याके परायण हैं वे मेरे उस अप-

ग्रन्थको समाकरो जो यहां लिखने में होवै ॥ ४६ ॥

अथविनियोगसिद्धान्तः

यैर्महात्माभिर्मन्त्रार्थीज्ञानायद्वा मंत्रजपेन सिद्धिर्लब्धा त एव तेषां मंत्राणां मृषयश्चासन् । ऋते गुरोपदेशान्मन्त्रसिद्धिर्न लभ्यते विनियोगे ऋषितर्पणेन तन्सिद्धिः सुलभा तस्मात् विनियोगे गुरुतर्पणा यर्षिसंयोगः । पाठे जपे वा यच्छब्दोच्चारणमशुद्धञ्जातं तद्दोषपरिहारायैव छन्दोदेवस्य तर्पणमावश्यकम् । पाठे जपे वा मनोस्वेष्टदेवध्यानादन्यत्र गच्छति तद्दोषशान्तये देवतर्पणमावश्यकम् । तस्माद्देवविनियोगः कर्त्तव्यः । येषु मन्त्रेषु आध्यात्मिकोऽर्थः कथ्यते तेषु जपपाठफलस्याभावात्केवलमननप्रधानत्वाच्च विनियोगस्य प्रयोजनं नास्तीति ॥

अथविनियोगसिद्धान्तः

जिन महात्माओं ने मन्त्रार्थको जाना अथवा मंत्रजपसे सिद्धि प्राप्ति की वेही उन मंत्रों के ऋषिद्वारा गुरु उपदेश के मंत्रसिद्धि प्राप्त नहीं होती है विनियोगमें ऋषितर्पण से वह सिद्धि सुलभ है उस कारण विनियोगमें गुरुतर्पणके लिये ऋषि का संयोग है । पाठ वा जपमें जो शब्दोच्चारण अशुद्ध हुआ उस दोषके निवारणार्थ छन्ददेवता का तर्पण आवश्यक है । पाठ वा जपमें मन अपने इष्टदेवके ध्यानसे अन्यत्र जाता है उस दोषकी शान्तिके लिये देवतर्पण आवश्यक है उसी कारण विनियोग कर्त्तव्य है । जिन मंत्रोंमें आध्यात्मिक अर्थ कहा जाता है उनमें जप

सामभार्यभूमिका

पाठ के अभाव और केवल मनन प्रधानता से विनियोग का प्रयोजन नहीं है ॥

अथ स्वरसिद्धान्तः

स्वरयोगैर्नानार्थाः सम्भवन्ति किञ्च पाठे जपे वा स्वरस्या शुद्ध्या ऽर्थस्याप्य शुद्धिर्जायते तस्मादाधिदैवयज्ञे जपे वा फलाप्तये स्वरशुद्ध्या मन्त्रोच्चारणं कर्तव्यमेषु मंत्रेषु ऋतिप्रमाणेनाध्यात्मिकार्याः कथ्यन्ते तेषु क्वचित् स्वराधिदैवार्थपाठाद्विलक्षणा भवन्ति तत्र जप पाठ फलाभावात्केवलमननप्रधानत्वं ज्ञातव्यं न पाठफलमिति सर्वसिद्धान्तः ॥

अथ स्वरसिद्धान्तः

स्वरोंके योग से नाना प्रकारके अर्थ होते हैं और पाठ वा जप में स्वरकी शुद्धि से अर्थकी भी शुद्धि होती है उस कारण अधिदैवयज्ञ वा जप में फल प्राप्ति के अर्थ स्वरशुद्धिके साथ मन्त्रोच्चारण करना चाहिये । जिन मंत्रों में ऋति प्रमाणा से अध्यात्म अर्थ कहे जाते हैं उनमें स्वर कहीं अधिदैवार्थपाठ से विलक्षणा होते हैं वहां जपपाठ फलके अभावसे केवल मननकी प्रधानता जाननी चाहिये न पाठफल यह सर्वसिद्धान्त है

अथोभयार्थयोः सिद्धान्तः

यथा मनसि महाविष्णोर्ध्यानंतथैवाध्यात्मम्यथा पाषाणादेर्मूर्त्तीनां पूजनंतथैवाधिदैवम् । अधिदैवयज्ञे मन्त्रपठनमेवोचितं नार्थकरणं पाठे हि सिद्धि लाभत्वात् । न मंत्रार्थकरणो सिद्धिस्तस्या सम्भवत्वात् । यथेन्द्रसोमयोरर्थाः ऋति कथिताः सोमो वै राजाय-

ऋः मजापतिः । तस्यैतास्तन्वो या एता देवताः शं० १२ ।
६ । २ । १ इन्द्रो वै सर्वदेवाः शं० १३ । ७ । १ । ४ सर्वहि सोमः
शं० ५ । ५ । ४ । १० प्राणः सोमः शं० ७ । २ । ४ । २ ज्योतिः
सोमः शं० ५ । १ । ५ । २८ तथाग्रिम मंत्रेषु परमेश्वरस्यैव
वर्धः सम्भवतेन सोमेन्द्रयोः

सोमः पवते जनिता मती माञ्जानिता दिवोजानि
नाष्टिव्याः जनिताग्निना सृष्टस्य जनितेन्द्र
स्य जनिता विष्णाः ॥ ५ ॥

अकोत्समुद्रः प्रथमं विधमज्जनं यन्प्रजाभुवनं
स्य गोपाः । वृषा पवित्रे अधिसानो अव्यवृहत्सो
मो वा वृधे स्वानो अद्रिः ॥ ७ ॥

येद्यावे इन्द्रते शते ७ शते भूमौ रुते स्युः । नेत्वा व
ज्रिंसहस्रं ७ सूर्या अनुनेजानमष्टरोदसी ॥ ६ ॥
प्रयो रिरिक्ष अजसा दिवः सदाभ्यस्परिनेत्वा वि
व्याचरे इन्द्र पार्थिव मति विभ्वे ववाक्षिथ । १०

एवमेवान्यदेवानां मन्त्रेष्वपि परमेश्वरस्यै वार्था घटते ।
आधिदैव सम्बन्धि मंत्रेष्वर्थ करणा मनुचितं निष्फलञ्च
यथा श्रुतिः देवाः परोक्ष मर्थ मन्यन्ते परोक्ष कामाहिदे
वास्तथापि पूर्वाचार्याणामिव मया द्वावर्थौ काथितौ य
त्राध्यात्म सम्बन्ध्ये कै वार्था वर्तते तत्रपदै द्वितीयोर्थोऽ
पि ज्ञातुं सुलभ इति विद्वद्विज्ञातव्यम् । सर्वे मन्त्राः परमे
श्वरमेवस्तु वन्ति । देवाऽपि परमेश्वरस्यां शास्तस्मान्म

न्त्राः कल्पवृक्षवद्धृद्यसंयुक्ताः सन्तो देवानां स्तुता
वपि पठ्यन्ते ॥

दोनो अर्थका सिद्धान्त

जैसे मनमें महा विष्णु का ध्यान है वैसा ही अध्यात्म है और जैसे पाषाण
आदि मूर्तियों का पूजन है वैसा ही अधिदैव है अधिदैव यज्ञमें मंत्र पढ़
नहीं उचित है- न कि अर्थ का करना क्योंकि पाठ में ही सिद्धि होती है मं
त्रार्थ करने में सिद्धि नहीं है किन्तु असंभव है ऋतिप्रमाण से सोम का
अर्थ ईश्वर ब्रह्म के सिवाय सब प्राण और ज्योति है इन्द्र का अर्थ पर
मेश्वर और सब देवताओं में घटना है किन्तु पूर्वोक्त मंत्रों में केवल पर
मेश्वर का अर्थ ही घटना है न कि सोम और इन्द्र का इन मंत्रों का अर्थ
आगे आवेगा इस कारण यहां नहीं लिखा गया-

इसी प्रकार अन्य देवताओं के मंत्रों में भी ईश्वर का ही अर्थ घटना है
अधिदैव सम्बन्धी मंत्रों में अर्थ करना अनुचित और निष्फल है जैसे
ऋति कहती है देवता परोक्ष अर्थ को मानते हैं क्योंकि देवता परोक्ष
कामा हैं नौ भी मैंने पूर्वाचार्यों की समान दोनो अर्थ कहे जहां अ
ध्यात्म सम्बन्धी एक ही अर्थ है वहां पदों से दूसरा अर्थ जानना भी-
सुलभ है यह विद्वानों से ज्ञात व्यर्थ है सब मंत्र परमेश्वर ही की स्तुति
करते हैं देवता भी परमेश्वर के अंश हैं उस कारण मंत्र कल्पवृक्ष
की समान बहुत अर्थ से संयुक्त होने देवताओं की स्तुति में भी पढ़े
जाते हैं ॥

अथ मंत्रब्राह्मणयोः सिद्धान्तः

ब्राह्मणैः सहवेदा ब्रह्मवदादिमध्यान्त भूत्याः सृष्ट्या

रुभेसाकारब्रह्मणोपदिष्टाः ऋतिनामधेया भवन्ति ।
 मध्येब्राह्मणो ध्याचार्याणां मञ्जोत्तरवाक्यविशेषाः प्र-
 युञ्जन्ति यथा व्यासप्रणीत महाभारते सूतशौनकवैशं-
 पायनादीनां वाक्यानि - तेषां वाक्यानां दर्शनादबहु-
 ऋताः शङ्कां कुर्वन्ति - ये ब्राह्मणो धितिहासावर्तन्ते ते
 षामर्थो गूढः परोक्षश्च यथा शतपथब्राह्मणो वृत्रासुर-
 व्याख्याने - एष एव वृत्रो यच्चन्द्रमाः श० १।६।४।२३ क-
 दूविनतयोरितिहासे च - वागेव विनता + वेदिर्वैसलिलं
 अग्निर्वा अश्वः श्वेतः ३।६।२ एवमेव सर्वत्र विचारः कर्त-
 व्यः । यः परमेश्वरस्त्रिकालज्ञः स यदि स्ववाक्ये भविष्य-
 वार्त्ता प्रब्रूयात्तत्र किमाश्चर्यं मनुष्ये धेवेदृश वाक्यान्व-
 सम्भवानि । परमेश्वरोऽनाद्यस्तर्हितस्य वचनमप्यना-
 द्यं । तस्यानादित्वे ब्राह्मणोक्तयज्ञविधेरप्यनादित्वं ।
 पूर्वकल्पेषु यज्ञविधेर्वर्तमानत्वात् स्पष्टे रनादित्वाच्च त-
 स्यानादित्वं सर्वथा सिद्धमेव । बहु ऋता विद्वांस एव त-
 ज्जानन्ति नान्ये वालतराजनाः । ऋतेः प्रमाणा मापि-
 विद्यते - यथर्क्या ब्राह्मणं श० १२।५।२।४ -

मन्त्रब्राह्मणकासिद्धान्त

ब्राह्मणसहितवेदब्रह्मकीसमानआदिमध्यअन्तसे ऋन्यहैं स्पष्ट
 के आरम्भपरसाकारब्रह्मसे उपदिष्ट ऋतिनामहोतेहैं मध्यकालमें
 ब्राह्मणोंके मध्यआचार्योंके मञ्जोत्तरवाक्यविशेषसंयुक्तहोजातेहैं
 जैसेव्यासप्रणीतमहाभारतमेंसूतशौनकवैशंपायनआदिकेवाक्य-

उन वाक्योंके दर्शनसे अबहु श्रुत मनुष्य शंका करते हैं —
 ब्राह्मणोंमें जो इतिहास हैं उनका अर्थ गूढ़ और परोक्ष है जैसा पूर्वेक्त
 श्रुतिका — इसी प्रकार सर्वत्र विचार कर्तव्य है — जो परमेश्वर विकाल
 स्रष्टै वह यदि अपने वाक्यमें भविष्य वार्ता को कहे उसमें क्या आश्चर्य
 है मनुष्योंमें ही ऐसे वाक्य असम्भव होते हैं परमेश्वर अनादि हैं तो उ
 सका वचन भी अनादि है उसके अनादि होनेमें ब्राह्मणोक्त विधि
 भी अनादि है पूर्व कल्पोंमें यज्ञ विधि के वर्तमान होने और सृष्टि के
 अनादि होनेसे उसका अनादि होना सर्वथा सिद्धि ही है। बहु श्रु
 त विद्वानही उसको जान्ते हैं न कि दूसरे वाल तर मनुष्य श्रुतिका प्र
 माण भी विद्यमान है जैसी ऋचा तैसा ब्राह्मण श० १२।५।२।४।

सूचना

सामवेदे ब्रह्म महापुरुष पुरुष जीवात्म भक्ति योग
 ज्ञान बन्ध मोक्षाणां सिद्धान्तं यथावत् काथितं तस्मा
 दत्र तस्य कथनमावश्यकं नास्ति यदाऽनन्य भक्त योगी
 समस्तं वेदार्थं मनु भविष्यति तदैव कृत कृत्यो भविते
 ति ॥

सूचना

सामवेदमें ब्रह्म महापुरुष पुरुष जीवात्मा भक्ति योग ज्ञान बंधन
 मोक्षों का सिद्धान्त यथावत् कहा है उस कारण यहां उसका कह
 ना आवश्यक नहीं है जब अनन्य भक्त योगी समस्त वेदार्थ को
 अनुभव करेगा तभी कृत कृत्य होगा ॥

सामवेद संहिता

छन्द आर्चिकः

अथ प्रथम प्रपाठ के प्रथमार्द्धः

हरिः प्रोम

ॐ अग्नयायाहीत्यस्य भरद्वाज ऋषिर्गायत्री

छन्दो वैश्वानरो ऽग्निर्देवता

अग्ने अयाहि वीतये गृणानो हव्यं दातये नि

होता सत्सि वहिषि ॥ १ ॥ अत्र वहवो ऽग्नयः यथा श्रुतयः

आत्मैवाग्निः श० ६।७।१।२० ब्रह्मवा ऽग्निः श० ५।३।५

३२ प्राणो ऽग्निः श० १०।२।६।१८ असौ वा ऽग्नादित्य एपो

ऽग्निः ६।४।१।८ सर्वेषामिषेव ह्यते हविस्तस्माद्यो र्यो यत्र

संभविष्यति तमेव कथिष्याम इति-

(अग्ने) हे देव मुखाम्ने (गृणानः) यत्रो भविष्यतीति शब्दं कु

र्वाणस्त्वं। गृशब्दे (वीतये) हविषां चरु पुरोडाशादीनां भ

क्षणाय (हव्यं दातये) देवेभ्यो हविः प्रदानाय च (अयाहि)

अस्मद्युक्तं प्रत्यागच्छ यस्मान् (होता) देवानामाह्वाता स

न् (वहिषि) आस्तीर्णेर्धर्म (निषत्सि) निषीदसितत्कर्मत

वैवास्तीत्यर्थः अग्ने कर्म होतृत्वं दत्तत्वञ्च तत्र गृणान इति

शब्दाद् दत्तत्वं होतृ शब्दाच्च होतृत्वं सिध्यति १॥

यहां बहुत अग्नि हैं श्रुति कहती हैं कि आत्मा ब्रह्ममाण सूर्य्य सब अग्नि ही हैं इस कारण जहां पर जो अर्थ संभव होगा उसको कहेंगे ॥

मंत्रार्थः १ हे देव मुख रूप अग्ने २ यज्ञ होगा यह शब्द करते तुम ३ चर
पुरोडाश आदि हविके भक्षण ४ और देवताओं को हविदानके लिये ५
हमारे यज्ञमें आश्रोजिस कारण ६ देवताओंके आह्वान कर्त्तानुम ७ कु
शासन पर ८ बैठते हो ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (गृणोऽनः) योग यज्ञो भविष्यतीति दे
वेषु शब्दं कुर्वाणस्त्वं (वीतये) (व) वातः प्राणः (इ) चन्द्रो
मनस्तयोः प्राप्तये । इगतौ (हव्यदातये) महापुरुष पुरुषे
भ्यो हविः प्रदानाय (आयोहि) अनुभव गोचरो भव यस्मा
त् (होता) देवानामाह्वानासन् (वर्हिषि) दीप्ति युक्ते हा
र्दा काशे । वर्हदीप्तौ इ सुन् (निषत्सि) निषत्सो भवसि १
१ हे आत्माग्ने २ योग यज्ञ होगा यह शब्द करते तुम ३ प्राण मनकी मा
प्ति ४ और महा पुरुष पुरुषों को हविदानके लिये ५ अनुभव गोचर हूँ जि
ये जिस कारण ६ देवताओंके आह्वान कर्त्ता होने ७ दीप्ति युक्त हार्दा
काशमें ८ विराजमान होते हो ॥ १ ॥

अथाद्याः पूर्ववत्

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः देव
भिर्मानुषेजने

हे (अग्ने) (विश्वेषां) सर्वेषाम् (यज्ञानाम्) अग्निष्टोमात्य
ग्निष्टोमादीनां मध्ये (होता) होमनिष्पादनशीलः (जुहो
तेस्ता) छीलिकस्तृण यद्वा सर्वेषां देवानामाह्वानात् (त्वम्)
(मानुषे) (जने) मनोरपत्य भूते यजमानसमूहे (देवाभिः)

देवैः (छान्द सोभिस ऐस भावः) विद्वाद्भिर्ऋत्विग्भिः (हितं
निहितः गार्हपत्यादि रूपे संस्थापितो भवति ॥ २ ॥

१ हे अग्ने २, ३ अग्निष्टोम आदि सब यज्ञों के मध्य ४ होम निष्पादन शी
ल ५ तुम ६ मानव यज्ञमान समूह में ७ विद्वान ऋत्विजों से ८ गार्हपत्य
आदि रूपसे स्थापित किये जाते हों ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (विश्वेषां) (यज्ञानाम्) योग यज्ञानां
मध्ये (होतां) होम निष्पादन शीलः यद्वा महापुरुष पुरु
षाणा माह्वता (त्वम्) (मानुषे) (जने) मनुष्य सम्बन्धा
त्मप्रतिविम्बे (देवेभिः) महापुरुष पुरुषैः (हितः) स्थापितो
ऽसि ॥ २ ॥

हे आत्मग्ने २, ३ सब योग यज्ञों के मध्य ४ होम निष्पादन शील ५ तुम ६
७ मनुष्य सम्बन्धी आत्म प्रतिविम्ब में ८ महापुरुष पुरुषों के द्वारा ९
स्थापित हो ॥ २ ॥

कावपुत्रमेधानिधिर्ऋषिश्छन्दोदेवते पूर्ववत्
अग्निं न्दतं वृणां महं होतारं विश्वं वेदसम् अस्य
यज्ञस्य सुकृतम् ॥ ३ ॥

(दत्तम्) देवानां दौत्ये विनियुक्तं (होतारम्) देवानामाह्व
तारं (विश्वं वेदसम्) विश्वं सर्वं वेदो धनं यस्य तं सर्वं धन
वन्तं (बहु व्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् (६, २, १०, ६) इति पू
र्वपदान्तोदात्तत्वम्) (अस्य) प्रवर्तमानस्य (यज्ञस्य)
(सुकृतम्) निष्पादकत्वेन शोभन कर्माणां (अग्निम्)

देवं (वृणीमहे) स्तुतिभिर्हविर्भिः सम्भजामहे ॥३॥
 १ देवताओंके दत्त २ देवाह्वानकर्ता ३ सर्वधनवन्त ४ दस ५ यज्ञके ईर्निष्या
 दन करने से शोभन कर्मा ७ अग्निदेवता को ८ स्तुति हवि द्वारा हम भ-
 जते हैं ॥३॥

अथाध्यात्मम्

(दूतम्) (होतारम्) (विश्ववेदसम्) विश्वानिवेत्तीति विश्व
 वेदाः तं सर्वज्ञं । वेत्तेरसुन्विदज्ञाने (अस्य) (यज्ञस्य) यो-
 गयज्ञस्य (सुक्रतुम्) शोभनप्रज्ञं नि० ३।३।१४ (आग्निम्)
 आत्माग्निं (वृणीमहे) ॥३॥

१ देवताओंके दत्त २ होता ३ सर्वज्ञ ४, ५ दस योगयज्ञके ईर्निष्य बुद्धिमा
 न ७ आत्माग्नि को ८ हम भजते हैं ॥३॥

भरद्वाज ऋषिः ऋग्वेदो देवते पूर्ववत्

आग्निं वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणो स्युर्विपन्यया स
 मिद्धः शुक्रे आहुतः ॥४॥

(सामिद्धः) सामिदादिभिर्हविर्भिः सम्युग्दीपितः (शुक्रः)
 दीप्यमान (आहुतः) हविर्भिर्गहुतः (आग्निः) (विपन्यया)
 स्तुत्यानि० ३।१४ (द्रविणोस्युः) स्तोत्राणां धनमिच्छन्
 ह्रन्दसि परेच्छायां क्वच । प्रातिपदिकेभ्यः इच्छायां क्व
 चिसुगागमः (वृत्राणि) आवरकानि शत्रुकुलानिरक्ष-
 प्रभृतीनि (जङ्घनत) भृशं हन्तु [हन्ते र्यङ्लुगन्तास्ति
 डर्धलेट् (३, ४, ७)] ॥४॥

अथाध्यात्मम्

(समिद्धः) प्राणैः सम्यग्दीपितः (शुक्रः) मानससूर्यरूपः
 एषैव शुक्रो य एष तपति श० ४।३।१।२६ (आहुतः) इ-
 न्द्रियरूपहविर्भिराहुतः (अग्निः) आत्माग्निः (विपन्यया-
 स्तुत्या (द्रविणस्युः) योगिनो योगधनमिच्छन् (वृत्ता-
 णि) पापानि पाप्मावै वृत्रः श० ६।४।२।३ (जडुन्नत) ४
 १ समिद्धादिहविसे संदीप्त २ दीप्यमान ३ हविसे आहुत ४ अग्निपस्तु-
 तिद्वारा ६ स्तोताओंके धनको चाहता ७ शत्रुकुल वा राक्षस आदिको
 ८ नाश करो ॥ ४ ॥

प्राणों से संदीप्त २ मानस सूर्यरूप ३ इन्द्रिय रूप हवि से आहुत ४ आत्म-
 ग्नि ५ स्तुतिद्वारा ६ योगियोंके योगधनको चाहता ७ पापों को ८ नाश
 करो ॥ ४ ॥

उशाना ऋषिश्चन्द्रो देवते पूर्ववत्

प्रेष्ट्वोऽतिथिं स्तुषे मित्रं मिथ प्रियम् अग्ने
 रथं न वेद्यम् ॥ ५ ॥

हे (अग्ने) (वो) ऋद्धावल युक्तोऽहं वीजकोः (प्रेष्ट्वं) स्तोतृ-
 णामस्माकं धनदानेन प्रियतमं (अतिथिं) सर्वैरतिथि-
 वत्पूज्यं (मित्रं) (इव) (प्रियं) (रथम्) (न) इव (वेद्यम्)
 स्वर्गसुखानुभवहेतुम् ॥ विद् सुखाद्यनुभवेलाभे च यथा
 रथेनाभीष्टं देशं लभते तद्धदनेन स्वर्गं लभते तादृश स्व-
 र्गलाभकारणत्वां (स्तुषे) स्तौमि ॥ ५ ॥

१ हे अग्ने २ ऋद्धावल से युक्त में ३ स्तोताओंको धन देने से प्रियतम ४
 अतिथि समान सबके पूज्य ५, ६, ७ मित्रकी समान प्रिय ८, ९, १० रथकी

समान स्वर्ग सुखानुभवके कारण तुमको ११ स्तुत करता हूँ ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (वेः) निवृत्तात्मा ऽहं । वीजकोषः (प्रेष्ठं) योगिनां प्रियतमं (अतिथिं) अतिथिवत्पूज्यं (मित्रं) (इव) (प्रियं) (रथं) (न) इव (वेधम्) महानारायणलोक-
प्राप्तिहेतुत्वां (स्तुषे) ॥ ५ ॥

१ हे आत्माग्ने २ निवृत्तात्मा में ३ योगियों के प्रियतम ४ अतिथि की स-
मान पूज्य ५, ६, ७ मित्र की समान प्रिय ८, ९, १० महानारायणलोक
की प्राप्ति के कारण तुमको ११ स्तुत करता हूँ ॥ ५ ॥

सुधीति पुरुमीढा वृषी छन्दो देवने पूर्ववत्
त्वनो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः
उत द्विषो मर्त्यस्य ६

हे (अग्ने) (त्वं) (नैः) अस्मान् (महोभिः) पूजाभिः महाद्वि-
धनैर्वा (विश्वस्याः) सर्वस्याः (अरातेः) शत्रुजातेः सका-
शात् (उत) अपिच (मर्त्यस्य) द्विषः) द्वेषात् (पाहि) रक्षा ६
१ हे अग्ने २ तुम ३ हमको ४ पूजा वा महाधनों के द्वारा ५ सब ६ शत्रु ७
और ८ मनुष्यजाति के ९ द्वेष से १० रक्षा करो ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वं) (नैः) अस्मान् (महोभिः) पूजाभिः
महाद्विर्योगैश्चैर्यैर्वा (विश्वस्याः) सर्वस्याः (अरातेः) कां-
मिनिजातेः सकाशात् (उत) अपिच (मर्त्यस्य) मरणा-
शीलस्य मनसः (द्विषः) द्वेषात् (पाहि) ॥ ६ ॥

हे आत्माग्ने २ तुम ३ ह्रमको ४ पूजा वा महा योगै श्वर्यी के द्वारा ५ सब
६ काम जानि ७ और ८ मरणा शील मनके द्देष से ९ रक्षा करो ॥ ६ ॥

भरद्वाज ऋषि ऋन्दो देवते पूर्ववत्
ए ह्येषु ब्रवाणिते इन्द्रो देवते रागिरः । एभि
वर्द्धसि इन्दुभिः ७

(३) हे शिवरूप (अग्ने) (एह) आगच्छ (ते) तुभ्यं त्वदर्थ
(इत्याः) पूर्वोक्ताः (उ) च (इतराः) अयोक्ताः (गिरः) स्तुतीः
(सु) सुष्टु । सुजः ८, ३, १, ३, ६ इति मूर्द्ध एये रूपम्
(ब्रवाणि) (एभिः) (इन्दुभिः) सोमरूप साम मन्त्रैः । सोमा-
हुतयो हवाऽ एता देवानां यत्सामानि श० ११ । ५ । ६ । ६ (वर्द्ध-
सि) ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे शिवरूप २ अग्ने ३ आग्ने ४ तेरे लिये ५ पूर्वोक्त ६ और
७ अयोक्त ८ स्तुति ९, १० भले प्रकार उच्चारण करूं ११ इन १२ सोमरूप-
साममंत्रोंके द्वारा १३ वृद्धि पाते हो ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - (३) हे विष्णुरूप (अग्ने) आत्माग्ने (एहि)
अनुभव गोचरो भव (ते) त्वदर्थ (इत्याः) पूर्वोक्ताः (उ) च (इतराः)
अयोक्ताः (गिरः) मन्त्राः (सु) (ब्रवाणि) (एभिः) (इन्दुभिः)
साम मन्त्रैः (वर्द्धसि) ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे विष्णुरूप २ आत्माग्ने ३ अनुभव गोचर हजिये ४ तेरे
लिये ५ पूर्वोक्त ६ और ७ अयोक्त ८ मन्त्र ९, १० भले प्रकार उच्चारण क-
रूं ११ इन १२ साममंत्रोंके द्वारा १३ वृद्धि पाते हो ॥ ७ ॥

का एव गोत्री वत्स ऋषि ऋन्दो देवते पूर्ववत् ।

ॐ ते वत्सो मनो यमत्परं मा चित्सुधस्थोत् अ
 ग्नेत्वाङ्कोमये गिरा ८

हे (अग्ने) (वत्सः) प्राणाः (मनः) (चित्) अपि (ते) तव (परमा
 त्) उत्कृष्टात् (सधस्थात्) सह स्थानाद्दृद्युलोकात् प्रादु
 भूत्वा (आयमत्) दीर्घमभवत् तस्मात् (त्वाम्) (गिरा) स्तु
 त्या (कामये) ॥ ८ ॥

भाषार्यः - १ हे अग्ने २ प्राणा ३ मन ४ भी ५ तेरे ६ उत्कृष्ट ७ सह स्था
 नहृद्युलोक से प्रकट होकर ८ समाधि भाव को प्राप्त हुआ उस कारण
 ९ तुमको १० स्तुति द्वारा ११ चाहता हूँ ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (वत्सः) प्राणाः । अयमेव वत्सो योऽयं प
 वतेश ० ४। १। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।
 उत्कृष्टात् (सधस्थात्) सह स्थानादात्मलोकात् प्रादुभू
 त्वा (आयमत्) समाधिरूपमभवत् । तस्मात् (त्वाम्) (गिरा)
 महावाचा (कामये) ॥ ८ ॥

भाषार्यः - १ हे आत्माग्ने २ प्राणा ३ मन ४ भी ५ तेरे ६ उत्कृष्ट ७ आ
 त्मलोक से प्रकट होकर समाधि भाव को प्राप्त हुआ उस कारण ८ तुम
 को ९ महावाक् द्वारा ११ चाहता हूँ ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषिश्चन्द्रो देवते पूर्ववत्
 त्वामग्ने पुष्करादध्यथवा निरमन्थनमृद्धी
 विभ्वस्य वाघतः ॥ ९ ॥

हे (अग्ने) (अथर्वा) समाधि प्राणाः प्राणो वाऽअथर्वाः श ० ९।

४।२।१(पुष्करौदधि) ब्रह्माण्डालयपुष्करमध्ये(विश्वस्य)
 सर्वस्य(वाघतः) वाहकात्(मूर्द्धः) सूर्यान्विषाणोःशिरः
 पपाततत्पतित्वासावादित्योऽभवत्श० १४।१।१।१०(त्वाम्)
 (निरमन्थत) अजनयत् ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १हे अग्ने २ समष्टि प्राणने ३ ब्रह्माण्डालयकमलके मध्य ४ ५
 ६ सबके वाहक सूर्यसे अनुमको ८ मथन कर प्रकट किया ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (अथर्वा) प्राणः (पुष्करौदधि) मानस
 कमल मध्ये (विश्वस्य) विश्वारव्यशरीरस्य (वाघतः)
 वाहकात् (मूर्द्धः) मानससूर्यात् (त्वाम्) (निरमन्थत) ६

भाषार्थः - १हे आत्माग्ने २ प्राणने ३ मानसकमलके मध्य ४, ५, ६
 विश्वनामशरीरके वाहक मानस सूर्यसे अनुमको ८ मथन कर प्रकट कि
 या ॥ ६ ॥ वृद्धाश्वत्थरुषिरनूपोवा-गायत्री छन्दोऽग्निदेवता
 अग्ने विवस्वदाभरास्मभ्यमृतये महदेवो ह्य
 सिनो दृशे ॥ १० ॥

हे (अग्ने) त्वं (अस्मभ्यम्) अस्माकं षष्ठ्यर्थे चतुर्थी (महे) म
 हते (ऊतये) रक्षणाय अवरक्षणो (विवस्वत्) तमो रूपर
 क्षसां विवासन करं ज्योतिः (आभर) आहर (हि) यस्मात्
 त्वं (नः) अस्माकं (दृशे) दर्शनार्थं (देवः) घोटमानः (असि)
 इन्द्रादयो नास्माभिर्दृश्यन्ते त्वं तु गार्हपत्यादिदेशोऽतिघो
 त्मानः प्रत्यक्षेण दृश्यसे तस्मात्त्वां विशेषेण प्रार्थयामहे-इ
 त्यभिप्रायः ॥ १० ॥

द्दिनमस्कारशब्द को ७ उच्चारण करते हैं तुम ८ वलों के द्वारा ९ शत्रु को १०
नाश करो ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (देव) मायाक्रीडनकैः क्रीडनशील (अग्ने) आत्माग्ने-
(रूपैः) विद्वांसः (भोजसे) योगवलाय (ते) तुभ्यं (नमः)
(गृणान्ति) त्वं (अग्ने) योगवलैः (अमित्रम्) कामं (अर्दये) १

भाषार्थः - १, २ हे माया के खिलोनों से क्रीडनशील आत्माग्ने ३
विद्वान् ४ योगवल के लिये ५ तेरे अर्थ ६ नमस्कार शब्द को ७ उच्चार
ण करते हैं ८ तुम योग वलों से ९ काम को १० पीड़ित करो ॥ १ ॥

वामदेव ऋषि गयित्री छन्दो वैश्वानरो मूर्तिर्दे०
दूतं वो विश्वे वेदसं हव्यं वाहं ममर्त्यम् । यजि
ष्ठमृञ्जसे गिरौ ॥ २ ॥

मन्त्रो यजमानं प्रशंसति हे यजमानत्वं (वै) युष्माकं (हृ
व्यवाहम्) देवेभ्यो हविषां वोढारुं (दूतम्) देवानां दूतं (अम
र्त्यम्) अमरणा धर्माणां (विश्ववेदसम्) विश्वं समस्तं वे-
दो धनं यस्यासौ विश्ववेदाः तम् (यजिष्ठम्) अति शयेन य-
ष्टारमग्निं (गिरौ) वेदवाचा (ऋञ्जसे) प्रसाधयसि बद्ध-
यासि ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्माणि ० ६।२। ४ यजमानो अग्निः
श० ६।३। ४। १२ यजमानो अग्निं पूजने नाग्निभावं प्राप्नोति
तस्मादाग्निं काण्डेतस्य प्रशंसा युक्तेव ॥ २ ॥

भाषार्थः - मन्त्र यजमान की प्रशंसा करता है हे यजमान तुम १
अपने २ देवताओं के लिये हविधारक ३ देवताओं के दूत ४ अमरणा ध-

र्मा ५ सर्वधनवत्त ६ महायज्ञकर्ता अभिको ७ वेदवाणीद्वारा ८ प्रसा
धनकरतेहौ ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

हेयोगिनत्वं (वेः) युष्माकं (हृव्यवाहेम्) (दूतम्) (अमृ-
त्यम्) अविनाशिनं (विष्ववेदुसम्) सर्वविदं (यजिष्ठ
म्) उत्कृष्टयष्टारमात्माग्निं (गिरा) महावाचा (ऋज्ज
से) वर्द्धयसितस्मान्मोक्षार्होसीत्यर्थः ॥ २ ॥

भाषार्थः - हे योगिन तुम १ अपने २ हविधारक ३ दूत ४ अविना
शी ५ सर्वज्ञ ६ उत्कृष्टयष्टा आत्माग्निको ७ महावाकद्वारा ८ बढ़ातेहैं
उस कारण मोक्ष योग्य हो यह अभिप्राय है ॥ २ ॥

प्रयोगऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-
उपत्वाजामयो गिरा देदेशतीह विष्कतः ।

वायो रनीकेऽस्थिरन् ३ । १३

हे अग्ने आत्माग्नेवा (जामुयः) तव स्वस्वरूपाः प्रजापतिना
द्वयोरुत्पन्नत्वात् (हृविष्कतः) हविः संस्कारं कुर्वन्त्यः
(गिरः) स्तुतयः (त्वा) त्वां (उप) उपतिष्ठन्ते (देदेशतीः)
तव गुणान् दिशन्त्यः (वायोः) प्राणस्य (अनीके) मुखे
(अस्थिरन्) अतिष्ठंश्च ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे अग्ने वा आत्माग्ने १ तेरी भगिनी रूप २ हवि संस्कार-
करन वाली ३ स्तुतियां ४ तेरे ५ समीप स्थित होनी हैं ६ तेरे गुणों को
कहनी ७ प्राण के ८ मुखमें ९ स्थित हुई ॥ ३ ॥

मधुच्छन्दऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्हि यावयम् । न
मो भरन्त एमासि ४ । १४

हे (दोषावस्तः) दोषायां रात्रौ स्वकीयेन ज्योतिष्पातमसू-
माच्छादयितः (अग्ने) (वयम्) अनुष्ठातारः (दिवे) (दिवे)
प्रतिदिनं (धियो) बुद्ध्या (नमः) नमस्कारं हविर्वा (भर-
न्तः) सम्पादयन्तः (उप) समीपे (त्वा) त्वां (एमासि) आ-
गच्छामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ अपनी ज्योतिसे रात्रिके अंधकार को नाश करने-
वाले २ हे अग्ने ३ अनुष्ठान कर्ता हमलोग ४, ५ प्रतिदिन ६ बुद्धिद्वारा
७ नमस्कारवा हविको ८ सम्पादन करते ९ समीपमें १० तुमको
११ प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (दोषावस्तः) रात्रेः पितृयानु मार्गस्याच्छादयितः । लो-
पायितः (अग्ने) आत्माग्ने (वयम्) वागाद्यत्विजः (दिवे)
(दिवे) प्रतिदिनं (धियो) योगबुद्ध्या (नमः) इन्द्रियरूपा-
न्नं (भरन्तः) समर्पयन्तः (उप) समीपे (त्वा) त्वां (एमासि)
आगच्छामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे पितृयानु मार्गके आच्छादक २ आत्माग्ने ३ हम
वागादिऋत्विज ४, ५ प्रतिदिनं ६ योग बुद्धिद्वारा ७ इन्द्रिय रूप
हविको ८ समर्पण करते ९ समीपमें १० तुमको ११ प्राप्त करते हैं ॥ ४ ॥

शुनः शोषं ऋषिर्गायत्री छन्दोमि देवता ॥

जैरावोधतद्वि विडिहविशे विशे यज्ञियोय ।

स्तोमं च रुद्राय दृशीकम् ॥ ५ ॥ १५ ॥

हे (जरबोध) जरया स्तुत्या बोध्यमानाम्ने (विशे) (विशे) प्रत्येक यजमानस्यानुग्रहार्थं (यज्ञियाय) यज्ञ सम्बन्धनुष्ठानसिद्ध्यर्थं (तत्) देवयजनं (विविड्ढि) प्रविश। यजमानोऽपि (रुद्राय) रुद्ररूपाय तुभ्यं (दृशीकं) दर्शनीयं समीचीनं (स्तोमम्) स्तोत्रं करोतीति शेषः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे स्तुतिसे बोध्यमानाम्ने २, ३ प्रत्येक यजमानके अनुग्रह ४ तथा यज्ञसम्बन्धी अनुष्ठान की सिद्धि के लिये ५ उस देवयजनस्थान में ६ प्रवेश करो यजमान भी ७ तुम्हें रुद्ररूप के लिये ८ दर्शनीय वा समीचीन ९ स्तोत्र को उच्चारण करता है ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (जरबोध) देहाभिमानत्याग एव जरा तस्यां बोधो यस्य स जरा बोधस्तद्गुणा विशिष्टात्माग्ने (विशे) (विशे) प्रत्येक माणा स्यानुग्रहार्थं। विशो वै मरुतः शु. ५। १। ३। ३ (यज्ञियाय) योग्यज्ञानुष्ठानसिद्ध्यर्थं (तत्) हृदयं (विविड्ढि) प्रविश (दृशीकं) दर्शनीयमाधिदैवं (स्तोमम्) स्तोत्रं (रुद्राय) ईश्वराय भवति तस्य स्तोत्रस्याधिदैवानुष्ठानसम्बन्धत्वात्। विविड्ढि विशा प्रवेशने लोटोहिः (३, ४, ८, ९) वद्गलं छंदसि (२, ४, ९६) इति शपः ऋत्तुः अभ्यासहलादिशेषौ (६, ९, ४, ७, ४, ६९) हुभलभ्यो हे ऋद्धिः (६, ४, ८७) इति हे ऋद्धि रादेशः पत्वष्टुत्वे (८, ३, ३६, ८, ४, ४१) यद्वा विसृज्याप्तावित्यस्य लोणमध्यमैकवचने अभ्यासस्य गुणाभावः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ देहाभिमानत्यागरूपजरामें जिसका बोध होय तादृश हे आत्मा २, ३ प्रत्येक प्राण के अनुग्रह ४ तथा योग यज्ञानुष्ठानकी सिद्धि के लिये ५ उस हृदय में ६ प्रवेश करे ७ दर्शनीय प्राधिदेव ८ स्तोत्र ९ ईश्वर के लिये होता है क्यों कि उसका सम्बन्ध उसी से है ॥ ५ ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निमरुतौ देवते
प्रतित्यञ्चारुमध्वरं गोपीथाय प्रहूयसे।

मरुद्भिरग्नागहि ६

हे (अग्ने) (तमे) (यम्) अग्नेयं वीजकोषः (चारुम्) मनोहरं (अध्वरम्) यज्ञं (प्रति) प्रतिलक्ष्य (गोपीथाय) सोमपानाय (प्रहूयसे) प्रकर्षेण हूयसे तस्मात्त्वं (मरुद्भिः) सह (अगहि) आगच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ उस ३ अग्नि सम्बन्धी ४ मनोहर ५ यज्ञको ६ देखकर ७ सोमपान के लिये ८ आह्वान किये जाते हो उस कारण तुम ९ मरुद्गणों के साथ १० आओ ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्मा २ (तमे) (चारुम्) मनोहरं (यम्) योगसम्बन्धिनं (अध्वरं) यज्ञं (प्रति) प्रतिलक्ष्य (गोपीथाय) आत्म प्रतिविंब पानाय सर्वहि सोमः श० ५। ५। ४। १० (मरुद्भिः) प्राणैः (प्रहूयसे) (अगहि) आगच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मा २ उस ३ मनोहर ४ योग सम्बन्धी ५ यज्ञको ६ देखकर ७ आत्म प्रतिविंब के पानार्थ ८ प्राणों के द्वारा ९ आह्वान

कियेजानेहो १७ आश्रो ॥६॥

शुनः शोपऋषिर्गायत्री छन्दो वैश्वानरो मिर्दे०
 अश्वेनत्वा वारवन्तं वन्दे ध्येऽग्निं नमोभिः स
 प्राजन्तमध्वरोणाम् ७ ॥ १७

(तम्) (अध्वरोणाम्) यज्जानां (सम्राजं) सम्राट् स्वरूपं
 स्वामिनं (अग्निं) (त्वाम्) (नमोभिः) स्तुतिभिः (वन्दे ध्ये)
 वन्दितुं । तुमर्थे ध्ये । प्रवृत्ता इति शेषः (न) यथा (वारवन्तं
 जलसंघयुक्तं (अश्वम्) सूर्यं । असौ वा ऽ आदित्य एषो ऽ
 श्वः श० ६।३।१।२९—॥७॥

भाष्यार्थः - १उस २ यज्ञोंके ३ स्वामी ४ अग्निनाम ५ तुमको ६
 स्तुतिद्वारा ७ वन्दन करनेको हम प्रवृत्त हुए ८ जैसे ९ जल समूह
 युक्त १० सूर्यको ॥७॥

अथाध्यात्मम्

(तम्) (अध्वरोणाम्) योगयज्जानां (सम्राजं) स्वामिनं (अग्निं) आत्मा
 मिं (त्वाम्) (नमोभिः) स्तुतिभिः (वन्दे ध्ये) वन्दिन्नुमि-
 च्छाम इति (न) यथा (वारवन्तं) जलसंघयुक्तं (अश्वम्)
 सूर्यं ॥७॥

भाष्यार्थः - १उस २ योगयज्ञोंके ३ स्वामी ४ आत्माग्निनाम
 ५ तुमको ६ स्तुतिद्वारा ७ वन्दना करना चाहते हैं ८ जैसे ९ जल स
 मूह युक्त १० सूर्यको ॥७॥

प्रयोगऋषिर्गायत्री छन्दो वैश्वानरो मिर्देवता-
 श्रीर्वभृगुर्वच्छुचिमन्नवानवदाहुर्वेऽग्निं २

समुद्रवाससम् ॥ १८ ॥

(समुद्रवाससं) अन्तरिक्षे वैद्युतात्मना समुद्रे वाडवात्म-
ना वानिवासो यस्यतं । समुद्र इत्यन्तरिक्ष नामानि ० १, ३
१ ५ (शुचिं) शुद्धं (अग्निम्) (शैर्वभृगुवत्) (अन्नवान
वत्) यथा शैर्वभृगुः । अन्नवानश्वतथा (आहुवे) अह
माहूयामि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ अन्तरिक्ष में विजली रूपसे वा समुद्र में वड़वान
लरूपसे निवास शील २ शुद्ध ३ अग्नि को ४, ५ शैर्वभृगु अन्नवान भा-
र्गव ऋषियों की समान ६ आवाहन करता हूँ ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम्

(समुद्रवाससं) मनोवर्तिनं । मनोवैसमुद्रः श० ७ । ५ । २ ।
५२ (शुचिं) पवित्रं (अग्निम्) आत्माग्निं (शैर्वभृगुवत्)
(अन्नवानवत्) (आहुवे) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ मनोवर्ती २ पवित्र ३ आत्माग्नि को ४, ५ शैर्वभृगु
अन्नवान् भार्गव ऋषियों की समान ६ आवाहन करता हूँ ॥ ८ ॥

प्रयोग ऋषि गिर्यत्री छन्दोग्नि देविता-

अग्निमिन्धानोमनसाधियं सचेतमर्त्यः

अग्निमिन्धेविवस्वभिः ॥ ९ ॥ १९

(मर्त्यः) मनुष्यः (अग्निं) इन्धानः) काष्ठैः प्रज्वलयन् (म
नसा) (धियं) कर्म (सचेत) भजेत यस्मात्सन्त्वोहं
(विवस्वभिः) तमसां विवासायित्वा भिरिषिमभिः (अग्निम्)
(इन्धे) प्रज्वलितं करोमि ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ मनुष्य २ अग्नि को ३ काष्ठों से प्रज्वलित करता ४ मन से ५ कर्म को ६ सेवन करे जिस कारण मंत्र में ७ तम नाशक किरणों के साथ ८ अग्नि को ९ प्रज्वलित करता हूँ ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम्

(मर्त्यः) देहाभिमानी मनुष्यः (अग्निम्) आत्माग्निं (इंधनः) प्राणैः प्रज्वलयन् (मनसा) (धियै) प्रज्ञां (संचेत) भजेत यस्मान्मन्त्रोऽहं (विवस्वभिः) इन्द्रियरश्मिभिः (अग्निं) आत्माग्निं (इन्धे) प्रज्वलितं करोमि ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ देहाभिमानी मनुष्य २ आत्माग्नि को ३ प्राण द्वारा प्रज्वलित करता ४ मन सहित ५ प्रज्ञा को ६ सेवन करे जिस कारण मंत्र में इन्द्रिय रूप किरणों सहित ८ आत्माग्नि को ९ प्रज्वलित करता हूँ ॥ ९ ॥

वत्सत्रदधिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

आदित्यत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वा
सरम्। परायदिध्यते दिवि ॥ १० ॥ २०

(यत्) यदा (परेः) वैश्वानरोऽग्निः (दिवि) द्युलोकस्योपरि (इध्यते) दीप्यते (आदित्) अनन्तरमेव (प्रत्नस्य) चिरन्तनस्य (रेतसः) जगद्धीर्यस्य सूर्यस्य (वासरम्) (ज्योतिः) दैनन्तेजः (पश्यन्ति) सर्वजनाः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ जव २ वैश्वानर अग्नि ३ स्वर्गलोक में ४ प्रज्वलित होता है ५ अनन्तर ही ६ चिरन्तन ७ जगत वीर्य रूप सूर्यके ८, ९ दिन संबन्धी तेज को १० देखते हैं ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम्

(यत्) यदा (पुं०) आत्माग्निः (दिवि) भृकुट्यां (दृध्यते) दीप्यते (आदित्) अनन्तरमेव (मत्नस्य) चिरन्तनस्य (रेतसः) देह वीजस्यात्मप्रतिविंबस्य । रेतो वै सोमः श० २ । ५ । १ । ६ सोमो वै भ्रातृ श० ३ । २ । ४ । ६ (वासरम्) वृ-प्रा-णस्ते नात्मानि गतिमन्तं सर्ते गत्यर्थस्य रूपम् (ज्योतिः) (पश्यन्ति) योगिजनाः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ जव २ आत्माग्नि ३ भृकुटि में ४ प्रज्वलित होता है ५ अनन्तरही ६ चिरन्तन ७ देह वीज आत्मप्रतिविंबके ८, ६ उसज्योति को जो कि प्राण द्वारा आत्मा में गति मान हो १० योगी जन देखते हैं ॥ १० ॥

इति द्वितीयादशाति

इति ऋषी भृगुवंशावतंस ऋषीनाथूराम सूनुज्वाला प्रसादशर्म्म कृते सामवेदीयब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः खण्डः

प्रयोग ऋषि गयित्री छन्दोभिर्देवता-

ॐ अग्निं वो वृधन्तु मध्वराणां पुरूतमम् । अग्च्छी
नम्रे सह स्वते ॥ १ ॥ २१

हे ऋत्विजः (वः) युष्माकं (अध्वराणां) यज्ञानां (वृधन्तं) वर्द्धयन्तं (पुरूतमं) समाष्टि रूपं (अग्निं) (अग्च्छी) अभिगच्छत (नम्रे) महापुरुषस्य पुत्रः प्रजापतिस्तस्य पुत्रोऽग्निस्तस्मै (सह स्वते) बलवते हविः समर्पयतेति शेषः । य

द्वावलपतेपौत्रायामिगच्छत ॥ १ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विजो १ तुम्हारे २ यज्ञोंके ३ वृद्धिकर्त्ता ४ समष्टिरूप ५ आग्नि को ६ प्राप्त करो ७ महापुरुषके पौत्र ८ बलवान् आग्नि के लिये हवि समर्पण करो ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम्

हे वागाद् ऋत्विजः (वेः) युष्माकं (अध्वरोणां) योगयज्ञानां (वृधन्तं) वर्द्धयन्तं (पुरुतमं) महान्तं (आग्निं) आत्माग्निं (अच्छी) अभिगच्छत (नन्ने) महापुरुषस्य पुत्रो विष्णुस्तस्य पुत्र आत्माग्निस्तस्मै (सहस्वते) ज्योतिष्मते प्रति विं व रूपहविः समर्पयत ॥ १ ॥

भाषार्थः - हे वागादि ऋत्विजो १ तुम्हारे २ योगयज्ञोंके ३ वृद्धिकर्त्ता ४ महान्त ५ आत्माग्नि को ६ प्राप्त करो ७ महापुरुषके पौत्र ८ ज्योतिष्मान् आत्माग्नि के लिये प्रति विं व रूपहवि को समर्पण करो ॥ १ ॥

भरद्वाज ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

३ आग्निस्ति ३ गमेन ३ शोचिषायै ३ सौष्टिष्वेन्ये

३ अत्रिणाम् ३ आग्निन्नावि ३ सते रयिम ॥ २ ॥ ३२

(अयम्) (आग्निः) (तिगमेन) तीक्ष्णो न (शोचिषा) तेजसा (विश्वम्) सर्वं (अत्रिणाम्) अक्षरं राक्षसादिकं (नियंसत्) निहन्तु । यच्छते लीटि रूपम् (आग्निः) (नः) अस्मभ्यं (रयिम) धनं (वंसते) ददातु ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ यह २ अग्नि ३ तीक्ष्ण ४ तेजके द्वारा ५ सब ६ राक्षस

आदिको ७ नाशकरो ८ अग्निर्हमारेलिये १० धनको ११ दो ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

(अयम्) (अग्निः) आत्माग्निः (तिग्मैः) (शोचिषा) ते-
जसा (विष्णुं) सर्वं (अत्रिणं) अन्तारं कामादिकं (नियं-
त्) निहन्तु (अग्निः) आत्माग्निः (नः) अस्मभ्यं (रयिम्)
योगधनं (वंसते) ददातु ॥ २ ॥

भाषार्थः— १ यह २ आत्माग्नि ३ तीक्ष्ण ४ तेजके द्वारा ५ सबके
भक्षक कामआदिको ७ मारो ८ आत्माग्निर्हमारेलिये १० योग-
धनको ११ दो ॥ २ ॥

वामदेव ऋषिर्गीयत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्ने मृडं महान् १० अस्यैयं आदेव युञ्जनम् ॥

इयेथे वहिरोसदम् ॥ ३ ॥ १३ ॥

हे (अग्ने) त्वं (महान्) (असि) (अयः) (यः) योगस्तेन-
रहितः साकारो भूत्वा (वह्निरोसदम्) आसीदन्ति यस्मि-
न्तदा सदमासनं कुशासनं (आइयेथ) आगच्छसि स-
त्वं (देवयुम्) देवानां कामयितारं । देवान् यष्टुमिच्छती-
ति क्यचि क्वाच्छन्दसि (३, २, १७) इति उः (जनम्) य-
जमानं (मृडं) सुखय ॥ ३ ॥

भाषार्थः— १ हे अग्ने तुम २ महान् ३ हो ४ योगरहित अर्थात्-
सांकार होकर ५ कुशासनको ६ प्राप्त करते हो ७ देवकामा ८ यज-
मानको ९ सुखी करो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (अग्ने) आत्मा मे त्वं (महान्) (असि) (अयः) आत्मा
 मि त्वं (वह्नि रासदम्) दीप्ति युक्तु हार्दासनं । वह्नि दीप्तौ-
 (आद्रयेथ) प्राज्ञोषि सत्त्वं (देवयुम्) देवस्य महापुरुष-
 स्य कामयितारं (जनम्) भक्तं (मृड) सुखय ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मा मे तुम २ महान ३ हो ४ आत्मा मि तुम ५
 दीप्ति युक्त हार्दासन को ६ प्राज्ञ करते हो ७ महापुरुष के चाहने वा
 ले ८ भक्त को ९ सुखी करो ॥ ३ ॥

वसिष्ठ ऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

अग्ने रक्षाणो अग्ने हंसः प्रतिस्मदेवरीषतः
 तपिष्टै रजरौदह ॥ ४ ॥ २४

(अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (देव) द्योतमान (अग्ने) (नः) अस्मा-
 न् (अहंसः) पापात् (रक्ष) (अजरः) जरारहितत्वं (रीष-
 तः) हिंसतः शत्रून् (तपिष्टैः) अतिशयेन तापकैस्तेजोभिः
 (प्रतिदह) भस्मीकुरु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ द्योतमान ३ अग्ने ४ हमको ५ पा-
 पसे ६ रक्षा करो ७ जरा रहित तुम ८ हिंसक शत्रुओं को ९ अतिशय-
 तापकनेजों से १० भस्म करो ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (देव) (अग्ने) आत्मा मे (नः) अस्मा-
 न् योगिजनान् (अहंसः) पापात् (रक्ष) (अजरः) निर्वि-
 कारत्वं (रीषतः) हिंसतः कामादीन् (तपिष्टैः) अतिश-
 येन तापकैस्तेजोभिः (प्रतिदह) भस्मीकुरु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ विद्वन् ३ आत्माग्ने ४ हमयोगियोंको
५ पापसे धरहा करे ७ निर्विकारतुम् ८ हिंसककाम आदिको ९ अतिश
यतापकतेजों से १० भस्मकरो ॥ ४ ॥

भरद्वाज ऋषि गायत्री छन्दोभिर्देवता-

१२ ३ ११
अग्ने^{१२}यु^३ड्^३स्वा^३हि^३ये^३त^३वा^३श्व^३ा^३सो^३दे^३व^३सा^३ध^३वः ।

अ^३र^३व^३हं^३त्या^३श^३वः ॥ ५ ॥ २५

हे (अग्ने) सर्वव्यापिन् (देव) द्योतमान (अग्ने) (ये) (तव)
त्वदीयाः (साधवः) सुशीलाः (आश्वः) क्षिप्र गामिनः (अ
श्वः) अश्वः आज्ञसेरसुक (७।१।५०) इत्यमुकिरूपम्
(अरम्) अलंपर्याप्तित्वदीयं रथं (वहन्ति) तान् (हिं) (युड्-
स्व) आत्मीये रथे योजय ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ द्योतमान ३ अग्ने ४ जो ५ तेरे ६ सुशील
७ क्षिप्र गामी ८ घोड़े ९ तेरे पर्याप्त रथको १० ले चलते हैं ११ उनको ही १२
अपने रथमें जोड़ो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् (अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (देव) (अग्ने) आत्मा
ग्ने (ये) (तव) त्वदीयाः (साधवः) योगानुष्ठान शीलाः (आश्व
वः) निरालसाः (अश्वः) मानस सूर्याः । असौवाग्नादित्य
एषोऽश्वः श० ६।३।१।२८ (अरम्) २-आत्माग्निस्तद्व्यतिरिक्तं
देहं (वहन्ति) तान् (हिं) (युड्-स्व) स्वात्मनि योजय ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ विद्वन् ३ आत्माग्ने ४ जो ५ तेरे ६ यो-
गानुष्ठानशील ७ निरालस ८ मानस सूर्य ९ आत्माग्निसे व्यतिरिक्त देह
को १० धारणा करते हैं ११ उनको ही १२ अपने आत्मा में युक्त करो ॥ ५ ॥

पशिष्ठऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

नि॒त्वो॑ नक्ष्यवि॒श॒पते॑द्यु॒मन्तं॑ धीमहे॒ वयम् ।

सु॒वीरं॑ म॒म आ॒हुत ॥ ६ ॥ २६

(नक्ष्य) हे उपगन्तव्य । नक्षतिर्व्याप्तिकर्मानि० २। १८ (वि-
श॒पते) यजमानानां स्वामिन् नि० २। ३ (आहुत) सर्वैर्यजमा
नैरभिहुत (अग्ने) (द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं (सुवीरं) ऋत्विगा-
र्यैः सुवीरैः समृद्धं (त्वा) त्वां (वयम्) (निधीमहे) निहितवन्तः

भाषार्थः - १ हे उपगन्तव्य २ यजमानोंके स्वामी ३ सब यजमानों से
अभिहुत ४ अग्ने ५ दीप्तिमान ६ ऋत्विक्नाम ऋषीरों से समृद्ध ७ तुमको
८ हमने ९ स्थापित किया ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (नक्ष्य) हे सर्वव्यापिन् (विश॒पते) योगि
नां स्वामिन् (आहुत) योगिजनैरभिहुत (अग्ने) आत्माग्ने-
(द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं (सुवीरं) वागाद्यृत्विग्भिः सम्वद्धं (त्वा)
त्वां (वयम्) योगिनः (निधीमहे) हार्दाकाशे निहितवन्तः ६

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ योगिजनेश्वर ३ योगियों से अभिहुत ४
आत्माग्ने ५ दीप्तिमान ६ वागाद्यृत्विजों से सम्वद्ध ७ तुमको ८ हम योगियों
ने ९ हार्दाकाश में स्थापन किया ॥ ६ ॥

विरूपऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

अग्नि॑ मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः॑ षाधिव्याश्रयम् ।

अपा॑थं रेता॑थं सिजिन्वति ॥ ७ ॥ २७

(अयम्) (दिवः) द्युलोकस्य (मूर्द्धा) सूर्यरूपः श० १४। १।
१। १० (षाधिव्याः) (अपाम्) अन्नरिक्साणां मध्ये नि० १। ३

८ (ककुत्पतिः) ककुदा कृाणां गोलानां स्वामी (श्रमिः) श्रमि रात्मा मिर्वा (रेतांसि) आपः नि० १। १२। १६ यद्वा वीर्य विकार भूतानि स्थावरजङ्गमात्म कानि (जिन्वति) भीणयति। श्रमिर्वा इतो वृष्टिं समीरयतीति श्रुतेः ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ यह २ स्वर्गलोक का ३ सूर्यरूप ४ पृथिवी ५ और अन्तरिक्षों के मध्य ६ ककुदा कार गोलों का स्वामी ७ श्रमि वा आत्मा मि ८ जलों वा वीर्य विकार रूप चराचर जीवों को ९ भ्रमण करता है ॥ ७ ॥

श्रुतः शेष ऋषि गायत्री छन्दोभिर्देवता.

^{३ २ ३ ३ ३ ३} इमं मूषुत्वमस्माकं ^{३ १ ३} सानि गोयत्रं ^{३ ३ ३ ३ ३ ३} नव्यां ^{३ ३} थं स
म। अग्ने देवेषु प्रवोचः ॥ ८ ॥ २८

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (त्वम्) (अस्माकम्) (इमम्) (नव्यासम्) संस्कृतं (सानि) दानं (गायत्रं) स्तुतिरूपं वचोऽपि (ऊर्षु) विष्णुशिवादिषु (देवेषु) इन्द्रादिषु च (प्रवोचः) प्रवृष्टि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ तुम ३ हमारे ४ इस ५ संस्कृत ६ दान ७ और स्तुति रूप वचन को भी ८ विष्णुशिवादि ९ और इन्द्र आदि देवताओं के मध्य भी १० उच्चारण करो ॥ ८ ॥

गोपवन ऋषि गायत्री छन्दोभिर्देवता.

^{१ २ ३ ३ ३ ३} तत्त्वा गोपवनो गिराजनिष्टदग्ने अङ्गिरः।
^{३ ३ ३ ३ ३ ३} सपोवक श्रुधी हवम् ॥ ९ ॥ २९

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (गोपवने) व्याष्टि समष्टीन्द्रियाणां शोधकः पूशोधे (अङ्गिरः) व्याष्टि समष्टि माणः प्राणो

वाऽऽग्निः राशं ६।१।२।२८ (गिरा) वेदवचसा (तमे) (त्वो)
 त्वां (जनिष्वन्) संस्करोति हे (पावक) शोधक (स) त्वं (ह
 वम्) आह्वानं (शुधी) ऋणु ॥ ९ ॥

भाष्यार्थः - १ हे श्वमेवात्मा मे २ व्यष्टि समाष्टि इन्द्रियों का शोध
 क ३ व्यष्टि समाष्टि प्राण ४ वेदवचनसे ५ उस ६ तुमको ७ संस्कार करत
 है ८ हे शोधक ९ वह तुम १० आह्वानको ११ सुनो ॥ ९ ॥

वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

परिवाजपतिः कविर्गमिह्व्याः न्यक्मीत् ।

दधे द्रत्नानि दाशुषे ॥ १० ॥ ३०

(वाजपतिः) अन्नानां पालकः (कविः) मेधावी (अग्निः)
 अग्निरत्माग्निर्वा (दाशुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय (रत्ना
 नि) रत्नभूतानि धनानि योगधनानि वा (दधते) प्रयच्छ
 न् (हव्यानि) आधिदेवाध्यात्मसम्बन्धीनि (पर्यक्मीत्)
 देवान्प्रति नीतवान् ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ अन्न पालक २ मेधावी ३ अग्नि वा आत्माग्निने ४ हवि-
 दाता यजमानके लिये ५ रत्न रूप धन वा योगधनोंको ६ देते हुए ७ अग्नि
 देवाध्यात्मसम्बन्धी हविषोंको ८ देवताओंके पास पहुंचाया ॥ १० ॥

काएव ऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

उदत्यं जातं वेदसं देवैर्वहन्ति केतवः । दृशो
 विश्वायसूर्यम् ॥ ११ ॥ ३१

(केतवः) वैश्वानस्याग्नेरत्माग्नेर्वा केतवो रश्मयः (उ)
 एव (तमे) (यम्) सर्वस्य प्राणरूपं (जादवेदसं) सर्वज्ञं-

(देवम्) द्योतमानं (सूर्यं) (विश्वाय) (दृशे) सर्वदर्शनाय-
(ब्रह्मन्ति) ऊर्ध्ववहन्ति ॥ ११ ॥

भाषार्थः - १ वैश्वानरशुद्धिवाशुद्धिमाशुद्धिकीकिरणे २ ह्री ३ उत्स ४
सबकेमाणरूप ५ सर्वज्ञ १ द्योतमान ७ सूर्यको ८, ९ सर्वदर्शिनकोलि
ये १० ऊंचा धारण करती हैं ॥ ११ ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता
कविमैत्रिमुपैस्तुहि सत्यधर्माणामध्वरे।
देवममीवचातनम् ॥ १२ ॥ ३२ ॥

हे स्तोत्र सद्गुणयोगिन्वा (अध्वरे) यज्ञे योग यज्ञेवा (कवि
म्) मेधाविनं (सत्यधर्माणां) सत्यस्य ब्रह्मणो धारकं (दे
वम्) द्योतमानं (अमीवचातनं) अमीवानां हिंसकानां श
त्रूणां कामादीनाम्वाघातकं (अशुद्धिम्) शुद्धिमाशुद्धिवा
(उपैस्तुहि) उपेत्य स्तुतिं कुरु ॥ १२ ॥

भाषार्थः - हे स्तोत्र समूह वा योगिन् १ यज्ञ वा योग यज्ञमें २ मेधा
वी ३ ब्रह्मके धारक ४ द्योतमान ५ हिंसक शत्रुवा कामआदिके घात
क ६ शुद्धि वा शुद्धिमाशुद्धिको ७ सन्मुख होकर स्तुत कर ॥ १२ ॥

सिन्धुह्रीपोऽस्वरीषोत्तत आप्तोवाऋषिर्गायत्री छन्द आपोदे०

शन्नो देवीरभिष्टये शन्नो भवन्तु पीतये शं
योरभिस्त्रवन्तुनः ॥ १३ ॥ ३३ ॥

(देवीः) देव्यः आपः (नः) अस्माकं (अभिष्टये) (अ) अन्नं
(भ) तेजोरूपं घृतं तस्येष्टये (शम्) सुखरूपा भवन्तु (नः)
(पीतये) पानाय (शम्) सुखरूपा भवन्तु (नः) अस्माकं

(शंयोः) शंयुः शुभान्वितो यजमानस्तस्य (अभिस्त्रवन्तु) सन्मुखे प्राप्ता भवन्तु ॥ १३ ॥ ३३

भाषार्थः - १ प्रकाशमानजल २ हमारे ३ अन्न द्यतकी दृष्टि के लिये ४ सुख रूपहों ५ हमारे ६ पान के लिये ७ सुख रूपहों ८ हमारे ९ यजमानके १० सन्मुख प्राप्त हों ॥ १३ ॥

अथाध्यात्मम्- हे (देवीः) आपो ज्योती रसो मृतमिति श्रुता बुक्ता आपः (नः) अस्माकं वा गा दृत्विजां (अभिष्टये) (अभ) प्रकाश हीना माया विकारो देहस्तस्येष्टये प्रकृतौ होमाय (शम्) आनन्द रूपा भवन्तु (नः) अस्माकं (पीतये) पानाय (शम्) आ० (नः) अस्माकं (शंयोः) यजमानस्य (अभिस्त्रवन्तु) सन्मुखे प्राप्ता भवन्तु ॥ १३ ॥

भाषार्थः - १ हे ब्रह्मांशु रूपजलो २ हम वा गा दृत्विजों की ३ देहको प्रकृति में होम करने के लिये ४ आनन्द रूप हूजिये ५ हमारे ६ पान के लिये ७ आनन्द रूप हूजिये ८ हमारे ९ यजमानके १० सन्मुख प्राप्त हूजिये ॥ १३ ॥ उशना ऋषिर्गायत्री छन्दो विदेवता-

कस्ये न्यूनपरीणा सिधी योजिन्वसिसत्पते
गोषातायस्यते गिरः ॥ १४ ॥ ३४

हे (सत्पते) सतांपते अग्ने । आत्माग्ने ब्रह्माग्ने वा (नूनम्) निष्त्रयेन त्वं (कस्ये) कामस्य (परीणासि) नसकौटिल्ये व्यामौचपरितः कुटिले व्याग्ने वा देहे (धियः) कर्माणि मनोऽहङ्कारचित्तवृत्तीर्वा (जिन्वसि) मीणायासि (यस्य) (ते) तव सम्बन्धिन्यः (गिरः) स्तुतयः (गोषाताः) गवां महावाचां

द्राच्यः विदुषां निश्चयेतु सर्वाणि कर्माणि कामस्यै वना-
त्मन इत्यर्थः ॥ १४ ॥

भाषार्थः - १ हे सत्पुरुषों के स्वामी अग्ने वा आत्मा अग्ने २ निश्चयतु म
३ कामदेव के ४ देह में ५ कर्मों वा मन अहंकार चित्त दृष्टियों को धूमरे-
न करते हौ ७ जिस ८ तुम्हकी ९ स्तुतियां १० महा वाक्यों की दाता हैं ज्ञा-
नियों के निश्चय में सब कर्म काम के ही हैं न आत्मा के यह अभिप्राय
है ॥ १४ ॥

इति तृतीयादशतिः

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा कृते
सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य तृतीयखंडः

अथ चतुर्थः खण्डः

शंयुर्ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

यज्ञो यज्ञावो अयं यै गिरा गिरा च दक्षसे । प्रमे
वेयं ममृतं जातं वेदसं प्रियमिन्नं नशं ॥ १४ ॥ ३५

हे स्तोतारः (वः) युष्माकं (यज्ञोः) हविर्व्यज्ञाः (यज्ञोः) यो
गयज्ञाः (वयम्) वयं वेदा अपि (गिरा) अधिदैव सम्बन्धि
न्यावाचा (गिरा) अध्यात्म सम्बन्धिन्यावाचा (दक्षसे)
प्रहृद्धाय वलरूपाय वा (अग्नेये) अग्नेये आत्माग्नेये ब्रह्मा
ग्नेये वा भवन्ति (च) अहं वेदोऽपितं (अमृतम्) अविनाशिनं
(जातवेदसं) जानानां वेदितारं (मित्रं) (नै) इव (प्रियम्)
(प्रशंसिषम्) अधिदैव सम्बन्धिन्या स्तुत्या (प्रशंसिषम्)
अध्यात्म सम्बन्धिन्या स्तुत्या ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे स्तोताओ २ तुम्हारे ३ हविर्व्यज्ञ ४ योग यज्ञ ५ और ह्म

वेदभी ५ अधिदेवसम्बन्धी वाक् ६ और अध्यात्म सम्बन्धी वाक् द्वारा ७ प्र-
वृद्ध वलरूप ८ अग्नि आत्माग्नि वा ब्रह्माग्नि के लिये होने हैं ९ और मंत्रे
दभी १० अविनाशी ११ सर्वज्ञ १२ १३ १४ मित्रकी समान प्रियको १५
अधिदेव सम्बन्धी स्तुति के द्वारा प्रशंसा करता हूँ तथा १६ अध्यात्म सं-
बन्धी स्तुति के द्वारा प्रशंसा करता हूँ ॥ १ ॥

भर्गुराग्निर्वृहती छन्दोभिर्देवता-

पाहि॑ नो॒ अग्ने॑ एक॒ या पा॑ह्युः॒ अतो॑ द्वितीय॒ या ।
पाहि॑ गी॒भिस्ति॑ स्त॒भिः ऊ॒र्जा म्पते॑ पाहि॒ चत॑
स्त॒भिर्वसो॑ २ ॥ ३६ ॥

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने ब्रह्माग्ने वा (नेः) अस्मान् (एकया)
अद्वैतलक्षणया गिरा (पाहि) सन्यासात्मने रक्ष (उते) अपि
च (द्वितीयया) (उ) माया ब्रह्म साधक यागि रैव वान प्रस्था
त्मने (पाहि) ऊर्जा म्पते हे अन्नानां वलानां वा स्वाभिन्
(तिस्तभिः) जीवेश माया साधिकाभिः (गीभिः) (पाहि) गृ-
हस्थात्मने रक्ष (वसो) हे ब्रह्माग्ने (चतस्तभिः) ब्रह्मजीवेश
माया साधिकाभिर्गीभिः (पाहि) ब्रह्मचर्यात्मने रक्ष ब्रह्मच-
र्यात्मने ब्रह्म माया जीवेशानां सिद्धान्तं ज्ञात्वा गृहस्था-
त्मने माया विकारान्नादिभिर्जीवेशयोस्तृप्तिं कृत्वा वान
प्रस्थात्मने सर्व ब्रह्म मयं ज्ञात्वा चतुर्थात्मने वासुदेवः सर्व
मिति वाचा परमां गतिं प्राप्नोति ॥ २ ॥

भाषार्थः १ हे अग्ने आत्माग्ने वा ब्रह्माग्ने २ हमको ३ अद्वैतलक्षणा वा
णी द्वारा ४ सन्यास आत्मने रक्षा करो ५ और ६ माया ब्रह्म साधक वा

णीद्वारा ८ वानप्रस्थआश्रममें रक्षाकरो हे अन्नवावलोंके स्वाप्ती १०, ११
जीवईश मायासाधक वाणीके द्वारा १२ गृहस्थाश्रममें रक्षाकरो १३
हे ब्रह्मांशो १४ ब्रह्मजीवईश मायासाधक वाणीके द्वारा १५ ब्रह्मचर्या
श्रममें रक्षाकरो अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रममें ब्रह्ममायाजीवईश्वरके सि
द्धान्तको जानकर गृहस्थाश्रममें मायाविकार अन्न आदिके द्वारा
जीवईश्वरकी तृप्ति को करके वानप्रस्थ आश्रममें सबको ब्रह्मरूप
जानकर चतुर्थ आश्रममें वासुदेवः सर्वइसवचनके द्वारा परमगति
को पाता है ॥ २ ॥

शंयुः ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता

वृहद्भिर्ग्रेः अग्निभिः भुक्तेषु देवशोचिषोः भू
रद्वाजे समिधानो यविष्टरेवत्पावक दीदिहि ३ ३७

हे (देव) दानादि गुणयुक्त (यविष्ट) युवतम (पावक) शोध
क (अग्ने) (भुक्तेषु) निर्मलेन (शोचिषो) तेजसा (भरद्वा-
जे) वाजमन्त्रं हृविर्लक्षणां भरतीति भरद्वाजमभिकुण्डं त
स्मिन् (समिधानः) समिध्यमानस्त्वं (वृहद्भिः) महद्भिः (अग्नि
भिः) (नैः) अस्मदर्थं (रेवन्) धनयुक्तं यथा भवति तथा (दीदि
हि) दीप्यस्व ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हेदान आदि गुणसे युक्त २ युवतम ३ शोधक ४ अग्ने ५
निर्मल ६ तेजके द्वारा ७ अभिकुण्डमें ८ प्रज्वलित तुम ९, १० वडंतेजों
के साथ ११ हमारे लिये १२ जैसे धनयुक्त हो नैसेही १३ प्रदीप्तहृजिये
अथाध्यात्मम् - हे (देव) दीप्त (यविष्ट) निर्जरामर (पाव
क) देहस्य शोधके (अग्ने) आत्माग्ने (शोचिषो) स्वकीयते

जोरूपेण (शुक्रेण) मानससूर्येण । एषवै शुक्रोय एषतप्र-
 ति श० ४।३।१।२६ (भृद्वाजे) मनसि । मनो वै भरद्वाजक्यपि
 श० ८।१।२।८ (समिधानः) समिध्यमानस्त्वं (वृहद्भिः) मह
 द्विः (अर्चिभिः) तेजोभिः (नः) अस्मद्गागाद्यत्विजा मर्थे (रेव
 त) योगैश्वर्ययुक्तं यथा भवति तथा (दीदिहि) दीप्यस्व ३
 भाषार्थः १ हे दीप्त २ निर्जगमर ३ देह केशोधक ४ आत्माग्ने ५ सप
 नेतेजरूप ६ मानससूर्यके साथ ७ मनमें ८ प्रज्वलिततुम ९ वड़े ते
 जोके साथ ११ हमारे लिये १२ जैसे योगैश्वर्ययुक्त हो तेसेही १३ प्रदीप्त
 हजिये ॥ ३॥ वसिष्ठत्रयिर्ब्रह्मती छन्दोभिर्देवता

त्वेऽग्नेस्वाहुतः प्रियासेः सन्तु सूर्यः । यन्तो
 रायै मघवानो जनानां मूर्धदयन्तु गानाम् । ४।३८
 हे (स्वाहुत) सुप्तुभिर्यजुमानैराहुत (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने
 वा (जनानां) मध्ये (ये) (यन्तारः) संयमयुक्ताः (मघवा-
 नः) धनवन्तः योगैश्वर्यसम्पन्नावा (गानाम्) गवां । गो
 पदान्ते (७।१.५७) इति नुकिरूपम् । इन्द्रियाणाम्वा ।
 (ऊर्व) समूहं (दयन्तु) प्रयच्छन्ति (त्वे) ते । उ. त एव (सूर्य
 यः) स्तोतारः नि० ३।१६ तव (प्रियासेः) प्रियाः । आज्जसेर
 सुक्त (७।१.५०) इत्यसुकिरूपम् (सन्तु) ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्येष्ठयजमानों से आहुत २ अग्ने वा आत्माग्ने ३ मनुष्यों
 के मध्य ४ जो ५ संयमयुक्त ६ धनवान वा योगैश्वर्यसम्पन्न ७ गोवाइ
 दियोंके समूह को ८ दान करते हैं ९ वेही १० स्तोता ११ तेरे प्रिय १३
 होवें ॥ ४ ॥

भरद्वाजऋषिर्वहती छन्दोग्निर्देवता

श्रुमे^२जरिते^३विश^३पतिस्त्^३पानो^३देव^३रक्ष^३सः^३। श्रु^३
प्रोषिवान्^३गृहपते^३महो^३श्रु^३सिदिव^३स्या^३यु^३दु^३
रोणा^३युः^३॥ ५ ॥ ३६

हे (जरिते) स्तोतः (देवे) (गृहपते) यजमान गृहस्य पालक (श्रुमे) (विशपतिः) प्रजानां पालकः (रक्षसः) रक्षसानां (तपानः) सन्नापकः (श्रुप्रोषिवान्) यजमान गृहस्या त्यागी (दिवस्यायुः) द्युलोकस्य पाता (दुरोणायुः) यजमान गृहस्य मिश्रायिना सर्वदा वर्तमानस्त्वं (महान्) अतिशयेन पूज्यः (श्रुसि) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे स्तोता २ देव ३ यजमानके गृहके पालक ४ श्रुमे ५ प्रजापालक ६ रक्षसोंके ७ सन्नापक ८ यजमानके गृहको न त्यागने वाले ९ स्वर्गलोकके रक्षक १० यजमानके गृहमें सदा वर्तमान तुम ११ अतिशय पूज्य १२ हो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (जरिते) वेदवाचा स्वकीय रूपस्य स्तोतः (देवे) (गृहपते) देहस्य पालक (श्रुमे) आत्मा मे (विशपतिः) प्राणानां स्वामी (रक्षसः) कामादीनां (तपानः) सन्नापकः (श्रुप्रोषिवान्) देहस्या त्यागी (दिवस्यायुः) भृकुटेः पाता (दुरोणायुः) देहे सर्वदा वर्तमानस्त्वं (महान्) (श्रुसि) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे वेदवाक् से अपने रूपके स्तोता २ विद्वान् ३ देह पालक ४ आत्मा मे ५ प्राणोंके स्वामी ६ काम आदिके ७ सन्नापक ८

देहके शत्यागी ६ भृकुटिकेरक्षक १० देहमें सदावर्तमान तुम ११ म-
हान १२ हौ ॥ ५ ॥

प्रस्काएव ऋषिर्घृहती छन्दोभिर्देवता-

अग्ने^२ विवस्व^३ दुषसो^४ अश्विन^५ ७ राधा^८ अमर्त्यः^९ १०
दाशुषे^{११} जात वेदो^{१२} वहो^{१३} त्वम^{१४} द्या देवा^{१५} ७ उपे^{१६} वुधः^{१७} १८

हे (अमर्त्य) अमरदेव (जातवेदः) जानानां वेदितः (अग्ने)
त्वं (उषसः) उषो देवतायाः सकाशात् (विवस्वत्) विशिष्ट-
निवासोपेतं (चित्रम्) नानाविधं (राधः) धनं (दाशुषे)
हविर्दत्तवते यजमानाय (आवह) आनीय प्रापय (अद्य)
आस्मिन्दिने (त्वम्) (उषुर्वुधः) उषः काले प्रबुद्धान् देवान्
(अग्ने) आवह ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ हे अमर २ सर्वज्ञ ३ अग्ने तुम ४ उषा देवताके सका-
शसे विशिष्ट निवाससे युक्त ६ नाना प्रकारके ७ धनको हविदा-
तायजमानके लिये ८ प्राप्त कराओ ९ अथ १० तुम ११ उषाकालपर
जागे हुए देवताओंको १२ लाओ ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (अमर्त्य) अविनाशिन (जातवेदः)
सर्वज्ञ (अग्ने) आत्मात्मेत्वं (उषसः) जपसमाधिसम्बन्धि
कालात् (विवस्वत्) तमसामज्ञानानां विवासनकरं (चि-
त्रम्) अद्भुतं (राधः) योगधनं (दाशुषे) आत्मसमर्पका-
ययोगिने (आवह) प्रापय (अद्य) (त्वम्) (उषुर्वुधः) उष-
काले योगानुष्ठातृन् (अग्ने) आवह समन्तात् ब्रह्मणि प्राप-
य ॥ ६ ॥

भाषार्थः—१ हे अविनाशी २ सर्वज्ञ ३ आत्मा मे मुम ४ जपसमाधि सम्बंधी काल से ५ ज्ञानान्धकार नाशक ६ अद्भुत ७ योगधन को ८ आत्म समर्पण कर्ता योगी के लिये ९ प्राप्त कराओ १० अवशुम १२ उपां काल पर योग निष्ठों को १३ ब्रह्म में प्राप्त करो ॥ ६ ॥

तृण पाणि ऋषिर्दृहती छन्दोभिर्देवता-

त्वन्नु^१ञ्च^२ऊ^३त्या^३ वसो^३ राधा^३ ११^३ सिचो^३ दय^३।
अस्य^३ राय^३ स्त्व^३ मे^३ रथी^३ रासि^३ विदो^३ गा^३ धन्तु^३
चे^३ तुनः^३ ॥ ७ ॥ ४२

हे (वसो) ब्रह्मांशु रूप (अग्ने) अग्ने। आत्मा मे वा (चित्रैः) दर्शनीय स्त्वं (ऊत्या) रक्षया सह (राधासि) धूनानियोग धनानि वा (नैः) अस्मभ्यं (चोदय) मे रय (अस्य) (राधः) पूर्वोक्त धनस्य त्वं (रथीः) प्रेरयित्वा। रंहति गति कर्मा नि० २। १४ (आसि) (नैः) अस्माकं (तुचै) पुत्राय नि० २। २। १। (गांधं) प्रतिष्ठां (तु) क्षिप्रं (विदोः) लम्भ्य ॥ ७ ॥

भाषार्थः—१ हे ब्रह्मांशु रूप २ अग्ने वा आत्मा मे ३ दर्शनीय तुम ४ रक्षा के साथ ५ धनों वा योग धनों को ६ हमारे लिये ७ प्रेरणा करो ८ इस ९ पूर्वोक्त धन के तुम १० प्रेरक ११ हौ १२ हमारे १३ पुत्र के लिये १४ प्रतिष्ठा को १५ शीघ्र १६ प्राप्त कराओ ॥ ७ ॥

विरूप ऋषिर्दृहती छन्दोभिर्देवता-

त्वामि^३त्स^३ प्रथो^३ अस्य^३ मे^३ ज्ञान^३ ऋतः^३ कविः^३। त्वो^३
विप्रो^३ सः^३ समिधा^३ नदी^३ दिव^३ आ^३ विवा^३ सन्ति^३ वै^३
धंसः^३ ॥ ८ ॥ ४२

हे (सामिधोन) सामिध्यमान (दीदिवे) दीप्त (त्रातः) रक्षक
 (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (ऋतः) सत्यः (काविः) सर्वज्ञः (त्व-
 म्) (द्वत्) त्वमेव (सप्रथाः) सुविस्तीर्णाः (आसि) (त्वाम्)
 (विमोसः) विप्राः मेधाविनः (आविवा सन्ति) परिचरन्ति

भाष्यार्थः - १ हे भले प्रकार प्रज्वलित २ दीप्त ३ रक्षक ४ अग्ने वा आ-
 त्माग्ने ५ सत्य ६ सर्वज्ञ ७, ८ तुमही ९ सुविस्तीर्णा १० हौ ११ तुमको-
 १२ मेधावी पुरुष १३ सेवन करते हैं ॥ ८ ॥

शुनः शोप ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

आनो अग्ने वयो वृधे थं रथि म्पावकेश थं स्ये
 मा रास्वाचन उपमाते पुरूस्सह थं सुनीती
 सुयशस्तरम् ॥ ९ ॥ ४३ ॥

हे (पावक) शोधक (अग्ने) सर्वव्यापिन् (अग्ने) अग्ने आत्मा-
 ग्नेवा (नः) अस्मभ्यं (वयो वृधम्) अभीष्टा वस्थाया वर्द्धकं
 (शंस्यम्) स्तुत्यहं (रथिम्) धनं योग धनंवा (रास्व) देहि
 रानिर्दान कर्मानि ० ३। २० हे (उपमाते) धातः (नः) अस्म-
 भ्यं (सुनीती + आ) सुनीत्या सुमार्गेण (पुरूस्सहम्) बहु
 भिः स्सहणीयं (सुयशस्तरम्) महा कीर्ति धनं (त्वं) देहि

भाष्यार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ शोधक ३ अग्ने वा आत्माग्ने ४ हमारे
 लिये ५ अभीष्ट अवस्थाके बढ़ाने वाले ६ स्तुति योग्य ७ धनवा योग्य
 नको दीजिये ८ हे धाता ९ हमारे लिये १० सुमार्गसे ११ बहु स्सहणी-
 य १२ महा कीर्ति धनको १३ दीजिये ॥ ९ ॥

सोभरि ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

यो^३वि^३श्व^३ा^३द^३य^३ते^३व^३सु^३हो^३ता^३ २ म^३न्द्^३्री^३ज^३न^३ाना^३म्
म^३धो^३न्ने^३पा^३त्रो^३प्र^३थ^३मा^३न्य^३स्मे^३प्र^३स्तो^३मा^३य^३न्त्वे^३
म^३ये^३ ॥ १० ॥ ४४

(होता) देवानामाह्वता (मन्द्रः) स्तुत्योग्निः । मदि स्तुतो
(जनानाम्) यजमानानां (विश्वः) विश्वानि सर्वाणि (वसु)
वसूनि धनानि (दयते) प्रयच्छति (अस्मै) (अग्नये) (मधो)
सोमस्य (प्रथमानि) मुख्यानि (पात्रो) पात्राणि (ने) च
(स्तोमोः) स्तोत्राणि (प्रयान्ति) गच्छन्ति ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ देवताओं का आवाहन करने वाला २ यजमानों का
३ स्तुत्यग्नि ४ सब ५ धनों को ६ देता है ७ इस ८ अग्निके लिये ९ सो
मके १० मुख्य ११ पात्र १२ और १३ स्तोत्रों को १४ यजमान प्राप्त करते
हैं ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम्

(होता) महापुरुषपुरुषाणामाह्वता (जनानाम्) योगिनां
(मन्द्रः) स्तुत्यआत्माग्निः (विश्वः) सर्वाणि (वसु) योगध-
नानि (दयते) प्रयच्छति (अस्मै) (अग्नये) आत्माग्नये (मधो)
आत्म प्रति विंवस्य । इदं ज्ञानुषथं सर्वेषां भूतानां मधु + अय
मात्मा सर्वेषां भूतानां मधु श० १४। ५। ५। १२-१३ (प्रथमा-
नि) मुख्यानि (पात्रो) पात्राणि ज्ञानेन्द्रियाणि (ने) च
(स्तोमोः) प्राणाश्च । प्राणावै स्तोमाः श० ८। ४। १। ८ (प्रयति)
योगमार्गेण गच्छन्ति ॥ १० ॥ ४४

भाषार्थः - १ महापुरुषपुरुषों का आवाहान २ योगियों का ३ स्तु-
त्यआत्माग्नि ४ सब ५ योग धनों को ६ देता है ७ इस ८ आत्माग्निके लिये

६ आत्मप्रतिबिंबके १० मुख्य ११ पात्रज्ञानेन्द्रियां १२ और १३ प्राण
१४ योग मार्गसे जाते हैं ॥ १० ॥ ४४

इति चतुर्थी दशति

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूलुज्वाला प्रसादशर्मक
ने सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य चतु-

र्थः खण्डः अथ पञ्चमः खण्डः

वामदेवः ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

^{३ १} एना^{२ ३} वा^{१ २} ऋ^{२ ३} मि^{१ २} न्न^{२ ३} म^{१ २} सो^{२ ३} जो^{१ २} न^{२ ३} पा^{१ २} त^{२ ३} मा^{१ २} हु^{२ ३} वै । प्रिय^{३ १ २}
^{२ ३} चेति^{१ २} ष^{२ ३} म^{१ २} रानि^{२ ३} ॐ स्व^{२ ३} ध्व^{१ २} र^{२ ३} वि^{१ २} भ्व^{२ ३} स्य^{१ २} दू^{२ ३} त^{१ २} म^{२ ३} मृ^{१ २} त^{२ ३} म^{१ २} १-४

हे स्तोतारः (ऊर्जः) (नपातम्) ब्रह्मांशोः पुत्रः प्रजापतिस्त
स्य पुत्रोऽग्निः (प्रियम्) (चेतिषम्) प्रजातारं ॥ नि० ३ ॥ ६ अ
थ वाचिती संज्ञाने त्वचितुश्छन्दसि (५।३।११) इतीष्टानि
रूपम् (अरतिम्) स्वामिनं (स्वधरम्) सुयज्ञं (दूतम्) यज
मानस्य दूतं (अमृतम्) अविनाशिनं (अग्निम्) (एना) ए
नेन । सुपांसुलुगित्यादिना त्वतीयाया आत्वे रूपम् (नमसे)
हविषा स्तोत्रेण वा (वै) युष्मदर्थं (आहुवै) आहूयामि । स
म्प्रसारणं बाहुलकात् ६।१।३४-॥१॥

भाषार्थः - हे स्तोताओ १, २ ब्रह्मांशुकापौत्रः अग्नि ३ प्रिय ४ प्रजा
ता ५ स्वामी ६ सुयज्ञ ७ यजमानके दूत ८ अविनाशी ९ अग्नि को १०
इस ११ हविषा स्तोत्रके द्वारा १२ नुम्हारे लिये १३ आह्वान करता हूँ १४

अथाध्यात्मम् - हे वागाद्यत्विजः (ऊर्जः) (नपातम्)
ब्रह्मांशोः पुत्रो नारायणस्तस्य पुत्र आत्माग्निः (प्रियम्)

सर्वात्मत्वात्त्रियं (चेतिष्ठम्) ज्ञान स्वरूपम् (अरतिम्) अन्नं र्यामिरूपेण स्वामिनं (स्वध्वरम्) अध्यात्म यज्ञवन्त (दत्तम्) महापुरुषपुरुषाणा माह्वानेदत्तं (अमृतम्) अविनाशिनं (अग्निम्) आत्माग्निं (ऐना) एनेन (नमसा) आत्मप्रतिविंब रूपान्नेन निमित्तेन (वेः) युष्मदर्थं (आहुवे) १

भाषार्थः - हे वागाद्यत्विजो १, २ ब्रह्मांशुकेषु ३ मिय ४ ज्ञानस्वरूप ५ अन्नर्यामी रूपसे स्वामी ६ अध्यात्म यज्ञवन्त ७ महापुरुषपुरुषोंके आह्वान में दत्त ८ अविनाशी ९ आत्माग्नि को १० इस ११ आत्मप्रतिविंब रूप अन्न के निमित्त १२ तुम्हारे लिये १३ आह्वान करता हूँ १

भर्ग्वरषिर्दृहती छन्दोग्निदेवता-

शेषे वनेषु मातृषु सन्त्वा मर्त्तिसद्वन्धते ।
तन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृतं आदिद्देवेषु रा
जसि ॥ १ ॥ ४६

हे (अग्ने) त्वं (वनेषु) वडवानल रूपेणोदकेषु नि० १। १२ (मातृषु) अरुणिकाष्ठसु ओषधयोर्देवानां पत्न्यः श० ६ ५। ४। ४ (शेषे) स्वपिपिर्वर्त्तसे (त्वां) त्वां (मर्त्तिसः) अर्चयिदयो मनुष्याः मन्थने नोत्पाद्य (सामिन्धते) (अतन्द्रः) अनल सत्त्वं (हविष्कृतः) यजमानस्य (हव्यम्) हविः (वहसि) देवान्यति (आदिद्) अनन्तरमेव (देवेषु) मध्ये राजसि) दीप्यसे ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने तुम २ वडवानल रूपसे जलोंमें ३ तथा अरुणिकाष्ठोंमें ४ शयन करते हो ५ तुमको ६ अर्चयुं आदि मनुष्य मन्थन

से प्रकट कर ७ प्रज्वलित करते हैं ८ अनालसीतुम ९ यजमानके १० हवि-
को ११ देवताओंके पास पड़वाते हैं १२ तदनन्तर ही १३ देवताओंके म-
ध्य १४ शोभित होते हैं ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) हे आत्माग्ने त्वं (वनेषु) वीर्य-
परिणाम स्थूल सूक्ष्म कारणदेहेषु (मान्तेषु) इन्द्रियेषु (शुषे-
स्वपिषित्वा) त्वां (मर्त्तिसैः) मनुष्याः योगानुष्ठानेन (सामिन्ध-
ते) (अतन्द्रः) अनालसस्त्वं (हविष्कृतः) यजमानस्य (हव्य-
म्) आत्मप्रतिविम्बं महा पुरुष पुरुषेषु (वहसि) (आदिद्)
अनन्तरमेव (देवेषु) विद्वत्सु योगिषु मध्ये (राजसि) दी-
प्यसे ॥ २ ॥

भाष्यार्थः - १ हे आत्माग्ने तुम २ वीर्यपरिणाम स्थूल सूक्ष्म कारण-
शरीरमें ३ तथा इन्द्रियोंमें ४ शयन करते हो ५ तुमको ६ मनुष्ययोगानु-
ष्ठानद्वारा ७ भले प्रकार प्रदीप्त करते हैं ८ अनालसीतुम ९ यजमानके
१० आत्मप्रतिविम्बको महापुरुषपुरुषोंमें ११ प्राप्त करते हो १२ तदन-
न्तर ही १३ विद्वानयोगियोंके मध्य १४ प्रकाश करते हैं ॥ २ ॥

सोभरिर्चरिषिर्वहती चन्दोभिर्देवता-

अदाशिगानु वित्तमो यास्मिन् ब्रतान्योदधुः ।
उपोपुजाते मार्यस्य वर्द्धनमग्निं नक्षन्तुना
गिरः ॥ ३ ॥ ४७

(यास्मिन्) अग्नावात्माग्नेवा (व्रतानि) कर्माणि योगकर्मा-
णिवा (आदधुः) आहितवन्तः स (गानु वित्तमः) यज्ञभूमे-
योगभूमेर्वीर्येण शयेन ज्ञाता । गानुरिति पृथिवीनामनि-

११ (अदोर्शि) प्रादुरभूत् किञ्च (सुजातम्) सम्यक् प्रादुर्भूतं
 (आर्यस्य) यजमानस्य (वर्द्धनम्) वर्द्धयितारं (अग्निम्)
 अग्निमात्माग्निम्वा (नः) अस्माकं (गिरः) स्तुतिरूपा वाचः
 (उषी) समीप एव (नक्षन्तु) गच्छन्तु नि० २० १८ - ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ जिस अग्निवा आत्माग्निमें २ कर्मवा योग कर्मों को
 ३ स्थापन किया वह ४ यज्ञभूमिवा योगभूमि का अतिशय ज्ञाना ५
 प्रकट हुआ ६ उस प्रादुर्भूत ७ यजमान की वृद्धि करने वाले ८ अ
 ग्निवा आत्माग्नि को ९ हमारी ११ स्तुति रूपवाणी १२ समीप ही १३
 प्राप्त करो ॥ ३ ॥

मनुक्तेषु बृहती छन्दोभिर्देवता-

अग्निं रुक्थे पुरोहितो यावाणो वाहुरध्वरो ऋ
 चो यामि मरुतो ब्रह्मणा स्पते देवा अवावरो एयम्
 (रुक्थे) स्तोत्रशस्त्रात्मके (अध्वरे) यज्ञे (पुरोहितः) देवा
 नां पुरोहितः (अग्निः) (यावाणः) सोमाभिषवपाषाणाः
 (वाहुरः) च वर्तते एवं सामग्यां सत्यां हे (ब्रह्मणा स्पते) हे
 (देवाः) हे (मरुतः) अहं (ऋचा) सूक्त रूपया स्तुत्या युष्म
 कं (वरो एयम्) वरणीयं भजनीयं (अवः) रक्षणां (यामि)
 याचामि यामीति याञ्चा कर्मानि० ३० १६ ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ स्तोत्रशस्त्रात्मक २ यज्ञमें ३ देवताओं का पुरोहि
 त ४ अग्नि ५ सोमाभिषवपाषाणा ६ और कुशा वर्तमान हैं ऐसी साम
 ग्री होने पर ७ हे ब्रह्मणा स्पति ८ हे देवताओं ९ हे मरुद्गणों में १० सू
 क्तरूप स्तुतिके द्वारा ११ तुम्हारे १२ भजनीय १३ रक्षणा को १४ मांग-

ताहं ॥ ४४ ॥

अथाध्यात्मम्

(उक्त्ये) (अध्वरे) प्राणसम्बन्धयोगयन्त्रे । प्राणोवाऽऽउ
 क्यंशं १४।८।१४।१ (पुरोहितः) पुरतःहितः हितकरः
 (अग्निः) आत्माग्निः (प्रावाणः) प्राणः । प्राणावै प्रावाणः
 शं १४।२।२।३३ (वाहः) सुषुम्णाचवर्तने हे (ब्रह्मणस्प-
 ते) प्राण । प्राणोहि ब्रह्मणस्पतिः शं १४।४।१।२३ हे
 (देवाः) ज्ञानेन्द्रियाणि हे (मरुतः) शेषः प्राणाः । अहं यो
 गी (वै) युष्माकं (अवैः) संसाराद्रक्षणं (वरेण्यम्) वरणं
 यं (वृत्तौ) (योमि) याचामि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १,२ प्राणसम्बन्धी योगयन्त्रमे ३ आगे हितकर्त्ता ४ आत्मा
 ग्नि ५ प्राण ६ सौर सुषुम्णावर्तमानहैहे ७ प्राण ८ हे ज्ञानेन्द्रियो ९ हे शेषे
 षमाणो योगी में १० तुम्हारे ११ वरणीय १२ संसार से रक्षणको मंत्रद्वारा
 १४ मांगताह ॥ ४ ॥

सुदीनि पुरुमीढे वावाष्कम्भः ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

अग्निमीडिष्ववसे गाथाभिः शीरशोचिषम् । अ-

ग्निं राये पुरुमीढं ऋतन्नगाभिः सुदीतये छदिः ॥ ४६ ॥

हे (पुरुमीढ) पुरुभिर्वहतीभिः कामादिभिः परिसिक्तत्वं । मिहसे
 चने (शीरशोचिषं) शयनस्वभावादीभिः र्यस्यनं । शीशयने
 (अग्निम्) विषावाख्यं (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (गाथाभिः)
 मन्त्ररूपाभिर्वाग्भिः (ईडिष्वे) स्तुहि (ऋतम्) विख्यातं (अ-
 ग्निम्) शिवाख्यं (राये) धनाय योगधनाय वा स्तुहि (नरे)
 (अग्निः) (सुदीतये) शोभनदानाय (छदिः) गृह रूपः । जीवा

त्मनो नरस्यांशत्वात् ॥ ५ ॥

भाषार्थः १ हे काम आदि से परिसिक्त यजमान तुम २ शयन स्वभाव दी
मियाले ३ विष्णु नाम अग्निको ४ संसार से रक्षाके लिये ५ मंत्ररूप वचनोंके द्वारा
६ स्तुत करो ७ विख्यात शिव नाम अग्निको ८ धनवा योग धनके लिये स्तुत
करो ९ नररूप अग्नि १२ शुभदानके लिये १३ गृह रूप है ॥ ५ ॥

प्रस्तावत्ररपि वृहती छन्दोभिर्देवता-

श्रुधि श्रुतकर्णावन्दिभिर्देवैरग्रे सयावभिः । आसी
दतुवर्हिषिभिर्त्रो अर्यमा प्रातयावभिरध्वरे ॥ ६ ॥ ५०

हे (श्रुतकर्णा) अत्रवणा समर्थाभ्यां कर्णाभ्यां युत (अग्रे) आह
वनीयामे (श्रुधि) अष्टु (मित्रः) देवः (अर्यमा) देवः (प्रातयावभिः)
प्रातः काले देवयजने गच्छद्भिः (सयावभिः) समान गतिभिः (वन्दि
भिः) वोढुभिः (देवैः) सह (अध्वरे) यज्ञमध्ये (वर्हिषि) दर्भे (आ
सीदतु) उपविशतु ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अत्रवणा समर्थ कानवाले २ आहवनीयाग्नि ३ सुनो ४ मि
त्र ५ अर्यमा देवता ६ प्रातः काल देवयजनम्यानमें जानेवाले ७ सह विबोढा ८
देवताओंके साथ ९ यज्ञके मध्य १० कुशासन पर १२ वेदों ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (श्रुतकर्णा) अत्रवणा समर्थाभ्यां कर्णा
भ्यां युत (अग्रे) महापुरुष (श्रुधि) अष्टु (मित्रः) मानससूर्यः
(अर्यमा) मनश्च । मनः पितरः श० १४। १५। १३ (प्रातयावभिः)
प्रातः समाधिकालेऽन्तर्गमनशीलैः (सयावभिः) समान गति
भिः (वन्दिभिः) देहस्य वोढुभिः दीर्घैर्वावहदीप्तौ (देवैः) प्राणैः सह
प्राणा देवाः श० ६। ३। १। १५ (अध्वरे) योगयज्ञे (वर्हिषि) सुपुण्या

यां (आसीदत्तु) ॥ ६ ॥

भाषार्यः गृहे ऋवर्णसमर्थकणीवाले २ महापुरुष ३ सुनो ४ मानससूर्य ५
शौरमन ६ समाधिकालपर्यन्तर्गमनशील ७ समानगति ८ देहधारक ९ प्रा
णोंके साथ १० योगयज्ञके मध्य ११ सुषुम्णापरवैद्यो ॥ ६ ॥

सौभारिर्ऋषिर्ब्रह्मती छन्दोमिर्देवता-

प्रद्वोदासोऽग्निद्वन्द्वानमज्मना । अणुमा
नरपृथिवीविवाचतेतस्थानाकस्यशर्माणा ॥ ५१
(देवः) द्योतमानः (इन्द्रः) परमैश्वर्ययुक्तः । द्वाद्विपरमैश्वर्यत-
स्मादौणादिके रप्रत्ययरूपम् (ने) च (द्वोदासः) दिवोदासो
जीवस्तत्सम्बन्धी (अग्निः) (मातरं) (पृथिवी) (अणु) विशेषेण
नुलस्य (मज्मना) वलेन (नाकस्य) स्वर्गरूपयज्ञस्य (वाचते)
(वै) वायुस्तेनाचते (शर्माणा) गृहेऽग्निकुण्डे (प्रतस्थौ) प्रतिष्ठते ७
भाषार्यः - १ द्योतमान २ परमैश्वर्ययुक्त ३ शौर ४ जीवसम्बन्धी ५ अग्नि ६ ७
पृथिवीमाताको ८ देखकर टवलसे ९ स्वर्गरूपयज्ञके १० वायुसे वाचते
११ गृह अग्निकुण्डमे १२ प्रतिष्ठते इत्या ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - (देवः) मायाकीडणकैः कीडनशीलः (इन्द्रः)
परमैश्वर्यसम्पन्नः (ने) च (द्वोदासः) जीवात्मसम्बन्धी (अग्निः)
आत्माग्निः (मातरम्) (पृथिवीम्) योगभूमिं (व्यनु) विशेषेणा-
नुलस्य (मज्मना) योगवलेन (नाकस्य) भृकुटेः (वाचते) वा
प्राणस्तेनाचते (शर्माणा) गृहे भृकुटिचक्रे (प्रतस्थौ) प्रतिष्ठते ७
भाषार्यः - १ मायाके खिलोनोंसे कीडनशील २ परमैश्वर्यसम्पन्न ३
शौर ४ जीवात्मसम्बन्धी ५ आत्माग्नि ६ ७ योगभूमिको ८ विशेषदेखकर टयो

गवलसे १० भृकुटिके ११ प्राणाद्यन भृकुटिचक्रपर १३ स्थितुं ज्ञाना ॥ ७ ॥

मेधान्तिथिर्मेधातिथिश्चोभासपीवृहतीछन्दइन्द्रोदेवता

अधज्मोअधवादिवावृहतोरोचनोदधि। अथो

वर्द्धस्वतन्वागिरोममाज्ञातासुकृतोष्टणा। ८। ५२

उत्यानावस्थायांहे (सुकृतो) योगयज्ञानुष्ठातः यजमान। इ

न्द्रौवैयजमानः श० १।२।१।११ (वृहतः) महतः (रोचनात्)

दीप्यमानात् गगनमुण्डलात् (अध) अधः (वा) (दिवः) भृ

कुटिमुण्डलात् (अध) (अधः (ज्मः) मानसभूमिः (आधि) उप

रि (अथो) (अ) आत्मपतिविंशः (य) प्राणस्तयोः समूह रूपे

णा (तन्वा) शरीरेण (वर्द्धस्व) (ममाज्ञाता) ममत्वेत्पन्नया (गि

रो) वाचा (ष्टणा) तंशरीरं प्रीणाय ॥ ८ ॥

भाषार्थः १ हेयजमान उत्यान अवस्थामें २, ३, ४ महादीप्यमान गगन

मंडलसेनीचे ५ तथा ६, ७ भृकुटिमंडल सेनीचे ८, ९ मानसभूमिके ऊपर १०

प्राणपतिविंशसमूह रूप ११ शरीरकरके १२ वृद्धिपाशो १३ ममत्वसे उत्पन्न

१४ वाणीके द्वारा १५, १६ उस शरीरको पुष्टकरो ॥ ८ ॥ ५२

अथाधिदैवम् - हे (सुकृतो) शोभनकर्मवन्निन्द्रपरमेश्वर

(अध) अथ (वृहतः) महतः (रोचनात्) नक्षत्रैर्दीप्यमानात्त्वगी

त् (अधवा) अपिवा (दिवः) अन्तरिक्षात्प्रादुर्भूत्वा (ज्मः) अधिव्य

(आधि) उपरि (अथो) हिरण्मयेन ज्योतिर्मयेन नि० ज्योतिर्वैद्वि

रायं श० ६।७।१।२ (तन्वा) शरीरेण (वर्द्धस्व) (ममा) मदीय

या (गिरो) स्तुत्या (जाता) जजानिमदीयान्यपत्यानि (ष्टणा)

अभिलषितैः फलैरा पूरय ॥ ८ ॥

भाषार्थः- १ हे शोभनकर्मापरमेश्वर २ ३ ४ नक्षत्रोंसे दीप्यमान स्वर्गसे
 ५ अथवा ६ अन्तरिक्षसे प्रकट होकर ७ ८ पृथिवीके ऊपर ९ १० ज्योतिर्म
 ११ यशरीरके साथ १२ रद्धिपाशो १३ मेरी १४ स्तुतिके द्वारा १५ मेरी सन्तानों
 को १६ अभिलाषित फलोंसे पूर्ण करो ॥ ८ ॥

विश्वामित्रवरपिर्वृहती छन्दोभिर्देवता-

कायमानो वनात् वन्यान्मुदकानि (कायमानः)
 ग्रे प्रमृषे निवर्तनं यदूरं सन्निहा भुवः ॥ ८ ॥ ५३ ॥

हे (अग्ने) (यत्) यस्मात् (वना) वनान्युदकानि (कायमानः)
 कामयमानस्त्वं (मातृ) मातृभूताः (अपः) (अज
 गन्) अगमः गतवानसि समुद्रेषु विद्युते च बहुधा विद्यमानत्वा
 त् (ते) नव (तत्) (निवर्तनम्) निवारणं (ने) (प्रमृषे) नक्षमे-
 मृषमायां (यत्) यस्मात् (दूरं) (सन्) अदृश्यतया दूरं सन्
 (इह) अस्मिन्यज्ञे (आभुवः) प्रकटो भवसि ॥ ८ ॥

भाषार्थः १ हे अग्ने २ जिस कारण ३ जलोंको ४ चाहते तुमने ५ मातारूप
 ६ जलोंको ७ बडवानल और किन्ती रूपसे प्राप्त किया है ८ नेरा ९ वह १० निवार
 ११ नहीं १२ सहना हूँ जिस कारण १३ १४ आदृश्य होनेसे दूर होने तुम १५
 १६ सयज्ञमें १७ प्रकट हुए ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (अग्ने) आत्माग्ने (यत्) यस्मात् (वना) व
 नानि गगनामृतोदकानि (कायमानः) कामयमानस्त्वं (मातृ)
 मातृभूतानि (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (अजगन्) कमलस्थानां
 नां देवानां रूपेण (ते) तत् (निवर्तनम्) बहुरूपधारणस्य नि
 वारणं (ने) (प्रमृषे) (यत्) यस्माद् ज्ञानां दृष्टौ (दूरं) (सन्) (इह)

देहे (आभुवः) नानारूपेण ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्माग्रे २ जिस कारण ३ गगनामृत रूप जलों को ४ चा
हने बलने तुमने ५, ६ मातारूप कमलान्तरिक्षों को ७ देवतारूप संब्याप्त किय
पत्तेरे ८ उस १० बहु रूप धारण के निवारण को ११ नहीं १२ सहता हूँ १३ जि
स कारण अज्ञानियों की दृष्टि में १४, १५ दूर होते हुए १६ इस देह में १७ ना
नारूपसे प्रकट होते हो ॥ ६ ॥

कएवञ्चपि वृहती छन्दोमिर्देवता-

नि^१त्वा^२म^३म^४नु^५र्द^६धे^७ज्यो^८ति^९र्ज^{१०}ना^{११}य^{१२}श^{१३} श्व^{१४}ते । दी^{१५}दे^{१६}
थ^{१७}क^{१८}ए^{१९}व^{२०}ञ्च^{२१}त^{२२}जा^{२३}त^{२४}उ^{२५}क्षि^{२६}त^{२७}ाय^{२८}न^{२९}म^{३०}स्य^{३१}न्ति^{३२}कृ^{३३}ष्ट^{३४}यः ॥ १० ॥ ५४

हे (अग्ने) (मने) प्रजापतिः (ज्योतिः) ज्योतिस्वरूपं (त्वाम्)
(शश्वते) धर्मेऽन्तरभृत्याय (जनाय) (निदधे) देवयजन-
देशे स्थापितवान् (ञ्चतजातः) च्चतेन यज्ञेन निमित्तभूते
नोत्पन्नः (उक्षितः) हविर्भिस्तर्पितस्त्वं (कोएव) मेधाविनि
नि० (दीदेथ) दीप्तवानासि (यम्) त्वां (कृष्टयः) मनुष्याः (न
मस्यन्ति) नमस्कुर्वन्ति ॥ १० ॥ ५४

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ प्रजापतिने ३, ४ ज्योतिस्वरूप तुमको ५, ६ धर्मि
ष्टपुरुष समूह के लिये ७ देवयजन स्थान में स्थापन किया ८ यज्ञ निमित्त
उत्पन्न ९ हविसे तर्पित तुम १० मेधावी के समीप ११ प्रदीप्त होने हो १२ जिस
तुमको १३ मनुष्य १४ नमस्कार करते हैं ॥ १० ॥ ५४

इति पञ्चमी दशति

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनूज्वाला प्रसाद शर्मकृते सामवे
दीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य पञ्चमः खण्डः

अथ षष्ठः खण्डः

वसिष्ठश्चरुपिर्वहती छन्दोमिर्देवता-

देवावो द्रविणोदाः पूर्णा विवष्टुः सिचम् । उद्वो सिच्वे
ध्वमुपवाएणाध्वमो दिद्वो देवो हते ॥ १ ॥ ५५

(द्रविणोदाः) धनानां दातानि ० २ १० (देवः) अग्निः (वः) यु-
ष्मदीयां (पूर्णा) हविषा पूर्णा (आसिचम्) आसिक्तां सुचं (वि-
वष्टु) कामयताम् (उत्सिञ्चध्वंवा) ध्रुवग्रहेण होतृ चमसं प्र-
रयत (उपएणाध्वंवा) अग्रये सोमं प्रयच्छत । वाशब्दो समुच्च-
यार्थो (आदिद्) अनन्तरमेव (देवः) अग्निः (वः) युष्मान् (सो-
हते) वर्द्धयति । वंहते इत्यस्य रूपम् ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ धनदाता २ अग्निदेवता ३ तुम्हारे ४ हवि पूर्णा ५ सुचको
६ चाहो ७ ध्रुवग्रह से होतृ चमसको पूर्ण करो ८ अग्निको सोम सर्पण क-
रो ९ तदनन्तर १० अग्निदेवता ११ तुमको १२ बढाता है ॥ १ ॥

अथाध्यात्मम् - हेवागाद्यन्विजः (द्रविणोदाः) योगधना-
नां दाता (देवः) आत्माग्निः (वः) युष्मदीयां (पूर्णा) इन्द्रियैः
पूर्णा (आसिचम्) आसिक्तामात्ममति विंवरूपां पराम् (विवष्टु)
कामयताम् (उत्सिञ्चध्वंवा) आपानेन प्राणं प्ररयत । प्राणो
वैग्रहः सोऽपानेनाग्निग्रहेण गृहीतः श ० १४ ६ २ २ (उपए-
णाध्वंवा) आत्माग्रये मति विंवरूपं यच्छत (आदिद्) अनन्तरमे-
व (देवः) आत्माग्निः (वः) युष्मान् (सोहते) ब्रह्मणि बहति ।
वह प्राणो ॥ १ ॥

कावना

भाषार्थः - हेवागाद्यन्विजो १ योगधनो २ आत्माग्नि ३ तुम्हारे ४ इन्द्रि-

योंसे पूर्ण ५ आत्मप्रतिविम्बरूपपराको ६ चाहो ७ अपानसे प्राणको पूर्णकरो
८ आत्माग्नि केलिये प्रतिविम्बको अर्पण करो ९ तदनन्तर १० आत्माग्नि ११
तुमको १२ ब्रह्ममें प्राप्न करता है ॥१॥

कावऋषिर्ब्रह्मणी ब्रह्मणोऽस्यत्याद्या देवतैः

प्रैतु ब्रह्मणो स्पतिः प्रदेव्यतु सूनृता । अच्छो वीरनय
पाङ्क्तिराधसं देवाय ज्ञं नयन्तु नः ॥ २ ॥ ५६

(ब्रह्मणो स्पतिः) वेदस्यपालकः (अग्ने) महानारायणाग्निः (अच्छो
अभिमुखं प्रैतु) ज्ञानदृष्टिगोचरो भवतु (सूनृता) सत्यस्वरूपा
(देवी) पराशक्तिः (प्रैतु) ज्ञानदृष्टिगोचरा भवतु किञ्च (देवाः)
देवाः (नः) अस्माकं (वीरम्) शत्रूणां मुन्मूलयितारं (नयन्तु)
नरस्य परमेश्वरस्यार्हं (पाङ्क्तिराधसम्) हविःपंक्तिभिः समृद्धं
(यज्ञम्) द्रव्ययज्ञं (नयन्तु) परमेश्वरे प्रापयन्तु ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ वेदकारक्षक २ महानारायणरूपअग्नि ३, ४ ज्ञानदृष्टि-
गोचरहो ५ सत्यस्वरूपा ६ पराशक्ति ७ ज्ञानदृष्टिगोचरहो ८ देवता ९ हमारे
१० शत्रुनाशक ११ परमेश्वरयोग्य १२ हविपंक्तिसे समृद्ध १३ द्रव्ययज्ञको
१४ परमेश्वरमें भासकरो ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) सर्वव्यापी (ब्रह्मणो स्पतिः) प्राणाः । प्राणो
हि ब्रह्मणो स्पतिः श० १४। ४। १। २३ (अच्छो) आप्तुम् (प्रैतु) अस्मा-
न्याप्नोतु (सूनृता) सत्यस्वरूपा (देवी) महावाक् (प्रैतु) (देवाः)
प्राणाः (नः) अस्माकं (वीरम्) निःशेषेण कामादीनां मुन्मूल-
यितारं (नयन्तु) नरस्य परमेश्वरस्य सायुज्यार्हं (पाङ्क्तिराधसम्) इ-
न्द्रियपंक्तिभिः समृद्धं (यज्ञम्) जीवात्मानं । यजमानो यज्ञः श०

१४
१३।२।१।१(नृयन्तु)परमेश्वरेप्रापयन्तु॥२॥

भाषार्थः- १ सर्वव्यापी २ प्राण ३ ४ हमको प्राप्त करो ५ सत्यस्वरूपा ६ महा
वाक् ७ हमको प्राप्त करो ८ प्राण ९ हमारे १० कामादिकेनाशक ११ परमेश्वरकी
सायुज्यके योग्य १२ इन्द्रियपंक्ति से समृद्ध १३ जीवात्माको १४ परमेश्वरमें
प्राप्त करो ॥ २ ॥ कण्वऋषिर्वहती लन्दो यूपानिर्देवता

ऊर्द्ध ऊषुणा ऊतये तिष्ठो देवान सुविता । ऊर्द्धो वाज
स्य सनिता यदेज्जिभिर्वाघ्निर्विहयो महे ॥३॥ ५७

हे (ऊषु) ऋषिः ऊषुरेतस्तेन (उ) उत्पन्नो देह ऊषुस्तस्य (स्य) आत्मा
ऊष्वः हे भूतात्मन् (वाजस्य) स्वात्मारूप हविषः (सनिता) दा-
तात्वं (नः) अस्माकं योगिनाम् (ऊतये) रक्षणाय (ऊर्द्धः) समा-
धिस्थः (तिष्ठ) (न) यथा (सविता) सूर्यः (ऊर्द्धः) तिष्ठति (यन्) य-
स्मात्कारणात् (अज्जिभिः) तव तिलकरूपैः (वाघ्निः) वागाद्यत्वा-
त् (विहयो महे) विशेषेण ह्वयामः ॥ ३ ॥

भाषार्थः- १ हे भूतात्मन् २ अपने आत्मारूप हविके ३ दाना तुम ४ हम योगि-
योंकी ५ रक्षाके लिये ६ समाधिस्थ ७ अरे ८ जैसे ९ सूर्य १० ऊंचा स्थित है ११ जिस
कारण १२ तैरे तिलकरूप १३ वागाद्यन्विजोंके साथ तुमको १४ हम विशेष आह्वा-
न करते हैं ॥ ३ ॥

अथाधिदेवम् हे (ऊष्व) वृक्षज यूपनिष्ठाग्ने (वाजस्य) हवि-
षान्नस्य (सनिता) दातात्वं (नः) अस्माकं (ऊतये) रक्षणाय
(ऊर्द्धः) उन्नतः (तिष्ठ) (न) यथा (सविता) सूर्यदेवः (ऊर्द्धः)
तिष्ठति (यन्) यस्मात्कारणात् (अज्जिभिः) त्वामज्जिभिः (वा-
घ्निः) यत्तं वह्निः ऋत्विग्भिः सह (विहयो महे) ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे यूपस्थामे २ ३ हविस्वरूपन्नकेदानात्तुम ६ हमारी परस्त्राके लिये ६ ऊचे ७ वैरो ८ जैसे ९ सूर्यदेवता १० ऊचाठैरताहै ११ जिसकारण १२ तव गुण प्रकाशक १३ यत्र वाहक ऋत्विजोके साथ १४ हम आपका आह्ला न करतेहै ॥ ३ ॥ सौभरिक्वरपिर्वहनी छन्दोभिर्देवता-

प्रयो^३राये^३निनीषति^३मर्त्तो^३यस्त्वेव^३सो^३दाशन्^३। सवी^३
 र्न्धत्ते^३अग्र^३उक्थशं^३सिन्^३त्मनो^३सहस्र^३पोषिणाम्^३ ४
 हे (वसो) प्रशस्तधनवन् (अग्ने) (ये) (मर्त्त) मनुष्यस्त्वां (राये)
 धनार्थं (प्रनिनीषति) प्रणेतुमिच्छति (ते) तुभ्यं (दाशन्) हवी
 षिप्रयच्छति (सः) मनुष्य (उक्थशंसिन्म) उक्तयानां शस्त्रा
 णां शंसितारं (त्मना) आत्मनैव (सहस्रपोषिणोऽन) पशुधनं
 (वीरम्) पुत्रं (धत्ते) धारयति प्राप्नोति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे प्रशस्तधनवन् २ अग्ने ३ जो ४ मनुष्य ५ धनकेलिये ६ तु मको प्राप्तकरनाचाहता है वह ७ आपके लिये ८ हविदेताहै ९ वह मनुष्य १० शस्त्रोंके वक्ता ११ १२ अपने प्रयत्न से बहुधनी १३ पुत्रको १४ प्राप्त करता है ॥ ४ ॥
 अथाध्यात्मम्- हे (वसो) ब्रह्माभुरूप (अग्ने) आत्माग्ने (ये) (मर्त्तः) मनुष्यस्त्वां (राये) योगधनार्थं (प्रनिनीषति) आत्मनि प्रणेतुमिच्छति (ते) तुभ्यं (दाशन्) इन्द्रियरूप हवीषिप्रयच्छति (सः) योगी (उक्थशंसिन्म) शस्त्राणां शंसितारं (सहस्रपोषिणाम्) महापुरुषपूजकं (वीरम्) कामयुद्धे भूरमात्मप्रतिद्विवं (त्मना) आत्मन् आत्माग्नौ (धत्ते) धारयति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे ब्रह्माभुरूप २ आत्माग्ने ३ जो ४ मनुष्य ५ योगधनके लिये ६ तुमको प्राप्तकरनाचाहता है ७ वह आपके लिये ८ इन्द्रियरूप हविको देताहै

६ वहयोगी १० शंखवक्त्रा ११ महापुरुषके पूजक १२ कामयुद्ध में मूरुआत्मप्रति
विंवको १३ आत्माग्नि में १४ धारण करता है ॥ ४ ॥

कएव ऋषिर्हती हन्दोऽग्निर्देवता

प्र^१वो^३य^३ह^३पु^३रू^३णां^३वि^३शो^३दे^३व^३य^३ती^३ना^३म् । अ^३ग्नि^३ः^३सू^३
क्ते^३भि^३व^३चो^३भि^३र्दृ^३णी^३म^३हे^३य^३ः^३स^३मि^३द^३न्य^३द्^३न्ध^३ते^३ ॥ ५ ॥

हे ऋत्विग्यजमानाः (देवयतीनाम्) विहत्सुत्यागशीलानां
पुरूषाम्) ब्रह्मनां (विशाम्) प्रजा रूपाणां (वः) युष्माकम-
नुग्रहाय (यहम्) महान्तं (अग्निम्) (सूक्तेभिः) सूक्त रूपैः
(वचोभिः) वाक्यैः (प्रदृणीमहे) याचामहे (अन्ये) (इत्) अ-
न्येष्वृषयः (यम्) अग्निं (समिन्धते) सम्यग्दीपयन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विक् यजमानो १ विद्वानोंके मध्यत्यागशील २ ब्रह्म
त ३ प्रजा रूप ४ आपलोगोंके अनुग्रहार्थ ५ महान्त ६ अग्निको ७ सूक्त रू-
प ८ वचनोंके द्वारा ९ हमयाचना करते हैं १०, ११ दूसरे ऋषिभी १२ जिस अ-
ग्निको १३ भले प्रकार दीप करते हैं ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - हे वागाद्यृत्विग्यजमाना (देवयतीनाम्)
ब्रह्मज्ञानिपुत्यागशीलानां (पुरूषां) ब्रह्मनां (विशाम्) म-
हापुरुषस्य प्रजा रूपाणां (वः) युष्माकमनुग्रहाय (यहम्) म-
हान्तं (अग्निम्) आत्माग्निं (सूक्तेभिः) (वचोभिः) महावाग्भिः
(प्रदृणीमहे) वयंगुरवो याचामहे (अन्ये) (इत्) अन्येष्वृषयः
(यम्) आत्माग्निं (समिन्धन्ते) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हे वागाद्यृत्विजयजमानों १ ब्रह्मज्ञानियोंके मध्यत्यागशी-
ल २ ब्रह्मत ३ महापुरुषके प्रजा रूप ४ आपके अनुग्रहार्थ ५ महान्त ६ आत्मा

मिको ७, ८ महावाक् द्वारा षडहम गुरुजन याचना करते हैं १०, ११ दूसरे ऋषि भी १२ जिस आत्मा मि को भले प्रकार दीप्त करते हैं ॥ ५ ॥

अन्कील ऋषिर्वहती छन्दोभिर्देवता-

अथमाग्निः सुवीर्यस्य शोहि सौभगस्य । राय ईशो
स्वपत्यस्य गोमत ईशो वृत्रहथानाम् ॥ ६ ॥ ६०

(अथमाग्निः) यजनीयत्वेनाङ्गुल्या निर्दिश्यमानः (आग्निः) (हि)
(सुवीर्यस्य) शोभनसामर्थ्योपेतस्य (सौभगस्य) (ईशो) ई
श्वरो भवति तथा (गोमतः) गवादिपशुयुक्तस्य (स्वपत्यस्य)
शोभनापत्यस्य (रायः) धनस्य (ईशो) तथा (वृत्रहथानाम्) श
त्रुभूतपापविनाशनामपि (ईशो) सर्वस्वप्राप्तिः पापक्षयश्च तस्य
प्रसादाद्भवतीत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ यह २ अग्नि ३ ही ४ शुभसामर्थ्यावान् ५ ऐश्वर्यका ६ स्वामी
होता है तथा ७ गौआदिपशुयुक्त ८ शुभसन्तान युक्त षडहनकानथा १०, ११
शत्रुरूपपापविनाशों का भी १२ स्वामी होता है अर्थात् सर्वस्वप्राप्ति और पा
पनाश उसकी रूपासे होता है ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (अथमाग्निः) (आग्निः) आत्माग्निः (हि) एव (सुवी
र्यस्य) ज्ञेयवत्त्वतः (सौभगस्य) योगेश्वर्यस्य (ईशो) ईश्व
रो भवति (गोमतः) इन्द्रियवतः (स्वपत्यस्य) निरुद्धप्राणस्य
प्राणः । प्रजाश० १४। ४। ३। १४ (रायः) योगधनस्य च (ईशो) तथा
(वृत्रहथानाम्) पापविनाशानां । पाप्मावैलुङ्गः श० नपुंसके भा
वेक्तः (३, ३, ११४) इति क्ते. तप. तनप. तनथनाश्व (७, १, १५५)
इति तस्य धनादेशरूपम् (ईशो) ॥ ६ ॥

भाष्यः - १ तह २ आत्माग्नि ३ ही ४ ज्ञेष्ठ वल युक्त ५ योगैश्वर्य का ६ स्वा
मी होता है ७ इन्द्रियवान् ८ निरुद्ध प्राणका ९ श्रौर योगधनका १० स्वामी
होता है ११ पापनाशो का भी १२ स्वामी होता है ॥ ६ ॥

वशिष्ठ ऋषिर्वहती छन्दोग्निर्देवता-

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वत्सं होतो नो अर्ध्वरो त्वम्यो
तो विश्ववार प्रचेतो यक्षि च वायम् ॥ ७ ॥ ६१

हे (विश्ववार) सर्ववराणीय (अग्ने) (प्रचेतो) प्रकृष्टमतिः (त्व
म्) (ने) अस्माकं (गृहपतिः) यजमानः (त्वम्) (होता) देवा
नामाह्वता (च) (त्वम्) (पोता) एतन्नामक ऋत्विक् (वा
यम्) वराणीयहविः (यासि) प्राप्नोषितस्माद्देवान् (यक्षि)
यज ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतमिति भगवद्भव
नात् ॥ ७ ॥

भाष्यः - १ हे सवसे वराणीय २ अग्ने ३ ज्ञेष्ठ बुद्धि ४ तुम ५ हमारे ६ यज
मानहां ७ तुम ८ होताहो ९ श्रौर १० तुम ११ पोता नाम ऋत्विजहो १२ वराणी
यहविको १३ मामकरतेहोउसकारण १४ देव यजनकरो ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (विश्ववार) विश्वाख्य शरीरेण वराणीय
(अग्ने) आत्माग्ने (प्रचेतो) सर्वज्ञः (त्वम्) (ने) अस्माकं वागा
दृत्विजां (गृहपतिः) यजमानः (त्वम्) (होता) महापुरुषपु
रुषाणां माह्वता (च) (त्वम्) (पोता) असि (वायम्) वारिभ
वं प्रतिविंवं (यासि) प्राप्नोषितस्मात्पूर्वोक्तान् देवान् (यक्षि)
यज ॥ ७ ॥

भाष्यः - १ हे विश्वनाम शरीरसे वराणीय २ आत्माग्ने ३ सर्वज्ञ ४ तुम

५ ह्रमवागाद्यत्विजोंके ६ यजमानहो ७ तुम ८ महापुरुष पुरुषोंके नाद्धा
नकन्तिहो ९ श्रौ १० तुम ११ पोताहो १२ प्रतिविंवको १३ माप्रं करतेहो उस
कारण पूर्वोक्तदेवताओंका १४ यजन करो ॥ ७ ॥

विश्वामित्रऋषिर्ब्रह्मणी छन्दोभिर्देवता

सखायस्त्वावचमहे देवमर्त्तिसऊनये। अपा
न्नपोतं सुभगं सुदं ससं सुप्रतूर्नि
मनेहसम् ॥ ८ ॥ ३२

हेऽग्नेऽन्माग्नेवा (सखाय) मित्रभूताः (मर्त्तिसैः) मनुष्याः
(अपोम्) (नपातम्) ब्रह्मांभूनां पौत्रं (सुभगम्) ऐश्वर्यवान्
न्तं (सुदं ससम्) सुकर्माणानि ० २ १ (सुप्रतूर्निम्) प्रकर्षणा
शत्रूणां कामादीनाम्वाहिंसितारं। तूर्वितिः हिंसार्थः नि ० २ १ ०
। ३ २ (अनेहसम्) अक्रोधनं। एहः क्रोधनामसुनि ० २ १ ३
(देवम्) (त्वाम्) (ऊनये) रक्षणाय (वचमहे) वृणीमहं। ८
भाषार्थः - हे अग्नेवाऽन्माग्ने १ मित्ररूप २ मनुष्य ३ ४ ब्रह्मांशुकंपौ
त्र ५ ऐश्वर्यवान् ६ सुकर्मा ७ शत्रुवाकाम आदिके हिंसक ८ अकांशी ९ देव
ता १० तुमको ११ रक्षाके लिये १२ ह्रमवर्ते है ॥ ८ ॥

इति श्रीभृगुवंशव्रतं सज्जीनाथ रामसुनुज्वाला प्रसाद शर्म कृते सामवे
दीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः

अथ सप्तमः खण्डः

श्यावाश्ववामदेवो ऋषी त्रिष्टुप छन्दोभिर्देवता

आजुहोता हविषो मर्जयध्वं निहोतारं गृह्णोति
दधिध्वम। इडस्पदेन मसारात हव्यं सपर्य

ताद्यजतम्पस्त्यानाम् ॥१॥ ६३

हेऽत्विजः (१) अग्निं (आजु होत) आह्वयत (हविषा) (मर्ज
यध्वं) शोधयध्वं सम्मार्गत्तपौः कुरुध्वं (इडः) इलायाः (पदे)
उत्तरवेद्यां (होतारम्) देवानामाह्वानारं (गृहपतिम्) गृहपाल
कं (निदधिध्वम्) निःशेषेणाधारयध्वम् (नमसा) नमस्कारे
णाहविषावायुक्तम् (रातहव्यम्) दत्तहविष्कं (पस्त्यानाम्)
यज्ञगृहाणां नि० ३।४।७ मध्ये (यजतम्) यजनीयं पूजनीयं
(१) अग्निं (सपर्यत) परिचरत ॥१॥

भाषार्थः - हेऽत्विजो १ अग्निका २ आह्वानकरो ३ हविसे ४ शोधन
करो ५, ६ उत्तरवेदीपर ७ देवताओं के आह्वाना ८ गृहपालकको ९ धार
णकरो १० नमस्कारवाहविसेयुक्त ११ दत्तहविष्क १२, १३ यज्ञशालाओं
में पूजनीय १४ अग्निको १५ सेवो ॥१॥

अथाध्यात्मम्- हेवागाद्यत्विजः (१) आत्माग्निं (आजु हो
त) (हविषा) इन्द्रियरूपहविषा (मर्जयध्वम्) शोधयध्वं (इ
डः) (पदे) उदरस्यस्थाने मनसि हृदये वा । उदरमेवास्येडा प्र०
११।२।६।८ (होतारम्) महापुरुषपुरुषाणामाह्वानारं (गृहप
तिम्) व्याप्तिसमाधिदेहस्य स्वामिनमात्माग्निं (निदधिध्वम्)
(नमसा) नमस्कारेणासह (रातहव्यम्) दत्त हविष्कं (पस्त्या
नाम्) कमलानां मध्ये (यजतम्) यजनीयं (१) आत्माग्निं
(सपर्यत) ॥१॥

भाषार्थः - हेवागादिऽत्विजो १ आत्माग्निका २ आह्वानकरो ३
इन्द्रियरूपहविसे ४ शोधो ५, ६ मनवाहृदयमें ७ महापुरुषपुरुषोंके आ

वह्नात् ८ व्याप्तिसमष्टिदेहके स्वामी आत्माग्निको षडधारणकरो १० नम-
स्कारके साथ ११ दत्तहविष्क १२, १३ कमलोंके मध्य यजनीय १४ आत्मा
ग्निको १५ सेवो ॥ १ ॥ वाएहव्य ऋषिर्जगती छन्दोभिर्देवता-

चिञ्चइच्छि^{३२३}शो^३स्तरु^३णा^३स्य^३वक्ष्ण^३धो^३नयो^३माते^३रो
न्वेति^३धातवे^३। अ^३नू^३धा^३य^३द^३जी^३जन^३द^३धा^३चि^३दो^३।
ववक्ष्ण^३त्स^३धो^३माहि^३द^३त्य^३च^३रन्^३ ॥ २ ॥ ६४

(शिशोः) प्रजापतेः पुत्रस्य (तरुणस्य) अजरामरस्याग्नेः (वक्ष-
यः) हविर्वहनं । वक्ष्णोणादिको ऽथसप्रत्ययः (चिञ्चइत्) आ-
श्वर्यभूतमेव । चिञ्चइति पुल्लिङ्गे व्यत्ययेनेति (३, ४, ६८) बोध्य-
म् (यः) अग्निः (मातेरो) सर्वस्य निर्मात्र्यौ सर्वस्य मातृभूते
द्यावापृथिव्यौ (धातवे) स्तनपानाय धेत्पानेतुमर्थे इति (३
४, ४६) तवेन्प्रत्ययः (न्) (अन्वेति) नगच्छति ब्रह्मरूपत्वा-
त् (यन्) यस्मात् (अनूधाः) ऊर्ध्वरोहितः प्रजापतिः (अजीजन-
त्) स्वमुखान् प्रादुश्चकार (अधाचित्) उत्पत्यन्तरमेव (स-
द्यः) यज्ञे सति शीघ्रं (माहि) महान्तं (दत्यम्) दूतकर्म । कर्म-
णि यत्प्रत्ययः (चरन्) आचरन् (आववक्षत्) देवान्प्रतिहवीं
प्यावहति ॥ २ ॥ ६४ ॥

भाषार्थः - १ प्रजापतिके पुत्र अजरामर अग्निका ३ हवि मापण ४ आ-
श्वर्यरूपही है ५ जो अग्नि ई पृथिवी स्वर्ग को ७ स्तनपान के लिये ८, ९ प्राप्न-
नहीं करता है ब्रह्मरूप होने से १० जिस कारण ११ स्तन रहित प्रजापति
ने १२ अपने मुखसे प्रकट किया १३ नदनंतर १४ यज्ञ होने पर शीघ्र १५
महान् १६ दूतकर्म को १७ करता १८ देवताओं के पास हविको पड़ंचा

अग्न्याख्येन ज्योतिषा (संविशस्व) यज्ञे प्रवेशं कुरु (परमे) (जनिवे) यज्ञे (संवेशनः) सम्यक् प्रवेष्टा (चारुः) कल्याणभूतः (देवानाम्) (प्रियः) त्वं (तन्व) यजमानाय (एधि) वृद्धिं प्राप्नुहि ३
 भाषार्थः - हे अग्ने १ तेरी २ यह विजली नाम ३ एक ज्योति है ४, ५ अष्ट सूर्य ६ तेरी ७ एक ज्योति है ८, ९ तीसरी अग्नि नाम ज्योति से १० यज्ञ में प्रवेश करो, ११, १२ यज्ञ में १३ प्रवेश कर्ता १४ कल्याण रूप १५ देवताओं के १६ प्रिय तुम १७ यजमान के लिये १८ वृद्धि को पाओ ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - हे आत्माग्ने (ते) तव (इदम्) जीवाख्यम् (एकम्) ज्योतिः (परः) (ऊ) अन्नर्यामीश्वरः (ते) तव (एकम्) ज्योतिः (तृतीयेन) ज्योतिषा) महापुरुषाख्य ज्योतिषा (संविशस्व) योगिनां भक्तानाम्वा मुनसि प्रवेशं कुरु (परमे) (जनिवे) योग यज्ञे भक्तियज्ञे वा (संवेशनः) सम्यक् प्रवेष्टा (चारु) कल्याणरूपः (देवानाम्) विदुषां भक्तानां । विद्वांसो हि देवाः श० ३ । ७ ३ । १० (प्रियः) त्वं (तन्व) पुत्ररूपाय भक्त्याय (एधि) वृद्धिं प्राप्नुहि ३
 भाषार्थः - हे आत्माग्ने १ तेरी २ यह जीव नाम ३ एक ज्योति है ४, ५ अन्नर्यामी ईश्वर ६ तेरी ७ एक ज्योति है ८, ९ महापुरुष नाम ज्योति से १० योगी भक्तों के मन में प्रवेश करो ११, १२ योग यज्ञ वा भक्तियज्ञ में १३ प्रवेश कर्ता १४ कल्याण रूप १५ ज्ञानी भक्तों के १६ प्रिय तुम १७ पुत्र रूप भक्त के लिये १८ वृद्धि पाओ ॥ ३ ॥ कुत्सः ऋषिर्जगती छन्दोभिर्देवता-

इमं थं स्तोमं महते जानि वेदसे रथो मिव संमहे मा मनीषयो । भद्रा हि नः प्रमेति रस्यसे थं सदयमैसै रव्यमारिषामावयन्तव ॥ ४ ॥ ६६ ॥

(अहते) पूज्याय (जाने वेदसे) जानाना मुत्पन्नानां वेदित्रे अभ-

ये (मनीषया) बुद्ध्या (इमम्) वेदोक्तं (स्तोमम्) स्तोत्रं (रथम्) (इव) (सम्महेम) प्रशंसयामः महपूजायां (हि) यस्मात् (अस्य) अग्नेः (संसदि) यज्ञशालायां (ने) अस्माकं (प्रमतिः) प्रकृष्टा बुद्धिः (भद्रा) कल्याणीतस्मात् हे (अ) सर्वव्यापिन् (अग्ने) (वयम्) (तव) (सख्ये) सखित्वे सति (मा) (रिषाम) शत्रुभ्यो हिंसितान भवाम ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ पूज्य २ स्तुतिके ज्ञाता अग्निके लिये ३ बुद्धि द्वारा ४ इत्येवोक्त ५ स्तोत्रको ६ ७ रथकी समान ८ इम प्रशंसा करते हैं ९ इत्यग्नि की १० यज्ञशालामें ११ हमारी १२ अष्ट बुद्धि १३ कल्याणरूपा है उसकारण हे १४ सर्वव्यापिन् १५ अग्ने १६ इम १७ तेरी १८ भक्तिमें १९, २० शत्रुओं से हिंसित न हों ॥ ४ ॥
अथाध्यात्मम् - (अर्हते) प्रतिविंवह विषा पूज्याय (जानुवेदसे) सर्वज्ञात्माग्ने (मनीषया) योगबुद्ध्या (इमम्) (स्तोमम्) प्राणं । प्राणावै स्तोमाः श० ८ । १ । ३ (रथम्) (इव) (सम्महेम) पूजितं कुर्मः (हि) यस्मात् (अस्य) आत्माग्ने (संसदि) योगयज्ञे (ने) अस्माकं (प्रमतिः) व्यवसायात्मिका बुद्धिः (भद्रा) कल्याणीतस्मात् हे (अ) सर्वव्यापिन् (अग्ने) आत्माग्ने (वयम्) (तव) (सख्ये) सखित्वे सति (मा) (रिषाम) संसारबंधनेन हिंसितान भवाम ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ प्रतिविंवह नाम हविसे पूज्य २ सर्वज्ञ आत्माग्निके लिये ३ योग बुद्धि द्वारा ४ इत्येव प्राणको ६ ७ रथकी समान ८ इम पूजते हैं ९ जिस कारण १० इत्यग्नि के ११ योग यज्ञमें १२ हमारी १३ व्यवसायात्मिका बुद्धि १४ कल्याणी है १५ हे सर्वव्यापिन् १६ आत्माग्ने १७ हम १८ तेरी १९

भक्तिमें २७२ संसारबंधनसे हिंसित न होंवे ॥ ४ ॥

द्वयोर्भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दो वैश्वानरो म्निर्देवता-
 मूर्द्धनिर्दिवोऽरति एथिव्या वैश्वानर मृतभ्राजा
 तेमग्निम् । कविं सभ्राजं मतिथिजनानामास
 न्नः पात्रं जनयंत देवाः ॥ ५ ॥ ६७

(देवाः) महापुरुष पुरुषाः (दिवः) स्वर्गस्य (मूर्द्धनिम्) सूर्यरूपं
 (एथिव्याः) (अरतिम्) एथिवीतः हवींषि गृहीत्वा ध्रुलोकस्य ग-
 न्तां (वैश्वानरम्) विश्वेषां सर्वेषां नृणां सम्बन्धिनं (ऋते)
 ब्रह्मणि (भ्राजातम्) प्रादुर्भूतं (कविम्) कान्त दर्शिनं (सभ्राज
 म्) सम्यग्रजमानं (जनानाम्) उत्पन्नानां (अतिथिम्) (नः)
 अस्माकं (पात्रम्) दानपात्रं (अग्निम्) (आसने) आसनि आस्ये
 ब्राह्मणानां सन्यासिनाम्वा मुखे (जनयन्) उपादयन् ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ महापुरुष पुरुषोन्ने २ सूर्यरूप ४.५ एथिवी से हविले कर
 स्वर्गमें जाने वाले ६ सर्वजन सम्बंधी ७.८ ब्रह्ममे प्रादुर्भूत ९ कान्तदर्शी १०
 भले प्रकार राजमान ११ सृष्टिके १२ अतिथि १३ हमारे १४ दानपात्र १५ अ-
 ग्निको १६ ब्राह्मणोंके मुखमें १७ प्रकट किया ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (देवाः) योगिनः (दिवः) भृकुटेः (मूर्द्धनिम्)
 सूर्यज्योतिस्वरूपं श० १४।१।१।१० (एथिव्याः) मानसभूमेः
 (अरतिम्) इन्द्रियादीनि हवींषि गृहीत्वा भृकुटि मंडले गन्ता
 रं (वैश्वानरम्) विश्वान्सर्वान् ब्रह्मणि नयति तं (ऋते) ब्रह्म
 णि (भ्राजातम्) प्रादुर्भूतं (कविम्) मेधाविनं (सभ्राजम्)
 सम्यग्रजमानं (जनानाम्) जीवानां (अतिथिम्) (नः) अस्म

श्लो १२ तुमको १३ भुभस्तुतिरूप १४ वचन १५ वली करते हैं १६ और वशी क
रते हैं १७ जैसे १८ घोड़े १९ संग्रामको जय करते हैं ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्- (अग्ने) हे आत्माग्ने (देवोः) विद्वांसः (उक्ते
येभिः) प्राणैः । प्राणो वाऽ उक्थं प्राणो हीदं सर्वमुत्थापय
ति श० १४ । ८ । १४ । १ (त्वत्) त्वत् सकाशात् (व्यजनयन्त) वि
विधानियोगैश्वर्याणि जनयन्ति (न) यथा (पर्वतस्य) (पृष्ठा
त्) (स्थापः) हे (गिर्ववाहः) महावाग्भिर्वहनीयात्माग्ने (तम्)
(त्वा) त्वां (सुष्ठुतयः) (गिरः) महावाचः (वाजयन्ति) वलिनं
कुर्वन्ति (जिग्मुः) वशी कुर्वन्ति च (न) यथा (अश्वैः) (आजि
म्) संग्रामं जयन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः- १ हे आत्माग्ने २ विद्वानलोग ३ प्राणद्वारा ४ तुमसे ५ वल्लवि
धियोगैश्वर्योको प्राप्त करते हैं ६ जैसे ७ पर्वतकी ८ पृष्ठसे ९ जलोंको १० हे
महावाक्योंसे भजनीय ११ उस १२ तुमको १३ ओष्ठस्तुतिरूप १४ महावाक्
१५ वली करते हैं १६ और वशी करते हैं १७ जैसे १८ घोड़े १९ संग्रामको ज
य करते हैं ॥ ६ ॥ वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो मिर्द्विता-

आवो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्यं
यजं रौद्रस्योः । अग्निं पुरातेन चित्तोरचित्ता
द्विरणय रूपमवसे कौण्ठ्वम् ॥ ७ ॥ ६ ॥

हे ऋत्विग्यजमाना (वे) युष्माकं (तनयित्तो) आकास्मिका
अनितुल्यात् (अचित्तात्) मरणात् । न विद्यते चित्तं युस्मिन्त-
स्मात्सर्वेन्द्रियोपसंहाररूपात् (पुरा) प्रागेव (अवसे) स्वर
क्षणाय (अध्वरस्य) यज्ञस्य (राजानम्) अधिपतिं (होतारम्)

देवानामाह्वानारं (रुद्रं) शिवस्वरूपं (रोदस्योः) द्यावापृथिव्योर्मध्ये (सत्ययजम्) सत्यं परमेश्वरं यजन्तं (हिरण्यरूपम्) सुवर्णं प्रभञ्ज्योतिः स्वरूम्वा । हिरण्यं ज्योतिः श० ६।७।१।२ (अग्निम्) (आकृणुध्वम्) यूयं समन्ताद् विभिर्भिर्भजध्वम् ॥७॥ ६६

भाषार्थः - हे ऋत्विज यजमानो १ तुम्हारे २ आकस्मिक वचन तुल्य ३ मरणसे ४ पहिले ही ५ अपनी रक्षा के लिये ६ ७ यज्ञाधिपति ८ देवाद्भानकर्ता ९ शिव स्वरूप १० पृथिवी स्वर्ग के मध्य ११ परमेश्वर का यजन करने वाले १२ सुवर्ण प्रभवा ज्योति स्वरूप १३ अग्नि को १४ हविद्गारा सेवन करो ॥७॥ ६६

अथाध्यात्मम् - हे योगिनः (वः) युस्माकं (तनयित्नां) आकस्मिकाशनि तुल्यात् (अचिन्तात्) मरणात् (पुरा) प्रागेव (अवसे) संसारद्रक्षणाय (अध्वरस्य) योगयज्ञस्य (राजानुम्) स्वामिनं (होतारम्) महापुरुष पुरुषाणामाह्वानारं (रुद्रम्) संसाररोगस्य द्रावयितारं (रोदस्योः) मनोभृकुट्योर्मध्ये (सत्ययजम्) सत्यं यजन्तं (हिरण्यरूपम्) ज्योतीरूपं (अग्निम्) आत्माग्निं (आकृणुध्वम्) यूयं समन्ताद् विभिर्भिर्भजध्वम् ॥७॥

भाषार्थः - हे योगिजनो १ तुम्हारे २ आकस्मिक वचन तुल्य ३ मरणसे ४ पूर्व ही ५ संसार से रक्षा के लिये ६ योग यज्ञके ७ स्वामी ८ महापुरुष पुरुषों के आह्वाना ९ संसार रोगके द्रावक १० मनभृकुटिके मध्य ११ परमेश्वर का यजन करने वाले १२ ज्योति स्वरूप १३ आत्माग्नि को १४ हविषों द्वारा सेवन करो ॥७॥ वसिष्ठ उवाच पितृपुत्रोऽग्निर्देवता-

इन्द्रराजासमयानमाभिः यस्य प्रतीकमाहृतघृते
ना नरोहव्यभिरीडते सर्वाध्वं अग्निर्ग्रमुपसामशोचि ॥७॥

(राजा) दीप्तः (अर्थ्यः) स्वामी हविषां प्रेरको वा (अग्निः) (नमोभिः) स्तुतिभिः (समिन्धे) समिध्यते (यस्य) अग्नेः (प्रतीकम्) मुखं (घृतेन) (आहुतम्) भवति (सवाधः) सज्ज्ञानवाधः (नरः) मनुष्यः (हव्यैभिः) हव्यैः सार्द्धम् (देवते) स्तुवति (सः) अग्निः (उपसाम्) (अग्रम्) (आशोचि) आदीप्यते ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ दीप्त २ स्वामी वा हविषां का प्रेरक ३ अग्नि ४ स्तुतिओं से ५ प्रदीप्त होना है ६ जिस अग्नि का ७ मुख ८ घृत में ९ आहुत होना है १० सवाधा ११ मनुष्य १२ हविषों के साथ १३ जिसकी स्तुति करना है १४ वह अग्नि १५ उपाकालों के १६ आरम्भ में १७ प्रदीप्त होना है ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - (राजा) षडैश्वर्यसम्पन्नः (अर्थ्यः) सर्वस्य प्रेरकः (अग्निः) आत्माग्निः (नमोभिः) नमस्कारैः (समिन्धे) समिध्यते (यस्य) आत्माग्नेः (प्रतीकम्) मुखं (घृतेन) साममून्त्रैः। घृतः सामानि श० ११।५।७।५ (आहुतम्) भवति (सवाधः) संसाररोगग्रस्तः (नरः) मुमुक्षुः (हव्यैभिः) प्राणैर्न्द्रियैः सार्द्धम् (देवते) स्तुवति (सः) आत्माग्निः (उपसाम्) (अग्रम्) ब्राह्ममुहूर्त्तसमाधिकालं (आशोचि) आदीप्यते ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ षट् ऐश्वर्यसे सम्पन्न २ सबका प्रेरक ३ आत्माग्नि ४ नमस्कारों से ५ प्रदीप्त होना है ६ जिस आत्माग्नि का मुख ७ साम मंत्रों से ८ आहुत होना है ९ संसार रोग ग्रस्त १० मुमुक्षु ११ प्राणैर्न्द्रियों के साथ १२ स्तुति करता है १३ वह आत्माग्नि १४ उपसाम १५ ब्राह्म मुहूर्त्त समाधिकाल पर १७ प्रदीप्त होना है ८

विशिरास्वाप्सुर्वापिपुपुच्छन्दोभिर्देवता-

प्रकेतुना वृहता यात्याग्निं रागेदसी वृषभो रोरूति

दिवश्चिदन्तादुपमा मुदानुपामुपस्थमहिषोवर्द्ध-
 (अग्निः) (वृहता) (केतुना) प्रज्ञानेन नि० ३।१२ (रोदसी) घाव
 एधियौ (आ) समन्तात् (प्रयाति) प्रकर्षेण गच्छति व्याप्नोति
 (वृषभः) दृष्टि कर्तृ मेघरूपः सन् (रोरवीति) अत्यर्थं शब्दं करो-
 ति (दिवः) स्वर्गलोकस्य (चिदन्तात्) चिदात्मनः स्वरूपात्सू-
 र्यात् सूर्यरूपात् (उपमाम्) उपमायारूपं ब्रह्माण्डं (उदान्तं)
 उत्कर्षेण व्याप्तवान् (अपाम्) व्यष्टिलक्षणात्तामुदकानां (उप-
 स्थे) उत्सङ्गे (महिषः) विद्युद्रूपेण मद्या भूमेः (षः) शोभारूपः स-
 न् (वर्द्ध) वर्द्धते ॥६॥

भाषार्थः - १ अग्नि २, ३ ज्ञानद्वारा ४ एधिवी स्वर्गको ५ सवशोर से ६ व्या-
 प्तकरता है ७ मेघरूप होना ८ अत्यन्त शब्द करता है ९ स्वर्गलोकके १० सूर्यरू-
 पसे ११ ब्रह्माण्डको १२ जिसने व्याप्त किया १३ जलों के १४ उत्संगमें १५ विज-
 लीरूपसे भूमिका शोभारूप होना १६ दृष्टि पाता है ॥६॥

अथाध्यात्मम् - (अग्निः) आत्माग्निः (वृहता) (केतुना) प्र-
 ज्ञानेन सह (रोदसी) मनोभृकुटी (आ) समन्तात् (प्रयाति)
 (वृषभः) गगनमेघरूपः सन् (रोरवीति) अनाहन शब्दं करोति
 (दिवः) (चिदन्तात्) मानससूर्यरूपात् (उपमाम्) उपमायारू-
 पं शरीरं (उदान्तं) उत्कर्षेण व्याप्नोति (अपाम्) कमलान्तरि-
 स्नाणानि० (उपस्थे) उत्संगे (महिषः) कमस्य देवानां रूपेण
 योगभूमेः शोभारूपः सन् (वर्द्ध) वर्द्धते ॥६॥

भाषार्थः - १ आत्माग्निः २, ३ प्रज्ञानके साथ ४ मनभृकुटिको ५ सवशो-
 रसे ६ व्याप्तकरता है ७ गगनमेघरूप होना ८ अनाहन शब्दको करता है ९, १०

मानससूर्यरूपसे ११ शरीरको १२ व्यापन करता है १३ कमलान्तरिक्षोंके १४ उ
त्संगमें १५ कमलस्थदेवरूपसे यांगभूमिका शोभारूपहोना १६ वृद्धिपाता है

॥६॥

वासिष्ठस्वयिर्जगती छन्दोधिर्देवता-

अग्निनरो दीधितिभिरैरण्यो हस्तच्युतं जनयत प्रश

स्तेम् । दूरेदृशे गृहपतिमथव्युम् ॥ १० ॥ ७२

हे (नरः) नेतारः कृत्विजः (प्रशस्तेम्) प्रकर्षेण स्तुतं (दूरेदृशम्)

दूरदर्शिनं (गृहपतिम्) गृहाणां पालकं (अरण्योः) (अथव्युम्)

गमनवन्तं । अथर्वन्तिर्गन्त्यर्थः नि० २।१४।६७ (हस्तच्युतं) अन्तर्हि

तं (अग्निम्) (दीधितिभिः) अद्भुलिभिः नि० २।५।८ (जनयत) १०

भाषार्थः - १ हे स्वयिजो २ अत्यन्तं स्तुत ३ दूरदर्शी ४ गृहपालक ५ अर
णिकाष्टके मध्य ६ विद्यमान ७ अन्तर्हित ८ अग्निको ९ अद्भुलियोंसे १०
प्रकटकरो ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् - हे (नरः) नेतारो वागाद्यत्विजः (प्रशस्तेम्)

प्रशंसनीयं (दूरेदृशम्) दुःखं रातिददाति दूरः संसारस्तास्मिन्दर्शिनं

यस्य तं (गृहपतिम्) देहानां पालकं (अरण्योः) जीवात्मप्रणवुरू

पारणयोर्मध्ये (अथव्युम्) गमनवन्तं प्रादुर्भवन्शीलं (हस्तच्यु

तम्) अन्तर्हितं (अग्निम्) आत्माग्निं (दीधितिभिः) महापुरुषरश्मि

भिः (जनयत) ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे वागाद्यत्विजो २ प्रशंसनीय ३ संसारमें दर्शन देने वा

ले ४ देहपालक ५ जीवात्मप्रणवरूप अरण्यके मध्य ६ प्रादुर्भवनशील ७ अ

न्तर्हित ८ आत्माग्निको ९ महापुरुषकी किरणोंसे १० प्रकट करो ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मरुते सामवेदी

ब्रह्म भाष्ये छन्दो ध्याख्याने प्रथमस्या ध्यायस्य सममः खण्डः ।

अथाष्टमखण्डः

बुधश्च गविष्टि रश्वद्वा वृषी त्रिष्टुप् छन्दो मिद्विना-

अवोध्यमिः समिधा जनानाम् प्रतिधेनुमिवायती

मुषासम् । यद्वा इव प्रवयो मुज्जिहोनाः प्रभानवैः

सस्रते नो कमेच्छ ॥२॥७३

यदा (धेनुम्) (इव) धेनुतुल्यं (आयतीम्) आगच्छन्ती (उपास
म्) (प्रति) उपकाले (अमिः) (जनानाम्) अध्वर्यादीनां (समि
धा) (अवोधि) प्रबुद्धो भूत तदा (भानवः) तस्य रश्म योज्वालाः
(नाकम्) अन्तरिक्षं (अच्छे) आभिमुरख्येन (प्रसस्रते) प्रसरति
(इव) यथा (वयाम्) पक्षिणां (यद्वा) समूहाः (प्रोज्जिहोनाः)
स्वाधिष्ठानं त्यजन्तोऽन्तरिक्षं गच्छन्ति ॥२॥

भाषार्थः - जव १, २ धेनुतुल्य ३ आती ४ उपाके ५ समय ६ अमि ७ अ
ध्वर्यु आदिकी ८ समिधसे ९ प्रबुद्ध आतव १० उसकी ज्वाला ११, १२ अन्तरि
क्षके सन्मुख १३ चलती हैं १४ जैसे १५ पक्षियों के १६ समूह १७ अपने स्या
नको त्यागते अन्तरिक्षको जाते हैं ॥२॥

अथाध्यात्मम् - यदा (धेनुम्) (इव) (आयतीम्) (उपास
म्) (प्रति) समाधिकाले (अमिः) आत्मा मिः (जनानाम्) योगि
नां (समिधा) प्राणो न । प्राणावै समिधः श० १।५।४।१ (अवो
धि) प्रबुद्धो भूत तदा तस्य (भानवः) जीवेन्द्रियशक्ति रूपारश्म
यः (नाकम्) भृकुटिमंडलं (अच्छे) आप्तुम् (प्रसस्रते) प्रसर
न्ति (इव) यथा (वयाम्) पक्षिणां (यद्वा) समूहाः (प्रोज्जिहो

ना) स्वाधिष्ठानं त्यजन्तोऽन्नरिसं गच्छन्ति ॥ २ ॥

भाषार्थः - जव १, २ धेतु तुल्य ३ आती ४ उपाशों ५ के समय समाधि-
काल पर ६ आत्मा मि ७ योगियों के ८ प्राण से ९ प्रबुद्ध होता है नव उ सर्क
१० जीव इन्द्रिय शक्ति रूप किरणों ११ भृकुटि मंडल की १२ प्राणिको १३
चलती है १४ जैसे १५ पक्षियों के १६ समूह १७ अपने स्थान को त्यागते
अन्नरिस को जाते हैं ॥ २ ॥

वत्सप्रि चरिषिस्त्रिपुपुच्छन्दो विषावाग्निर्देवता-

प्रभूजयन्तमहाविपोधां मूरमूरपुरान्दमीणाम्
नयन्तद्गीर्भिवनाधियधाः हरिश्मञ्जुनवर्मेणा
धनर्चिम् ॥ २ ॥ ७४

हे स्तोतः त्वं (जयन्तम्) असुरसेनानां जेतारं (महां) षोडश-
कलावतारं महान्तं (विपोधां) मेधाविनां भक्तानां धर्तीस्व
(मूरैः) मुरुदैत्यसेनाजनैः (पुराम्) पूर्णानां प्राकारादीनां (द-
र्माणाम्) विदारकं । दृविदारै (अमूरम्) दैत्यपाशैर्निर्मुक्तं । मु-
रवेष्टने (गीर्भिः) षोडशसहस्रकन्यानां स्तोत्रैः (वर्मेणा) क-
वचेन च (वनांम्) तासां निवासस्थानानां (नयन्तम्) द्वारि-
कायां प्रापयन्तं (ने) च (धनर्चिम्) धनदानेन द्वारिकावासि-
नां पूजकं (हरिश्मञ्जु) विषावाख्यमग्निं (प्रभूः) स्तोतुं प्रभवस-
मर्थो भव (धियम्) परिचरणारूपं कर्म च (धाः) विधेहि ॥ २ ॥

भाषार्थः - हे स्तोता तुम १ असुरसेनाके जेता २ षोडशकलावतार ३
मेधावी भक्तों के धारक ४ मुरुदैत्यके सेनाजनोंसे ५ पूर्ण प्राकार आदि-
के ६ विदारक ७ दैत्यकी पाशोंसे निर्मुक्त ८ षोडशसहस्रकन्याओंके स्तो

३६ और ऋग्वेदों के द्वारा १० उनके निवास स्थानों को ११ द्वारिका में पहुंचाने वा
ले १२ और १३ धनदान से द्वारिका वासियों के पूजा क १४ विष्णु नाम आधिके
१५ स्तुति करने को समर्थ हो १६ और सेवा रूप कर्म को १७ विधान करा ॥२

भरद्वाज ऋषि त्रिष्टुप् छन्दो महापुरुषाग्निर्देवता

^३भुक्^१न्ते^३ अन्य^३ यज^१त^३ते^३ अन्य^३ द^३ विषु^३ रूपे^३ अहनी^३
द्यौरि^३ वासि^३ । विष्वा^३ हिमा^३ या^३ अवा^३ सि^३ स्वधा^३ वन्^३
भद्रा^३ ते^३ पूषन्नि^३ हरा^३ ति^३ रस्तु ३ ॥ ७५

(पूषन्) हे महापुरुष रूपाग्ने । पूषच्छ्रौ (ते) तव (भुक्त्) मान
ससूर्यरूपं । एषवै भुक्तेय एषतपति श० ४।३।१।२६ (अन्यत्)
(ते) तव (यजतम्) यजनीयं पूजनीयं परमात्मरूपं (अन्यत्)
(अहनी) अहश्च रात्रिश्च (विषुरूपे) योगभोगादिक्रियाभि-
नानारूपेत्वं (द्यौः) (इव) (आसि) यथाद्यौरादित्यः प्रकाशयित
तथात्वं प्रकाशकोऽसि (स्वधावेन्) हे पराः परारूपान्नवनूनि०
२।७।२० (हि) यस्मात् (विष्वाः) सर्वाः (मायाः) प्रज्ञाः (अवांसि)
रक्षसितस्मात् (इह) अस्मिन् जन्मनि (ते) (रातेः) दानं (भद्रा)
कल्याणरूपं (अस्तु) भवतु ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - १ हे महापुरुषरूप अग्ने २ तेरा ३ मानससूर्यरूप ४ अन्य है
५ तेरा ६ पूजनीय परमात्मारूप ७ अन्य द्वे ८ दिन और रात्रि ९ योगभोगादि
क्रियाओं के द्वारा नानारूप हैं तुम १०, ११ सूर्यतुल्य प्रकाशक १२ ही १३ हे प
रांपरा रूप अन्नवाले १४ जिस कारण १५ सब १६ प्रज्ञाओं को १७ रक्षित
रहे हो ३ मकारण १८ इस जन्म में १९ तेरा २० दान २१ कल्याणरूप २२ हो

विष्वाभिन्न ऋषि त्रिष्टुप् छन्दोग्निर्देवता

इडामग्रे पुरुदं सथं सेनिगोः शश्वत्तमं हव
 मानाय साधः स्यान्नः सूनू स्तनयो विजावागसा
 ते सुमतिभूत्वस्मै ४ ॥ ७६ ॥

हे (अग्ने) (पुरुदंसमम्) बहुकर्माणां (गोः) (सनिं) गवादिपशु
 नां सम्पादकं (इडाम) अन्नं नि ० २। ७। १६ (शश्वत्तमम्) निर
 न्तरं (हवमानाय) यजमानाय मह्यं (साध) साधय किञ्च (नः)
 (अस्माकं) (सूनूः) पुत्रः (तनयः) कुलविस्तारकर्त्ता (स्यात्) हे
 (अग्ने) (ते) नव (सा) (विजावा) अवन्ध्या (सुमतिः) शोभना
 बुद्धिः (अस्मे) अस्मासु (भूतु) भवतु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - हे अग्ने २ बहुकर्मा ३, ४ गो आदि पशुओं के सम्पादक ५ अन्न
 को धनिरन्तर ७ मुझ यजमान के लिये ८ साधन करो ९ हमारा १० पुत्र ११ कु
 लका विस्तार करने वाला १२ होवे १३ हे अग्ने १४ तेरी १५ वह १६ अवन्ध्या १७
 शुभ बुद्धि १८ हमारे मध्य १९ प्राप्त होवे ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (अग्ने) आत्माग्ने (पुरुदंसमम्) बहुकर्मा
 कर्त्ता (गोः) (सनिम्) महावाक सम्पादयित्री वाचमेव तद्देवाधे
 नुम कुर्वत ९। १। २। ७ (इडाम्) अद्वा। अद्देडासयो हवै अद्दे
 डेगि वेदावह अद्वा ७ रुन्देऽथो य किञ्च अद्दया जप्यं थं स
 र्वं थं हैतव ज्ञयति शश्वत्तमं (शश्वत्तम्) निरन्तरं (हवमानाय) य
 जमानाय (साध) साधय (नः) अस्माकं योगिनां (सूनूः) मानस
 रूयः (तनयः) पुत्रः पुत्रामनरकान्तरकः (स्यात्) हे (अग्ने) आ
 त्माग्ने (ते) नव (सा) (विजावा) अवन्ध्या विविधज्ञान भक्ति वि
 ज्ञानानां जननी (सुमतिः) निश्चयात्मिका बुद्धिः (अस्मे) अस्मा

सु(भृत्) भवतु ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ हे आत्माग्रे २ बहुन कर्म करने वाली ३, ४ महावाक्का-
सम्पादन करने वाली ५ अद्भुतको ६ निरन्तर ७ यजमान के लिये ८ साध-
नकरो ९ हम योगियों का १० मानस सूर्य ११ पुन्नामनरक सेतारक १२
होवे १३ हे आत्माग्रे १४ तेरी १५ वह १६ अवन्ध्या विविध भक्ति ज्ञान की
जननी १७ निश्चयात्मिका बुद्धि १८ हममें १९ प्रतिष्ठित हो ॥ ४ ॥

वत्सप्रिन्नरपिस्त्रिपुष्वन्वोमिदेवता-

प्रहोतो जातो मेहान् नभोविन् नृषद्यो सीदपा वि
वन्ते । दधद्यो धायी सुतेवयो ७ सियन्तो वसूनि
विधते तनूपाः ॥ ५ ॥ ७७

(यः) (अपाम्) अन्नरिक्षाणां नि० १।३।८ (विवर्त) कार्यभूते वेदि
समूहे (होता) यजमानानां होम निष्पादकः (महान्) पूज्यः (म-
जातः) (नभोवित) ज्वालाया अन्नरिक्षे विद्यमानः विदभावे-
(नृषद्यो) ऋत्विग्यजमानेषु वसनशीलोः मिः (दधन्) हवींषि
धारयन् (सुधायी) अष्टोधारकः (आसीत्) स (विधते) परिच-
रते (ते) तुभ्यं (वयोसि) अन्नानि (वसूनि) धनानि (यन्तो)
नियमयिता (तनूपाः) तन्वः पत्ताच भवत्विति शेषः ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ जो २ अन्नरिक्षोंके ३ कार्यभूत वेदि समूह पर ४ यजमानों
का होम निष्पादक ५ पूज्य ६ हुआ ७ ज्वालासे अन्नरिक्षमे विद्यमान ८
ऋत्विज यजमानोंमे वसनशील अग्नि ९ हविषोंको धारण करता १० अ-
ष्टधारक ११ हुआ वह १३ तुम्हसे वक के लिये १४ अन्नों १५ और धनोंके
१७ प्राप्त कराने वाला १७ और शरीरकारक हो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (यः) आत्माग्निः (अपाम्) कमलान्तरि
 क्षाणां (विवर्ते) विवर्ते उत्सङ्गे (महान्) कमलस्थानां देवा
 नारूपेण पूज्यः (प्रजातः) (नभोविने) मानसान्तरिक्षे विद्यमा
 नः (नृषाम्) जीवात्मनि स्थितः (आसीत्) (होता) होमनिष्पा
 दकः (दधत्) प्राणोन्द्रियादीनि हवींषि धारयन् (सुधीर्षी) ज्ञे
 षो धारकः स (विधत्) परिचरते (ते) तुभ्यं (वयांसि) प्राणान् ।
 अन्नं हि प्राणः श० २।२।१।६ (वसूनि) योगधनानि योगैश्व
 र्याणि (यन्तो) नियमयिता (तनूपाः) आत्मनः पाताञ्च भवतु
 आत्मा वैतनूरिनि श्रुतेः ॥५॥

भाषार्थः - १ जो आत्माग्नि २ कमलान्तरिक्षोंके ३ उत्संगमें ४ कमल
 स्थदेवरूपसे पूज्य ५ हुआ ६ मानसान्तरिक्ष में विद्यमान ७ जीवात्मा में स्थि
 त ८ हुआ ९ होमनिष्पादक १० प्राणोन्द्रिय रूप हविको धारण करता ११
 ज्ञेष्ठ धारक हुआ वह १२, १३ तुभसेवकके लिये १४ प्राणों १५ और योग
 धन योगैश्वर्योको १६ प्राप्त करनेवाला १७ और आत्माकारक्षक ही - ५॥

वसिष्ठ उवाच पितृभ्योऽपि स्वियुष्मन्तोऽग्निर्देवता

(॥) प्रसम्मूर्जे मसुरस्य प्रशस्तं पुंशंसः कृष्णीनाम्
 नुमाद्यस्य इन्द्रस्यैव प्रतेवसं स्कोतानि वन्दे द्वा
 रा वन्दे माना विवष्टु ॥६॥७८

(असुरस्य) असुं प्राणं राति ददाति तस्य (पुंसुः) पुरुषस्य सर्व-
 व्यापिनः (कृष्णीनाम्) भक्तानां (अनुमाद्यस्य) पूजनार्हस्य
 स्तुत्यस्य (तवसुः) बलरूपस्य (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य । इ-
 दि परमैश्वर्ये (इव) तुल्यं (प्रशस्तम्) उत्कृष्टं (सम्मूर्जम्)

अग्नेरात्माग्नेर्वा सम्यग्नाजमानं स्वरूपमस्ति तस्मात् (दंढद्वारा) स्तुतिद्वाराणि स्तुतिप्रमुखानि (वन्दमाना) स्तूयमानानि (कृतानि) यज्ञकर्माणि (प्रविवष्टु) प्रकर्षेण कामयताम् ॥ ६ ॥
भाष्यार्थः - १ प्राणदाता २ सर्वव्यापी ३, ४ भक्तोंके पूजनीय ५ बलरूप ६ परमेश्वरके ७ तुल्य ८ उत्कृष्ट ९ अग्निवा आत्माग्नि का दीप्तिमान स्वरूप है उस कारण १० स्तुतिप्रमुख ११ स्तूयमान १२ यज्ञकर्मोंको १३ भले प्रकार चाहो ॥ ६ ॥

विश्वामित्ररूपिस्त्रिष्टुपच्छन्दोभिर्देवता
 अरण्यो निहितो जातवेदो गर्भ इव सुभृतो गर्भिणीभिः । दिवे दिव इड्या जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्यैभिरग्निः ॥ ७ ॥ ७ ८

(अष्टयम्) (जातवेदाः) सर्वज्ञः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (अरण्योः) अरण्योः अणवजीवरूपा अण्योर्वा (निहितः) स्थापितः (इव) यथा (गर्भिणीभिः) (सुभृतः) सुपुष्टतः (गर्भः) तथा (जागृवद्भिः) जागरूकैः समाधिस्थैर्वा (हविष्मद्भिः) (मनुष्यैभिः) उभयविधयजमानैः (इन्) एव (दिवे) (दिवे) प्रत्यहं (इड्यैः) स्तोत्रव्यः ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ यह २ सर्वज्ञ ३ अग्निवा आत्माग्नि ४ अणिकाष्टवा अणवजीवके मध्य ५ स्थापित है ६ जैसे ७ गर्भिणीस्त्रियोंसे ८ धारित ९ गर्भ १० तथा जागरूक वा समाधिस्थ ११ हविष्युक्त १२, १३ उभयविधयजमानोंके द्वारा ही १४, १५ प्रतिदिन १६ स्तुति करने योग्य है ॥ ७ ॥

पायुर्त्रयिस्त्रिष्टुपच्छन्दोभिर्देवता

सनादेमेमृणासियातु धोनान् नत्वोरक्षोऽंरसि
 एतनासुजिग्युः अनुदह सहमूरान् कयादा माते
 हेत्या मुक्ष तदेव्यायाः ॥ ८ ॥ ८०

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा त्वं (सनात्) सदैव (कयादः) मांस
 भक्षकान् यद्वा (क) शान्तिः (अ) कीर्तिर्निवृत्तिश्च (य) प्रभात्या
 गः सुखञ्च ते पांभक्षकान् (यातु धानान्) असुरान् कामादीन्वा
 (मृणासि) मारयसि (रक्षासि) असुराः कामादयो वा (त्वा) त्वां
 (एतनासु) संग्रामेषु (न) (जिग्युः) न जयन्ति तस्मात् (सहमृ
 रान्) सहभूतान् मूढान् यद्वा संसारबंधनदात्त्वं राक्षसान्
 कामादीन्वा । मूवन्धे (अनुदह) तेजसाभस्मीकुरु (ते) असुराः
 कामादयो वा (दैव्यायाः) दैव्यात् (हेत्याः) आयुधात् (मो) (सु
 क्षत) मुक्तामा भूवन् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने वा आत्माग्ने तुम २ सदैव ३ मांसभक्षकोंवा शान्ति
 कीर्तिर्निवृत्ति प्रभात्याग सुखके भक्षक ४ असुरवा कामआदिको ५ मारते
 हो ६ असुरवा कामआदि ७ तुमको ८ संग्रामोंमें ९ नही जीतते हैं १० मूढ
 वा संसारबंधनदाता राक्षसवा कामआदिको ११ भस्मकरो १२ वे असुरवा
 कामआदि १४ दैव्य १५ आयुधसे १६ १७ मुक्त नहों ॥ ८ ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सा
 मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्याष्टमः खण्डः

अथ नवमः खण्डः

गयत्रिर्ऋषिस्तुष्टु छन्दोर्गिर्देवता-

अग्ने औजिष्ठमाभरद्युन्मैस्मभ्यमाधिगो । प्रेनो

रायैपनीयसैरत्सैवाजोयैपन्थोम् ॥१॥ ८१॥

हे (अग्निगो) अष्टप्यगुमनसर्वगत (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवात्वं
(अस्मभ्यम्) (ओजिष्टम्) वलवत्तमं (द्युन्नम्) धनं योगधन-
म्वा नि० २। ६ (आभर) आहरत्वं (पनीयसे) स्तुतियोग्याय (रा-
यै) धनाय योगधनाय वा (वाजाय) अन्नाय विराड्पान्नाय वा
(नः) अस्मान् (पन्थोम्) प्राप्तिसाधनं मार्गं (प्ररत्सै) प्रकर्षेण
ददासि एदाने ॥१॥ ८१

भाषार्थः - १ हे सर्वगत २ अग्ने वा आत्माग्ने तु म ३ हमारे लिये ४ वल-
वत्तम ५ धन वा योगधनको ६ दीजिये ७ तु म स्तुतियोग्य ८ धन वा योगध-
नके लिये ९ अन्न वा विराट् रूप अन्नके लिये १० हमको ११ प्राप्ति साधन
मार्ग १२ देते हौ ॥१॥ ८१

(नौ देवते)

वामदेव ऋषिर्भरद्वाजो वार्हस्पत्यो वा ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्नि यज्ञमा

यदिवीरोऽनुष्योदग्निमिन्धीतमर्त्यैः । अजुह्व

द्व्यमानुषकशर्मभक्षीतद्व्यम् ॥२॥ ८२

(यदि) (मर्त्यैः) मनुष्यैः (वीरैः) कामादीनां प्रतियोद्धा (स्यात्)
(अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (इन्धीत) अग्न्याधानं कुर्वीत
(आनुषक) आनुपूर्वेण (हव्यम्) हविरात्म प्रतिविम्बम्वा (हो-
जुह्वत्) आभिसुरव्येन जुहोति अपिच (द्व्यम्) देवसम्बन्धिनं
विह्वत्सम्बन्धिनम्वा (शर्म) सुखं मोक्षानन्दम्वा (भक्षीत)
सेवेत ॥२॥

भाषार्थः - १ जो २ मनुष्य ३ काम आदिका प्रतियोद्धा ४ होवे ५ अग्नि
वा आत्माग्नि को ६ प्रज्वलित करै ७ कर्मपूर्वक ८ हवि वा आत्म प्रतिविंबको

६ होमै १० देवसम्बधीवाविद्वानसम्बधी ११ सुखवामोक्षानन्दको १२
सेवनकरै ॥ २ ॥

द्वयोर्भरद्वाजऋषिरनुष्टुप् छन्दोभिर्देवता
त्वेषस्तेधूमं ऋएवनिदिविसुं छुक्रं आततः ।
सूरानहिद्युतात्वरूपपावकरोचसे ॥ ३ ॥ ८३

हे (पावक) शोधकाग्ने (त्वेषः) दीप्तस्य (ते) तव (शुक्रः) शु
क्लो निर्मलः शुभ्रवर्णो वा (धूमः) (दिवि) अन्तरिक्षे (आत
तः) विस्तीर्णः (सन्) (ऋएवति) मेघात्मना परिणतो गच्छ
ति (हि) यस्मात्त्वं (सूरः) (ने) सूर्य इव (रूपा) समर्थया
(द्युता) दीप्त्या (रोचसे) प्रकाशसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः - श्हे शोधक अग्ने २, ३ तुम्ह दीप्तका ४ निर्मल वा शुभ्रवर्ण
५ धूम ६ अन्तरिक्षमें विस्तीर्ण होना ८, ९ मेघरूप होकर चलना है १०
जिस कारणतुम ११, १२ सूर्यकी समान १३ समर्थ १४ दीप्ति से १५ प्रकाश
करते हो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् हे (पावक) शोधकात्माग्ने (त्वेषः) दीप्त
स्य (ते) तव (शुक्रः) मानससूर्यः श० ४।३।१।२६ (धूमः) प्रा
णः श० १४।६।१।१५ (आततः) विस्तीर्णः (सन्) (दिवि) भृ
कुटिमण्डले (ऋएवति) गच्छति (हि) यस्मात्त्वं (सूरः)
(ने) समष्टि सूर्य इव (रूपा) समर्थया (द्युता) दीप्त्या (रोचसे)
प्रकाशसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः - श्हे शोधक आत्माग्ने ३, ३ तुम्ह दीप्तका ४ मानससूर्य ५ और
प्राण ६, ७ विस्तीर्ण होना ८ भृकुटिमण्डलमें ९ जाता है १० जिस कारणतुम

११, १२ समष्टि सूर्यकी संमान १३ समर्थ १४ दीप्तिसे १५ प्रकाश करने हो ३

विनियोगः पूर्ववत्

त्वं^{११} हि^{१२} क्षैत^{१३} वेद्यु^{१४} शोभे^{१५} मित्रा^{१६} नपत्ये^{१७} से । त्वं^{१८} विचर्षणे^{१९}

ऋवो^{२०} वृसा^{२१} पुष्टि^{२२} नपुष्यासि^{२३} ४ ॥ ८ ॥

हे (अग्ने) (त्वम्) (हि) (क्षैतवत्) क्षितिः क्षयोऽपचयः तत्स
म्वन्धि क्षैतं शुष्क काष्ठं तद्युक्तं (यशः) अन्नं नि० २, ७ (पत्ये-
से) अभिपतसि गच्छसि (न) यथा (मित्रः) अहरभिमानी दे-
वो विराड्पान्नं हे (विचर्षणे) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टः (वृसा) अ-
ग्ने (त्वम्) (ऋवः) अन्नं (न) च (पुष्टिम्) (पुष्यासि) वर्द्धयसि ४

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ तुम ३ ही ४ शुष्क काष्ठ युक्त ५ अन्नको ६ प्रा-
प्रकरते हो ७ जैसे ८ दिवसाभिमानि देवता विराड् रूप अन्नको ९ हे सर्व द-
ष्टा १० अग्ने ११ तुम १२ अन्नको १३ और १४ पुष्टिको १५ बढ़ाते हो ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् (अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वम्) (हि) (क्षैतवत्)
क्षय इति गृहनामनि० ३, ४ क्षैतो देह गृहस्थो भूतात्मा तेन युक्त
म् (यशः) मानससूर्य । आदित्यो यशः श० १४। १। १। ३२ (पत्ये से)
ईशिषे । पत्यतिरैश्वर्य कर्मानि० २। २१ (न) यथा (मित्रः) सूर्यो
ब्रह्मा एडं हे (विचर्षणे) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टः (वृसा) ज्योतिः
स्वरूपात्माग्ने (त्वम्) (ऋवः) विराड्पान्नं (न) च (पुष्टिम्) (पु-
ष्यासि) (वर्द्धयसि) ॥ ४ ॥

भाषार्थः १ हे आत्माग्ने २ तुम ३ ही ४ भूतात्मा से युक्त ५ मानससूर्य
के ६ ईश्वर हो ७ जैसे ८ सूर्य ब्रह्मा एड का ९ हे सबके दृष्टा १० ज्योतिस्व
रूप आत्माग्ने ११ तुम १२ विराड् रूप अन्न १३ और १४ पुष्टिको १५ बढ़ा

तेहौ ॥४॥ मृक्तवाहाद्वितत्रापिरनुष्टुप्छन्दोभिर्देवता-

प्रातरग्निः पुरुषियो विशस्त्वेतातिथिः । विश्वे
यस्मिन्मर्त्यहव्यमर्त्तासइन्धते ॥५॥ ८५

(पुरुषियः) बहुप्रियः (विशः) विब्रह्मणि शेते ब्रह्मशायी (अ-
तिथिः) अतिथिवत्पूज्यः (अग्निः) (प्रातः) (स्तवेत) स्तूयते-
(विश्वे) सर्वे (मर्त्तासः) मनुष्याः (यस्मिन्) (अमर्त्ये) अवि-
नाशिनि (हव्यम्) (इन्धते) दीपयन्ति ॥५॥

भाष्यार्थः - १ बहुप्रिय २ ब्रह्मशायी ३ अतिथिवत्पूज्य ४ अग्नि ५
प्रातःकाल पर ६ स्तुतिकिया जाता है ७ सब ८ मनुष्य ९ जिस १० अविना-
शी अग्नि में ११ हविको १२ होमते है ॥५॥

अथाध्यात्मम् (पुरुषियः) पुरां देहानां प्रियः (विशः) ब्रह्म-
शायी (अतिथिः) अतिथिवत्पूज्यः (अग्निः) आत्माग्निः (प्रातः)
समाधिकाले (स्तवेत) (विश्वे) सर्वे (मर्त्तासः) अहमास्पदाम-
नुष्याः (यस्मिन्) (अमर्त्ये) अविनाशिन्यात्माभौ (हव्यम्)
होमार्हात्मप्रतिविंबं (इन्धते) दीपयन्ति ॥५॥

भाष्यार्थः - १ देहोंका प्रिय २ ब्रह्मशायी ३ अतिथि समानपूज्य ४
आत्माग्नि ५ समाधिकाल पर ६ स्तुतिकिया जाता है ७ सब ८ अहमास्य
द मनुष्य ९ जिस १० अविनाशी आत्माग्नि में ११ होम योग्य आत्म प्रतिवि-
वको १२ होमते है ॥५॥

वसूयवभावेया ऋषयः अनुष्टुप्छन्दोभिर्देवता

यद्वा हिष्टतदग्नेये वृहदूर्ध्वं विभावसो । महिषी
वत्वेद्रियस्त्वद्वाजा उदीरते ॥६॥ ८६

(यत्) (वाहिष्ठं) वोद्धृतमं स्तोत्रं (तत्) (अग्नेये) अग्नेये आत्माग्नेये
 वाक्यते हे (विभावसो) विविधिप्रभाधनवन् (वृहत) वृहन्नं वि
 राडूपान्नाम्वा (अर्च) अस्मभ्यं प्रयच्छयतः (त्वत्) त्वत्तः सकाशात्
 (महिषी) (इव) सार्वभौमलक्ष्मीरिव (रयिः) धनं योगधनं वा (उ
 दीरते) उद्गच्छति (त्वत्) त्वत्तः (वाजा) अन्नानि विराडूपान्नानि
 वोद्गच्छन्ति ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ जो स्तोत्र २ धारणा योग्य है ३ उसको ४ अग्नि वा आत्मा
 अग्निके लिये उच्चारण करते हैं ५ हे बहुविध प्रकाश धनवाले ६ वृहन्न अन्न वा
 विराट् रूप अन्नको ७ हमें दे ८ जिस कारण तुमसे ९ सार्वभौमलक्ष्मी की तुल्य १०
 धन वा योगधनको ११ प्राप्त करता है १२ तुमसे १३ अन्न वा विराट् रूप अ
 न्नोंको पाता है - ॥ ६ ॥

गोपवन ऋषिः सप्तवधिर्वा ऋषिरनुष्टुप् छन्दो वेदाग्निर्वेदता-

विशो विशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ॥

अग्निवोदुर्यवचः स्तुषेभूषस्य मन्माभिः ७ ॥ ८ ॥

हे (विशः) यजमानाः (वः) युष्माकं (विशः) मनुष्या ऋत्वि
 जः (पुरुप्रियम्) बहुप्रियं (अतिथिम्) अतिथिवत्प्रियमग्नि-
 म्पति (वाजयन्तः) अन्नमिच्छन्तः सन्ति (वचः) वेदवागहं
 (वः) युष्माकं (भूषस्य) स्वर्गापवर्गसुखस्य (दुर्यम्) गृहं नि
 ३ ४ ५ (अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (मन्माभिः) मननीयैः
 स्तोत्रैः (स्तुषे) स्तौमि ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ हे यजमानो २ तुम्हारे ३ ऋत्विज ४ बहुप्रिय ५ अतिथिस
 मप्रिय अग्निसे ६ अन्नको चाहने वाले हैं ७ वेदवाक्मं ८ तुम्हारे ९ स्वर्गमोक्ष

सुखके १० गृह ११ अग्निवाग्नात्माग्नि को १३ स्तोत्रों से २३ स्तुत करता हूँ ॥९

पुरु रात्रेयन्नसपिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निदेवता

३ ३३
 बृहद्व्याहि भानवेच्चा देवो यामये । यमित्रं न प्र
 शस्तये मर्तासो दाधिरे पुरः ॥ ८ ॥ ८८

(भानवे) दीप्तिमते (देवाय) द्योतमानाय (अग्नेये) (बृहत्) महत् (वयः) हवीरूपमन्नं नि० २७ (अर्च) प्रयच्छ (मर्तासः) मनुष्याः (यम्) अग्निं (मित्रम्) (ने) सखायमिव (प्रशस्तये) प्रकृष्टस्तुतये (अस्मदर्थं देवानाग्निस्तौत्विति (पुरः) (दाधिरे) पुरस्कुर्वन्ति यद्वा पूर्वस्यां दिशि धारयन्ति आहवनीयात्मने ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः— १ दीप्तिमान २ द्योतमान ३ अग्नि केलिये ४ ५ हविरूप महा अन्नको ६ अर्पण करो ७ मनुष्य ८ जिस अग्नि को ९, १० सखा की तुल्य ११ प्रकृष्ट देवस्तुति केलिये १२, १३ आगे करते हैं अथवा पूर्व दिशामें धारण करते हैं आहवनीय रूपसे ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् (भानवे) सूर्यरूपाय (देवाय) व्यष्टिसमष्टि देहैः क्रीडणशीलाय (अग्नेये) आत्माग्नेये (बृहत्) महत् (वयः) विराड्पान्त्रं (अर्च) प्रयच्छ (मर्तासः) देहाभिमानी नः (यम्) (मित्रम्) (ने) मानस सूर्यरूपं मानस सूर्यव्याप्तमात्माग्निं (प्रशस्तये) क्षेमाय (पुरः) पूर्वस्यां दिशि भृकुटौ (दाधिरे) धारयन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः— १ सूर्यरूप २ व्यष्टिसमष्टि देहों से क्रीडन शील ३ आत्माग्नि केलिये ४, ५ विराट् रूप अन्नको ६ अर्पण करो ७ देहाभिमानी ८ जिस ९, १०

मानससूर्यमें व्याप्त आत्माग्नि को ११ क्षेमके लिये १२ भृकुटि में १३ धार
 णा करते हैं ॥ ८ ॥ गोपवन ऋषिरनुष्टुप् छन्दोभिर्देवता-

अगन्म वृत्रहन्तमज्येष्ठमग्निमानवम् । यः स्मृशु
 तर्वन्नाक्षैर्वृहदनीके इध्यते ॥ ८ ॥ ८६

वयं यजमानाः (वृत्रहन्तमं) पापानामतिशयेन हन्तारं (ज्येष्ठ
 म्) देवानां ज्येष्ठं (आनवम्) मनुष्यसम्बन्धिनं तेषां हितकारिणां
 म्बानि ० २, ३, २० (अग्निम्) (अगन्म) (यः) अग्निः (वृ
 हदनीके) ग्रहाणां महति सेनावति (श्रुतर्वन्नाक्षै) श्रुतः
 विख्यातः ऋरुद्रः तद्रूपेणाक्षैर्ऋक्षमेषादिराशीनां पतौ
 सूर्ये (इध्यतेस्म) प्रवृद्धो भवत् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हम यजमान १ पापनाशक २ देवताओं में बड़े ३ मनुष्य
 सम्बन्धी वा उनके हिनकारी ४ अग्नि को ५ प्राप्त करें ६ जो अग्नि ७ ग्रहों की व
 डी से बान्ने ८ रुद्र रूप सूर्य में ९ बड़ी वृद्धि को प्राप्त हुआ ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - वयं योगिनः (वृत्रहन्तमं) पापानाम
 तिशयेन हन्तारं (ज्येष्ठम्) (आनवम्) अजरामरं (अग्निम्)
 आत्माग्निं (अगन्म) (यः) आत्माग्निः शेषं पूर्ववत् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हम योगी जन् १ पापनाशक २ ज्येष्ठ ३ अजरामर ४ आ
 त्माग्नि को ५ प्राप्त करें ६ जो आत्माग्नि ७ ग्रहों की वड़ी सेना बान्ने ८ रुद्र रू
 प सूर्य में ९ बड़ी वृद्धि को प्राप्त हुआ - ॥ ८ ॥

वामदेवः कश्यपो वा मारीचो मनुर्वा वैवस्वत उभो वा ऋपय अनुष्टुप्
 छन्दोभिर्देवता-

जातः परेण धर्मणा यत्स वृद्धिः सहा भुवः पिता

यत्कश्यपस्योग्निः ^३ऋद्धो ^१माता ^२मनुः ^३कविः ॥ १० ॥
हे ^१अग्ने (यत्) ^२यस्मात्त्वं (पुरेणो) (धर्मणा) ^३यज्ञेन निमित्तेन
नि० ३, १७ (जातः) प्रादुर्भूतः तस्मात् (सृष्टिः) यज्ञे सह वर्तन्ते
इति संहतः ऋत्विग्यजमानास्तेः (सह) (अभुव) अभूवः (यत्)
यस्मात् (अग्निः) (कश्यपस्य) कश्यमद्यं पिवतीति कश्यपो
मायामद्यस्य पानाजीवस्तस्य (पिता) तस्मात् (ऋद्धो) त-
स्य (माता) (मनुः) मन्त्रः (कविः) गुरुः ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे अग्ने १ जिस कारण तुम २, ३ यज्ञनिमित्त ४ प्रकट हुए
उस कारण ५ ऋत्विजोंके ६ साथ ७ प्राप्त हुए ८ जिस कारण ९ अग्नि १०
जीवात्माका ११ पिता है उस कारण १२ ऋद्ध उसकी १३ माता है १४ मन्त्र
१५ गुरु है ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् - हे आत्माग्ने (यत्) यस्मात्त्वं (पुरेणो) (ध-
र्मणा) योगयज्ञेन (जातः) प्रादुर्भूतस्तस्मात् (सृष्टिः) वा-
गाद्यत्विज्जीवात्मभिः (सह) (अभुव) अभूवः (यत्) यस्मा-
त् (अग्निः) आत्माग्निस्त्वं (कश्यपस्य) मायामद्यपि जीवात्मन-
(पिता) तस्मात् (ऋद्धो) तस्य (माता) (मनुः) महावाक् (क-
विः) गुरुः ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे आत्माग्ने १ जिस कारण तुम २, ३ योगयज्ञके निमि-
त्त ४ प्रकट हुए उस कारण ५ वागाद्यत्विजोंके ६ साथ ७ प्राप्त हुए ८ जिस
कारण ९ आत्माग्नि तुम १० जीवात्माके ११ पिता हो उस कारण १२ ऋद्ध
उसकी माता है १४ महावाक् १५ गुरु है ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशवतंसंज्ञीनाथूरामस्त्रुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते

सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य नवमं खण्डः

अथ दशमः खण्डः

अग्निस्तापसञ्चरधिरनुष्टुप् छन्दो देवा देवताः

सोमं^३ रं^३ राजानं^३ वरुणामग्निं^३ मन्वारं^३ भामहे। आदि^३
त्यविष्णुं^३ सूर्यं^३ ब्रह्माणं^३ च वृहस्पतिम्^३ ॥१॥ ६१

(राजानम्) राजमानमीश्वरं (सोमम्) उमामहेश्वरं। सोमो
वैराजा युक्तः प्रजापतिः श० १२। ६। १। १ (वरुणम्) (अग्निम्)
(आदित्यम्) अदितेः पराशक्तेः पुत्रं (विष्णुं) (सूर्यम्) (ब्रह्मा
णम्) (च) (वृहस्पतिम्) वृहतां वेदमंत्राणां स्वामिनं महा-
नारायणं (अन्वारं भामहे) आश्रयामः ॥१॥

भाषार्थः - १ राजमान ईश्वर २ उमामहेश्वर ३ वरुण ४ अग्नि ५ पर
शक्तिके पुत्र ६ विष्णु ७ सूर्य ८ ब्रह्मा ९ और १० वेदमंत्रोंके स्वामी महाना
रायणको ११ हम आश्रय करते हैं ॥१॥

अथाध्यात्मम् (राजानम्) राजमानं (सोमम्) जीवा-
त्मानं। सोमो वै भ्रातृ श० ३। २। ४। ६ (वरुणम्) अपानं। अ-
पानो वरुणः श० १२। ६। २। १२ (अग्निम्) वाचं। वाक्वाऽअ-
ग्निः श० ६। १। २। २६ (आदित्यम्) चक्षुः। चक्षुरादित्यः श० १४
४। १। १५ (विष्णुम्) परमात्मानं (सूर्यम्) अन्नर्यामिनं (ब्रह्माणं) (च)
(वृहस्पतिम्) प्राणं। प्राणो हि वृहस्पतिः श० १४। ४। १। २२
(अन्वारं भामहे) वयं योगिनः सप्तशामः ॥१॥

भाषार्थः - १ राजमान २ जीवात्मा ३ अपान ४ वाक् ५ चक्षु ६ पर-
मात्मा ७ अन्नर्यामी ८ और ९ प्राणको १० हम योगी स्पर्श करते हैं ॥१॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्दोयजमानो देवता

इते एत उदारुहन्दिवः एष्टान्यारुहन् । प्रभूर्ज
यो यथा पथा धामङ्गिरसो ययुः ॥२॥ ६२

हे यजमानाः (यथा) (आङ्गिरसः) ऋषयः (भूर्जया) यस्त
भूमौ जयवता (पथा) (उ) समष्टि मूर्तिः प्रतिष्ठा पूजनात्मके
न मार्गेणैव य० अ० ११-१८ (उत्) (उ) ऊर्ध्वमेव (प्रारुहन्)
(दिवः) (एष्टानि) ब्रह्म विष्णु महेशलोक रूपाणि (आरुहन्)
पुनः (धाम) महानारायणलोकं (ययुः) तथैव यूयमपि (इतः)
भूमेः सकाशात् (एत) ऊर्ध्वगच्छत ॥२॥

भाषार्थः - हे यजमानो १ जैसे २ अंगिर वंशी ऋषि ३ यज्ञभूमिमें ४, ५
समष्टि मूर्ति की प्रतिष्ठा पूजन रूपमार्ग से ही ६, ७ ऊपरको ही ८ चढ़े ९, १०
स्वर्ग एष्ट अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेशके लोकोंको ११ चढ़े १२ फिर महानारा
यणलोकको १३ गये १४ उसी प्रकार तुमभी इसभूमिसे १५ ऊपरको चलो

अथाध्यात्मम् हे वागाद्यत्विज यजमानाः (यथा) (आङ्गिर
सः) प्राणाः । प्राणो वाऽऽङ्गिराश० ६। १। २। २८ (भूर्जया) यो
गभूमिजयवता (पथा) (उ) योगमार्गेणैव (उत्) (उ) ऊर्ध्वमेव
(प्रारुहन्) (दिवः) (एष्टानि) कमलात् (आरुहन्) पुनः (धाम)
गगनमण्डलं (ययुः) तथैव यूयमपि (एत) ऊर्ध्वगच्छत ॥२॥

भाषार्थः - हे वागादि ऋत्विज यजमानो १ जैसे २ प्राण ३ योगभूमि
के जेता ४, ५ योगमार्ग से ही ६, ७ ऊपरको ही ८ चढ़े ९, १० स्वर्ग एष्ट अर्थात्
कमलोंको ११ चढ़े १२ फिर गगनमंडलको १३ गये उसी प्रकार तुमभी १४
ऊपरको चलो ॥२॥

कश्यपोऽसितो देवलो वाक् ऋषिरनुष्टुप् छन्दो मिर्देवता

राये अग्ने महत्वादानाय समिधी महि । ईडि

वाहिम हे वृषन्द्यावा होत्राय पृथिवी ॥ ३ ॥ ८३

(अग्ने) हे सर्व व्यापिन् (अग्ने) (त्वा) त्वां (महे) महते (राये) धनाय धनलाभाय (दानाय) हविषां दानाय (समिधी महि) वयं सन्त्यग्दीपयामहे (वृषन्) हे कामानां वर्षितस्त्वं (महे) महते (होत्राय) होत्रं होमद्रव्यं तस्य लाभाय (द्यावा पृथिवी) (ईडिष्वे) स्तुहि ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - १ हे सर्व व्यापिन् २ अग्ने ३ तुमको ४.५ महत् धन लाभ ६ अग्नेर हविदानके लिये ७ हम प्रज्वलित करते हैं ८ हे कामनाओंकी वृष्टि करनेवाले तुम ९.१० महाहोमद्रव्यके लाभार्थ ११ पृथिवी स्वर्गको १२ स्तुत करो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) हे सर्व व्यापिन् (अग्ने) आत्माग्ने (त्वा) त्वां (महे) महते (राये) योगैश्वर्याय (दानाय) प्रतिविवादीनां दानाय (समिधी महि) (वृषन्) हे अमृतस्य वर्षितस्त्वं (महे) महते (होत्राय) योगयज्ञाय (द्यावा पृथिवी) ब्रह्माण्डं (ईडिष्वे) ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - १ हे सर्व व्यापिन् २ आत्माग्ने ३ तुमको ४.५ योगैश्वर्य ६ अग्नेर प्रतिविवके के दानार्थ ७ हम प्रज्वलित करते हैं ८ हे अमृतवर्षानेवाले तुम ९.१० योगयज्ञके लिये ११ ब्रह्माण्डको १२ स्तुत करो ॥ ३ ॥

भार्गुहृति सोमो वाक् ऋषिरनुष्टुप् छन्दो मिर्देवता-

दधन्त्वाये दीमनुवाच ब्रह्मतिवरुतत् । परि विश्वा
निकाव्यानेभिश्चकमिवाभुवत् ॥ ४ ॥ - ८४

अध्वर्युः (ईर्म) अग्निं (अनु) अनुलक्ष्य (वा) निवृत्तात्मना सह (यत्) हविः (दधन्वे) अग्नौ धारयति (वा) (ब्रह्म) मन्त्रं (अनुवोचत्) अनुवक्ति होत्रादिः (तत्) सर्वत्वं (वेरुं) वेरेव जानास्येव हे यजमान । अथमाग्निः (विश्वानि) सर्वाणि (काव्यो) काव्यानि श्रुतिवचांसि हव्यानि वा (पर्यभुवत्) परिभवति स्वायत्तानि करोति व्याप्नोतीत्यर्थः (इव) यथा (नेमिः) वहिर्वेष्टनवलयः (चक्रम्) रथाङ्गम् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - अध्वर्यु १ अग्निको २ अनुलक्षणकर ३ निवृत्तात्माके साथ ४ जिस हविको ५ अग्निमें धारण करता है ६ अथवा ७ मंत्रको ८ उच्चारण करता है ९ उस सबको तुम १० जान्ने ही हो ११ यह अग्नि सब १२ श्रुत वचनों वा हविषोंको १३ व्याप्त करता है १४ जैसे १५ वहिर्वेष्टनवलय १६ रथचक्रको - ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - ज्ञानचक्षुः । चक्षुर्वेद्यज्ञस्याध्वर्युः शं० १४।६।१।६ मनोवाऽध्वर्युः शं० १।५।१।२१ प्राणौ दानौ वाऽध्वर्युः ५।५।१।११ (ईर्म) आत्माग्निं (अनु) अनुलक्ष्य (वा) निवृत्तात्मना सह (यत्) प्रतिविंवरूपं हविः (दधन्वे) आत्माग्नौ धारयति (वा) (ब्रह्म) महावाक् (अनुवोचत्) होताऽनुवक्ति वाग्वैवज्ञस्य होता शं० १२।८।२।२३ हे योगिन् (तत्) सर्वत्वं (वेरुं) जानास्येव । अथमात्माग्निः (विश्वानि) सर्वाणि (काव्यो) काव्यानि पूर्वोक्तवचांसि हव्यानि वा (पर्यभुवत्) व्याप्नोति (इव) यथा (नेमिः) (चक्रम्) ॥ ४ ॥

भाषार्थः - ज्ञानचक्षु १ आत्माग्निको २ अनुलक्षणकर ३ निवृत्तात्माके साथ ४ जिस प्रतिविंवरूप हविको ५ आत्माग्निमें धारण करता है ६

अथवा७ महावाक्को ८ वाक् उच्चारण करता है हे योगिन् १० उस सबको
१० जान्ने ही है यह आत्मा मि ११ सब ११ पूर्वोक्त वचनों वाह विओको १३
व्यापक करता है १४ जैसे १५ नेमि १६ रथ चक्रको - ॥ ४ ॥

पायुर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दोभिर्देवता-

प्रत्यग्नेहरसाहरः शृणाहि विश्वतस्परि। यातु
धानस्य रक्षसावलन्युज्जवीर्यम् ॥ ५ ॥ ६५

हे अग्ने (हरः) रुद्र रूपस्त्वं (हरसा) तेजसा क्रोधेन वा (यातु धा
नस्य) (वलम्) (विश्वतः) सर्वतः (प्रति शृणाहि) नाशय (र
क्षसः) (वीर्यम्) (परिन्युज्ज) समन्ताद् वतानं कुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने २ रुद्र रूप तुम ३ तेज वा क्रोध से ४ यातु धान की ५
सेना को ६ सब ओर से ७ नाश करो ८ रक्षसके ९ वलको १० तोड़ो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) हे आत्माग्ने (हरः) रुद्र रूपस्त्वं
(हरसा) तेजसा (यातु धानस्य) कामस्य (वलम्) (विश्वत
सर्वतः) (प्रति शृणाहि) नाशय (रक्षसः) क्रोधस्य (वीर्यम्)
(परिन्युज्ज) समन्ताद् वतानं कुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्माग्ने २ रुद्र रूप तुम ३ तेज से ४ काम की ५ सेना को
६ सब ओर से ७ नाश करो ८ क्रोधके ९ वलको १० तोड़ो ॥ ५ ॥

प्रस्तावऋषिरनुष्टुप् छन्दोभिर्देवता

त्वमग्नेर्वसुं धरिह रुद्रो धं स्यादित्यां उत यजो
स्वध्वरज्जनं मनुजात घृतपुषम् ॥ ६ ॥ ६६

(अग्ने) हे सर्व व्यापिन् (अग्ने) (त्वम्) (इह) यज्ञे (रुद्रान्) (वसुं
(स्यादित्यान्) (यज) (उत) अपि च (मनुजातम्) मनुना प्रजाप

तिनाउत्पादितं (घृतमुषमं) घृतस्यसेत्कारं (जनमं) यजमानं (स्वध्वरमं) शोभनयागयुक्तं कुर्विति शेषः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ अग्ने ३ तुम ४ इत्स यज्ञमं ५ रुद्रो ६ वसु-
श्रो ७ आदित्यो को ८ पूजन करो ९ शौर १० मनुप्रजापति से उत्पादित ११ घृत
के सींचने वाले १२ यजमान को १३ भुभयज्ञ वाला करो - ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) (अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वम्) (इह) ४
योगयज्ञे (रुद्रान्) (वसून्) (आदित्यान्) (यज) प्राणोन्द्रि-
याणां होमेन यज (उत) अपि च (मनुजातम्) वेदमंत्रैः संस्कृ-
तं (घृतमुषमं) इन्द्रियशक्तिभिः सहात्मप्रतिविंवेन सेत्कारं
(जनमं) योगिनं (स्वध्वरमं) सुयोगयज्ञवन्तं कुर्विति शेषः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १, २ हे आत्माग्ने ३ तुम ४ इत्स योगयज्ञमं ५, ६, ७ रुद्रवसु
आदित्यों को ८ प्राण इन्द्रियके होम से पूजो ९ शौर १० वेदमंत्रों से संस्कृ-
त ११ इन्द्रियशक्ति सहित आत्म प्रति विंवे से सींचने वाले १२ योगी को १३
अष्टयोगयज्ञवाला करो - ॥ ६ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते
सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य दशमः खंडः

इति प्रथमप्रपाठकः

अथैकादशः खण्डः द्वितीयप्रपाठकः

दीर्घतमा अत्रपि रुषिणः छन्दोभिर्देवता-

पुरुत्वादाशिवाङ् वौचैरिरेभनेवस्विदो। नोदे
स्यैव शरणं आमहस्य ॥ १ ॥ - ८७

हे अग्ने) अग्ने आत्ममेवा (तव) (अग्निः) अग्नीसेवकोऽहं (त्वां)

त्वां (स्विदा) अर्चन प्रकारेण स्वदतिर्चतिकर्मानि० (दाशिवे
 इ) हविर्वत्तवानस्मि (आ) समान्नात् (वेवे) प्रार्थयामि (इ
 व) यथा (महस्य) महनः (नोदस्य) शिक्षकस्य गुरोः (शरणे)
 गृहे ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हेअमेवाश्मात्माग्ने २तेरे ३ सेवक मने ४ तुमको ५ पूजन
 विधिसे ६ हवि अर्पण कियाहै ७ सब सौरसे ८ प्रार्थना करताहूं ९ जैसे
 १०, ११ गुरुके १२ गृहमें शिष्य ॥ १ ॥

विश्वामित्र ऋषिः ककुप् छन्दोभिर्देवता-

मूहोत्रं पूर्व्यवचोभयभरता वृहन् । विषाज्योतींश्च
 षिविभ्रतेन वेधसे ॥ २ ॥

हेहोत्रादयः (विषाम्) मेधाविनां (ज्योतींषि) सत्कर्मानुष्ठान
 सम्पाद्यानितेजांसि (विभ्रते) निमित्ततया कुर्वाणाय (न) च
 (वेधसे) जगतो विधात्रे (होत्रे) देवानामाहात्रे (अग्नये) (वृ
 हन्) महत् (पूर्व्यम्) वेदोक्तं (वचः) स्तोत्रशस्त्रादिकं वाक्यं
 (मभरत) सम्पादयत ॥ २ ॥

भाषार्थः - हेहोत्राद्भिर्ऋत्विजो १ ज्ञानियोंके २ सत्कर्मानुष्ठा
 नसम्पाद्यतेजोंको ३ प्राप्तकरनेवाले ४ सौर ५ जगत्के विधाता ६ देवा
 हानकर्ता ७ अग्निके लिये ८ महान् ९ वेदोक्त १० स्तोत्रशस्त्रादि वा
 क्यको ११ सम्पादनकरो - ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - हेवागाद्यृत्विजः (विषाम्) प्राणायाम
 निष्ठानां योगिनां (ज्योतींषि) प्रतिविंवरूपाणि (विभ्रते) स्व
 त्मनिधारकाय (न) च (वेधसे) जगतो विधात्रे (होत्रे) महा

पुरुषपुरुषाणामाहूत्रे (अग्नेये) आत्मानये (वृहते) महत्
(पूर्व्यम्) वेदोक्तं (वेचः) महावाचं (प्रभरेत) सम्पादयत ॥ २ ॥

भाषार्थः— हे वागाद्यत्विजो १ प्राणायामनिष्ठयोगियोंके २ मति-
विंवरूपतेजोंको ३ अपने आत्मामें धारण करनेवाले ४ और ५ जगतके वि-
धाता ६ महापुरुषपुरुषोंके आह्वाना ७ आत्मानिके लिये ८ महान ९ वे-
दोक्त १० महावाक्को ११ सम्पादन करो ॥ २ ॥

गोतमऋषिरुषिाकुच्छन्दोभिर्देवता-

अग्नेर्वाजस्य गोमतेर्दृशानः सहसोयहो । अस्मे
देहि जातवेदो महि ऋवः ॥ ३ ॥ - ६६

हे (सहसोयहो) ब्राह्मज्योतिषः पुत्र (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने)
(गोमतः) बहुभिर्गोभिर्युक्तस्य (वाजस्य) अन्नस्य (दृशानः)
ईश्वरस्त्वं (अस्मे) अस्मासु (महि) प्रभूतं (ऋवः) अन्नं (देहि) ३

भाषार्थः— १ हे ब्राह्मज्योतिके पुत्र २ सर्वज्ञ ३ अग्ने ४ बहुत गोसे युक्त
५ अन्नके ६ स्वामीतुम ७ हमारे लिये ८ बहुत ९ अन्नको १० दो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्— हे (सहसोयहो) ब्राह्मज्योतिषः प्रादुर्भू-
त (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने) महापुरुषाग्ने (गोमतः) गोलोक
सम्बन्धिनः (वाजस्य) दिव्यभोगस्य (दृशानः) स्वामीत्वं (अ-
स्मे) अस्मासु भक्तेषु (महि) महान्तं (ऋवः) भोगं (देहि) ३

भाषार्थः— १ हे ब्राह्मज्योतिसे प्रादुर्भूत २ सर्वज्ञ ३ महापुरुषाग्ने ४
गोलोकसम्बन्धी ५ दिव्यभोगके ६ स्वामीतुम ७ हमभक्तोंको ८ महान्त
९ भोग १० दीजिये ॥ ३ ॥

विष्वाभिऋषिरुषिाकुच्छन्दोभिर्देवता-

अग्ने^३यजिष्ठो^३अध्वर^३देवान्^३देवयते^३यज^३। होता^३मन्द्रो^३
विराज^३स्येति^३स्विधः^३ ॥ ४ ॥ - १००

हे (अग्ने) अग्ने आत्मा मेवा (यजिष्ठः) यष्टुतमः त्वम् (अध्वरे) य
ज्ञे योग यज्ञेवा (देवयते) देवानात्मन इच्छते यजमानाय (देवा
न्) (यज) (होता) देवानामाह्वता (मन्द्रः) यजमानस्य मादयि
तात्वं (स्विधः) क्षपयित्नुं शत्रून् कामादीन्वा (अति) अतिक
म्य (विराजसि) विशेषेण शोभसे ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने वा आत्मा मे २ वडे यष्टुतम ३ यज्ञवा योग यज्ञमे
४ देवेच्छु यजमान के लिये ५ देवताओं को ६ पूजो ७ देवताओं के आह्वाना
८ यजमान के संतुष्ट करने वाले तुम ९ शत्रुओं वा काम आदि को १० अति
कमाण कर ११ विशेष शोभित होने हों ॥ ४ ॥

वित ऋषिरुषिणो छन्दोग्निर्देवता-

जज्ञानः^३ सप्त^३मातृभिर्म^३धामा^३शासता^३भिजे^३ये^३ अ
ये^३ध्रुवोर^३यीणां^३ज्चिकेत^३दो ॥ ५ ॥ - १०१

(सप्त) (मातृभिः) हविर्मानि समर्थाभिर्जिह्वाभिः स्वात्मनि हविः
प्रक्षेप्सीभिर्वीजिह्वाभिः सह (जज्ञानः) प्रादुर्भूतः (ध्रुवः) स्थिरः
(अयम्) अग्निः (यीणां) धनानां स्वरूपं (आचिकेतत)
अपश्यम् (मेधाम्) स्वकीयां बुद्धिं (भिजे) यजमानस्य ध
नार्थं (अनुशासत) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ सप्त जिह्वाओं के साथ २ प्रादुर्भूत ३ स्थिर ४ इस अग्नि
ने धनो के स्वरूप को ५ देखा ६ अपनी बुद्धि को ७ यजमान के धनार्थ १०
अनुशासन करता है ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् - (सप्त) (मातृभिः) सप्तयोगभूमिभिः (जज्ञे
नः) प्रादुर्भूतः (ध्रुवः) अचलः (अयम्) आत्माग्निः (रूयीणाम्)
योगधनानां स्वरूपं (आचिकेतत) अपश्यत् (मेधाम्) स्वकी
यशक्तिरूपां यजमानस्य बुद्धिं (अजिये) योगलक्ष्मीलाभाय
(अनुशासत) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १, २ सप्तभूमियोगके साथ ३ प्रादुर्भूत ४ अचल ५ इस आ
त्माग्निने ६ योगधनोंके स्वरूपको ७ देखा ८ निज शक्तिरूप यजमान की
बुद्धिको ९ योगलक्ष्मीके लिये १० अनुशासन करता है ॥ ५ ॥

इरिमि वि ऋटिपि रुषिाक् छन्दो दिनिर्देवता-

उत्^३स्यो^३ना^३ दिवा^३ मति^३ रदि^३ति^३ रूत्या^३ गमत् । सो^{१२} शो^३
नाता^३ मय^३ स्कर^३ र्दप^३ सिधः ॥ ६ ॥ १०२

(उत्) अपिच (सो) (यो) प्राणरूपा (मति) बुद्धिरूपा (अदितिः)
अखण्डिता पराशक्तिः श० ४।१।२।६-९ (ऊत्या) रक्षयासाद्धि
(दिवा) उत्तरायणो समाधौवा (नः) अस्मान् (अगमत्) (सो) (श
नाता) शान्ति विस्तार कारिणी पराशक्तिः तनविस्तृतौ (मयः)
सुखं (करत्) करोतु (सिधः) क्षमपितृन् शत्रून्कामादीन्वा-
(अप) अपगमयतु ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ और २ वह ३ प्राणरूप ४ बुद्धिरूप ५ अखण्डिता पराश
क्तिः ६ रक्षाके साथ ७ उत्तरायणवासमाधिमें ८ हमको ९ प्राप्त हुई १० वह
११ शान्ति विस्तार करने वाली पराशक्ति १२ सुखको १३ करो १४ शत्रु
गोवाकाम आदिको १५ दूर हटाओ ॥ ६ ॥

द्वयोर्विश्वमनावैयश्वऋषिरुषिाक् छन्दोभिर्देवता-

ईडिष्वाहिप्रतीव्यो यजस्वजोतवेदसम्। चरि
ष्णुधूममगृभीतशोचिषम् ॥७॥ - १०३

(प्रतीव्यम्) शत्रुषुप्रतिगमनशीलं (अग्निं) (हि) एव (ईडिष्वा) स्तुतिभिः स्तुतं कुरु किञ्च (चरिष्णुधूमम्) सर्वत्रचरणशीलधूमज्वालं (अगृभीतशोचिषम्) रक्षोभिः प्रधृतदीप्तिं (जातवेदसम्) सर्वज्ञं (यजस्व) हविर्भिः पूजय ॥७॥

भाष्यार्थः - १ शत्रुओं परधावा करने वाले २ अग्निको ३ ही ४ स्तुत करे ५ सर्वत्र गमनशीलधूमवाले ६ राक्षसों से अप्रधृत दीप्तिवाले ७ सर्वज्ञ अग्नि को ही हविषों से पूजो ॥७॥

अथाध्यात्मम् - (प्रतीव्यम्) कामादिषुगुमनशीलं (अग्निं) आत्माग्निं (हि) एव (ईडिष्वा) किञ्च (चरिष्णुधूमम्) कमलेषुचरणशीलप्राणं। प्राणोधूमः श० १४। ६। १। १५ (अगृभीतशोचिषं) कामादिभिरप्रधृतदीप्तिं (जातवेदसम्) सर्वज्ञात्माग्निं (यजस्व) पूजय ॥७॥

भाष्यार्थः - १ काम आदि परधावा करने वाले २ आत्माग्निको ३ ही ४ पूजो और ५ कमलों में गतिशील प्राण वाले ६ काम आदि से अप्रधृत दीप्तिवाले ७ सर्वज्ञ आत्माग्निको ही पूजन करो ॥७॥

उष्णिकृच्छन्दोग्निर्देवता-

ननुस्यमाययाचनैरिपुरीशीतमर्त्यः। योऽग्रये
ददाशहव्यदातये ॥८॥ - १०४

(मर्त्यः) मरणशीलः (रिपुः) शत्रुः (मायया) (चन) आपितस्यु यो गिनो भक्तस्य वा (नै) (ईशीत) ईश्वरो न भवति (यैः) (हव्य

दातये) हविषां मादानुसमर्थाय (अग्नेये) अग्नेये । आत्माग्नेये-
इष्टदेवाग्नेये वा (ददाश) हवींषि प्रयच्छति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ मरणशील २ शत्रु ३ मायासे ४ भी ५ उसयोगीभक्त
पर ६ ७ समर्थनहीं होता है ८ जोकि ९ हवि ग्रहणमें समर्थ १० अग्नि वा
आत्माग्नि वा इष्टदेवाग्नि के लिये ११ हवि समर्पण करता है ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषिरुष्णिकु छन्दोभिर्देवता-

अपत्यं वृजिनं छं रिपुं छं स्तेनं मग्ने दुराध्यम् ।

देविष्टमस्य सत्पते क्लीधौ सुगम् ॥ ९ ॥ - १०५

हे (सत्पते) सतां पालयितः (अग्नेः) अग्ने आत्माग्ने वा (तम्)
प्रसिद्धं (वृजिनम्) कुटिलं (दुराध्यं) दुःखस्याध्यात्तारं दु-
ष्टाभिप्रायं (स्तेनम्) चौररूपं (रिपुम्) शत्रुं कामम्बा (देवि-
ष्टम्) दूतमं (अपास्य) अपक्षिप । असुक्षेपने (यिम्) (य)
पुरुषोत्तमः (इ) तस्य शक्तिस्तं शक्ति युक्तं पुरुषोत्तमं (सुगम्)
सुलभं (क्लीधौ) कुरु ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे सत्पुरुषों के पालक २ अग्ने वा आत्माग्ने ३ उस प्रसिद्ध
४ कुटिल ५ दुष्टाभिप्राय ६ चौर रूप ७ शत्रु वा कामको ८ वदत दूर ९ फेंको
१० शक्ति युक्त पुरुषोत्तमको ११ सुलभ १२ करो ॥ ९ ॥

विश्वमना एवार्थिरुष्णिकु छन्दोभिर्देवता

अनुष्ठयन्नेन वस्य मे स्तोमस्य वीरविश्वते । निमा

यिनस्तपसा रक्षसो दह ॥ १० ॥ - १०६

हे (वीर) शत्रूणां विनाशयितः शीर्यवन्वा (विश्वते) विशां-
। योगिनाम्बा पालयितः (अग्नेः) अग्ने । आत्माग्ने वा (मे) (नव)

स्य) गुरूपदेशान्नवनुल्यस्य (स्तोत्रस्य) स्तोत्रस्य (श्रुष्टी) अन्तरिक्षे व्याप्तिः नि० तस्मात् (तपसा) तापकेन तेजसा (मायिनः) मायाविनः (रक्षसः) रक्षसान् कामादीन्वा (निर्दह) नितरां भस्मीकुरु ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ हे शत्रुविनाशक २ योगियोंके रक्षक ३ अग्ने ४ मेरे ५ गुरूपदेश से नवनुल्य ६ स्तोत्रकी ७ अन्तरिक्षमें व्यापि है उस कारण ८ तापक नेज से ९ मायावी १० रक्षसों वा काम आदि को ११ निरन्तर भस्मकरो ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्यैकादशः खण्डः ॥

अथ द्वादशः खण्डः

प्रयोगो भार्गव ऋषिः ककुप् छन्दो मिर्दिवता

प्रमथं हिष्टाय गायत ऋतां वै वृहते भुक् शोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥ - १०७

हे (उपस्तुतासः) उपगम्य स्तोतारः यूयं (महिष्टाय) दातृत माय (ऋतां वै) यज्ञवते सत्यवते वा (वृहते) महते (भुक् शोचिषे) भुद्धतेजसे व्यष्टि समाष्टिरूपतेजसे वा। एष वै भुको य एष तपतिः श० ४। ३। २। २६ (अग्नये) अग्नये आत्माग्नये वा (अगायत) स्तोत्रं पठत ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ हे उपस्तोतापोनुम २ वड़ेदाना ३ यज्ञवान वा सत्यवान ४ महान् ५ भुद्धतेज वाले ६ अग्निवा आत्माग्निके लिये ७ स्तोत्र को पढ़ो ॥ १ ॥

द्वयोः सौभरिर्ऋषिर्गुणिका छन्दो मिर्दिवता

प्रसो^{१२}अग्ने^{२२}तवो^{३३}तिभिः^{३३} सुवीरो^{३३}भिस्तरति^{३३}वोजे^{३३}कर्म
भिः । यस्य^{३३}त्वं^{३३} सख्य^{३३}माविध^{३३} ॥ २ ॥ १०८

हे (अग्ने) अग्ने । आत्माग्नेवा (सः) यजमानः (तवे) (सुवीरोभिः)
महावीराभिः यद्वा शोभनवीराः पुत्रादयो यासुताभिः (वाजक
र्म्मभिः) वाजानामन्तानां वलानां वा कर्मरक्षां यासुतादृशी
भिः (ऊर्तिभिः) रक्षाभिः (प्रतरति) आपदुं संसारसागरं वा प्रतर-
ति (यस्य) यजमानस्य (त्वम्) (सख्यम्) सखित्वं मित्रत्वं (आ-
विध) प्राप्नोषि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ वह यजमान ३ तेरी ४ महावीरवती
वा पुत्रादिवती ५ रक्षकवलकर्मवती ६ रक्षाओं से ७ आपद वा संसारसागर-
कोतरता है ८ जिस यजमानके ऋतुम १० सखाभावको ११ प्राप्त करते हो ॥ २

उषिणक् छन्दोऽग्निर्देवता-

तू^१गूर्ध^२या^३स्व^४एरि^५रि^६देवा^७सो^८देव^९मरे^{१०}ति^{११}दध^{१२}न्विरे^{१३} । देव^{१४}
त्रो^{१५}हव्य^{१६}मू^{१७}हिषे ॥ ३ ॥ - १०९

(अग्ने) हे ब्राह्मणात्वं (देवत्रो) यज्ञे । देवान् हविर्दानेन त्रायते त्रा-
क (हव्यम्) हविः (ऊर्हिषे) निर्णीतं कुरुषे (देवासः) विद्वांसः ऋ-
त्विजः (अरतिमे) देवान् यजमानां ऋप्रतिगन्तारं (स्वः) सूर्यः
रूपं (नरम्) नररूपं (देवम्) अग्निमात्माग्निम्वा (दधन्विरे) धा-
रितवन्तः स्थापितवन्तः नि० २ । १४ तस्मात्त्वं (तम्) अग्निमात्मा
ग्निम्वा (गूर्धय) स्तुहि गूर्धयतिः स्तुतिकर्मानि० ३ । १४ । ५ - ॥ ३

भाषार्थः - १ हे ब्राह्मणानुम २ ऋत्तमे ३ हविको धनिर्णीत करते हो ५
विद्वानऋत्विजोंने ६ देवता और यजमानोंके पास जानेवाले ७ सूर्यरूप ८

नररूपर्षिः श्रमिवाशात्माग्नि को १० स्थापन किया ११ उस श्रमिवाशात्माग्नि को १२ स्तुत करो ॥ ३ ॥

प्रयोगो भार्गवः ऋषिः सोमः काण्वो वा ऋषय उषिणः क्वन्दो
 मिर्देवता- ^३मानो ^२हृणीथो ^१अतिथि ^३वसुरो ^३भिः ^३पुरु
 प्रशस्त एषः । यः ^३सुहोता ^३स्वध्वरः ॥ ४ ॥ ११०
 हे ऋत्विक् सङ्घ (नः) अस्माकं (अतिथिम्) अतिथि वत्पु
 यमग्नि मात्माग्निम्वा (मो) (हृणीथाः) माहर (यः) (एषः) (सु
 होता) सुष्टु देवानामाह्वता (स्वध्वरः) शोभनयज्ञः (पुरुप्रश
 स्तः) बहुभिः स्तुतः (वसुः) ब्रह्मांशुरूपः ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - हे ऋत्विज समूह १ हमारे २ अतिथि समान मिय श्रमि वा
 शात्माग्नि को ३, ४ हरण मत करो ५ जो ६ यह ७ देवताओं का आह्वता ८
 शोभनयज्ञ वाला ९ बहुतों से स्तुत १० ब्रह्मांशु रूप है ॥ ४ ॥

निस्तृणां सोभरिः ऋषिरुषिणः क्वन्दो मिर्देवता

^३भद्रो ^२नो ^१अग्नि ^३राहुतो ^३भद्रो ^३रातिः ^३सुभग ^३भद्रो ^३अ
 ध्वरः । भद्रो उत प्रशस्तयः ॥ ५ ॥ १११ ॥

हे (सुभग) शोभनैश्वर्याग्ने । आत्मा मेवा (आहुतः) हविर्भिस्त
 पितृत्वं (नः) अस्मभ्यं (भद्रः) कल्याणो भवतु (रातिः) त्वदानं
 (भद्रो) कल्याणं भवतु (अध्वरः) यज्ञः योग यज्ञो वा (भद्रः) क
 ल्याणो भवतु (उत) अपि च (प्रशस्तयः) प्रशंसाः (भद्रो) क
 ल्याण्यश्च भवन्तु ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ हे शोभनैश्वर्यवान् अग्ने वा आत्मा मे २ हविसे तपित तुम ३
 हमारे लिये ४ कल्याण रूप हजिये ५ ते दान ६ कल्याण रूप हो ७ यज्ञ वा

वायोगयज्ञ ८ कल्याणरूपहो ९ और १० प्रशंसा ११ कल्याणरूपहो ५॥

उषिाक् छन्दोभिर्देवता-

यजिष्ठंत्वाववृमहे देवदेवत्रा होतारं ममर्त्यम् । अ
स्य यज्ञस्य सुकृतुम् ॥ ६ ॥ ११२

हे अग्ने । आत्माग्नेवा (अस्य) (यज्ञस्य) (सुकृतुं) सुष्ठु कर्तारं
(यजिष्ठं) यष्टुतमं (देवत्रा) देवेषु मध्ये (देवम्) अतिशयेन
दानादिगुणं (होतारम्) देवानामाह्वतारं (अमर्त्यम्) अवि-
नाशिनं (त्वां) त्वां (ववृमहे) वृणीमहे संभजामहे ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - हे अग्नेवा आत्माग्ने १ इत् २ यज्ञके अष्टौ कर्ता ४ बडेयष्टा भेदेन
ताओंके मध्य ६ अतिशय दानादिगुणवाले ७ देवताओंके आह्वाना ८ अवि-
नाशी ९ तुमको १० हमसेवन करते हैं ॥ ६ ॥

वार्हस्पत्य ऋषिः ककुप् छन्दोभिर्देवता-

तदग्ने द्युम्नमाभरयत्सासाहो सदनं कञ्चिदत्रिणो
म् । मन्युजनस्य दूढ्यम् ॥ ७ ॥ ११३

(अग्ने) हे अग्ने । आत्माग्नेवा (यत्) यदा (आसदने) यज्ञे योग-
यज्ञेवा (जनस्य) यजमानस्य (अत्रिणाम्) अन्तारं (कम्) का-
मं (मन्युम्) क्रोधं (दूढ्यं) दुष्टां बुद्धिं नि० ५।४।२६ (चित्)
अपि (सासाह) (तत्) तदा (द्युम्नम्) यशः (आभर) अस्मा-
भ्यमाहर ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ हे अग्नेवा आत्माग्ने २ जब ३ यज्ञवा योगयज्ञमें ४ यजमान-
के ५ भस्मक ६ कामको ७ क्रोधको ८ हुष्ट बुद्धिको ९ भी १० जयकरो ११ त-
व १२ यशको १३ हमें प्राप्त कराओ ॥ ७ ॥

विश्वमनाञ्चरपि रुषिाक छन्दोभिर्देवता-

यद्वाउविश्वपतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशो विश्वे
दग्निः प्रतिरक्षां सि सेधति ॥८॥ ११४

(यद्वा) यदेव (विश्वपतिः) विशां योगिनाम्वा पालायिता (शितः)
हविर्भिस्तीक्ष्णी कृतः संस्कृतो वा शोतनु करुणो श्यतिः संस्कृत
रार्थः (सुप्रीतः) सुप्रीतोऽग्निरात्माग्निर्वा (मनुषः) यजमान
स्य (विशो) गृहे देहे वा प्रादुर्भवति विश्वनिवेशने । तदेव (उ) रु
द्ररूपः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (विश्व) सर्वाणि (इव) एव
(रक्षांसि) रक्षांसि कामादीन्वा (सि सेधति) गृह्णाति पिधुगतौ ।

॥८॥-११४

भाषार्थः

१जमी २योगियोंकारक्षक ३हविशोंसेतीक्ष्णाफियाहुआवासंस्कृत
अतिप्रसन्नअग्निवाआत्माग्नि ५यजमानके ६गृहवादेहमें प्रकटहो
ताहैतमी ७रुद्ररूप ८अग्निवाआत्माग्नि ९सव १०, ११रक्षसोंवाकाम-
आदिकोही १२ग्रहणकरताहै ॥८॥ ११४॥

इतिज्ञीभृगुवंशावतंसंज्ञीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते-
सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमोऽध्यायः-

समाप्तमाग्नेयं पर्व आग्नेय काण्डम्वा

॥ इति १मपर्व ॥

अथद्वितीयाध्याय आरभ्यते ॥

तत्रप्रथमः खण्डः

शंयुर्वर्हस्पत्यञ्चरपिभरद्वाजञ्चरिर्वागायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता-

नेद्वोगायसुतेसचापुरुहूतायसत्त्वेने। शयद्गवे



नैशोकिने ॥१॥१

अत्र श्रुतयोविचारणीयाः इन्द्रोवैयजमानः श० ११११११
 मन एवेन्द्रः १२।६।१।१३ प्राणा एवेन्द्रः १२।६।१।१४ हृदयमेव
 न्द्रः १५ इन्द्रोवैसर्वदेवाः १३।७।१।४ इति परमैश्वर्ये इन्द्रः पर
 मेश्वरः। बहुर्थसंभवे योर्थोयत्र संभविष्यति तमेव कथयिष्या
 मद्मति— हे स्तोतः (वै) निवृत्तात्मा (सच्चो) ऋत्विग्भिः सहि
 तस्त्वं (सुते) अभिषुते सोमे सति (पुरुहूताय) वद्भिर्यजमा
 नैराहूताय (सत्वने) धनानां दात्रे। षण्णुदाने (इन्द्राय) (त
 त्) स्तोत्रं (गाय) (यत्) स्तोत्रं (गवे) विष्टवं श्रुत्वाय (ने
 च (शाकिने) शक्ति मते इन्द्राय (शम्) सुखकरं भवेत् ॥१॥
भाषार्थः— हे स्तोता १-२ ऋत्विज सहित निवृत्तात्मा तु म ३ सोमा
 भिषवहोने पर ४ वहुत यजमानों से आहूत ५ धनदाता ६ इन्द्रके लिये ७
 उस स्तोत्रको ८ गाओ ९ जो स्तोत्र १० विष्णुके अंशरूप ११ और १२ शक्ति
 मान इन्द्रके लिये १३ सुखकर्ता होवे ॥१॥

अथाध्यात्मम-हे अन्नरात्मन् (वै) निवृत्तात्मा (सच्चो)
 वागाद्यत्विग्भिः सहितस्त्वं (सुते) अभिषुते प्रतिविंवे (पुरुहू
 ताय) वद्भिर्योगिभिराहूताय (सत्वने) मोक्षदात्रे (इन्द्राय
 परमेश्वराय (तत्) स्तोत्रं (गाय) (यत्) (गवे) ब्रह्मांशुरूपाय
 (ने) च (शाकिने) सर्वशक्ति मते (शम्) आनन्दकरं भवति १
भाषार्थः— हे अन्नरात्मन् १-२ वागादिऋत्विज सहित निवृत्तात्मा
 तु म ३ आत्मप्रतिविंवाभिषवहोने पर ४ वहुत योगियों से आहूत ५ मोक्ष
 दाता ६ परमेश्वरके लिये ७ उस स्तोत्रको ८ गाओ ९ जो स्तोत्र १० ब्रह्मांशु

रूप ११ और १२ सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिये आनन्द कर्त्ता होवे ॥१॥

सूक्तस्य ऋषिर्गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता-

यस्ते नूनं शतक्रतुर्विन्द्रो द्युन्नितमो मदेः ।

ते नूनं नूनं मदे मदेः ॥ २ ॥ २

हे (शतक्रतो) शतयज्ञकर्त्ताः (इन्द्रे) (येः) (द्युन्नितमः) दी
प्नितमः (मदेः) सोमः (ते) (नूनम्) त्वदर्थं मेवास्माभि रभिषुतो
ऽस्ति (तेन) सोमेन (नूनम्) अवश्यमेव (मदे) तव मदे सज्जा
ते सति (मदेः) अस्मानपिमादय मदी हर्षे ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे शतयज्ञकर्त्ता २ इन्द्र ३ जो ४ बड़ा दीप्यमान ५ सोम
६ आपके लिये ७ निश्चय अभिषुत हुआ ८ उस सोमसे ९ अवश्यही १० ते
रामदुत्पन्न होने पर ११ हमको भी हर्षित कर ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (शतक्रते) अनन्तकर्मन् (इन्द्रे) परमे
श्वर (येः) (द्युन्नितमः) यशस्वितमः (मदेः) आत्मप्रतिविंबः
(ते) (नूनम्) त्वदर्थं मेवाभिषुतोऽस्ति (तेन) आत्मप्रतिविंबे
न (नूनम्) अवश्यमेव (मदे) सज्जाते सति (मदेः) अस्मान-
पिमादय मदी हर्षे ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे अनन्तकर्मा २ परमेश्वर ३ जो ४ बड़ा यशस्वी ५ आ
त्मप्रतिविंब ६ आपके लिये ही अभिषुत हुआ है ८ उस आत्मप्रतिविंबसे
९ अवश्यही १० आपका मदुत्पन्न होने पर ११ हम आत्मारूपयज्ञज्ञानों
को भी आनन्दित करो ॥ २ ॥ हर्यत ऋषिर्गायत्री छन्दो गौर्देवता

गाव उपवदावटं मही पत्तस्य रप्सुदा उभा कणा
हिरण्ययो ॥ ३ ॥ - ३

हे(गौः) वेदमंत्र (अः) वागीशस्त्वं (अवटे) कृणीरन्ध्रे (उपवदु) य
स्मात् (यज्ञस्य) यज्ञस्ययोगयज्ञस्यवा (मही) भूमिः (रप्सुदा)
(रप्) मन्त्रस्तेन सुदा सुखदात्री (उभा) उभौ (कणी) कौणी (हिर-
एयथा) ज्योतिर्मयौ महावाक् ऋवणो समर्थौ । ज्योतिर्वैहिर
एयं श० ६।७।१।२-॥३॥

भाषार्थः - १ हे वेदमंत्र २ वागीश तुम ३ कणीरन्ध्रमें ४ कहो जिसका
रूप यज्ञवायोगयज्ञकी दी भूमि ७ मंत्रद्वारा सुखदाता है और दोनों ८ का
न १० ज्योतिर्मय अर्थात् महावाक् ऋवण में समर्थ हैं ॥ ३ ॥

ऋतकक्षत्रपिगीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अ३१ रमेभ्यो य गायत ३ ऋतकक्षारङ्गवो ३ अ१ रमिन्द्र
स्य धाम्ने ॥४॥ - ४॥

हे (ऋतकक्ष) ऋतं शास्त्रमेव कक्षे वा ह्यस्य स ऋतकक्षः हे शा-
स्त्रानुवर्तिन्नन्तरात्मन् (अभ्योय) विराडात्मने सूर्याय । असौ वा
ऋादित्य एषो ऋः श० ६।३।१।२६ (अरम्) अलं (गायत) पुत्रशि
ष्पाद्यभिप्रायेण वद्भवचनं (गवे) सूर्याशरूपदेवसमूहाय । एषवै ऋ
कोय एषतपतितस्य ये रश्मयस्ते विश्वे देवाः श० ४।३।१।२६ (अरम्)
अलं गायत (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (धाम्ने) महापुरुषलोकाय
(अरम्) अलं गायत ॥४॥

भाषार्थः - १ हे शास्त्रानुवर्तिन्नन्तरात्मन् २ विराडात्मा सूर्यके लिये
३ पर्याप्त ४ गानकरो ५ सूर्याशरूपदेवसमूहके लिये ६ पर्याप्त गानकरो ७ पर-
मेश्वरके धाम अर्थात् महापुरुषलोकके लिये ८ पर्याप्त गानकरो - ॥४॥

ऋतकक्षत्रपिगीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

तोमिन्द्रवाजयामसि महैष्टत्रायहन्तेवे। सृष्टषो
 वृषभोभुवत् ॥५॥ - ५

(तम्) (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्वरं वा (महे) महते (ष्टत्राय) पापाय (हन्ते
 वे) महापापस्य हन्तुं (वाजयामसि) सोमेनात्मप्रतिविंवेन वा वाज
 वन्तमन्नवन्तश्चाकुर्मः (सः) (वृषा) धनैः शक्तिभिर्वासेक्तादाता (वृष
 भः) कामानां योगैश्वर्याणां स्वादाता (भुवत्) भवतु ॥५॥

भाषार्थः - १ उसर इन्द्रवापरमेश्वरको ३, ४, ५ महापापकेनाशार्थं
 सोमवाशात्मप्रतिविंवार्षणासेहमन्नवानकरं ७ वह ८ धनवाशक्तिभ्यो
 कादाता ९ कामनावायोगैश्वर्योकादाता १० होशो ॥ ५ ॥

इन्द्रमातरो देवजामयऋषिका गायत्री छन्दो देवता-

त्वमिन्द्रवल्नादधिसेहसोजातश्रोजसः। त्वंश्सन्
 वृषन् वृषदासि ॥६॥ - ६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (सहसः) ब्राह्मज्योतिषः (वल्नात्) वल्
 शक्त्या (श्रोजसः) दीप्तिशक्त्या (अधिजातः) प्रादुर्भूतोऽसि हे (वृष
 न्) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षितः। दानः (त्वम्) (सन्ति) सदैव (हो
 पा) कामादीनां वर्षिता (असि) नान्यः स्वस्यान्याभावात् ॥६॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुम ३ ब्राह्मज्योतिकी ४ वलशक्ति ५ शौरदी
 प्तिशक्तिसे ६ प्रकटहुएहो ७ हे धर्मकाम अर्थमोक्षकेदाता ८ तुम ९ सदैव १०
 कामादिकी वर्षा करने वाले ११ हो अद्वैत होनेसे ॥ ६ ॥

गोपत्यश्वसक्तिनोऋषी गायत्री छन्दो महानारायणो देवता-

यज्ञे इन्द्रमवर्द्धयद्भूमिव्यवर्तयत्। चकाराण्योप
 शान्दिवि ॥७॥ ७

(यत्) यत्पुरुषो महानारायणः (इन्द्रम्) ईश्वरं ब्रह्मविष्णुशि
वेन्द्राख्यं (अकर्मयत्) (यत्) यस्मात् (दिवि) परमेधाम्नि (शोपशे
म्) उपेत्य शयनं (चक्राणः) कुर्वन् (भूमिम्) व्यष्टिसमष्ट्याख्यभू
मिं ब्रह्माण्डं (व्यवर्त्तयत्) विशेषेण वर्त्तमानमकरोत् ॥ ७ ॥

भाषार्थः— १ यत्पुरुष महानारायणने २ ब्रह्माविष्णुशिव इन्द्रनाम
ईश्वरको ३ वदाया ४ जिसकारण ५ परमधाममें ६ शयन करने ७ हुए ८
व्यष्टिसमष्टिभूमिनाम ब्रह्माण्डको ९ विशेषकर वर्त्तमान किया ॥ ७ ॥

गोषक्त्यश्वसक्तिनौ ऋषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता.

यदिन्द्राह यथा त्वमीशीयवस्व एक इत् । स्तोता
मे गोसखा स्यात् ॥ ८ ॥ ८

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यथा) (त्वम्) (एकः) (इत्) एव (वस्वः) प
रमेश्वर्यस्य ईशिषेतथा (अहम्) (यद्) यदि (ईशीय) योगेश्व
र्ययुक्तः स्यात् (तदानीम्) (मे) मम (स्तोता) वाक् (गोसखा) म
हावाचांसखा (स्यात्) ८ ॥ ८ ॥

भाषार्थः— १ हे परमेश्वर २ जैसे ३ तुम ४ अकेले ५ ही ६ परमेश्वर्यके स्तो
त्री होनेसे ही ७ मैं ८ यदि ९ योगेश्वर्यवान होऊँ तो १० मेरा ११ वाक् १२ महा
वाक्योंका सखा १३ होवै ॥ ८ - ८ ॥

मेधाधिगिराङ्गिरस ऋषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता.

पन्यपन्यमित्सोतारं प्राधोवत मद्योय । सोमं
वीरोय भूरोय ॥ ९ ॥ - ९

हे (स्तोतारः) अभिषोतारोऽश्वर्यवः । वागाद्यत्विजोवा (मद्योय)
मद्योग्याय (वीरोय) विकान्ताय (भूरोय) शौर्यवते । इन्द्राय

परमेश्वरायवा (पुन्यम्) अधिदैवयज्ञेस्तुत्यं (पुन्यम्) अथा^६
 त्मयज्ञेस्तुत्यं (इत) एव (सोमम्) सोममात्मप्रतिविन्वा^७
 धावत) अभिगमयत प्रयच्छतेत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः हेअध्वर्युलोगोवावागादिऋत्विजो २ मद्योग्य ३ वीर ४ अ
 रइन्द्रवापरमेश्वरकेलिये ५ अधिदैवयज्ञमेंस्तुति योग्यवा ६ अथात्मय
 ज्ञमेंस्तुतियोग्य ७ ही ८ सोमवा आत्मप्रतिविंवको ९ समर्पणकरो ॥ ६ ॥

काएवः प्रियमेधऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इद्वसोसुतमन्धः पिवा सुपूर्णा मुदरम् । अना
 भयिन् ररिमाते ॥ १० ॥ १०

(अनाभयिन्) हे निर्भय (वसो) प्रशस्तधनवन्निन्द्र (इदम्)
 (सुतम्) अभिषुतं (अन्धः) सोमलक्षणान् यथा (सुपूर्णां)
 (उदम्) भवति तथा (आपिव) (ते) तुभ्यं (ररिम्) ददाः ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ हे निर्भय २ प्रशस्तधनवन्निन्द्र ३ इत्स ४ अभिषुत ५ सोम
 लक्षण अन्नको जैसे ६ ७ उदर पूर्ण होने से ही ८ पान करो ९ आपके लिये
 १० हम देते हैं ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् - (अभयिन्) हे भयभून्य (वसो) यज्ञस्व
 रूप (अ) परमेश्वर (इदम्) (सुतम्) अभिषुतं (असुपूर्णां) प्राणै
 र्युक्तं (अनुदरम्) त्यक्तभोगं (अन्धः) आत्मप्रतिविंवरूपान्
 (पिव) (ते) तुभ्यं त्वदर्थं (ररिम्) ददाः रादाने ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ हे भयभून्य २ यज्ञस्वरूप ३ परमेश्वर ४ इत्स ५ अभिषुत
 ६ प्राणों से युक्त ७ त्यक्तभोग ८ आत्मप्रतिविंवरूप अन्नको ९ पान करो १०
 आपके लिये ११ हम देते हैं ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते सा
मवेदीयब्रह्म भाष्ये इन्द्रो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥

सूतकक्षः श्रुतकक्षोवाञ्छरिषिर्गयित्रीब्रह्मः सूर्यो देवता-
उदूघेदभिः श्रुतो मघं वृषभन्मर्यापिसम् । अ
स्तारमेषि सूर्य ॥ १ ॥ ११

(सूर्य) हे सूर्य रूपेश्वर (घो) किरण मालया सहितस्त्वं (श्रुतो
मघं) सर्वदा देयत्वेन विख्यातधनं (वृषभम्) याचमानानां
धनवर्षितारं (नर्यापिसम्) नरहितं नर्यां नरुहित कर्माणां
(अस्तारं) शत्रूणां क्षेपारं महानारायणां (उत्) उत्कर्षणा
(अभिदत्) समन्नादेव (एषि) प्राप्नोषितस्य शिरस्त्वात् साका
रणामाद्यत्वाच्च ॥ १ ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ हे सूर्य रूपेश्वर २ किरणमालासे युक्त तुम ३ सदा वि
ख्यात धनवाले ऋष्याचकोंके धनदाता ५ प्राणियोंके हितकारी कर्म करने
वाले ईशजयी महानारायणको ७ उत्कर्षाके साथ ८ सब शत्रुसे ही ई प्रा
प्त करते हो उसके शिररूप और साकारों में आद्य होनेसे ॥ १ ॥ १२ विनियोगः

पूर्ववत्-
यदद्युक्त्वाच्च वृत्रहन्नुदगा अभिसूर्य । सर्वन्तादि
न्द्रनेवशो ॥ २ ॥ १२

हे (वृत्रहन्) पापनाशक यद्वा अपामावरकस्य मेघस्य हन्तः (इन्द्र)
ईश्वर (सूर्य) (अद्य) स्थापित स्थिति काले (यत्) (कच्च) यत् किञ्चि
त्पदार्थजातं (अभि) अभिसुखी कृत्यं (उदगाः) उदयं प्राप्तवानसि
इण गतौ उत्पूर्वः तस्य लुडिः गादेशः (तत्) (सर्वम्) (ते) तव-

भाषार्थः - १ हे धर्नार्थकाममोक्षकेदाता २ परमेश्वर ३ तेरे भक्त ४ हम ५ तुमको ६ स्तुत करते हैं ७ हे ज्योतिस्वरूप ८ हमारे ९ आत्मा की १० प्रार्थना को जानो ॥ ८ ॥

विशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

आघो^३ये^३अग्नि^३मिन्ध^३ते^३स्तृण^३ान्ति^३वर्हि^३रानु^३षे^३क।
येषा^३मिन्द्रो^३युवा^३सखा^३ ॥ ८ ॥ १६

(यै) भक्ताः (आनुषेक) आनुपूर्व्याणानिरु० ६।३।१६ (वर्हिः)
(स्तृणान्ति) (अग्निम्) (इन्धते) दीपयन्ति (येषाम्) भक्तानां
(युवा) अजरामरः (इन्द्रः) परमेश्वरः (सखा) ते (आघोः) निष्पा
पाः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जो भक्त २ क्रमपूर्वक ३, ४ कुशास्तरण करते हैं ५ अग्नि को ६ दीप्त करते हैं ७ जिन भक्तों का ८ अजरामर परमेश्वर ९ सखा है वे १० निष्पाप हैं ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् (यै) योगिनः (आनुषेक) आनुपूर्व्याणो
गविधिना (वर्हिः) माणसमूहं प्रजावैवर्हिः २।६।१।२३ प्राणः
प्रजा १४।४।३।१४ (स्तृणान्ति) (अग्निम्) आत्माग्निं (इन्धते)
(येषाम्) योगिनां (युवा) अजरामरः (इन्द्रः) महानारायणः
(सखा) ते (आघोः) निष्पापाः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जो योगी २ योगविधिसे ३ प्राणसमूह को ४ अन्तर्गत करते हैं ५ आत्माग्नि को ६ मज्जलित करते हैं ७ जिन योगियों का ८ अजरामर महानारायण ९ सखा है वे १० निष्पाप हैं ॥ ८ ॥

विशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

^३भिन्धि^३विष्वा^३अप^३द्विषः^३परि^३वाधो^३जही^३मृधः^३।वसु^३
^३स्यो^३हन्त^३दा^३भरे^३॥१०॥२०

हेपरमेश्वर^३(विष्वाः)सर्वाः(द्विषः)द्वेषीःशत्रुसेनाःकामादीनां
 सेनावा(अप)अस्मत्तःअपनीय(भिन्धि)विदारय(वाधः)हिं
 सित्रीः(मृधः)संग्रामान्(परिजही)हिंस्याःह्यचोतइति(१६।
 १।३५)दीर्घः(तत्)(स्याहं)सहणीयं(वसु)धनंयोगधनंवा
 आभर)अस्मभ्यम्आहर॥१०॥२०

भाष्यार्थः - हेपरमेश्वर१सर्वद्वेषकरनेवालीशत्रुसेनावाकामादिकी
 सेनाको३हमसेदूरहटाकर४विदारणकरो५हिंसाशील६संग्रामोंको७न
 एकरो८उसर्हसहणीय१०धनवायोगधनको११दीजिये-॥१०॥२०
 इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसुनुज्वालापसादशर्मविरचितेब्र
 ह्मोव्याख्यानेद्वितीयाध्यायस्यद्वितीयःखण्डः

अथतृतीयः खण्डः

^३इह^३व^३भृएव^३एषा^३कशा^३हस्तेषु^३यद्ददान्^३।नियामं^३
^३चित्रं^३मृज्जते^३॥१॥२१-

(एषाम्)मरुतां(हस्तेषु)स्थिताः(कशाः)स्वस्ववाहनताडन
 हेतवः(यत्)(वदान्)यद्ददन्तिध्वनिकुर्वन्तितं(इहैव)अत्रैवस्थि
 त्वा(भृएव)भृणोमिसध्वनिविशेषः(चित्रम्)विचित्रं(यामम्)
 रथं(न्यृजते)नितरामलङ्करोतिऋज्जतिःसाधनकर्मानि०६
 ।४।२४-॥१॥२१

भाष्यार्थः - १इनमरुनोंके२हाथोमेस्थिति३कशा४जो५धुनिकरतीहें
 उसको६यहांहीस्थितहोकर७सुन्नाहंवहध्वनिविशेष८विचित्र९रथको

१० निरन्तर अलंकृत करती है ॥१॥ २१

अथाध्यात्मम् (एषाम्) प्राणानाम्। (हस्तेषु) स्थिताः (क
शाः) अनाहतशब्दाः। कशशब्दे (यत्) ऐश्वर्यं (वदान्) कथय
न्तितं शब्दसमूहं (इहैव) अत्रैव समाधौ (भृष्टावे) भृष्टोमिस
अनाहतशब्दः (चित्रम्) विचित्रं (यामम्) योगरथं (न्यृजते)
नितरामलङ्करोति ॥१॥ २१

भाषार्थः - १ इन प्राणोंके २ वशमें वर्तमान ३ अनाहतशब्द ४ जिस
ऐश्वर्यको ५ कहते हैं उस शब्दसमूहको ६ यहां समाधिमें ही ७ सुन्नाइं प्रह
अनाहतशब्द ८ विचित्र ९ योगरथको १० निरंतर अलंकृत करता है ॥१॥

द्वयोस्त्रिशोक ऋषिगीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

दुमे उन्वा विचक्षते सखाय इन्द्र सोमिनेः। पुष्टावन्तो
यथा पशुम् ॥२॥ २२

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (दुमे) (सोमिनेः) अभिषुत सोमाः। अ
भिषुतात्मप्रतिविंवावा (सखायः) भक्ताः (त्वा) त्वां (उ) एव (वि
चक्षते) (यथा) (पुष्टावन्तः) सम्भृत घासाः पुरुषाः (पशुम्) गो-
पशुम्विपश्यन्ति ॥२॥ २२

भाषार्थः - १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ ये ३ अभिषुत सोम वा आत्मप्रतिविं
४ भक्त ५, ६ आपको ही ७ देखते हैं ८ जैसे ९ घास डकट्टी करने वाले पुरुष १० गो
पशुको - २ ॥ २२

वत्सका एव ऋषिगीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

समस्य मन्ये वै विशो विभ्वी नमन्त कृष्टयः। समुद्रा
येव सिन्धवः ॥३॥ २३

(विशः) परमेश्वरे निविशन्त्यः । विश प्रवेशे (विश्वोः) सर्वाः (कृष्ट-
यः) अजाः सुमुखवः (अस्य) परमेश्वरस्य (मन्यवे) ज्ञानयज्ञाय-
जपयज्ञाय वामनपूजायां बोधे च (संनमन्त) (इव) यथा (सिन्धु-
वः) स्यन्दनशीलानद्यः । इन्द्रियाणि वा (समुद्राय) समुद्राय मन-
सेवा । मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२-॥३॥

भाषार्थः - १ परमेश्वरमें प्रवेश करने वाले २ सब ३ सुमुखजन ४ परमेश्वर
के ५ ज्ञानयज्ञवाजपयज्ञके लिये ६ भुक्ते हैं ७ जैसे ८ नदियां वा इन्द्रियां
९ समुद्रवामनके लिये-॥३॥

कुसीदीका एव ऋषिर्गायत्री छन्दो देवा देवताः

द्वानामिद्वामहन्तद्वृणीमहवयम् । वृषाणां
मस्मभ्यमृतये ॥ ४ ॥ २४

(वृषाणाम्) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्षित्वृणां (देवानाम्) महापुरुष
पुरुषाणां (इत्) एव (महन्) (अवः) पालनमस्ति (तत्) पालनं
(अस्मभ्यम्) (ऊतये) स्वकीयरक्षणाय (वयम्) (आवृणीमहे)
आभिमुख्येन प्रार्थयामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ धर्मार्थकाममोक्षके देवता २ महापुरुषसुरवोंका ३ ही ४ व
डा ५ पालन है ६ उस पालनको ७, ८ निजरक्षाके लिये ९ हम १० चाहते हैं ॥ ४ ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो ब्रह्मणस्पतिर्देवता

सोमो नो अस्वराणां कृणुहि ब्रह्मणस्पते । कक्षी
वन्तं यस्मै शिजे ॥ ५ ॥ २५

(ब्रह्मणस्पते) हे प्राण । प्राणो हि ब्रह्मणस्पतिः श० १४।४।१।२३
(कक्षीवन्तं) कक्षपापं कक्षीपापी कामस्तद्वन्तं (सोमानं) तस्मा

देवसोमस्यात्मप्रतिविंवस्याभिषवकर्त्तारिं^४(अम्) ब्राह्मणांमांस्त्व^५
 णां) ब्रह्मवर्चस्विनं (कृणोहि) कुरु (यैः) अहं (शौशिजः) योगे-
 च्छयायुक्तोस्मि ॥५॥

भाषार्थः - १ हे प्राण २ कामी ३ और आत्म प्रतिविंव का अभिषव करने-
 वाले ४ मुझ ब्राह्मण को ५ ब्रह्मवर्चस्वी ६ करो ७ जोमें ८ योगेच्छासे युक्त हूं ९

अनुकस्ररषिगीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

वो^१ध^२न्मना^३इ^४दे^५स्तुनो^६वृ^७त्र^८हा^९ भूर्या^{१०}सुतिः^{११}। शृ^{१२}णोतु^{१३}
 श^{१४}क^{१५}श्री^{१६}षि^{१७}म् ॥ ६ ॥ २६

(वृत्रहा) पापस्यहन्ता (भूर्यासुतिः) बहुसोमरसेनात्मप्रतिविंवे-
 नवापूज्यः (शकः) सर्वशक्तिमान् परमेश्वरः। शक सामर्थ्ये (नः)
 अस्माकं (वोधन्मनाः) ईप्सितानां ज्ञाता (इत्) एव (अस्तु) (श्री
 शिषम्) अस्मदीयांस्तुतिं (शृणोतु) ॥६॥२६

भाषार्थः - १ पापनाशक २ बहुन सोमरसवा आत्म प्रतिविंव से पूज्य ३ सर्व
 शक्तिमान परमेश्वर ४ हमारे ५ ईप्सितों का ज्ञाता ६ ही ७ हो ८ हमारी स्तुतिको
 सुनो ॥६॥२६ (श्यावाश्वरषिगीयत्री छन्दः सविता देवता-

अ^१द्य^२नो^३दे^४वस^५वितः^६ प्र^७जा^८वत्^९ सा^{१०}वीः^{११} सौ^{१२}भ^{१३}ग^{१४}म्^{१५} पर^{१६}
 दु^{१७}र्ष^{१८}प्र्य^{१९} सु^{२०}व ॥ ७ ॥ २७

हे (सवितः) सूर्ययद्वा सर्वस्य प्रसविता (देवे) मायाक्रीडनकैः
 क्रीडन शील परमेश्वर (अद्य) (नः) अस्मभ्यम् (प्रजावत्) पुत्रा
 द्युपेतं प्राणाद्युपेतं वा (सौभगम्) शोभनं धनं योगैश्वर्यम् वा (सौ
 वी) प्रेरय (दुर्षप्र्यम्) दुःस्वप्नं दुःखं दुःस्वप्नतुल्यं संसारम् वा (पर
 सुव) दूरे प्रेरय पुप्रेणो ॥७॥२७

(सङ्गमे) भृकुटौ (धिया) पराशक्तिरूपविद्यया (अजायत)
योगिनां दृष्टौ प्रादुर्भवति ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ वेदस्तमहापुरुष २ गगनमेघोंके ३ प्रान्त गगनमण्डल
४ खौर ५ नाडियोंके ६ संयमभृकुटिमें ७ पराशक्तिरूपविद्याकेद्वारा ८ योगि
योंकीदृष्टिमें प्रकट होता है ॥ ९ ॥

इरिमिव ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

प्रसम्प्राजञ्चूर्षणीनामिन्द्रं स्तोतानव्यं
गीर्भिः नरैर्नृषाहं मंथं हिष्ठम् ॥ १० ॥ ३०

हे स्तोतारः (चर्षणीनां) कृताकृतज्ञानवतां भक्तानां (सम्प्रा
जम्) अधीश्वरं (अनव्यम्) अनुः जीवस्तस्यदातारं (नरम्)
समष्टिजीवरूपं (नृषाहं) नृणां शत्रुं मनुष्याणामभिभवितारं
(मं हिष्ठम्) भक्तानां दातृतमं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गीर्भिः) वै
दिकमन्त्रैः (प्रस्तोत) प्रकर्षेण स्तुत ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे स्तोताओ १ कृताकृतज्ञान वाले भक्तोंके २ अधीश्वर ३
जीवके दाता ४ समष्टिजीवरूप ५ शत्रुओंके जयकरने वाले ६ भक्तोंके महा
दानी ७ परमेश्वरको ८ वैदिक मन्त्रोंसे स्तुत करो - ॥ १० ॥

इति द्वितीयस्यार्द्धः प्रपाठकः

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वाला प्रसादशर्माविरचिते छन्दो
व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः खण्डः

अथ चतुर्थः खण्डः

ऋतकस्रषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अपादुशिष्यन्धसः सुदस्यप्रहोषिणोः । इन्द्रो

रिन्द्रो^३यवो^१शिरः^३॥१॥३१

(शि^१प्री)(श)^१महानारायणाः(इ^३)शक्तिः(प)^१ब्रह्मा(रु^३)रुद्रः
(अ^३)विष्णुः यस्यरूपाणि स^३(इन्द्रः)परमेश्वरः(सुदक्षस्य)यो
गक्रियायांकुशलस्य(महोषिणाः)प्रकर्षेणादेवानिन्द्रियरूप-
हविर्भिर्जुह्वतः(अन्धसः)अन्नरूपस्य(इन्द्रोः)मनसः।मनोच
न्द्रमाश० १४।४।१।१७ एववैसोमोराजादेवानामन्नं यच्चन्द्र
माःश० २।४।४।१५(यवो^१शिरः)यवेनप्राणोनसहितं मानसस्य
यी।अन्नंहिप्राणाःश० २।२।१।६।विष्णोःशिरःपपाततत्पतित्वा
सावादित्योःभवत्श० १४।१।१।१०(उ^३)एव(अपात्)अपिवत्।

भाष्यार्थः - १ शक्तिसहितविदेवरूपवाले २ परमेश्वरने ३ योगक्रियामे
कुशल ४ देवताओंको इन्द्रियरूपहविसे पूजनेवाले ५ अन्नरूप ६ मनके ७ प्राण
सहितमानससूर्यको ८ ही ९ पानक्रिया - ॥१॥

मेधातिथिः ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इ^३मा^१उ^३त्वा^३पुरु^३वसो^३भि^३प्र^३नो^३न^३वु^३गिरः^३। गौ^३वो^३वत्स^३न्^३

धे^३न^३वः^३॥२॥३२

हे(पुरु^३वसो)वहु^३धनपरमेश्वर(त्वो)त्वां(उ^३)एव(इ^३माः)(गिरः)
वेदवाचः(अभि)अभिमुखीभूताः सत्यः(प्रनो^३न^३वुः)प्रकर्षेणापु
नःपुनः स्तुवन्तिप्राप्नुवन्ति।नौतिस्वव्याप्तिकर्मा(नै)यथा(धे
नवः)(गौवः)(वत्सैम्)अभिलक्ष्यहम्भारवंकुर्वन्ति॥२॥

भाष्यार्थः - १ हेवहुधनीपरमेश्वर २ तुमको ३ ही ४ ये ५ वेदवाचन ६ सन्तु
खहोते ७ वारम्बार स्तुन करते है ८ जैसे ९, १० गौ ११ वत्सको देखकर हम्भाश
ब्दकरती है ॥२॥

गोतम ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अत्राह गौरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्थो
चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ ॥ ३३

(अत्र) विचार काले (इत्थो) अनेन प्रकारेण (आह) वेदो ऽ क
थयन् (मन्वत) विद्वांसो ऽ जानन् (गौ) ब्रह्मांशुरूपस्य (त्वष्टुः)
महानारायणस्य (नाम) आत्मा (चन्द्रमसः) मनसः (गृहे) ना
नसकमले (अपीच्यम्) अन्तर्हितं जीवोपाधिना ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ यहां विचार काल पर २ इस प्रकार से ३ वेदने कहा ४ विद्व
नों ने जाना ५ ब्रह्मांशुरूप ६ महानारायण का ७ आत्मा ८ मानसकमल में
९ जीवोपाधि से अन्तर्हित है ॥ ३ ॥

भरद्वाज ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

यदिन्द्रोऽनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः तत्रपूषा
भुवत्सचा ॥ ४ ॥ ३४ ॥

(यद्) यदा (वृषन्तमः) स्वांशुभिरतिशयेन वर्धितः (इन्द्रः) म
हानारायणः (अपः) दिव्यपार्थिवदेहानां जननीः (रितः) प्राप्तः
सन् (महीः) पार्थिवदिव्यभूमि (अनयत्) (तत्र) स्थिरत्वनायां
(पूषा) व्याप्तिसमष्टि सूर्यः (सचा) सहायः (भुवत्) ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ जब २ निज किरणों की वर्षा करने वाले ३ महानाराय
ण ने ४ दिव्य पार्थिव देहों की जननी जलों को ५ प्राप्त करते हुए ६ पार्थिव
दिव्यभूमियों को ७ उत्पन्न किया ८ वहां स्थिरत्वना में ९ व्याप्तिसमष्टि सूर्य
१० सहायक ११ हुआ ॥ ४ ॥

विन्दुः पूतदक्षो वा ऋषिर्गायत्री छन्दो गौर्देवता

गौह्येयति मरुतोऽं अरवस्यु मीतो मघोनाम् ।

युक्तौ वन्ही रथानाम् ॥ ५ ॥ ३५

(युक्ता) ब्रह्मणि युक्ता (रथानाम्) ब्राह्मादिलोकानां (वन्हीः) प्रापका (मघोनाम्) धनवतां (मरुताम्) वैश्यानाम् । विशो वै मरुतः श० २।५।१।१२ (माता) (गौः) दिव्यभौमरूपा एथिवी (अरवस्यु) तेभ्योऽन्नं कामय मानासती (धयति) पोषयति ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ ब्रह्ममें युक्त २ ब्राह्म आदिलोकों की प्रापक ३, ५, ६ धनवान् वैश्यों की माना ७ दिव्यभौम रूप एथिवी ८ उनके लिये अन्न को चाहती ९ पालन करती है - ॥ ५ ॥

श्रुतकक्ष एव सुक सोवाऽऽपि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता
उपेनो हरिभिः सुत याहि मदानां पते । उपेनो हरि
भिः सुतम् ॥ ६ ॥ ३६

हे (मदानां पते) अहङ्कारस्पदानां जीवानां स्वामिन् परमेश्वर त्वं (हरिभिः) ब्रह्मविष्णु महेश रूपैः (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुत मात्मप्रतिविंवं (उपयाहि) प्राप्नुहितथेन्द्र रूपस्त्वं (हरिभिः) अश्वैः (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुत सोमं (उप) उपयाहि प्राप्नुहि ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ हे जीवों के स्वामी परमेश्वर तुम २ ब्रह्मा विष्णु महेश रूपों से ३ हमारे ४ अभिषुत आत्मप्रतिविंवं को ५ प्राप्त करो तथा इन्द्र रूप तुम ६ घोड़ों के द्वारा ७ हमारे ८ अभिषुत सोमको ९ प्राप्त करो - ॥ ६ ॥

श्रुतकक्ष एव सुक सोवाऽऽपि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता
इष्टो होत्रो अस्तस्य तेन्द्र वृधन्तो अश्वैरो अच्छाव

^{३१२}भृथ^{३२}मोजसा ॥७॥ ३७

हेयजमानाः (अध्वरे) द्रव्ययज्ञे योगयज्ञे वा (अवभृथम्) (अ-
च्छ) आप्तुं (मोजसा) मन्त्रवलेन (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वृधन्त-
वर्द्धयन्तः) (इष्टाः) प्रियाः (होत्राः) ह्यन्त इति होत्राः आहुतय-
स्ताः (अस्तस्य) विस्तजत दत्त इत्यर्थः ॥७॥

भाषार्थः - हेयजमानो १ द्रव्ययज्ञवायोगयज्ञमें २ अवभृथस्नान ३ प्रा-
प्तकरनेको ४ मन्त्रवलसे ५ परमेश्वरको ६ बढ़ातेनुम ७ प्रिय आहुतियोंको
८ छोड़ो ॥७॥

वत्सः काण्वऋषिर्गायत्री छन्दो यजमानो देवता-

^{३२३}अहमि^{३१२}द्विपितु^{३२}स्परि^{३२}मेधा^{३२}मृतस्ये^{३१}जग्रह^३। अहं^{३१२} १०
^३सूर्य^३इवाजनि ॥८॥ ३८

(अहम्) जीवात्मा (ऋतस्य) सत्यस्य (पितुः) सर्वपालकस्य म-
हानारायणस्य (मेधाम्) ज्ञानशक्तिं (इत्) एव (परिजग्रह) परि-
गृहीतवानस्मि (हि) यस्मात् (अहम्) (सूर्यः) (इव) (अर्जनि)
प्रादुरभूवद्देहाभिमानत्यागेनेत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जीवात्मा मेंने २ सत्य ३ सर्वपालक महानारायण की ४ ज्ञा-
नशक्ति को ५ ही ६ ग्रहण किया है ७ जिस कारण ८ मैं ९, १० देहाभिमानत्याग
से सूर्यकी समान ११ प्रकट हुआ ॥ ८ ॥

शुनः शेषऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

^{३१२}रेवती^३न्तः^३सध^३मादे^३इन्द्रे^३सन्तु^३तुवि^३वोजाः । सुमन्तो^३
^३योभि^३र्मदे^३म ॥९॥ ३९

(इन्द्रे) अन्नर्यामिनि परमेश्वरे (सधमादे) अस्माभिः सहर्षयु

क्ते सति (नः) अस्माकं (रेवतीः) रेवत्यः महावाचः। वाग्वै रेवती श
 ३।८।१।१२ (तुविवाजाः) वद्भवलाः नि० २।६।३८ (सन्तु) (याभिः)
 वाग्भिः (सुमन्तः) ब्रह्माण्डरूपान्नवन्तः वयं नि० २।७ (मदेम) ह
 प्येम ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ अन्तर्यामी परमेश्वरके २ हमारे साथ हर्षयुक्त होने पर ३
 हमारे ४ महावाक्य ५ वद्भवली ६ होवे ७ जिन महावचनोके द्वारा ८ ब्रह्माण्ड
 रूपान्न वाले हम ९ हर्षित होवें ॥ ६ ॥

मनु शेषो वामदेवो वा ऋषिर्गायत्री छन्दो जीवेशो देवते-

सामः पूषा च चेततू विष्वासां सुक्षितीनाम्।

देवत्रय्याहितो ॥ १० ॥ ४०

(देवत्रय्या) विद्वत्सु। विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (रथ्योः) स्थू
 लसूक्ष्मशरीरयोः रहति गति कर्मा (हितो) हितौ हित करो (सो
 मः) जीवात्मा (च) (पूषा) अन्तर्यामी (विष्वासाम्) सर्वासाम्
 (सुक्षितीनाम्) योगभूमिनां विधिं (चेततुः) जानीतः ॥ १० ॥ ४०

भाष्यार्थः - १ विद्वानो मे २ स्थूलसूक्ष्मशरीर ३ का हितकारी ४ जीवात्मा
 ५ और ६ और अन्तर्यामी ७ सब ८ योगभूमियों की विधिको ९ जानने है - ॥ १०

॥ ४० ॥ इति श्री भृगुवशावतस्य श्रीनाथूरामसूत्रज्वालाप्रसादशर्मविर
 चिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थं खंडः

अथ पञ्चमः खण्डः

मृतकस्य ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

पोन्तमावो अन्धस इन्द्रममि प्रगायत। विष्वा
 साहं शतं कर्तुमं हि ष्वर्षणीनाम् ॥ ११ ॥ ४१

हेऽरुत्विजः । वागाद्युत्विजोवायूयं (वेः) युष्माकं (अन्धसः) सोम
स्यात्मप्रतिविंबस्यवा (आपोन्तम्) आभिमुख्येनपिवन्तं । पापा-
नेछान्दसः शपोलुक (विष्वासाहम्) सर्वेषां शत्रूणामभिभवि-
तारं (शतकतुम्) अनन्नकर्माणां (चर्षणीनाम्) कृताकृतज्ञान
वतां भक्तानां (मंहिष्ठम्) यष्टव्यत्वेन पूजनीयं (इन्द्रम्) परमे-
श्वरमिन्द्रं वा (अभिप्रगायत) प्रकर्षेणाभिष्टुत ॥ १॥

भाषार्थः - हेऽरुत्विजो वा वागाद्युत्विजो १ तुम्हारे २ सोमवा आत्म प्र-
तिविंबके ३ सन्मुखपानकर्ता ४ सब शत्रुओं के तिरस्कर्ता ५ अनन्नकर्मा ६ कृ-
ताकृतज्ञान वाले भक्तों के ७ पूजनीय ८ इन्द्रवा परमेश्वर को ९ भले प्रकार
गाओ - ॥ १॥ (वसिष्ठऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता)

प्रवेन्द्राय मादने थं हे विष्वाय गायत । सखा
यः सोमपात्रे ॥ २ ॥ ४२

हे (सखायः) भक्ताः (वेः) यूयं (हर्ष्यश्वोये) हरिनामकाश्वाय-
यद्वा ब्रह्म विष्णु महेशेषु व्यापकाय । अश्नुते व्याप्नोति सश्वः
(सोमपात्रे) सोमपात्रे प्रतिविंब पात्रे वा (इन्द्राय) इन्द्राय महाना-
यणा यवा (मादनेम्) मदकरं स्तोत्रं (प्रगायत) प्रपठत ॥ २॥

भाषार्थः - हे भक्तो २ तुम ३ हरिनामकश्ववाले ब्रह्मा विष्णु महेशों
में व्यापक ४ सोपानावा प्रतिविंब पात्रा ५ इन्द्रवा परमेश्वरके लिये ६ मदकर
स्तोत्रको ७ पाठकरो - ॥ २॥

मेधातिथि प्रियमेधा वृषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

वैयमुत्वा तदिदथा इन्द्रत्वोयन्तः सखायः । केणो
उकथोभिर्जरन्ते ॥ ३ ॥ ४३

हे^१ (इन्द्र) परमेश्वर^२ (त्वायन्तः) त्वामिच्छन्तः^३ (सखायः) भक्ताः
 (वयम्) (तदि^४दर्याः) यत्त्वद्विषयं स्तोत्रं तदेव प्रयोजनं येषां तां ह
 शाः सन्तः (त्वा) त्वां (उ) एव (जरामहे) स्तूमहे यस्मात् (के एव)
 मेधाविनः नि० (उक्तयोभिः) उक्तयैः शस्त्रैः (जरन्ते) त्वां स्तुवन्ति
 परात्परत्वात्सर्वात्मकत्वाच्च ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुमको चाहते ३ भक्त ४ हम ५ आपके स्तो
 त्रकोही चाहते ६, ७ तुमकोही ८ स्तुत करते हैं जिस कारण ९ मेधावी १० श-
 स्त्रों से ११ आपकी ही स्तुति करते हैं आपके परात्पर और सर्वात्मक होने से। ३

स्तुत कस्य ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्राय मद्दने सुतम्परिष्टो भन्तु नो गिरः । अर्क
 मर्चन्तु कारवः ॥ ४ ॥ ४४

(मद्दने) मदन शीलाय (इन्द्राय) इन्द्राय परमेश्वराय वा (सुत-
 म्) अभिषुतं सोम मात्म प्रति विम्बं वा (नः) अस्माकं (गिरः) मुखे
 च्चारिता वेदवाचः (परिष्टो भन्तु) परितः स्तुवन्तु तथा (कारवः) स्तो
 तारः नि० ३।१५ (अर्कम्) सर्वैस्वर्चनीयमिन्द्रं परमेश्वरम्वां (अर्च-
 न्तु) पूजयन्तु ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ मदन शील २ इन्द्र वा परमेश्वरके लिये ३ अभिषुत सोम-
 वा आत्म प्रति विंबको ४ हमारे ५ मुखे च्चारित वेदवाच ६ सब ओर से स्तुत क-
 रो ७ तथा स्तोता लोग ८ सब से पूजनीय इन्द्र वा परमेश्वरको ९ पूजन करो ॥ ४ ॥

(इरिमिं ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता)

अयन्त इन्द्र सोमो निपूतो अधिवाहिषि । एहीम
 स्यद्रवापिव ॥ ५ ॥ ४५

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (ते) तुभ्यं त्वदर्थं (अथम्) (सोमः) सोमः । आत्म प्रति विंबो वा (आधि वर्हिषि) वेद्यां आस्तीर्णो दर्भे । सुपुम्णा याम्वा (निपूतः) अभिषवादि संस्कारैः शोधितः (अस्य) (इम्) सारस मृतं मानस सूर्यम्वा (एहि) प्राञ्जुहि (द्रव) गच्छ (पिपि) पानं कुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ आपके लिये ३ यह ४ सोम वा आत्म प्रति विंब ५ वेदी में स्तीर्ण दर्भ वा सुपुम्णा नाडी पर ६ अभिषव आदि संस्कारों से शोधित हुआ ७ इसके सारस मृत वा मानस सूर्यको ८ प्राप्त करो ९ जाओ १० पान करो ॥ ५ ॥ मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

सुरूपकृत्नु मृतये सुदुघोमिव गोदुहे । जुहुमसि
घवि घवि ॥ ६ ॥ ४६

(सुरूपकृत्नुम्) सुरूपाणां ब्रह्मविष्णु महेशादीनां कर्त्तारं परमेश्वरं (ऊतये) शत्रुभ्यः संसाराद्वास्त्रणाय (घवि घवि) प्रतिदिनं (जुहुमसि) आह्वयामः (इव) यथा (गोदुहे) गोदोह कर्मार्थं (सुदुघाम्) सुदुदोग्धीं गामाह्वयन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - ब्रह्माविष्णु महेशादि सुरूपों के कर्त्ता परमेश्वरको २ शत्रुओं वा संसार से रक्षा के लिये ३ प्रतिदिन ४ हम आह्वान करते हैं ५ जैसे ६ गोदोह कर्म के लिये ७ अच्छी दोग्धी गौको ॥ ६ ॥

त्रिशोक ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अभित्वा वृषभा सुते सुते धं स्तेजामि पीतये । तृम्पा
व्यश्नुही मदम् ॥ ७ ॥ ४७

(वृषभ) धर्मार्थ काम मोक्षाणां वर्षितः (अ) महानारायण (सुते)

अभिषुतेसति (सुतम्) सोममात्मप्रति विंवम्वा (पीतये) पानाय
 (त्वा) त्वां (अभिस्त्जामि) ददामि (अ + इ) हे महालक्ष्मीना
 रायण (त्स्य) मीणानेनु० पर० सक० सेट् (मदम्) (व्यर्त्तुहि) वि
 शेषेण प्राप्नुहि ॥७॥

भाष्यार्थः - १ हे धर्मार्थकाममोक्षकेदाना २ महानारायण ३ अभिषुत
 होनेपर ४ सोमवा आत्मप्रतिविंवको ५ पानकरनेके लिये ६ आपको ७ देता हूँ
 ८ हे महालक्ष्मीनारायण ९ त्वम्हो १० मदको ११ प्राप्त करो ॥७॥

कुसीदऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

य इन्द्रे चमसेषु सोमं चमसेषु सुतः ॥ पिवेदस्य
 त्वमीशिषे ॥ ८ ॥ ४८

हे (इन्द्र) इन्द्रपरमेश्वरवा (यो) (सोमः) सोमः । आत्मप्रतिविम्बो
 वा (चमसेषु) अधिषवणा फलकेषु । मनो हृदयभृक्कटिषुवा (ते)
 त्वदर्थं (सुतः) अभिषुतः (चमसेषु) भक्षणपात्रेषु । कमलेषुवा । च
 सुप्रदने (आ) आवर्त्तते (अस्य) (पिवं) पानं कुरु (त्वम्) (इत्)
 (ईशिषे) ईश्वरो भवसि ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः - १ हे इन्द्रवा परमेश्वर २ जो ३ सोमवा आत्मप्रतिविंव
 षवणा फलकवामनहृदयभृक्कटिमें ५ आपके लिये ६ अभिषुत हुआ ७ भक्ष
 णपात्रवा कमलोंमें ८ वर्त्तमान है ९ इसका १० पानकरो ११ तुम १२ ही १३
 ईश्वरहो - ॥ ८ ॥

सुन शेषऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

योगे योगे त्वस्ते रवाजे वाजे हवामहे । सखाय
 इन्द्रमृतये ॥ ९ ॥ ४९

(सखायः) भक्तावयं (योगे) (योगे) प्रत्येकयोगानुष्ठाने (वाजे) (वा-
जे) कामादीनां प्रत्येकसङ्ग्रामे (तवस्तरम्) अतिशयेन बलिनं नि-
२८ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (ऊतये) संसाराद्रक्षाणाय (हवामहे) आ-
ह्वयामः ॥ ८ ॥

भाष्यः - १ भक्तहम २, ३ प्रत्येकयोगानुष्ठानमें ४, ५ कामादिके प्रत्येक
संग्राममें ६ अतिबली ७ परमेश्वरको ८ संसारसे रक्षाके लिये ९ हम आह्वान
करते हैं - ॥ ८ ॥ मधुच्छन्दाऋषिर्गायत्री छन्दो देवता

आत्वेतो निषीदतेन्द्रं मभिप्रगायत । सखायैः
स्तोमवाहसः ॥ १० ॥ ५०

हे (स्तोमवाहसः) यज्ञे विवृत् पञ्चदशादिस्तोमानां प्रापकाः । प्रा-
णायामकर्तारो वा । प्राणा वैस्तोमाः शः ८ । ४ । १ । ४ (सखायैः) ऋ-
त्विजः । सखिवत्प्रिया भक्तावा (तु) क्षिप्रं (आएत) द्रव्ययज्ञं योग-
यज्ञं वा ५५ गच्छत (आनिषीदत) आगत्योपविशत (इन्द्रम्) इ-
न्द्रं परमेश्वरं वा (अभिप्रगायत) सर्वतः प्रकर्षेणास्तुत ॥ १० ॥

भाष्यः - १ हे यज्ञमें विवृत् पञ्चदश आदिस्तोमके प्रापक वा प्राणायाम
मकर्ता २ ऋत्विजो ३ शीघ्र ४ आशो ५ आकरवैवो ६ इन्द्र वा परमेश्वरको ७
सवसोरसे भले प्रकार गाओ स्तुत करो - ॥ १० ॥

इति ऋषिभृगुवंशावतंस ऋषिनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशम्भिरिच्छिते
सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य पञ्चमः खण्डः

अथ षष्ठः खण्डः

विष्णामिऋषिर्गायत्री छन्दो महानारायणो देवता

इदं धं ह्यनोजंसा सुतं धं रोधानास्यते । पिवा

त्वा^३स्वर्गिर्वे^३णाः॥१॥ ५१

हे^३(राधानाम्) राधांशभूतानां देवीनां (पते) स्वामिन् (गिर्वे^३णः)
गीर्भिवे^३द्वचने^३र्वननीयसंभजनीय (अ) महानारायण (अस्य)
भक्तस्य (भोजसा) योगवलेन (हि) (सुतम्) (इदम्) अभिपुत
मात्मप्रतिविं (अनु) अनुलक्ष्य (तु) क्षिप्रं (पिवे) ॥१॥

भाषार्थः - १, २ हे राधांशभूतदेविओंके स्वामी ३ वेदवचनों से भजनीय
४ महानारायण ५ इस भक्तके योगबलसे ७ ही ८, ९ इस अभिपुत आत्मप्र
तिविंको १० अनुलक्षणकर ११ शीघ्र १२ पानकरो ॥ १॥

मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता-

महा^३ ॐ इन्द्रः^३ पुर^३श्चनो^३ महि^३त्वमस्तु^३ वज्रि^३णो^३। द्यौ^३
र्न^३प्रथि^३ना^३शवः^३॥२॥ ५२

(पुरश्चनः) पुरः व्यष्टि समाष्टि शरीराण्येवचनोऽन्नयस्यतादृशः
(इन्द्रः) परमेश्वरो महानारायणः (महान्) परात्परः (वज्रिणो)
ज्ञानवज्रधुक्ताय परमेश्वरायैव (महित्वम्) ब्रह्माण्डरूपत्वं (प
स्तु) यस्य शक्त्या भूत्या (प्रथिना) पृथिवी (र्न) च (द्यौः) स्वर्गलो
कः (शवः) मृतदेहो भवतीत्यर्थः ॥२॥

भाषार्थः - १ व्यष्टिसमाष्टि रूप अन्नवाला २ परमेश्वर महानारायण
३ परात्पर है ४ ज्ञानवज्रधर परमेश्वरके लिये ही ५ ब्रह्माण्ड रूपत्व ६ हो ७ नि
सकी शक्तिसे भूत्या पृथिवी ८ और ९ स्वर्गलोक १० मृतदेह होते हैं - ॥२॥

कुसीद कण्ठवक्त्रिर्गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता

प्रा^३तूने^३ इन्द्र^३ क्षु^३मन्तो^३ ज्वि^३त्र^३ ग्रा^३भं^३ सद्^३भाय^३
महा^३हस्ती^३ दक्षि^३णो^३न ॥३॥ ५३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (महाहस्ती) महाहस्तवान्त्वं (नः) अस्माकं
 (सुमन्तम्) अन्नवन्तं भोगवन्तं (आश्राभम्) समन्तात् मायावि
 कारणां गृहीतारं (चित्रम्) अद्भुष्टमात्रं जीवात्मानं (दक्षिणेन)
 हस्तेन (तू) क्षिप्रं (सद्भुभाय) सद्भुहाण संसारकूपा दुष्कर ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ वड़े हाथवाले तुम ३ हमारे ४ अन्नभोगवान् ५
 सबओर मायाके गृहीता ६ अद्भुष्ट मात्रजीवात्माको ७ हाथसे ८ शीघ्र ९ ग्रहण
 कर संसारकूपसे उद्धार कर ॥ ३ ॥

प्रिय मेघऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अभिप्रगोपतिङ् गिरिन्द्र मर्चयथा विदे । सूने ७
 सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥ ५४

(सत्यस्य) ब्रह्मणाः (सूनेम्) पुत्रं तेन प्रादुर्भूतं (सत्पतिम्) सतां
 क्तानां पालकं (गोपतिम्) गोपालं श्रीकृष्णं गोलोक स्वामिनं
 (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गिरौ) वेदवाचा (यथा) (प्रविदे) अहम्वेदः प्र-
 कर्षेण जानामि तथा (अभ्यर्च) आभिमुख्येन पूजय ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १, २ ब्रह्मपुत्रब्रह्मसे प्रादुर्भूत ३ भक्तपालक ४ गोपाल गोलोक
 स्वामी श्रीकृष्णानाम ५ परमेश्वरको ६ वेदवचनसे ७ जैसे ८ मैं वेदजान्ता हूँ
 तेसेही ९ सन्मुखहोकर पूजन करे ॥ ४ ॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

कया न श्चिन्वन् आभुवदूती सदा वृधः सखा । कया
 श्चिहया वृतौ ॥ ५ ॥ ५५

(सदा वृधः) सर्वदा वर्द्धमानः (चिन्वन्) अद्भुतः ज्योतिः स्वरूपत्वेन
 विलक्षणाः (सखा) साखिवत्प्रियः परमेश्वरः (कया) (उती) ऊत्या

तर्पणेन । सुपांसु लुगित्यादिना (३।१।३६) पूर्वसर्वादीर्घः (क
या) (शचिष्ठया) प्रज्ञावत्तमया (वृता) वर्तनेन कर्मणा (नः) प्र
स्माकं (आभुवत्) अभिमुखो भवेदिति सदा विचारणीयमि-
त्यर्थः ॥ ५ ॥

भाषार्थः

१ सर्वदा वर्द्धमान २ ज्योतिस्वरूप होनेसे विलक्षण ३ सखाकी समान प्रिय
परमेश्वर ४.५ किसतर्पण ६ और किस ७, ८ प्रज्ञावत्तम कर्मके द्वारा ९ हमारे
१० सन्मुख होवै यह सदा विचार योग्य है ॥ ५ ॥

ऋतकसञ्जयि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

त्यमुवः सत्रासाह विष्वा सुगीर्वायतम् । आच्यो
वयस्युतये ॥ ६ ॥ ५६

हे मेधाविन्यजमानत्वं (तम्) (सत्रासाहम्) सत्येन ज्ञानेन माया
पाधीनामभिभवितारं (वः) युष्मदीयेषु (विष्वासु) सर्वेषु (गीर्वा)
स्तोत्रेषु (आयतम्) विस्तृतं सर्वरूपत्वात् (यम्) परमेश्वरं (उ) ए-
व (ऊतये) रक्षणाय (आच्यो वयसि) अभिमुख्येन गमयसि च्यु-
डु-गतौ ॥ ६ ॥

भाषार्थः - हे मेधावी यजमान तुम १ उस २ सत्य ज्ञान द्वारा माया उपाधि-
योंके अभिभविता ३ तुम्हारे ४ सब ५ स्तोत्रोंमें ६ सर्व रूपसे विस्तृत ७ परमेश्वर
को ८ ही ९ रक्षाके लिये १० सन्मुख प्राप्त करने हो ॥ ६ ॥

मेधातिथिञ्जयि गीयत्री छन्दः सदसस्पतिर्देवता-

सदसस्पतिमद्भुतमिन्द्रस्य काम्यम् । सनिभे
धामयासिषम् ॥ ७ ॥ ५७

(सदसस्पतिम्) भक्त सभायाः पालकं (अद्भुतम्) मानसविधिना

५ द्रुतं (प्रियम्) चतुष्पदार्थदानेन प्रियं (काम्यम्) मेधाविभिर्वा-
 ज्छनीयं (इन्द्रस्य) (सनिम्) परमेश्वरस्य पूजनं (मेधाम्) अर्चा हि
 बुद्धिञ्च (अयासिषम्) प्राप्तवानस्मि ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ भक्तसभाकेपालक २ मानसविधिसे अद्रुत ३ चतुष्पदार्थ
 दानसे प्रिय ४ मेधाविदोंसे वांछनीय ५ परमेश्वरके ६ पूजनको ७ और पूजनयो
 ग्य बुद्धिको भी ८ मैंने प्राप्त किया है ॥ ७ ॥

वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

ये^३त^३प^३न्थो^३ऽ^३धो^३दि^३वो^३य^३भि^३व्य^३श्व^३मे^३र^३यः^३ उ^३त^३ज्जो^३ष^३न्तु^३नो^३
 भु^३वः^३ ॥ ८ ॥ ५८

हे परमेश्वर (यै) (पन्थोः) देवयानादिभेदैर्वहु संख्याकाः (दिवः)
 महानारायणलोकस्य (अधः) अधस्तात् सन्ति (उत) अपि च (यै
 भिः) यैर्मार्गैः (अश्वम्) मानससूर्यजीवात्मानं । असौवा आदि-
 त्यण्डोऽश्वः श० ६। ३। १। २६ (व्यैरयः) विशेषेण प्रेरयसि (ते)
 पन्थाः (नः) अस्माकं (भुवः) भक्तिभूमेर्योगभूमेर्वा (ज्जोषन्तु)
 ष्टएवन्तु ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जो २ मार्गदेवयान आदिभेदोंसे वहुत संख्यावाले ३ महा-
 नारायणलोकसे ४ नीचे हैं ५ और ६ जिन मार्गोंसे ७ मानससूर्यजीवात्मा-
 को ८ विशेषप्रेरणकरते हैं ९ वे मार्ग १० हमारी ११ भक्तिभूमिवा योगभूमि
 के १२ जोताहों ॥ ८ ॥

श्रुतकस्य ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

भद्रं^३भद्रं^३न्न^३शो^३भरे^३ष^३मूर्जे^३ १२ शतकतो^३। यदि^३द्वे^३
 मृडे^३यासिनः^३ ॥ ९ ॥ ५९

हे (शतक्रतो) बहु कर्मन् बहु यज्ञवा (इन्द्रे) इन्द्र परमेवश्वरवा (भद्रम्) सुखोत्पादकं (इषम्) अन्नं (भद्रम्) सुखोत्पादकं (ऊर्जम्) रसञ्च (नः) अस्मभ्यं (आभर) आहर सम्पाद्य देहि (यद्) यदि (नः) अस्मान् (मृडयासि) सुखयसि ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ बहु कर्मन् बहु यज्ञवा २ इन्द्रवापरश्वर ३ सुखोत्पादकं ४ अन्नं ५ सुखोत्पादकं ६ रसको भी ७ हमें ८ दो ९ जो १० हमको ११ सुखी करते हो ॥ ६ ॥ विन्दुर्ऋषिर्गायत्री छन्दो मरुताद्या देवताः

अस्ति सोमो अयं सुतः पिवन्त्यस्य मरुतः उत स्वराजो अभिनो ॥ १० ॥ ६०

(अयम्) (सोमः) सोमः । आत्मप्रतिविंवा (सुतः) अभिषुतः (अस्ति) (मरुतः) देवाः प्राणावा (अस्य) (पिवन्ति) पानं कुर्वन्ति (उत) अपिच (स्वराजा) स्वतेजसा दीप्यमानौ (अभिनो) अभिनो नरनारायणौवा (उ) अपि पिवतः ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ यह २ सोमवा आत्मप्रतिविंवा ३ अभिषुत है ४, ५ मरुतदेवतावा प्राणा ६ इसका ७ पान करते हैं ८ और ९ अपने तेजसे दीप्यमान १० अभिनी कुमारवानरनारायण ११ भी पान करते हैं - ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य षष्ठः खण्डः

अथ सप्तमः खण्डः

इन्द्रमातरो देवयामयऋषिका गायत्री छन्द इन्द्रो देवता
इन्द्रो यन्तीरूपस्युव इन्द्रो ज्ञानं मुपासते । वन्वा
नासा सुवीर्यम् ॥ १ ॥ ६१

(ई^१इ^२यन्तीः) ज्ञानावस्थायां परमेश्वरं प्राप्नुवन्त्यः ई^३ख गतौ (ए^४पस्युवः) उपसनायां कर्मच्छन्त्यः नि० (सुवीर्यम्) (वन्वानासः) परमेश्वरात्स्वकीयं शोभनवीर्यं याचमाना वेदवान् च वनुयाचने (जातम्) प्रादुर्भूतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उपासते) तस्य सर्वात्मकत्वात् ॥१॥

भाषार्थः - १ ज्ञान अवस्था में परमेश्वर को प्राप्त करने वाली २ उपासना में कर्म चाहने वाली ३, ४ परमेश्वर से अपने बल को चाहने वाली वेदवाणी ५ प्रादुर्भूत ६ परमेश्वर को ७ उपासना करती हैं उसके सर्वात्मक होने से ॥१॥ गोधात्रयि गयित्री छन्दो देवा देवताः

न^१कि^२देवा इनीमसि न^३क्या यो^४पयामसि । मन्त्र^५
श्रुत्य^६ञ्च रामसि ॥२॥ ६२

तस्मात् हे (देवाः) (कि) काम्ययज्ञे (न) (इनीमसि) नहिंस्मः प्राणिवधं कर्मपश्वादि यागं न कुर्मः । मीड् हिंसायां क्यैयादिक मीनातेर्निगमे (७।३।८।१५।०) इति ह्रस्वः इदन्तो मसि (७।१४६।पा०) मकारलोपश्चान्दसः । आकारः समुच्चये (कि) काम्ययज्ञे (न) (योपयामसि) यूपनिखननं वृक्षौषधादि हिंसामपि न कुर्मः (मन्त्र श्रुत्यं) मन्त्रेण स्मार्यं श्रुत्या प्रतिपाद्यं जपयज्ञं (आचरामसि) आचरामः अनुतिष्ठामः यथामनुः ३ प्र० जप्ये नैव तु संसिद्धे द्वाह्मणो नात्र संशयः कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते । यज्ञानां जपयज्ञो स्मीति भगवन्नाच्च ॥२॥

भाषार्थः - उस कारण १ हे देवताओं २ काम्ययज्ञ में ३, ४ प्राणिवध कर्मपश्वादि यज्ञ को हम नहीं करते हैं ५ काम्ययज्ञ में ६, ७ यूपखनन

वृक्षोपाधिआदिहिंसाकोभीनहीं करते हैं ८ जपयज्ञकोही करते हैं-॥२॥

दध्यङ्ः^३डाथर्वण^३ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता

^३दोषा^३आगाह^३ज्ञाय^३द्युम^३ज्ञाम^३न्नाथर्वण^३। स्तुहि^३
देव^३सवितारम् ॥ ३ ॥ ६३ ॥

हे (द्युमज्ञामन्) द्युमतां स्वरसौष्टव युक्तानां साम्नां गामनृगा
तः (आथर्वण) वाक्। वाग्वै दध्यङ्गुथर्वणाः श० ६। ४। २। ३।
(दोषा) रात्रिः (आगात्) समन्ताद्गतवान्। आगतावासंध्याव-
र्तते (वृहत्) साम (गाय) (सवितारम्) सर्वस्युप्रसवितारं (देव
म्) मायाक्रीडनकैः क्रीडणा शीलं परमेश्वरं (उ) एव (स्तुहि)

भाष्यार्थः - १ स्वरसेसामगान करने वाले २ वाक् ३ रात्रि ४ व्यतीतङ्
र्दवाभाई सन्ध्यावर्तमान है ५ वृहत्सामको ६ गाओ ७ सबकेमेरक ८ माया
केखिलोनों से क्रीडन शील परमेश्वरको ९ ही १० स्तुन करो ॥ ३ ॥

प्रस्तुएवऋषिर्गायत्री छन्दोः श्विनौ देवते

एषोऽषाऽप्रपूर्व्याव्युच्छति प्रियादिवः। स्तुषेवा
मश्विना वृहत् ॥ ४ ॥ ६४

(एषा) (अपूर्व्या) पूर्वं नास्ति सा (प्रिया) जपकालत्वेन विदु
पांप्रिया (उषा) (दिवः) (व्युच्छति) तमोर्कयति हे (अश्विना)
अश्विनौ ब्रह्माण्डे व्यापकौ परमहापुरुषौ। अश्विः सूर्यरूपा
प्रतिविधाः सन्ति ब्रह्माण्डे पुत्रयोः इनि। असौवा आदित्य ए-
षोऽश्वः श० ६। ३। १। २। ४ (वाम्) युवाम् (उ) एव (वृहत्) प्रभू
तं यथा भवति तथा (स्तुषे) स्तौमि ॥ ४ ॥ ६४

भाष्यार्थः - १ यह २ मादुर्भूत ३ जपकाल होने से ज्ञानियोंकी प्रिया ४

उपा५ स्वर्गके ईतमको हराती है ७ हे अश्विनी कुमारो वा ब्रह्माण्डमें व्याप
क परा महापुरुषो ऋतुमदोनों को ई ही १० ११ पडा स्तुत करता हूं ॥ ५ ॥

गौतमऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो^१दधी^३चो^३अस्थो^३भिर्वृत्रो^३एय^३प्रति^३ष्कृतः^३। जघा^३
न^३नवती^३र्नव^३ ॥ ५ ॥ ६५

यस्मात् (अप्रतिष्कृतः) अप्रतिस्वलितः (इन्द्रः) यजमानः। इन्द्रो
वैयजमानः (दधीचः) अथर्वणस्य वेदवाचः। वाग्वैदध्यङ्गाय
र्वणः श० ६। ४। २। ३ (अस्थिभिः) सारैर्महावाग्भिः। अस्थीन्धव-
प्तीः श० १०। २। ६। १८ (नवतीर्नव) समनस्कानिदूशेन्द्रिधाणि
११ त्रिगुणत्रिकालरागद्वेषमोहगुणितानि (वृत्रोणि) पापरू-
पाणि। पाप्मावैवृत्रः श० ६। ४। २। ३ (जघान) ॥ ५ ॥ ६५

भाषार्थः - जिस कारण १ अप्रतिस्कलित २ यजमानने ३ वेदवचनों
के ४ सारमहावाक्योंसे मनसहित इन्द्रियों को जो कि त्रिगुणत्रिकालरागद्वे-
षमोहसे गुणित होकर ई ई होती हैं ६ पाप रूपोंको ७ मारा ॥ ५ ॥ ६५

मधुच्छन्द्यऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रे^३हि^३मत्स्य^३न्धसो^३विश्वे^३भिः^३सोम^३पर्व^३भिः^३।
महो^३धं^३अभिष्टि^३रजसा^३ ॥ ६ ॥ ६६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ओजसा) बलै न तेजसा वा (महान्) अभि-
ष्टिः) अभामायातस्या इष्टिर्हेमो यस्मिन्नीदृशस्त्वं (एहि) आग-
च्छ (अन्धसः) अन्नरूपजीवात्मनः नि० ५। १७ (विश्वेभिः) सर्वे (सो-
मपर्वभिः) शक्तिरूपेन्द्रियप्राणैः। प्राणः सोमः श० ७। २। ४। २
(मत्सि) माघहृष्टो भव ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ चलवातेजसे ३ महान ४ मायाहोमके स्थान
तुम ५ आत्मा ६ अन्नरूपजीवात्मा के ७ सव ८ शक्ति रूप इन्द्रियप्राणोंसे
हर्षितहृजियै ॥ ६ ॥ वामदेव ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

१२ ३२ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
आतून इन्द्र वृत्रहन् स्माकं मह्यं मागहि महो
न्महीभिस्तीभिः ॥ ७ ॥ ६७

हे (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (तू) अस्माकं (महा-
न्) महेश्वरत्वं (महीभिः) योगभूमिभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः सह-
अस्माकम् (अर्द्धम्) समीपं (तू) शीघ्रं (आगहि) आगच्छ ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे पापनाशक २ परमेश्वर ३ हमारे ४ महेश्वर तुम ५ यो-
गभूमि ६ और रक्षाओंके साथ ७ हमारे ८ समीप ९ शीघ्र १० आओ ॥ ७ ॥

वत्स ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
ओजस्ते देस्यति त्विषि उभयत्समवर्तयत् । इन्द्र
श्वर्मवरोदसी ॥ ८ ॥ ६८ ॥

(अस्य) परमेश्वरस्य (तत्) (ओजः) बलं (ति त्विषे) दिदीपे त्विष दी-
प्तौ (दि० प०) (यत्) यस्मान् (इन्द्रः) परमेश्वरः (उभे) (रोदसी) द्या-
वापृथिव्यौ ब्रह्माण्डं (चर्म) (इव) (समवर्तयत्) महाप्रलयकाले
वीजरूपं कृतवान् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इस परमेश्वरका २ वह ३ बल ४ प्रदीप्तहोना है ५ जिसकार-
ण ६ परमेश्वरने ७ दोनों ८ पृथिवी स्वर्ग अर्थात् ब्रह्माण्डको ९, १० चर्मके समा-
न ११ महाप्रलयकाल परवीजरूप किया ॥

शुनः शोष ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
अयमुने समतसि कपोते इव गभीधिम् । वचस्तच्चि-
न्मोहसे ॥ ९ ॥ ६९ ॥

हे परमेश्वर (अयम्) जीवात्मा (ते) (उ) तवैवतं (समतसि) सम्य-
कसातत्येन प्राप्नोषि (इव) यथा (कपोतेः) कस्य मनोः प्रजापतेर्भ-

हान्नौका । कंवैमजापतिः श० २।५।२।१३ (गर्भीधिम्) गर्भस्य वृ-
ह्नाण्डस्य धारकं महासमुद्रम् (तच्चित्) तस्मादेव कारणात् (नः)
अस्माकं (वचः) (ओहसे) माप्नोषि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ यह जीवात्मा २, ३ ते एही उसको ४ भले प्रकार नि-
रन्तर माप्त करते हो ५ जैसे ६ प्रजापति की महा नौकाने ७ ब्रह्माण्डके धारक म-
हासमुद्रको ८ उसी कारणसे ९ हमारे १० वचनोंको ११ माप्त करते हो ॥ ८ ॥

वातायन उन्नत्तरपिर्गायत्री छन्दो वातो देवता-

वा^३तै^३ऽआ^३वा^३तु^३ भेष^३जै^३ थं^३ शम्भु^३ मयो^३ भुनो^३ हृद्^३ । मन^३
श्रौ^३यू^३ थं^३ पितारि^३ षत् ॥ १० ॥ ७०

(वातः) प्राणः । प्राणो वै वातः श० १।१।२।१४ (नः) अस्माकं (हृद्) हृ-
दयाय (शम्भु) संसाररोगशमनस्य भावयित्वा (मयो भु) मोक्षसुख-
स्य च भावयित्वा (भेषजम्) शौषधम् मृतरसम्वा (आवातु) आगमय-
तु (नः) अस्माकं (श्रौयूषि) (पितारिषत्) प्रवर्द्धयतु प्राणायामैः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ प्राण २ हमारे ३ हृदयके लिये ४ संसाररोगनाशक ५ मोक्षसुख-
केदाता ६ शौषधिवाग्मृतरसको ७ प्राप्तकराओ ८ हमारी ९ श्रायुक्तो १० बढाओ
प्राणायामके द्वारा ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसा-
दशर्मा विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य सप्तमः खंडः

अथाष्टमः खण्डः

काण्वत्तरपिर्गायत्री छन्दो वरुणाद्या देवताः

यु^३ थं^३ रक्षन्ति^३ प्रचेत^३ सो^३ वरुणो^३ मित्रो^३ अयमो^३ । न किं^३
सद^३ भ्यते^३ जनः ॥ १ ॥ (प्रचेतसः) महद्भ्रतानाः (वरुणाः)

अंपानः (मित्रः) प्राणः । प्राणो वै मित्रः । अंपानो वरुणाः श० १२।१।८
-१२ (अयमो) मनः पितरः श० १।४।४।३।१३ (यम्) (रक्षन्ति)
(स) (जनः) योगी (किः) (क) परमेश्वरः (इ) शक्तिः महति पुरु-
षरूपः सन्नपि (न) (दभ्यते) नहिंस्यते ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ महाज्ञानी २ अपान ३ प्राण ४ मन ५ जिसको ६ रक्षाक
रते हैं ७ वह ८ योगी ९ प्रकृति पुरुष रूप होता भी १०, ११ हिंसित नहीं होता है

वत्सञ्जयिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

गव्योषुणो यथा पुरो ष्वयातरथयो । वरिवस्यो
महोनोम् ॥ २ ॥ ७२

(अ) हे सर्वव्यापिन् (यथा) (पुरो) पूर्वकाले यथा तथा (नैः) अ
स्माकं (महोनोम्) मघं हविर्लक्षणां धनं येषामस्ति तेषां यज-
मानानां (गव्यो) महावाग्दानेच्छया (अश्वया) समष्टिभाव
दानेच्छया । असौ वाऽऽदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२६ (उ
न) अपि च (रथया) योगरथदानेच्छया (सुवरिवस्य) परिचर
आगच्छेत्यर्थः ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ जैसे ३ पूर्वकालमें तैसेही ४ हमारे ५
यजमानोंके ६ महावाग्दानकी इच्छा ७ और समष्टिभावदानकी इच्छा ८
और ९ योगरथदानकी इच्छासे १० आषो— ॥ २ ॥

वत्सञ्जयिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतन्दुहत आशिरम् । ऐ
नामृतस्य पिप्युषीः ॥ ३ ॥ ७३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयाः (इमाः) (पृश्नयः) महावाचः (ए
नाम्) (घृतम्) इन्द्रियशक्ति समूहं । प्राणः पयः शीर्षस्तत्राणां
श० ६।५।४।१५ (ऋतस्य) सत्यस्य ब्रह्मणाः (पिप्युषीः) वर्धयि-
त्रीर्वृद्धिद्विद्वतीः (शिरम्) मानससूर्यञ्च श० १४।१।१।१० (आदुह
त) दुहन्ति देहाभिमानात्पृथक् कुर्वन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ आपके ३ ये ४ महावाक् ५ इस ६ इन्द्रिय-
समूह ७, ८ ब्रह्मवर्द्धक बुद्धिदत्तयों ९ और मानस सूर्यको १० देहाभिमान
से रथक करती हैं ॥ ३ ॥

स्तुतकस्तत्रपिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ ३ ३ १ ३ ३ १ १ ३ १
अथाधियाच्चगव्ययापुरुणा मन्पुरुषुन। यत्सो^{११}
मे सोम^३ आभुवः^३ ॥ ४ ॥ ७४

हे (पुरुणामिन्) बहु नामन् (पुरुषुत) बहुभिः स्तुत परमेश्वर (ये
त्) यस्मात्त्वं (सोमे) (सोमे) प्रत्येकात्म प्रतिविंवे (आभुवः) अन्त-
र्यामिरूपेण प्रादुर्भूतोऽसितस्मात् (अथा) आत्माकारया (गव्यया)
महावाग्निच्छया (धिया) मत्तया (च) प्रादुर्भव ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे बहुनामवाले २ बहुतसे स्तुत परमेश्वर ३ जिसकार-
णानुम ४, ५ प्रत्येक आत्म प्रतिविंवेमें ६ अन्तर्यामी रूपसे प्रकट हुए होउस
कारण ७ आत्माकार ८ महावाक् की इच्छा ९ और मत्ताके द्वारा १० प्रक-
ट हुनिये ॥ ४ ॥ मधुच्छन्दाऽत्रपिर्गायत्री छन्दः सरस्वती देवता-

३ ३ ३ १ ३ ३ १ ३ ३ १
पावकानः सरस्वती वाजोभिर्वाजिनीवती यज्ञं^३
वेषुधियावसुः ॥ ५ ॥ ७५

(पावका) शोधयित्री (वाजिनीवती) योगक्रियावती (धिया
वसुः) ज्ञानधना (सरस्वती) वागाधिष्ठातृदेवी (वाजोभिः) प्राणा-
द्यन्त्रैर्निमित्तभूतैः (नः) अस्मदीयं (यज्ञम्) योगयज्ञं (वेषु) बहु-
तु ॥ ५ ॥

(भाषार्थः)

१ शोधका २ योगक्रियावती ३ ज्ञानधना ४ वागाधिष्ठातृदेवी ५ प्राण-
दिग्बन्धोंके निमित्त ६ हमारे ७ योगयज्ञको ८ चाहो ॥ ५ ॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

कडमन्नाहुषीष्वाइन्द्रं सोमस्य तर्पयात्
सनावसून्याभरात् ॥ ६ ॥ ७६

(कः) अन्तर्यामी परमेश्वरः कं वै प्रजापतिः श० २।५।२।१३ (नो
हुषीषु) मनुष्यसम्बन्धि योगयज्ञेषु । नहुष इति मनुष्यनाम
नि० (इमम्) (इन्द्रम्) महापुरुषं (सोमस्य) सोमेनात्मप्रतिवि
वेन (आतर्पयात्) आतर्पयति प्रीणात्तितस्मात् (स) अन्तर्यामी
(नः) अस्माकं (वसूनि) धनानि (आभरत्) आभरत् आहस्त
स्वायत्तानि करोतु धनत्यागे हि मुक्तिलाभ इत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ अन्तर्यामी परमेश्वर २ मनुष्यसम्बन्धि योगयज्ञो मे
३ इन्द्र ४ महापुरुषको ५ सोमवा आत्मप्रतिविंबके द्वारा ६ तप्त करता है
७ वह अन्तर्यामी ८ हमारे ९ धनोंको १० अपनाही करो अर्थात् धनत्याग
मेंही मुक्तिलाभ है ॥ ६ ॥

इरिमिऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

आयोहि सुषुमाहित इन्द्र सोमपिवाइमम् ।
एदवहिः ससोमम् ॥ ७ ॥ ७७

हे (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर वा (आयोहि) आगच्छ (हि) यस्माद्
यं (ते) त्वदर्थं (सुषुमाः) सोममात्मप्रतिविंबं वाऽभिपुनवन्तः (इ
मम्) (सोमम्) सोममात्मप्रतिविंबं वा (पिवा) (मम्) मदीयं
(इदम्) (वहिः) वेद्यां मास्तीर्णीदं सुषुमाणां वा (आसदः) आ
सीद अभिनिषीद ॥ ७ ॥ ७७

भाषार्थः - २ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ आओ ३ जिस कारण हमने ४ आप

केलिये ५ सोमवाग्नात्म प्रतिविंबका अमिपचकिया ६ इंस ७ सोमवाग्नात्म
प्रतिविंबको ८ पानकरो ९ मेरी १० इंस ११ वेदी में आस्तीर्ण दर्भवा सुषुम्णा
पर १२ वैद्यो - ॥ ७ ॥ ७७

वारुणिः सत्यधृतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो मित्राद्यादेवताः
महि^१त्री^२णां^३म^४वर^५स्तु^६द्यु^७क्ष^८मि^९त्र^{१०}स्यो^{११}र्य^{१२}म्नाः^{१३}। दुरा^{१४}
धर्व^{१५}वरुणा^{१६}स्य ॥ ८ ॥ ७८

तस्मिन्काले (त्रीणां) त्रयाणां (मित्रस्य) मित्रस्य प्राणास्य
वा (अर्यम्नाः) अर्यम्नाः । मनसोवा (वरुणस्य) वरुणस्या-
पानस्यवा (द्युक्षमे) (द्यु) स्वर्गः (क्ष) निवासः प्राप्तिश्च स्वर्गे
निवासो प्राप्तिर्वा यस्मिंस्तुं (दुराधर्वम्) अन्यैर्धीर्धितुं वाधितुम-
शक्यं (महि) महत् (अवरु) अवरुः रक्षाणां । विसर्जनीयस्य रेफा
देशश्छान्दसः (अस्तु) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - उससमयपर १ तीनों २ मित्रवाप्राण ३ अर्यमावामन ४ व
रुणवाअपानका ५ स्वर्गप्रापक ६ अवाधित ७, ८ महारक्षाणा ९ प्राप्त होवै
॥ ८ ॥ वत्सऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

त्वा^१वतः^२पुरु^३वसो^४वैर्य^५मि^६न्द्र^७प्रा^८णो^९तः^{१०}। स्म^{११}सि^{१२}स्था
तु^{१३}हरी^{१४}णाम् ॥ ९ ॥ ७९

हे (पुरुवसो) वद्गधन (प्राणोतः) भक्तानां स्वामिन् (हरीणाम्) ब्र-
ह्मविष्णु महेशू रूपाणां वैष्णव रूपाणाम्वा (स्थानः) (इन्द्र)
परमेश्वर (वद्यम्) (त्वावतः) त्वत्सदृशस्येश्वरस्यैव । सादृश्ये-
वतुव (स्मसि) तव स्वभूताः स्मः ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हेवद्गधन २ भक्तोंके स्वामी ३ ब्रह्मा विष्णु महेश वा वै

शाव रूपोंके ४ धारक ५ परमेश्वर ६ हुम ७ तुमसे ईश्वरके ही ८ हैं - ॥ ६ ॥

अथाधिदेवम् - हे (पुरूवसो) वहुधन (मृणोतः) लोकानां मृणोतः (हरीणाम्) अश्वानां (स्थातः) (इन्द्रः) (वयम्) (त्वावतः) त्वत्सदृशस्येश्वरस्यैव (स्मसि) तवस्वभूताः स्मः ६
भाषार्थः - १ हे वहुधन २ लोकोंके मृणोता ३ घोड़ोंपर ४ चढ़नेवाले ५ इन्द्र ६ हुम ७ तुमसे ईश्वरके ही ८ हैं ॥ ६ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनु ज्वाला प्रसाद शर्मा त्रिरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्याष्टमः खण्डः ८

इति द्वितीयः प्रपाठकः २

अथ नवमः खण्डः । अथाहृतीयः प्रपाठकः

मगाथ ऋषिर्गीयत्री छन्द बुन्दो देवता -

उ॒त्वा॑ म॒दन्तु॑ सो॒माः॑ कृ॒णु॑ष्व॒ राधो॑ अ॒द्रिवः॑ । अ॒व॒
 ब्र॒ह्म॑ द्वि॒षो॒ जहि॑ ॥ १ ॥ ८०

हे (अद्रिवः) वज्रवन्निन्द्रयद्वा अद्रिः सूर्यः सविश्वात्मा । ब्रह्म
 एडानां धारक परमेश्वर (सोमाः) सोमा आत्म प्रतिविंवावा
 (त्वा) (उ) त्वामेव (मदन्तु) (राधो) धनं योगधनम्वा (कृणु
 ष्व) कुरु प्रयच्छ (ब्रह्म द्विषः) ब्राह्मणानां ब्रह्मज्ञानिनाम्वा
 द्वेषीन् (अवजहि) अधोगमं नरकं नय । हन्ते रीत्यर्थस्येदं रु
 पम् ॥ १ ॥ - ॥ ८० ॥

भाषार्थः - १ हे वज्रधरेन्द्रवा ब्रह्माण्डोंके धारक परमेश्वर २ सोम
 वा आत्म प्रतिविंवा ३, ४ तुमको ही ५ हर्षित करो ६ तुमधनवा योगधनको
 दो ८ ब्राह्मण ब्राह्मज्ञानियोंके द्वेषाओको ९ नरकमें प्राप्न करो - ॥ १ ॥

विश्वामित्र ऋषि गयित्री छन्द इन्द्रो देवता

गिर्वेणः^१ पाहिनेः^३ सुतमधो^३ द्वीराभि^३ रज्यसे । इन्द्र^३
त्वादातमिद्यशः^३ ॥ २ ॥ ८१

हे (गिर्वेणः) गीर्भिः वाग्भिः स्तुतिभिः वननीय सम्भजनीय (इन्द्र) परमेश्वर (नेः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुतमात्म प्रतिविस्वं (पाहि) संसाराद्रक्ष (मधोः) (ध्वाराभिः) प्राणधारुभिः । प्राणो वै मधु श० १४।१।३।३० (अज्यसे) सिच्यसे (यशः) मया समर्पित मुदकमन्त्रं धनञ्च नि० (त्वादातम्) पूर्वत्वया पृहीतं (इत्) एव यथा भगवद्वाच्यं यत्करोषि यदश्नासियज्जुहोमि ददासियत् यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणाम्भुभाभुमफलैरेव मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः सन्यासयोग युक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसौति ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे स्तुतिसे सम्भजनीय २ परमेश्वर ३ हमारे ४ अभिषुतमात्म प्रतिविस्वको ५ संसारसे रक्षाकरे ६, ७ प्राणधारुओं से ८ सिंचते हो ९ मुझसे समर्पित अन्नजल धन १०, ११ पहिले ही तुमसे अंगीकृत है ॥ २ ॥

वामदेव ऋषि गयित्री छन्द इन्द्रो देवता

सदा^१ व^३ इन्द्र^३ श्व^३ कृषदा^३ उपानु^३ समर्पयन् । न देवो^३
वृत्तः^३ शूर^३ इन्द्रः^३ ॥ ३ ॥ ८२

मन्त्रः कथयति (सेः) (इन्द्रः) परमेश्वरः सदा (वः) युष्माकं (उपो) समीप एव (सर्पयन्) परिचरन् प्रीतिमुत्पादयन् (श्वः कृषत) आकर्षणं कृतवान् (नु) परन्तु (देवः) माया क्रीडाणकैः क्रीडाणाशीलः (शूरः) मायोपाधि युद्धे कुशलः (इन्द्रः) परमे

श्वरः^{११}(नः)^{१२}(वृत्तः) अभ्यर्थितः ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - मंत्रकहता है १ उसर परमेश्वरने ३ तुम्हारे ४ समीपही ५ अन्तर्यामी रूपसे मीन्युत्यादन करते हुए ६ आकर्षण किया ७ परन्तु ८ मायाके खिलोनों से कीडन शील ९ मायोपाधिके युद्धमें कुशल १० परमेश्वर ११ १२ तुमसे प्रार्थित नहीं हुआ ॥ ३ ॥

श्रुतकक्षत्रपि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

श्रुत्वा^१ विशन्त्विन्दवः^२ समुद्रमिव^३ सिन्धवः^४ । नत्वा^५
मिन्द्रातिरिच्यते ॥ ४ ॥ ८३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (इन्द्रवः) मनो वृत्तयः । मनोचन्द्रमाश०
१४।४।१।१७ (त्वा) त्वां (श्राविशन्तु) (इव) यथा (सिन्धवः)
स्यंदनशीलानद्यः (समुद्रम्) कश्चित् (त्वाम्) (न) (अतिरि-
च्यते) त्वतोधिको नास्ति सर्वेषां त्वदंशत्वात् ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ मनकी वृत्ति ३ तुममें ४ प्रवेश करो ५ जैसे
६ नदियां ७ समुद्रमें कोई ८ तुमसे ९ अधिक नहीं है अर्थात् तुम सबसे अ-
धिक हो सब तुम्हारे ही अंश हैं ॥ ४ ॥

मधुच्छन्दात्रपि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रमिन्द्राधिना^१ वह्दिन्द्रमके^२ भिरकिणोः^३ । इन्द्र-
वाणीरनूषत ॥ ५ ॥ ८४

(गाथिनः) गीयमान साम युक्ता उद्गातारः (वहन्) वहता सा-
म्ना (इन्द्रम्) परमेश्वरं (इत्) एव (अनूषत) स्तुवन्ति (अर्किणोः)
अर्चनहेतु मन्त्रोपेता होतारः (अर्किभिः) उक्तय रूपैर्मन्त्रैः स्तुव-
न्ति (वाणी) महावाचः (इन्द्रम्) परमेश्वरमेव स्तुवन्ति तस्या

न्याभावात् ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ सामगान करने वाले उद्गाता २ वहत्सामद्वारा ३ परमेश्वर को ४ ही ५ स्तुत करते हैं ६ होता लोग ७ उक्त्य रूपमंत्रों से स्तुत करते हैं ८ महावाक् ९ परमेश्वर ही की स्तुतिकरते हैं ॥ ५ ॥

श्रुतकक्षत्रपि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो^१ इषु^२ ददानु^३ नः^४ ऋभु^५ क्षणामृ^६ भु^७ थं^८ रयि^९ म् । वाजी^{१०}
ददानु^{११} वाजिनम् ॥ ६ ॥ ८५

(इन्द्रः) परमेश्वरः (इषुः) अमृत वृष्ट्यै (ऋभुक्षणामृभुथं रयिम्) मेधाविनां क्षणमुत्सवरूपं (ऋभुम्) उरुभासमानं (रयिम्) योगधनं (नः) अस्मभ्यम् (ददानु) तथा (वाजी) सूर्यरूपः परमेश्वरः (वाजिनम्) स्वकीयात्मानं (ददानु) समष्टिरूपलाभाय वाजीवाः अश्वः नि० २।२८ असौवाः आदित्यएषोऽश्वः शा० ६।३।१।२६ - ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ परमेश्वर २ अमृत वृष्टिके लिये ३ मेधावियों के उत्सवरूप ४ उरुभासमान ५ योगधनको ६ हमें ७ दो तथा ८ सूर्यरूप परमेश्वर ९ अश्वानी आत्माको १० समष्टिरूपलाभके लिये हमे दो - ॥ ६ ॥

श्रुतसमदक्षत्रपि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो^१ ऋद्धं^२ महद्भय^३ मभीष^४ दपचु^५ च्यवत् । साहि^६ स्थि^७
रो^८ विचर्षा^९ णः ॥ ७ ॥ ८६

(इन्द्रः) परमेश्वरः (महत्) (भयम्) संसारभयं (ऋद्धं) क्षिप्रं (ऋभीषत्) अभिभवति अभिभवद्वा (ऋपचुच्यवत्) अपच्यावयति अपच्यावयेद्वा (हि) यस्मात्कारणात् (सः) (स्थिरः) अचलः अनन्तत्वात् (विचर्षाणः) सर्वस्य द्रष्टा सर्वगतत्वात् ॥ ७ ॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता-

नकि इन्द्रत्वदुत्तरं न ज्याया शक्ति वृत्रहन् ।

न कथं वयं यथा त्वम् ॥ १० ॥ ८६

हे (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (कि) स्तष्टौ क्वीजं
स्तष्टिवाचकं कि सप्तम्यन्तपदं (त्वत्) त्वत्तः (उत्तरः) श्लेषः (न)
(शक्ति) (न) (ज्यायः) ज्यायान् प्रशस्ततरः (यथा) यादृशः
(त्वम्) तादृशः (कि) स्तष्टौ (नैव) ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे पापनाशक २ परमेश्वर ३ स्तष्टिमें ४ आपसे ५ श्लेष
६ नहीं ७ है ८ न ९ प्रशस्ततर है १० जैसे ११ तुमहो वैसा १२ स्तष्टिमें १३ न
ही है ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्मा विरचिते
सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य नवमः खण्डः

अथ दशमः खण्डः

विशोक ऋषिर्गायत्री छन्दो महानारायणो देवता-

तराणि वोजनानान्त्र द्वाजस्य गोमतेः । समा

नेमुप्रशंथं सिषम् ॥ ११ ॥ ८७

वेदः कथयति हे भक्ताः (वै) युष्माकं (जुनानाम्) मनुष्याणां
(तराणिम्) संसार सागरात्तारकं (त्रुद्म्) कामादीनां तर्दयि
तारं (वाजस्य) भक्तैर्भोग्यस्य (गोमतेः) गोलोकस्य (समान
म्) सम्यक् प्रापकं (उ) महानारायणमेव (प्रशंसिषम्) प्र
कर्षेण स्तौमि ॥ ११ ॥

भाषार्थः - वेद कहता है हे भक्तो १ तुम ३ मनुष्यों के ३ संसार सागर

कोशक्षर्यमादेवतावामनरक्षाकरता है-॥३॥

त्रिशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यद्दीडो विन्द्र यत् स्थिरैर्यत्परि शोने पराभृतम्।
वसुस्पाहन्तदाभरे ॥ ४ ॥ ९३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (वीडो) प्राणस्य पूरके (व) प्राणः (दीडि) अ-
धेषणकर्मा (यत्) योगधनं (स्थिरै) कुम्भके (यत्) योगधनं-
(परिशोने) समन्तात्प्राण दानं यस्मिन्तास्मिन्तूरेचके। प्राणादा-
ने (यत्) योगधनं (पराभृतम्) सम्भृतम् (तत्) (स्याहम्) स्पृ-
हणीयं (वसु) योगधनं (आभरे) आहर देहि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १हे परमेश्वर २ प्राणके पूरक में ३ जो योगधन ४ कुम्भ
कमें ५ जो योगधन ६ रेचक में ७ जो योगधन ८ सम्भृत है ९ उस १० स्पृह
णीय ११ योगधनको १२ दीजिये ॥ ४ ॥

सुकक्षर्यमादेवतावामनरक्षाकरता

श्रुतं वा वृत्रहन्तमप्रशद्धचर्षणीनाम्। आशि
षैराधसे महौ ॥ ५ ॥ ९४

मन्त्रः कथयति (वेः) युष्माकं (चर्षणीनाम्) मनुष्याणां (महौ)
महते (राधसे) योगेश्वर्याय (श्रुतम्) विख्यातं (वृत्रहन्तमम्)
अतिशयेन पापस्य हन्तारं (शद्धम्) योगवलं नि० ३।४ (आशि-
षे) प्रकर्षणा शास्मि। शास शासने। आशंसन। आशीर्वाद् प्रा-
र्थने ॥ ५ ॥

भाषार्थः

मन्त्र कहता है १ तुम २ मनुष्योंके ३, ४ योगेश्वर्यके लिये ५ विख्यात ६ अति
शय पापनाशक ७ योगवलको ८ परमेश्वर से चाहता हूँ ॥ ५ ॥

वामदेवऋषिर्गीयत्री छन्द इन्द्रादेवता

अ१२ रन्त इन्द्रं अ३ वसे ग१ मे म३ भूर३ त्वा वनः । अ१२ रं
श३ क३ परे३ मा३ णि ॥ ६ ॥ ६५

हे (भूर) वीर (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तव (अवसे) विराड् रूपान्ना-
यश्चन्त्रं वै विराट् श० १२।२।४।५ (अरम्) (अ) कृष्णः (र) राधार
धाकृष्णारूपंत्वां (गमेम) गच्छेम प्राप्नुयामहे (शक) सर्व शक्ति-
मन् (त्वावतः) त्वत्सदृशस्य (परेमाणि) परमुत्कृष्टं स्थानं गम्यते
येन सः परेमायज्ञ स्तस्मिन्भक्तियज्ञे (अरम्) राधाकृष्णारूपंत्वां
प्राप्नुयाम ॥ ६ ॥ ६५

भाषार्थः - १ हे वीर २ परमेश्वर ३ आपके ४ विराट् रूप अन्नके लिये
५ राधाकृष्ण रूपतुमको ६ हमप्राप्त करें ७ हे सर्वशक्तिमन् ८ आपसेके ९
भक्तियज्ञमे १० राधाकृष्णरूपतुमको प्राप्त करें - ॥ ६ ॥

विष्णामित्रऋषिर्गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

धो३ ना३ वन्तं३ कर३ म्भि३ णाम३ पू३ प३ वन्तं३ मु३ वि३ थ३ ने३ न्म् । इन्द्रं
प्रा३ तं३ जु३ ष३ स्व३ नः ॥ ७ ॥ ६६

हे (इन्द्र) (धानावन्तम्) धानाभृष्टयवाः तद्धृतं (कराम्भणम्)
करम्भोदधिमिश्राः सक्तवः तद्धृतं (अपूपवन्तम्) सवनीयपुरो
डाशोपेतं (उविथनेम्) स्तोत्रयुक्तं (नः) अस्माकं सोमं (प्रातः)
प्रातः सवने (जुषस्व) सेवस्व ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ भृष्टयवयुक्त ३ सक्तयुक्त ४ सवनीयपुरोडाश
सेयुक्त ५ स्तोत्रयुक्त ६ हमारे सोमको ७ प्रातः सवनमें ८

अथाध्यात्मम् - हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्माकं

धाधारणो धानाधारणात्तद्वन्तं (करम्मिणाम्) केन कामेन रभ्यते
 सिच्यंते तत्करम्मं मनस्तद्वन्तं (अपूपवन्तम्) पृशोधे शुद्धिं नपाति
 सइन्द्रियं समूहस्तद्वन्तं (उक्थिनम्) प्राणासम्बन्धिनं मात्मप्रति
 विवं माणोवाऽउक्थं श० १४। ८। १४। १ अयुं च हवाऽअस्यैपोऽनि
 रुक्त आत्मा यदुक्थं श० १४। ८। १४। १ (प्रातः) समाधिकाले (जुष
 स्व) सेवस्व ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ हमारे ३ धारणावान ४ मनवान ५ इन्द्रि-
 यसमूहयुक्त ६ प्राणासम्बन्धी आत्मप्रति विंवको ७ समाधिकालपर ८ से-
 वनकरो ॥ ७ ॥ गोपुत्रपश्वसूक्तिना वृषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

३ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 अपूपानेन नमुचैः शिर इन्द्रो देवर्तयः । विष्वा
 यदजुयस्पृधः ॥ ८ ॥ ६७

हे (इन्द्र) (यद्) युदात्वं (विष्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पृद्धमानाः आ-
 सुरीः सेनाः (अजयैः) जितवानसितदा (अपाम्) (फेनेन) वञ्ची
 भूतेन (नमुचैः) असुरस्य (शिरः) (उदवर्तयः) शरीरादुद्धतमवर्तयः
 अच्चैत्सीत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ जवतुमने ३ सब ४ स्पृद्धमान आसुरी सेनाको
 ५ जीता है तव ६ वज्ररूपजलफेनसे ७ नमुचि असुरके ८ शिरको ९ तुमने
 कारा ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम्

मन्त्रोपदेशः हे (इन्द्र) यजमान । इन्द्रो वै यजमानः श० १। १२
 ११ (यद्) युदात्वं (विष्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पृद्धमानाः कामसे-
 नाः (अजयैः) जितवानसितदा (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां
 (फेनेन) ज्ञानवज्रेण (नमुचैः) पापस्य । पाप्मावै नमुचिः श० १२

७।३।४ (शिरः) (उद्वर्त्तयः) ॥८॥

भाषार्थः - मन्त्रकहना है १ हे यजमान २ जवतुमने ३ सब ४ स्पृष्टमनकामसेनाको ५ जीनातव ६ कमलान्न रिक्षोंके ७ ज्ञान वज्रसे ८ पापके ९ शिरको काटो - ॥८॥

वामदेव ऋषि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इमं^३ इन्द्र^३ सोमा^३ सुतो^३ सो^३ यच्च^३ सो^३ त्वा^३ । तेषां^३ म^३
त्स्व^३ प्रभू^३ वसो^३ ॥ ९८ ॥ ९८

हे (प्रभूवसो) प्रभूतधनवनु (इन्द्र) इन्द्रपरमेश्वरवा (ये) (सो
त्वा) अभिषोतव्याः (सोमाः) सोमाः । इन्द्रियात्मप्रतिविंवा
(ते) (इमे) (सुतासः) अभिषुताः (तेषाम्) मदेन (मत्स्व) दृष्टो
भव ॥ ९८ ॥

भाषार्थः

१ हे बहुधनवान २ इन्द्रवापरमेश्वर ३ जो ४ अभिषोतव्य ५ सोमवा इन्द्रिय
आत्मप्रतिविंवा ६ वे ७ ये ८ अभिषुत हुए ९ इनके १० मदसे हर्षित हूँ
ये ॥ ९८ ॥ ऋतकक्ष ऋषि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

तुभ्यं^३ सुतो^३ सो^३ सोमा^३ स्ती^३ णि^३ वाहि^३ विभावसो^३ । स्तो^३
तुभ्यं^३ इन्द्र^३ मृडय^३ ॥ ९९ ॥ ९९

हे (विभूवसो) महादीप्तिधन (इन्द्र) परमेश्वर (तुभ्यम्) त्वद
र्थ (सोमाः) इन्द्रियात्मप्रतिविंवाः (सुतासः) अभिषुताः (वाहिः)
सुपुम्णा (स्तीणिम्) प्रसारिता (स्तोतुभ्यः) अस्मभ्यं (मृडय)
मोक्षानन्दं देहि ॥ ९९ ॥

भाषार्थः - १ हे महादीप्तिधन २ परमेश्वर ३ आपके लिये ४ इन्द्रिय
आत्मप्रतिविंवा ५ अभिषुत हुए ६ सुपुम्णा ७ प्रसारित है ८ हमस्तोताओंके लिये

(अवसे) लोकस्य पालनाय (साधः) योगसाधनं (कृण्वन्तम्) कुर्वन्तम् (वृवदुक्थं) महदुक्थं समष्टिप्राणं । प्राणोवाऽऽकथं श० १४।८।१४।१ (हवामहे) आह्वयामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः— १ संसारसे रक्षाके लिये २ मलंबवाहु ३ लोकपालनके लिये ४ योगसाधन ५ करनेवाले ६ समष्टिप्राणको ७ हम आह्वान करते हैं ॥ ४ ॥

गोतमऋषिर्गायत्री छन्दो मित्राद्या देवताः

ऋजुनीतीनो वरुणो मित्रो नयति विद्वान् । सूर्य
मो देवैः सजोषोः ॥ ५ ॥ १०४

(देवैः) इन्द्रियैः (सजोषोः) समानप्रीतिः (विद्वान्) नेतव्यमुत्तमस्थानं जानन् (मित्रः) प्राणः (वरुणोः) क्षपानः (सूर्यमो) मनः (ऋजुनीती) ऋजुनीत्या ऋजुनयनेन कौटिल्यरहितेन गमनेन (नयति) समाधौ प्रापयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः— १ इन्द्रियोंके साथ २ समानप्रीतिवाला ३ प्राप्ति योग्य उत्तमस्थानको जान्ना ४ प्राण ५ क्षपान ६ मन ७ सीधीचालसे ८ समाधिमें प्राप्त करते हैं ॥ ५ ॥ ब्रह्मातिथिऋषिर्गायत्री छन्दो यजमानो देवताः

दूरे दिह्वयत्सतोरुणाप्सुराश्वितत् । विभानुं वि
श्वथातनत् ॥ ६ ॥ १०५

(यत्) यदा (अरुणाप्सुः) अरुणारूपो यजमानः (दूरैः) दूरे गगनमण्डले वर्तमानात् (सतः) महापुरुषात् (इह्व) (इव) मानसकमले (अश्वितत्) आश्विः । श्विगतौ तदा (भानुम्) दीप्तिं (विश्वथा) विश्वधा बहुधा मनोबुद्धीन्द्रियरूपेण (व्यतनत्) विस्तारयति ॥ ६ ॥— १०५

भाषार्थः - १ जवर अरुणरूपयजमान ३ गगनमंडलमें वर्तमान ४ मह्यप्ररुषसे ५, ६ इसमानसकमलमें ही ७ प्राणहृत्प्रातव ८ दीमिको ९ ब्रह्मकार मन बुद्धि इन्द्रियरूपसे विस्तृत करता है - ॥ ६ ॥ १०५

विश्वामित्रोजमदग्निर्वाञ्छधिर्गीयत्री छन्दो मित्रावरुणौ देवते-
 श्नानो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूति मुक्षतम् । मध्वो
 रजांश्च सिसृकतू ॥ ७ ॥ १०६

(सुकृत) शोभनकर्माणो (मित्रावरुणौ) प्राणोदानौ । प्राणोदानौ वै मित्रावरुणौ श० श० ३ । १२ (नैः) अस्माकं योगिनां (गव्यूतिम्) इन्द्रियाणां मालयं (घृतैः) इन्द्रियशक्तिभिः । प्राणपयः शीर्षस्तत्प्राणं श० ६ । ५ । ४ । १५ (स्यो) समृन्नात् (उक्षतम्) सिञ्चतम् (रजांसि) कमलरूपलोकान् (मध्वो) ज्ञानरसेन सिञ्चतम् । इदं वै तन्मधुदध्यङ्गाथर्वणोऽभिव्यामुवाच श० १४ । ५ । १६ - ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ शोभनकर्मा २ प्राणउदान ३ हमयोगियोंकी ४ इन्द्रियोंके मालयसमूहको ५ इन्द्रियोंकी शक्तिसे ६ सबओर ७ सींचो ८ कमलरूपलोकोंको ९ ज्ञानरससे सींचो ॥ ७ ॥

प्रस्काएवञ्चपि गीयत्री छन्दः प्राणानाहतशब्दो देवते-
 उदृत्य सूनवो गिरैः काष्ठो यज्ञेष्वत्नत । वाञ्छा
 भूमिस्तु यातव ॥ ८ ॥ १०७

(ये) (सूनवः) वाचउत्पादकाः प्राणाः । सुनोतेः रूपं (गिरैः) अनाहतशब्दाः (नैः) (यज्ञेषु) योगयज्ञेषु (काष्ठो) अमृतरूपापः (उदृत्य) एव (उदत्नत) विस्तारितवन्तः पुनः (वाञ्छाः) इन्द्रियाणि (स्वभिस्तु)

जान्त्रिमुखं यथा भवति (तथा (यांतेवे) ११) आलयेषु प्रतिगमना
यमेति वन्तः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ जो २ चवनको उत्पन्न करने वाली माण ३ और अनाह
तशब्द हैं ४ उन्होंने ५ योग यज्ञों में ६ अमृत रूप जलों को ७ ही ८ विस्तृत कि
या ९ और इन्द्रियों को १० जानु अत्रिमुख जैसे हों वैसे ही ११ निजालयों में च
लने के लिये मेरित किया ॥ ८ ॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो विष्णुर्देवता.

इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढम्
स्य पाथं सुले ॥ ९ ॥ १०८

(विष्णुः) वामनावतारः (इदम्) ब्रह्मलोक पर्यन्तं जगत् (विच
क्रमे) विभज्य क्रमते स्म (त्रेधा) (पदम्) (निदधे) भूमावेकं पद
मन्तरिक्षे द्वितीयं दिवितृतीयं (अस्य) (पदम्) (पाथं सुले) च
तुर्दशभुवनमयब्रह्माण्डे (समूढम्) सम्य गन्तभूतम् ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ वामनावतार विष्णुने २ इस ब्रह्मलोक पर्यन्त जगतको
३ विभागकर उलंघन किया ४ तीन प्रकारसे ५ पदको ६ रक्वा ७ भूमिपर
एकपदको अन्तरिक्षमें दूसरेको स्वर्गमें तीसरेको ९ इसका पद ८ चतुर्दशभु
वनमयब्रह्माण्डमें १० भले प्रकार अन्तर्गत हुआ ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् (विष्णुः) योमयज्ञस्य यजमानः । यथा श्रु
तिः एतद्देवा विष्णु भूत्वे मां लोकान् क्रमन्त तथैवैतद्यजमानो
विष्णु भूत्वे मां लोकान् क्रमते ६ । ७ । ८ । १० (अस्य) देहस्य (इदम्)
सुपुष्पा मार्गं (विचक्रमे) विभज्य क्रमते स्म (पाथं सुले) योगभू
मौ (त्रेधा) ज्ञातृज्ञान त्रेयारव्यत्रिविधिभेदेन (समूढम्) सम्य

गन्तर्हितं (पदम्) ब्रह्म यथा भगवद्वाक्पुंततः पदंतत्परि मार्गतव्यं
 यस्मिन्नाताननि वर्तन्ति भूयइति (निदधे) स्वात्मनिधारयामा
 स ॥ ८ ॥ **भाषार्थः** - १ योगयत्केयजमानने २ इसदेहके ३ इस
 सुषुम्णा मार्गको विभाग कर उलंघन किया ५ योग भूमिमें ६ ज्ञात्त्वज्ञान
 ज्ञेयनाम विविधिभेदसे ७ अन्तर्हितं ब्रह्म को ८ अपने आत्मा में धारणा
 किया ॥ ८ ॥

तृतीयोऽर्थः

(विष्णुः) (अस्य) प्रधानस्य (इदम्) कार्यविश्वं (विचक्रमे)
 विशेषेण स्वां भुभिर्गतवान् व्याप्तवान् क्रम। पादविक्षेपणो-
 गतौ पादकिरणो (पाथं सुले) पांसवो भूम्यादिलोक रूपा विद्य-
 न्ते यस्य तत्पांसुलं जगत्तस्मिन् जगति (समूहम्) सम्यगन्त-
 र्हितं (पदम्) पद्यते ज्ञायतइति पदमद्वैतारव्यं स्वरूपं (त्रेधा)
 त्रिदेवरूपेण (निदधे) संसारे स्थापितवान् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ विष्णुने २ इसप्रधानके ३ इसकार्यविश्वको ४ अपनी कि-
 रणोंसे व्याप्त किया ५ जगतमें ६ अन्तर्हितं ७ अद्वैत स्वरूपको ८ त्रिदेवरूप
 से संसार में स्थापन किया ॥ ८ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सृज्ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सा-
 मवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्यैकादशः खण्डः

अथ द्वादशः खण्डः

मेधातिथिऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
 ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
 ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
 ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२

अस्य रातो सुतामिव ॥ १ ॥ १० ८

हे इन्द्र परमेश्वर वा (मन्युपाविणं) क्रोधशोकाहं कारणं सुन्व-

न्तंजंनं^३(अतीहि) अतिक्रम्यगच्छ^३(सुषुवांसैम्) सोममात्मप्रति
 विम्बंवासुन्वन्तंजंनं^४(उपेरय) स्वसमीपेभेरय^५(अस्य)^६(एती)
 यज्ञारख्येदाने^७(सुतम्) अभिषुतं सोममात्मप्रतिविम्बंवा^८(पि
 व) ॥१॥ **भाषार्थः** - हेइन्द्रवापरमेश्वर १ क्रोधशोकअहंकार
 काअभिषवकरनेवालेमनुष्यको २ अतिक्रमणकरकेजाओ ३ सोमवाष्पात्म
 प्रतिविंवकाअभिषवणकरनेवालेमनुष्यको ४ अपनेसमीपभरणकरो ५
 इस ६ यज्ञनामदानमें ७ अभिषुतसोमवाष्पात्म प्रतिविंवको ८ पानकरो ॥१॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्दो देवो देवता-

^{२ ३ १ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३}
 कदु प्रचेतसे मह वच्चा देवाय शस्यते । तदिध्यस्य
^{१ २ ३ १ २ ३}
 वर्द्धनम् ॥ २ ॥ ११०

(कदु) कस्मात्कारणादेव (मह) भगवदवतारदिवसाद्युत्सवेयज्ञे
 वा (प्रचेतसे) प्रकृष्टज्ञाना यज्ञानस्वरूपाय वा (देवाय) परमे
 श्वराय (वच्चः) स्तोत्रं (शस्यते) उच्चार्यते (हि) यस्मात् (तदि
 त) तदेव स्तोत्रं (अस्य) यजमानस्य (वर्द्धनम्) वृद्धिकरम्

भाषार्थः - १ किसी कारण २ भगवदवतारके दिवसआदि उत्सववा
 यज्ञमें ३ ज्ञेष्टज्ञानवाले वाज्ञानस्वरूप ४ परमेश्वरके लिये ५ स्तोत्र ६ उ
 च्चारणकिया जाता है ७ जिस कारण ८ वड़ी स्तोत्र ९ इस यजमानकी १०
 वृद्धिकरनेवाला है ॥२॥

मेधातिथिप्रियमेधावृषीगायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३}
 उक्थञ्च न शस्यमानं नागोरीयिराचिकेत ।
^{१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३}
 नगा यत्र द्वायमानम् ॥ ३ ॥ १११

(अथिः) (अ) विष्णुः (य) ब्रह्मा (इ) रुद्रः त्रिदेवरूपो परमेश्वरः

(नागोः) अव्यक्तभाषिणाः । गुड् । अव्यक्ते शब्दे, अगुः व्यक्तभाषि
नागुः अव्यक्तभाषीतस्युं (शस्यमानं) पठ्यमानं (उक्त्यम्) श
ख्वं (चै) (गीयमानं) (गायत्रं) साम (नै) (आचिकेत) नाभिजा-
नीयादिति (नै) अन्तर्यामी सन् सर्वभूणोतीत्यर्थः ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ त्रिदेवरूपपरमेश्वर २ अव्यक्तभाषीके ३ पठेद्गए ४ श
ख्वको ५ श्वोर ६ गायेद्गए ७ गायत्रसामको ८ नहीजाने ९ यहवातनहीक
ह अन्तर्यामी होतासवको सुन्ताहै ॥ ३ ॥

विश्वामित्रत्रयि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्र उक्त्येभिर्मन्दिषो वाजो नञ्च वाजपतिः

हरिवात्सुतानां सखा ॥ ४ ॥ ११२

(वाजानाम्) यज्ञानां मध्ये (वाजपतिः) यज्ञपतिः (चै) (हरिवात्सु-
विष्णुरूपः (इन्द्रः) परमेश्वरः (उक्त्येभिः) शस्त्रैः स्तोत्रैः (मन्दिषः)
अतिशयेन तृप्तः सन् (सुतानाम्) देहाभिमान रहितानां भक्ता-
नां (सखा) भवति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ यज्ञोक्ते मध्य २ यज्ञपति ३ श्वोर ४ विष्णुरूप ५ परमेश्व
र ६ शख्व श्वोर स्तोत्रोसे ७ अत्यन्त तृप्त होता ८ देहाभिमान रहित भक्तो का
ई सखा होता है ॥ ४ ॥ मेधातिथिप्रियमेधा तृपी गायत्री छन्द आत्मा देवता-

आयो ह्युपनः सुतवाजोभिर्महणी यथा महोऽं

इव युवजानिः ॥ ५ ॥ ११३

वागाद्युत्विजां वचनमृहे आत्मारूपयजमान । आत्मा वैयजुस्य
यजमानोऽङ्गान्युत्विजः शः ० १। २। १६ (नै) अस्माकं (सुतम्)
अभिषुतं शक्तिसमूहं (उपायोहि) प्राप्नुहि (वाजोभिः) विषयैः

(मो) हृणीयथाः) माह्वियस्व (इव) यथा (महान्) महापुरुषः
(युवजानि) यौवनोपेतजायायाः स्वामी सन्नन्याभिर्नापहियते ५

भाष्यः - वागाद्यत्विजकहतेहैहे आत्मारूपयजमान १ हमारे रश्मिपुत्रशक्ति समूह को ३ भाग कर ४ विषयों से ५ इन्द्रणमत कराओ ७ जै-
से महापुरुष ६ युवांजायाका स्वामी होता अन्यस्त्रियों से हरण नहीं

किया जाता ॥ ५ ॥ कौत्सो दुर्मित्ररुषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-
कदावसो स्तोत्रं हृतं श्रवणं शरुद्वैः
दीर्घं सुतवाताप्याय ॥ ६ ॥ ११४

हे (वसो) ज्योतिर्भयपरमेश्वर (कदा) (वो) गगनामृतं (श्रवांरु-
धत्) श्वरोत्स्यतितदा (वाताप्याय) प्राणीनाप्यते ऊर्ध्वान्निपात्य
तेतस्मै गगनामृताय (स्तोत्रम्) (हृतम्) प्राप्यते पठ्यते हर्यगते
गगनामृतञ्च (सुतम्) श्रमिपुत्रं (दीर्घम्) समष्टिभावापन्नमात्म
प्रतिविंवंप्रति (श्रमशा) कुल्यारूपं भवति ॥ ६ ॥

भाष्यः - १ हे ज्योतिर्भयपरमेश्वर २ कभी ३ गगनामृत ४ श्वरोधको-
पातां हैतव ५ गगनामृतके लिये ६ स्तोत्र ७ पढ़ा जाता है और गगनामृत रश्मिपुत्र ८ समाष्टिभावापन्न आत्मप्रतिविंवके प्रति ९ कुल्यारूप होता है ॥ ६ ॥

मेधानिधिर्रुषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-
ब्राह्मणादिन्द्रराधसः पिवा सोममृतं रनुतवेदं
सख्यमस्तुतम् ॥ ७ ॥ ११५ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (रनुतवेदं) प्रत्येक समाधिकाले (ब्राह्मणात्)
ब्रह्मज्ञानयुक्तात् (राधसः) राधामहा मायातस्यांशरूपाद्देहा-
त् (सोमम्) आत्मप्रतिविंव (पिक्) यस्मात् (तव) (इन्द्रम्) (सख्य-

म्) (अस्तुतम्) अहिंसितमस्ति ॥७॥ ११५

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ प्रत्येक समाधिकाल पर ३ ब्रह्मज्ञान युक्त
४ मायाके अंश रूपदेहसे आत्म प्रतिविंबको पान करो जिस कारण ५ तेरी ८
यह ९ मित्रता १० अहिंसित है ॥७॥

मेधातिथिञ्चरिषीर्गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता-

वयं घाते अपि स्मसि स्तोतारं इन्द्र गिर्वणाः ।

त्वन्त्रोजिन्व सोमपाः ॥८॥ ११६

हे (गिर्वणाः) गीर्भिर्वननीयसम्भजनीय (इन्द्र) परमेश्वर (वयं-
म्) (ते) तव (स्तोतारः) (स्मसि) स्मः भवामः हे (सोमपाः) आत्म
प्रतिविंबस्य पातः (त्वम्) (अपि) (नेः) अस्मान् (घा) मेधया (जि-
न्व) प्रीणय ॥८॥

भाषार्थः - १ हे वेदबचनोंसे संभजनीय २ परमेश्वर ३ हम ४ तेरे ५ स्तो-
ता ६ हैं ७ हे आत्म प्रतिविंबके पान करने वाले ८ तुम ९ भी १० हमको ११ बुद्धिस-
हित १२ प्राप्त करो जिन्वतिर्गच्छतिकर्माणि घ० - ॥८॥

विश्वामित्रो गाथिनो भोपाद उदलो वाञ्छरिषीर्गीयत्री छन्द इन्द्रो दे०

एन्द्र एक्षुका सुचिन्तृन्मृगान् नूषुधेहिनः । सत्रा

जिदुग्रपौ थंस्यम् ॥९॥ ११७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (कासुचित्) (एक्षु) कास्वपियोग क्रियासु-
मृक्कासु (नः) अस्माकं (नूषु) अङ्गेषु (नृमृगाम्) योगवलं (प्राधे-
हि) समन्नात्स्थापय हे (उग्र) उत्कृष्ट (सत्राजित्) यज्ञेनाजितः
भक्त्यै कालभ्यस्त्वं (पौंस्यम्) पुरुषार्थ मोक्षं देहि ॥९॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २, ३ किसी योग क्रियाके बीच ४ हमारे ५ अंगों-

में ६ योगवलको ७ धारण करो ८ हे उत्कृष्ट दीयत्तसे अजितकेवलभक्तिसेलभ्यतुम्
१० पुरुषार्थ मोक्षको दीजिये ॥ ८ ॥

श्रुतकक्षत्ररुधि गयित्री छन्द इन्द्रो देवता
^{३ १२} एवा^{१३} ह्या^{३ ३ ३ ३ १२} सि^{३ ३ ३} वी^{३ ३ ३ ३} र्यु^{३ ३ ३ ३} रवा^{३ ३ ३ ३} शूर^{३ ३ ३ ३} उत^{३ ३ ३ ३} स्थिरः । एवा^{३ ३ ३ ३} तैरा^{३ ३ ३ ३}
 ध्यम्मनः ॥ १० ॥ ११८

(१) हे विष्णुरूप परमेश्वरत्वं (२) निष्प्रयत्न (वीर्युः) कामयुद्धे
 वीरान् भक्तान् स्वात्मनि मिश्रयिता । युमिष्णो (एव) (असि) (३)
 हे शिवरूप परमेश्वरत्वं (४) असुराणां संग्रामे भूरः (उत) अपि
 च (स्थिरः) (एव) असिहे (५) महानारायण (तै) तव (मनः) (राध्यम्)
 स्तुतिभिराराधनीयं (एव) ॥ १० ॥

भाषार्थ - १ हे विष्णुरूप परमेश्वर २ निष्प्रयत्न ३ तुमही भक्तोंको अप-
 ने आत्मा में मिलानेवाले ४ ही ५ हो ६ हे शिवरूप परमेश्वर तुम ७ असुरों-
 के संग्राममें भूर ८ और ९ स्थिर १० ही हो ११ हे महानारायण १२ आपका
 १३ मन १४ स्तुतिओंसे आराधनीय १५ ही है ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सा-
 मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयोऽध्यायः २

अथ तृतीयाध्याय आरभ्यते

अथ प्रथमः खण्डः

वसिष्ठत्ररुधिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{३ १ ३} अभि^{३ १ ३} त्वा^{३ १ ३} भूर^{३ १ ३} नो^{३ १ ३} नु^{३ १ ३} मो^{३ १ ३} दु^{३ १ ३} र्ग^{३ १ ३} धा^{३ १ ३} इ^{३ १ ३} व^{३ १ ३} धे^{३ १ ३} न^{३ १ ३} वः । इ^{३ १ ३} शो^{३ १ ३}

नमस्य जगतः स्वदृशमोशानामिन्द्रतस्थुषुः । १ । १

हे (भूर) असुराणां युद्धे भूर (इन्द्र) परमेश्वर (अस्य) (जगतः)

जङ्गमस्य (ईशानम्) ईश्वरं (तस्थुषः) स्थावरस्य (ईशानम्) स्तामि-
 नं (स्वईशम्) सूर्यरूपेण सर्वस्य द्रष्टारं (त्वा) त्वां (अभिनोनुमः) भृ-
 शमभिष्टुमः (इव) यथा (अदुग्धाः) (धेनवः) आत्मीयं वत्सं स्नेहा-
 द्रेण मनसा हुंकारादिभिरिभिनन्दन्ति ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ हे असुरोंके युद्धमें भूर २ परमेश्वर ३ इत्स ४ चरके ५ ईश्वर
 ६ अचरके ७ स्वामी ८ सूर्यरूपसे सबके द्रष्टा ९ तुमको १० हमस्तुन करते हैं
 ११ जैसे १२ अदुग्ध १३ गौअपने बछड़े को स्नेहाद्रिं मन झङ्कार आदिके द्वारा प्र-
 सन्न करती हैं ॥ १ ॥ भरद्वाज ऋषि वृंहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वामिद्धि हवामहे सातो वाजस्य कारवः । त्वां

वृत्रे विन्द्र सत्यति न्नरस्त्वाङ्गाष्ठा स्वर्वतः ॥ २ ॥ ३

(इन्द्र) हे परमेश्वर (कारवः) स्तोतारो वागाद्यत्विजो वयं (वाजस्य)
 विराटरूपान्नस्य (सातो) लाभनिमित्ते (त्वाम्) (इत्) एव (हि) (ह
 वामहे) स्तुतिभिर्हवामहे (नरः) इन्द्रियाणां नेतारः (सत्यतिन्)
 सतां भक्तानां पालयितारं (त्वाम्) (वृत्रेषु) पापेषु सत्सु भजन्ति (स्-
 वर्वतः) मानससूर्यस्य । असौ वाऽ आदित्य एषोऽश्वः श० ६। ३। १।
 २६ (काष्ठासु) कामसङ्गमेषु (त्वाम्) त्वामेवाह्वयन्ति ॥ २ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ स्तोता हम वागाद्यत्विज ३ विराटरूपान्न
 के ४ लाभनिमित्त ५ तुमको ६ ७ ही ८ स्तुतिद्वारा आवाहन करते हैं ९ इन्द्र-
 योंके नेता १० भक्तपालक ११ तुमको १२ पापोंके होनेपर भजते हैं १३ मान
 ससूर्यके १४ कामसंग्रामोंमें १५ तुमको ही आवाहन करते हैं ॥ २ ॥

वालरिखित्या ऋषयो वृंहती छन्द इन्द्रो देवता-

अभिप्रवः सुराधसामिन्द्रमन्वयथाविदो योज

रित्भ्यो मघवा पुरुवसुः सहस्रेणो वशिः क्षति ॥ ३ ॥ ३
 (यः) (पुरुवसुः) महातेजस्वी ज्योतिः स्वरूपः (मघवा) मघवान्-
 योगधनवान् परमेश्वरः (सहस्रेणोव) सहस्रज्योतिस्तं रातिददा
 तितेन रूपेणैव (जरित्भ्यः) स्तोत्रभ्यः अभि (शिः क्षति) अभीष्टं द-
 दानि शिः क्षतिर्दानकर्मानि० ३।२० हेमनः (वः) निवृत्तात्मा त्वं (य-
 था) (विदुः) वेदो हं जानामि विदज्ञाने तथा (सुराधसम्) ज्ञेष्ठधनो
 पेतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (मार्चं) प्रकर्षेण पूजय ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ जो २ ज्योतिस्वरूप ३ धनवान् परमेश्वर ४ ज्योतिदाता
 रूपके द्वारा ही ५ स्तोताओं के लिये ६ अभीष्ट को देता है ७ हेमन निवृत्तात्मा
 तुम ८ जैसे ९ मैं वेद जान्ता हूँ उसी प्रकार १० ज्ञेष्ठधनसे युक्त ११ परमेश्वरको
 १२ पूजन करो ॥ ३ ॥ नोधां ऋषिर्दृहती छन्द इन्द्रो देवता-

तस्वोदस्म मृतीषह वसो मन्दान् मन्धसः । अभि
 वत्सं नस्वसरेषु धेनेव इन्द्र गोभिर्न वामहे ॥ ४ ॥

वेदोपदेशः हे (वसो) आत्मांशु रूपजीवात्मन् (तमे) (दस्मम्) श-
 चूणा मुपक्षयितारं । दसु उपक्षये (ऋतीषहम्) वाधकानामभिभ-
 वितारं (मन्धसः) नैवेद्याद्यन्नात् (मन्दानम्) मोदमानं (इन्द्रम्)
 परमेश्वरं (वः) युष्माकं (स्वसरेषु) गृहेषु देव मन्दिरेषु नि० ३।४ (गो-
 र्भिः) मन्त्रैः (अभिर्न वामहे) अभिपुमः । नुस्तवने शब्दे च (ने) यथा
 (धेनेवः) (वत्सम्) गोष्ठे स्ववत्समभिलक्ष्य शब्दयन्ति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - वेदोपदेशकरता है १ हे आत्मांशु रूपजीवात्मन् २ उस ३ शत्रु-
 नाशक ४ वाधकों के अभिभविता ५ नैवेद्यांशादिभ्यन्तसे ६ मोदमान ७ परमे-
 श्वरको ८ तुम्हारे ९ ग्रहोंवादेवालयोंमें १० मंत्रोंसे ११ हम स्तुत करते हैं १२ जै-

से १३ गौ १४ च छडे को गोष्ठमें देख कर शब्द करती हैं - ॥ ४ ॥

कलिः मगाथ ऋषिर्वहनी छन्द इन्द्रो देवता-

^{१ २ ३} तरोभिर्वी^{३ १ २ ३} विदद्वसु^{१ २ ३} मिन्द्रं^{३ १ २ ३} सर्वाध^{३ १ २ ३} ऊनयो^{३ १ २} वृह

^{१ २} द्वायन्तः^{३ १ २ ३} सुतसोमे^{३ १ २ ३} अध्वरे^{३ १ २ ३} द्वुवभरन्त^{३ १ २ ३} कारिणाम् ५-५

(सर्वाधः) ऋत्विजः नि० ३। १८ (सुतसोमे) अभिपुत्रसोमके (अध्वरे) यज्ञे (वृहन्) साम (गायन्तः) तिष्ठन्ति मन्त्रोऽहं (वः) युष्माकं (तरोभिः) योगवलैः (विदद्वसुं) योगधनवेदकं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (ऊनयो) रक्षणाय (द्वुवै) (ने) यथा (कारिणाम्) स्वहितकरणशीलं (भरम्) भर्तारं कुटुम्बपोषकं पुत्रादय आह्वयन्ति ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ ऋत्विजलोग २ अभिपुत्रसोमवाले ३ यज्ञमें ४ वृहन्साम को ५ गाने वृहन्ते है मंत्रमें ६ तुम्हारे ७ योगवलोंसे ८ योगधनके दाता ९ परमेश्वरको १० रक्षाके लिये ११ आह्वान करताहं १२ जैसे १३ कुटुम्बपोषकपिता आदिको पुत्र आदि ॥ ५ ॥

वसिष्ठ ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ ३ ३} तरोणि^{३ १ २ ३} रित्सिषासति^{३ ३ ३ १ ३} वाज^{३ ३} पुरन्ध्या^{३ ३} युजो^३ । आव

^{१ २} इन्द्रम्पुरु^{३ १ २ ३} हतनमे^{३ १ २ ३} गिरो^{३ १ २ ३} नोमिन्त^{३ १ २ ३} ष्वसु^{३ १ २ ३} द्रुवम्-६ ॥ ६

(तरोणिः) मानससूर्यः (युजो) सहायभूतया (पुरन्ध्या) प्रज्ञया (इत) एव (वाजम्) विराड् रूपान्नं (सिषासति) सम्मज्जते वेदोहं (वः) युष्मदर्थं (पुरु हतम्) बहुभिराहुतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गिरा) स्वकीयवाचा (आनमे) अभिमुखं कुर्वे (द्वै) यथा (तष्टा) यद्वैकिः (सुद्रुवं) शोभनदारुं (नेमिम्) चक्रस्य वलयमानमयते ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ मानससूर्य २ सहायभूत ३ प्रज्ञाके द्वारा ४ इ ५ विराटरू

पञ्चको ६ सेवन करता है मे वेद ७ तुम्हारे लिये ८ बहुतसे आहुत ९ परमेष्ठ
रको १० अपनी वाणीसे ११ सन्मुख करता हूँ १२ जैसे १३ बढई १४ शोभन
काष्ठ वाले १५ चक्रबलय को भुकाता है - ६॥

मेधातिथि ऋषि र्द्विती छन्द इन्द्रो देवता-

पिवा^१सुत^३स्य^३ रसि^३नो^३ मत्स्वान^३ इन्द्र^३ गो^३मतः^३। आपि^३
नी^३वोधि^३सध^३माद्यो^३ वृधे^३स्मा^३ थं^३ अवन्तु^३तो^३धियः^३ ७

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वरवा (ने) अस्मदीयस्य (रसिनः) रसवतः
(गोमतः) गोविकारैः पयःप्रभृतिभिः अपणाद्रव्यैर्युक्तस्य। इन्द्र-
ययुक्तस्यवा (सुतस्य) अभिषुतसोमस्यात्मप्रतिविवस्यवा (पिवे-
पानंकुरु (मत्स्व) मत्तोभव (सधमाद्यो) सहमाद्यन्ति देवा अत्रेति स-
धमाद्यो यज्ञः तस्मिन्सोमयज्ञे। योगयज्ञेवा (आपिः) वन्धुर्व्याप-
को वात्वंनि० २। १८ (ने) अस्माकं (वृधे) वर्द्धनाय (वोधि) वोध्यस्व
(ने) त्वदीयाः (धियः) बुद्धयः (अवन्तु) अस्मान् रक्षन्तु ॥ ७ ॥

भाष्यः - १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ हमारे ३ रसवान् ४ पय आदि से युक्त
वा इन्द्रियों से युक्त ५ अभिषुत सोमवा आत्मप्रतिविव का ६ पानकरो ७ मत्त-
हो ८ सोमयज्ञ वा योग यज्ञमें ९ वन्धु वा व्यापकनुम १० हमारी ११ वृद्धिकेलि
ये १२ चेतो १३ आपकी १४ बुद्धियां १५ हमको रक्षा करो - ॥ ७ ॥

भर्ग ऋषि र्द्विती छन्द इन्द्रो देवता-

त्व^३ थं^३ ह्योहि^३ चरे^३ वै^३ विदा^३ भर्ग^३ वसु^३ त्तये^३। उ^३ द्वा^३ वृष^३ त्व^३
म^३ धव^३ ना^३ विष्ट^३ यु^३ उ^३ दिन्द्रा^३ श्व^३ मिष्ट^३ ये^३ ॥ ८ ॥ ८

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (हि) (एहि) प्रादुर्भव (वसुत्तये) अस्माकं
वागाद्यत्विजां योगधनदानाय (चरेवै) ज्ञानिने यज्ञमानाय (भर्गम्)

योगैश्वर्यं (विदाः) लभस्वदत्त्वहे (मघवन्) लक्ष्मीपते (गविष्टये)
 इन्द्रिययज्ञाय (उद्वावृषस्व) योगैश्वर्यं मासिञ्च । वृषुसेचने (अ
 ष्वम्) मानससूर्यं (इष्टये) यागाय (उद्) उद्वावृषस्व स्वात्मनि-
 सिञ्च ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २, ३ तुमही ४ आओ ५ हमवागाद्यत्विजोंके
 योगधनकेदानार्थ ६ ज्ञानीयजमानकेलिये ७ योगैश्वर्यको ८ दो ९ हे लक्ष्मी
 पते १० इन्द्रिययज्ञकेलिये ११ योगैश्वर्यकोदो १२ मानससूर्यको १३ योगकेलि
 ये १४ अपनेआत्मानमें सींचो ॥ ८ ॥

वासिष्ठऋषिर्ब्रह्मती छन्दो मरुतो देवताः

नहि^{१२} व^{२२}श्वर^३ म^३ञ्च^३न^३ वा^३शि^३ष्ठः^३ परि^३म^३ं^३ स^३ते^३ । अ^३
 स्मा^३कं^३ म^३घ^३ म^३रु^३तः^३ सु^३ते^३ स^३चो^३ वि^३श्वे^३ पि^३व^३न्तु^३ का^३
 मि^३नः^३ ॥ ९ ॥ ९

हे (मरुतः) देवाः प्राणावा (वासिष्ठः) वाक् । वाग्वै वासिष्ठः १७ १४।
 १। २। २ (वः) युष्माकं मध्ये (वरमं) (चन) अन्त्यमपि (नहि) (प
 रिमंसते) वर्जयित्वा नस्तौति किन्तु सर्वानेव युष्मान् स्तौति (अघ
 (अस्माकं) (सुते) अभियुते सोमे । आत्म प्रतिविश्वेवा (कामिनः)
 कामयमानाः (विश्वे) सर्वयूयं (सचो) सङ्गत्य (पिवन्तु) पानं-
 कुर्वन्तु ॥ ९ ॥

भाष्यार्थः

१ हे मरुतदेवताओवा प्राणो २ वाक् ३, ४, ५, ६, ७ तुमसबकी स्तुतिकरता है ८ अ
 व ९ हमारे १० अभियुत सोमवा आत्म प्रतिविश्वमें ११ इच्छामान १२ सबतुम १३
 मिलकर १४ पानकरो — ॥ ९ ॥

प्रगाथः काएवऋषिर्ब्रह्मती छन्दो मरुतो देवता

माचिदन्वद्विशं सतं सर्वायो मारिषयत । इन्द्र
मितस्तोता वृषणां संचो सुते मुहु रुकथा चेशं
सत ॥ १० ॥ — १०

हे (सर्वायः) भक्ताः (अन्यत्) भगवत्स्त्रोत्रादन्यत् (माचित्) मैव
(विशंसत उच्चारयत (मां) (रिषयत्) माहिंसितारो भवत (सुते)
अभिपुते सोमे । आत्मप्रतिविंवेवा (वृषणाम्) धर्मकामार्थमोक्षा
णां वर्षितारं (इन्द्रम्) (इत्) परमेश्वरमेव (संचो) सहस्रदीभूय
(स्तोत) स्तुत (च) (उकथा) उकथानिशस्त्राणि (मुहुः) पुनः पुनः
(शंसत) उच्चारयत ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ हे भक्तो २ भगवत् स्तोत्रसे अन्यको ३, ४ मत उच्चारण करो
५, ६ मत हिंसिता होओ ७ सोमवा आत्मप्रतिविंवेके अभिपुत होने पर ८ धर्म का
मार्थमोक्षके दाता ९, १० परमेश्वर को ही ११ मिल कर १२ स्तुत करो १३ और १४
शस्त्रों को १५ बारम्बार १६ उच्चारण करो - १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सन्नु ज्वालाप्रसाद शर्मा विरचिते साम
वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य प्रथमः खण्डः १

अथ द्वितीयः खण्डः

आदि रसः पुरुहन्मात्रपि वृंहती छन्द इन्द्रो देवता-

न किं कर्मणा न शब्दं न शब्दं न शब्दं न शब्दं न शब्दं । इन्द्र
नयन् विष्व गूर्त्न मृन्वेस मधुषं घृषामो जसां ॥ ११ ॥ ११

(किः) कर्त्ता देहेन्द्रिय मनो बुद्धि समूहः नि० (तम्) जीवात्मानं (को
र्मणा) कर्मफलेन (नं) (नशतं) व्याप्नोति नशत् व्याप्तिकर्मानि०
२, १८ (यः) जीवात्मा (सदावर्द्धम्) सदावर्द्धकं (विष्वगूर्त्नं) सर्वैः

स्तुत्यं (ऋत्वा^६म्) महान्तं (नं^{१०}) च (श्रौजसा^{११}) वलेन (अधृष्टं^{१२}) अ-
 न्यैर्धर्षितुमशक्यं (धृष्टुम्^{१३}) शत्रूणां धर्षकं (इन्द्रम्^{१४}) परमेश्वरं (य-
 जैः^{१५}) (चकार^{१६}) अनुकूलं कृतवान् ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ कर्त्ता देह इन्द्रियमन बुद्धि का समूह २ उस जीवात्मा को
 ३ कर्मफलसे ४, ५ व्याप्त नहीं करता है ६ जिस जीवात्माने ७ सदा दृष्टि देने वा
 ले ८ सबसे स्तुति योग्य ९ महान्त १० और ११ वलसे १२ दूसरेके अधृष्ट १३ श-
 त्रुओंके धर्षक १४ परमेश्वर को १५ यज्ञोंके द्वारा १६ अनुकूल किया ॥ १ ॥

द्वयोर्मेधातिथिर्ऋषिर्हृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यऋते चिदभिऋषिः पुराजनुभ्यः श्वात्वेदः । संधो

तासन्धि मघवा पुरुवसु निष्कर्त्ता विद्रुत पुनः । २-१२

(यैः^१) परमेश्वरोऽन्तर्यामिरूपेणादेहेति षन्सन् (अभिऋषिः^२) अभि-
 ष्लेषणात् सन्धानद्रव्यात् (ऋते^३) (चित्^४) विनापि (जनुभ्यः^५) ग्री-
 वाभ्यः सकाशात् (श्वात्वेदः^६) श्वातर्दनात् श्वारुधिर निस्त्रवणात् (पु-
 रा^७) पूर्वमेव (सन्धिसन्धाना^८) सन्धातव्यस्य संयोजयिता (पुनः^९)
 (विद्रुतं^{१०}) विद्रुतं विच्छिन्नं (निष्कर्त्ता^{११}) संस्कर्त्तास (मघवा^{१२}) लक्ष्मीवान्
 (पुरुवसुः^{१३}) बहुधनः ॥ २ ॥

भाष्यार्थः - १ जो परमेश्वर अन्तर्यामी देह मैठैरता २, ३, ४ सन्धानद्रव्य
 के विनाभी ५ ग्रीवाओंसे ६ श्वारुधिरगिरनेसे पहिले ही ८ संधातव्यसंगोंका
 संयोजक है ९ फिर १० विशेषच्छिन्नसंगका ११ संस्कर्त्ता है वह १२ लक्ष्मीवा-
 न १३ बहुत धनवाला है - ॥ २ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

श्वान्वासहस्रमाशतयुक्त्वा रथे हिरण्ययो ब्रह्म

युजो हरय इन्द्र कोशिनो वहन्तु सोमपीतये २-१३

दृशरोमयुक्तैः (हरिभिः) अश्वैरुपेतस्त्वं (आयोहि) यज्ञं प्रत्यागच्छ (केचित्) (इत्) केचिदपि प्रतिबन्धकाः कार्यविशेषाः (त्वा) (त्वां) (मा) (नियेमुः) गमनप्रतिबन्धं माकुर्वन्तु (ने) यथा (पाशिनः) पाशहस्ताव्याधाः पक्षिणां (धन्वा) (इव) मरुस्थलानीव (तान्) प्रतिबंधकान् (अति) अतिक्रम्य (एहि) आगच्छ ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ हे इन्द्र २ गम्भीरधनिवान् ३ मयूरसमरोमयुक्त ४ घोड़ों की सवारीसे युक्त तुम ५ यज्ञमें आओ ६, ७ कोई प्रतिबंधक कार्यविशेष न तुम्हारी ८, १० रुकावट मत करो ११ जैसे १२ पाशधरव्याधपक्षियों की १३-१४ मरुस्थल की समान १५ उनको १६ अतिक्रमण करके १७ आओ - ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (इन्द्र) यजमान (मन्दैः) अनाहतशब्दवद्भिः (मयूररोमभिः) (ममेधा) (अ+अ+चक्षु) (ऊ, ऋत्रे) (यवाक्) रुरसनेन्द्रियं (र) जाठराग्निः (श्लो, रागभून्यः कामः) (ममनः) तैः सहितैः (हरिभिः) प्राणैः सहितस्त्वं (आयोहि) भृकुटिमंडलं प्रत्यागच्छ (केचित्) (इत्) कामादयः (त्वा) त्वां (मा) (नियेमुः) (ने) यथा (पाशिनः) (धन्वा) मरुस्थलानि (इव) निष्फलान् (तान्) कामादीन् (अति) अतिक्रम्य (एहि) गगनमंडलं प्राप्नुहि ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः

१ हे यजमान २ अनाहतशब्दवाले ३ चक्षु ऋत्र वा क्रसनेन्द्रिय जाठराग्निरागभून्यकाम श्लो रमनसहित ४ प्राणोंके साथ तुम ५ भृकुटिमंडलमें जाओ ६, ७ कोई भी काम आदि न तुमको ८, १० मनरोको ११ जैसे १२ पाशधरव्याध - १३, १४ मरुस्थल की समान निष्फल १५ उन्हे कामआदिको १६ अतिक्रमण करके १७ गगनमंडल को प्राप्त करो ॥ ४ ॥

गौतमवरापि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमङ्ग-प्रशंशं शिषो देवः शोविष्ठमर्त्यम् । न त्वदन्यो
मघवन्नस्ति मर्दिनेन्द्रव्रवीमिते वचः ॥ ५ ॥

हं (शोविष्ठ) बलवत्तम (मघवन्) लक्ष्मीपते (अङ्ग) ब्रह्माणि प्रादु-
र्भूत (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तवैव (वचः) वैदिकमन्त्ररूपं (व्रवीमि)
उच्चारयामि (त्वदन्यः) त्वत्तोऽन्यः काश्चित् (मर्दिता) सुखयिता
(ने) (अस्ति) (देव) (त्वम्) (मर्त्यम्) अहङ्कारास्पदं जीवात्मानं
(प्रशंशिषः) प्रशस्तं करोपि—॥ ५ ॥

भाषार्थः— १ हे क्लवत्तम २ लक्ष्मीपते ३ ब्रह्ममें प्रादुर्भूत ४ परमेश्वर ५
प्रापकेही ६ वैदिकमंत्ररूप वचनको ७ उच्चारण करता हूँ ८ आपसे अन्य को
ई ई सुखदाता ९ नहीं ११ है १२ मायाके खिलोनेंसे खेलने वाले १३ तुम १४
अहंकारास्पद जीवात्माको १५ प्रशस्त करते हो—॥ ५ ॥

नृमेधपुरुमेधावृषी वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमिन्द्रयशोऽस्य जीषी शवसस्पतिः । त्वं वृत्रो

णिहंथं स्य प्रतिन्येक इत्युर्वनुत्तर्षणी घृतिः ६-१६

(इन्द्र) हे अन्तर्यामिन् परमेश्वर (त्वम्) (शवसस्पतिः) बलपति
रात्मारूपः (ऋजीषी) ऋजीपतुल्ये देहे व्याप्तो भूतात्मारूपः (यशः)
मानससूर्यरूपः । आदित्यो यशः प्रा० १४। १। ३२ (असि) (अनु-
त्त) नकेनापि प्रेरितो हैता भावात् (चर्षणी घृतिः) भक्तानां धारक
रुचं (एकः) (दत्) एव (अप्रतीनि) प्रायश्चित्तहीनानि (पुरु) पुरु-
णि वहनि (वृत्रोणि) पापानि (हंसि) —॥ ६ ॥

भाषार्थः— १ हे अन्तर्यामी परमेश्वर २ तुम ३ बलपति आत्मारूप ४ भूता

हे^१(मधुवन्) धनवन्^२(इन्द्र) परमेश्वर^३(स्वर्वाङ्ग) सूर्यरूपस्त्वं^४(याः)
 (भुजः)^५ यानि भोक्तव्यान् यन्नानि (असुरेभ्यः) मेघेभ्यः सकाशात्नि
 (आभरः) आहरः उत्पन्नानि कृतवानसितैः (अस्य) तव स्वरूपस्य-
 (स्तोतारम्) (इत्) एव (वर्द्धय) (ये) (त्वे) त्वदर्थं (वृक्तवर्हिषः) स्ती
 एवर्हिषः (च) तानपि वर्द्धय ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे धनी २ परमेश्वर ३ सूर्यरूपतुमने ४ जिन ५ भोक्तव्य अन्नोको ६ मेघोंके सकाश से ७ उत्पन्न किया है उनके द्वारा ८ तेरे स्वरूपको ९ स्तोताको १० ही ११ बढ़ाओ १२ जो १३ आपके लिये १४ स्तीर्ण कुशा हैं १५ उनको भी बढ़ाओ - ॥ २ ॥ जमदग्नि ऋषिर्वहती छन्दो मित्राद्या देवताः

प्रमित्राय प्रार्यमाणो सच पृथ्वीमृतावसो वरुण्ये ३
 वरुणो छन्दोमयः स्तोत्रं राजसुगयत ३ ॥ २ ३

हे ऋत्विजः (ऋतावसः) यज्ञान्नवतो यजमानस्य (वरुण्ये) यज्ञ-
 गृहे (मित्राय) (अर्यमाणो) (वरुणो) वरुणाय (छन्दोमयः) छन्दोमयं (स-
 चपथ्यम्) सेवाहो वेदोक्तं (वचः) वचनं स्तोत्रं (प्रगायत) (राजसु) यज्ञे
 राजमानेषुतेषु (स्तोत्रम्) (प्र) प्रपठत ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विजो १ यज्ञान्नवान्न यजमानके २ यज्ञ गृहमें ३ मि-
 त्र ४ अर्यमा ५ वरुणके लिये ६ छन्दोमय ७ सेवा योग्य वेदोक्त ८ स्तोत्रको
 ९ गाओ १० यज्ञमें उनके विराजमान होने पर ११ स्तोत्रको १२ पढो ॥ ३

अथाध्यात्मम् - वागाद्यृत्विजः (ऋतावसः) सत्यान्नवतो-
 योगिनः (वरुण्ये) यज्ञगृहे (मित्राय) प्रणाय (अर्यमाणो) मनसे
 (वरुणो) अपानाय (छन्दोमयः) छन्दोमयं (सचपथ्यम्) वेदोक्तं (वचः)
 स्तोत्रं (प्रगायत) (राजसु) योगानुष्ठाने राजमानेषुतेषु (स्तोत्रम्)

१२
(३) प्रपठत ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे वागादिऋत्विजो १ सत्यं च्चवाले योगी के २ यज्ञं पृथु
में ३ प्राण ४ मन ५ श्वोर आपान के लिये ६ छन्दो मय ७ वेदोक्त ८ स्तोत्रको ९
गाओ १० योगानुष्ठान में उनके विराजमान होने पर ११ स्तोत्रको १२ पढो ॥

३ ॥ मेधातिथिऋषिर्दृहती छन्द इन्द्र रुद्रा देवताः
अभित्वा पूर्वपीतये इन्द्र स्तोमोभिरायवे । समीची
नासंस्तभवः समस्वरन्तुद्रो गृणान्त्पूर्वम् ॥ ४ ॥ २४
हे (इन्द्र) परमेश्वर (आयवे) मनुष्याः स्तोतारः (पूर्वपीतये) पूर्व
स्यात्मप्रतिविंबस्य पानाय (स्तोमेभिः) स्तोत्रैः (त्वा) त्वां (पूर्वम्)
आद्यं (समस्वरन्) सम्यग् स्तुवनं सृष्टशब्दे तथा (समीचीनासः)
सङ्गताः (ऋभवः) मेधाविनः (रुद्राः) प्राणाः श० १४। ६। ६। ५ (अ
भिगृणान्त्) अभ्यधुवन् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ स्तोता मनुष्यने ३ आत्मप्रतिविंबके पाना
र्य ४ स्तोत्रों से ५ तुभ ६ आद्यको ७ भले प्रकार स्तुत किया तथा ८ सङ्गत ९
मेधावी १० प्राणों ने ११ स्तुतिकी ॥ ४ ॥

द्वयौर्द्विमेधपुरुमेधा वृषी वृहती छन्द इन्द्र मरुता देवताः

प्रवृद्ध्वाय वृहते मरुता ब्रह्मार्चन । वृत्रं च हनति
वृत्रहा शतं कतुर्वज्राणां शतं पर्वणा ॥ ५ ॥ २५ ॥

हे (मरुतः) प्राणाः श० १४। ६। ६। ५ यद्वा वागाद्युत्विजः नि० ३। १८
(वः) युष्माकं (वृहते) महते (इन्द्राय) परमेश्वराय (ब्रह्म) आत्म
प्रतिविंबरूपान्त्रि० २। ७। २३ (प्रार्चन) प्रार्पयत यस्मात् (वृत्रहा)
पापस्य हन्ता (शतकतुः) अनन्तकर्मा परमेश्वरः (शतपर्वणा)

अनन्तधारेण (वज्रेण) ^{१६}ज्ञान वज्रेण (वृत्रेण) ^{१९}पापं (हन्ति) ^{१२}नाशयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे प्राणों वा वागादिऋत्विजो २ तुम्हारे ३, ४ परमेश्वरके लिये ५ आत्ममतिविंवरूप अन्नको ६ माप्रकराओ ७ पापनाशक ८ अनन्त कर्माँ परमेश्वर ९ अनन्त धारावाले १० ज्ञानवज्रसे ११ पापको १२ नाश करता है ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्.

वृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्ते मम् । येन

ज्योतिरजनयेन् नृता वृधो देवन्देवाय जागृवि ६-२६

हे (मरुतः) वागाद्यत्विजः (इन्द्राय) परमेश्वराय (वृत्रहन्ते मम्) अतिशुभेन पापविनाशकं (वृहन्) साम (गायत) (येन) साम्ना (ऋतावृधः) ऋतस्य यज्ञस्य वर्धकाः प्राणाः (देवाय) परमेश्वराय (देवम्) विद्वांसं ॥ विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (जागृवि) जागरणाशीलं (ज्योतिः) मानससूर्यं (अजनयेन्) संस्कृतम कुर्वन् ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ हे वागाद्यत्विजो २ परमेश्वरके लिये ३ अतिशुभपापविनाशक ४ बृहत्सामको ५ गाओ ६ जिस सामके द्वारा ७ यत्नवृद्धि करने वाले प्राणोंने ८ परमेश्वरके लिये ९ विद्वांसं १० जागरणाशील ११ मानससूर्यका १२ संस्कार किया ॥ ६ ॥

वसिष्ठ ऋषिर्ब्रह्मणी ब्रह्म इन्द्रो देवता.

इन्द्रं क्रतुन् शोभरे पिता पुत्रेभ्यो यथो ॥ शिखो

णो अस्मिन् पुरुहूतयो मनिजीवो ज्योति र्खीम

हि ॥ ७ ॥ २७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्मभ्यम् (क्रतुम्) प्रज्ञानं (शोभरे)

आहूदेहि(नेः) अस्मभ्यं (शिस्त) विद्यां प्रयच्छ (यथा) (पिता)
 (पुत्रेभ्यः) हे पुरुहूत) ब्रह्मभिराहूत परमेश्वर (जीवाः) वयं (यामनि
 योग यज्ञे। यान्ति देवा यस्मिन् सयाप्रो यज्ञः (ज्योतिः) महा पुरुषं
 त्वां (अशी महि) प्राप्नुयामः ॥७॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ हमारे ३ प्रज्ञान को ४ दीजिये ५ हमारे लि
 ये ६ विद्या दीजिये ७ जैसे ८ पिता ९ पुत्रोंके लिये देता है १० हे ब्रह्म से आहूत
 परमेश्वर ११ हम जीव १२ योग यज्ञमें १३ महा पुरुष तुमको १४ प्राप्त करें ॥७॥

रेभक्तपिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

मान इन्द्र परा वृणाक भवानः सधमाद्यो त्वन्न ऊ
 ती त्वमिन्न प्राप्य मान इन्द्र परा वृणाक ॥ ८ ॥ २८

(स्यै) सर्वव्यापिन् हे (इन्द्र) परमेश्वर (नेः) अस्मान् (मा) (परा
 वृणाक) मापरित्याक्षीः। वृजी वर्जने (नेः) अस्माकं (सधमाद्ये)
 सहमादन हेतु भूते यज्ञे (भव) मादुर्भव (इन्द्र) हे परमेश्वर (त्वम्)
 (नेः) अस्माकं (ऊती) रक्षिता (त्वम्) (इत्) एव (नेः) अस्माकं
 (आप्यम्) ज्ञातव्यो बन्धुः (नेः) अस्मान् (मा) (परा वृणाक) मा
 परित्याक्षीः ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः

१ हे सर्वव्यापिन् २ परमेश्वर ३ हमको ४, ५ मतत्यागो ६ हमारे ७ यज्ञमें ८ प्र
 कट हो ९ हे परमेश्वर १० तुम ११ हमारे १२ रक्षक हो १३ तुम १४ ही १५ हमारे
 १६ ज्ञानने योग्य बन्धु हो १७ हमको १८, १९ मतत्यागो— ॥ ८ ॥

मेधातिथिऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

वयं इत्वा सुतो वन्तः प्रापान् वृक्तो वहिषः। पवित्र
 स्य प्रसवो णोषु वृत्रहन् परिस्तोतार आसते। ९-२९

हे (१) (२) (३) (४) (५) (६) (७) (८) (९) (१०) (११) (१२) (१३) (१४) (१५) (१६) (१७) (१८) (१९) (२०) (२१) (२२) (२३) (२४) (२५) (२६) (२७) (२८) (२९) (३०) (३१) (३२) (३३) (३४) (३५) (३६) (३७) (३८) (३९) (४०) (४१) (४२) (४३) (४४) (४५) (४६) (४७) (४८) (४९) (५०) (५१) (५२) (५३) (५४) (५५) (५६) (५७) (५८) (५९) (६०) (६१) (६२) (६३) (६४) (६५) (६६) (६७) (६८) (६९) (७०) (७१) (७२) (७३) (७४) (७५) (७६) (७७) (७८) (७९) (८०) (८१) (८२) (८३) (८४) (८५) (८६) (८७) (८८) (८९) (९०) (९१) (९२) (९३) (९४) (९५) (९६) (९७) (९८) (९९) (१००)

भाषार्थः - १ हे पापनाशक परमेश्वर २ सोमवाग्नात्ममतिविंवकाशभिपव करने वाले ३ स्तीर्णावर्हिवा नाडी वाले ४ स्तोता ५ हम ६ तुमको ७ ही ८ माणके ९ कमलों में १० उपासना करते हैं ११ जैसे १२ जल नदी के भिरना से स्थानों में द्वीपको घेर कर स्थित होते हैं ॥ ९ ॥

भरद्वाज ऋषि रचनी छन्द इन्द्रो देवता-

यादिन्द्रनाहृषीष्वोऽभोजो नृम्याञ्च कृष्टिषु
यद्वापञ्चाक्षितीनाद्युन्नमाभरसत्वाविश्वानि
पौंथस्यो ॥ १० ॥ ३०

हे (इन्द्र) परमेश्वर (नाहृषीषु) मानवीषु । नहृष इति मनुष्यः नि० २।३।६ (कृष्टिषु) प्रजासु (यत्) (भोजः) बलं (च) (नृम्याम्) धनं (आ) आविद्यते (वा) अथवा (पञ्च) (क्षितीनाम्) ब्रह्मचारिण्यहस्थवान्मस्थसन्त्यासिपरमहंसानां ॥ क्षितय इति मनुष्यनामनि० २।३।६ (यत्) (द्युन्नम्) बलं यानि (विश्वानि) सर्वाणि (पौंथस्यो) पौंस्यानि पुरुषार्थसाधनानि चतानि (सत्वा) सर्वदा (आभर) आहर देहि ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ मानवी ३ प्रजाओं में ४ जो ५ बल ६ और

७ धन ८ विद्यमान है ९ अथवा १०, ११ ब्रह्म चर्य गृहस्थवानमस्थ सन्यासी परम-
हंसे का १२ जो १३ बल और जो १४ सब १५ पुरुषार्थ साधन है १६ उन सबको-
१७ दीजिये ॥—॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वाला मसाद शर्मा विरचिते साम
वेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

मेधातिथिचरीषि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

सत्यमित्या वृषेदासि वृषजूतिन्नीविता। वृषाद्यु
ग्रश्रीणिवषे परावति वृषोऽश्वीवति ऋतः ॥१॥ ३१

हे (उग्र) उत्कृष्ट परमेश्वर (सत्यम्) ब्रह्म रूपस्त्वं (इत्या) एवं प्रका
रेण (वृषा) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकः (इत्) एव (असि) (वृषः
जूतिः) वृषे धर्मे जूतिर्वोगो यस्य स धर्मरूपस्त्वं (नेः) अस्माकं (अवि
ता) रक्षिता (वृषा) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकः (हि) (श्रीणिवषे)
अयसे (परावति) महानारायण रूपे (वृषा) (इव) असि (अश्वीवति)
अश्वी अश्वः मानस सूर्यस्तद्वृति विष्णु महेशादिरूपे (वृषा) धर्मा
र्थकाममोक्षाणां वर्षकः (ऋतः) ॥१॥

भाषार्थः - १ हे उत्कृष्ट परमेश्वर २ ब्रह्म रूप तु म ३ इसी मकार से ४ धर्म-
कामार्थमोक्षके दाता ५ ही ई हो ६ धर्मरूप तु म ७ हमारे ८ रक्षक ९ चारों
पदार्थके दाता १० ही ११ सुने जाते हो १२ महानारायण रूपमें १३ चारों पदा-
र्थके दाता १४ ही हो १५ विष्णु महेश आदिरूपमें १६ चारों पदार्थके दाता-
१७ विख्यात हो ॥१॥ रेभचरपि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यच्छ्रीकासि परावति यदश्वीवति वृषहन्। अतस्त्वा

गीभिः^३द्युगदिन्द्र^३कोशिभिः^३सुतावा^३ध्व^३ष्पा^३विवासति^३२
हे(शक्र)^१शत्रुह^३नन्समर्थ^३(वृत्रह^३न्) वृत्रनाशक^३(इन्द्र)^३(यद्)^३
यदा^३(परावति)^३द्वेद्युलोकदेशे^६(असि)^६(यद्)^६यद्वा^६(अर्वावति)^६अ
र्वाचीने^९अन्तरिक्षे^९(अतः)^९अस्मात्स्थानात्^९(सुतावान्)^९अभिषुत-
सोमवान्^{११}यजमानः^{११}(त्वां)^{११}त्वां^{११}(कोशिभिः)^{११}हरिभिरिवस्थिताभिः^{११}
(गीभिः)^{१३}(द्युगत्)^{१३}शीघ्रं^{१४}(आविवासति)^{१४}आत्मीयं^{१५}यत्नं^{१५}प्रति^{१५}आग
मयति॥२॥

भाषार्थः

१ हे शत्रुह नन में समर्थ २ वृत्रनाशक ३ इन्द्र ४ जब ५ स्वर्ग में ६ द्वौ ७ अथ
वा ८ अन्तरिक्ष में द्वौ ९ इस स्थान से १० अभिषुत सोम वाला यजमान ११ तु
मको १२ अश्वतुल्य स्थित १३ वेदवचनों के द्वारा १४ शीघ्र १५ अपने यत्न में
प्राप्त करता है ॥२॥

अथाध्यात्मम्

(हे(शक्र)^१सर्वशक्ति^३मन्(वृत्रह^३न्)पापनाशक^३(इन्द्र)^३परमेष्
र^३(यत्)यस्मात्(परावति)महानारायणरूपे(असि)^६(यत्)य
स्माच्च^९(अर्वावति)ब्रह्माविष्णुमहेशादिरूपे(असि)^९(अतः)अस्मा-
त्कारणात्(सुतावान्)अभिषुतात्मप्रतिविंबोयजमानः
(त्वां)^{११}त्वां^{११}(कोशिभिः)^{११}(कु)ब्रह्मा^{१३}(अ)विष्णुः^{१४}(इ)रुद्रः^{१५}(श)महा
पुरुषः^{१६}तत्संबन्धिभिः^{१६}(गीभिः)^{१६}(द्युगत्)शीघ्रं^{१७}(आविवासति)परि-
चरति॥२॥

भाषार्थः

१ हे सर्वशक्तिमान २ पापनाशक ३ परमेश्वर ४ जिस कारण ५ महानारा-
यण रूप में ६ द्वौ ७ और जिस कारण ८ ब्रह्माविष्णु महेश आदि रूप में द्वौ
९ इसी कारण से १० अभिषुत आत्म प्रतिविंब वाला यजमान ११ तुमको १२
विदेव महापुरुष संबन्धी १३ वचनों के द्वारा १४ शीघ्र १५ सेवा करता है ॥२॥

(युयोजते) योगरथं योजयति तदा (इन्द्रः) परमेश्वरः (हरी) जी-
वेशौ (युयोजते) ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ विज्ञान भूयन्ममत्वास्पदमनुष्य ३ माया
रूपः ४ अन्नको ५ ६ मात्र नही करता है ७ जो ८ विद्वान् ९ चिदात्मा १० मानस
सूर्य है ११ वह १२ योगरथको जोड़ता है तव १३ परमेश्वर १४ जीवेश्वरको १५
एक करता है ॥ ६ ॥

ऋधेधपुरुमेधा वृषी वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

ॐ नो विष्वा सुहव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत। उप-
ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋत्वीषम ७-३७
(नः) अस्माकं (ब्रह्माणि) वेदोक्तानि स्तोत्राणि (विष्वा सु) सर्वासु
(समत्सु) यज्ञक्रियासु (हव्यम्) आवाहनव्यं (इन्द्रम्) परमेश्वरं
(अभूषत) अलङ्कृतहे (वृत्रहन्) पापनाशक (परमज्याः) बलव-
तां शत्रूणां नाशकः। परमान् बलेन प्रकृष्टान् शत्रून् जिनाति हि न-
स्तीति परमज्यास्मादृशस्त्वं (ऋत्वीषम्) स्तुतिभिरभिमुखी करणी
य परमेश्वर (सवनानि) (उप) उपभूषय ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ हमारे २ वेदोक्त स्तोत्र ३ सब ४ यज्ञक्रियाओं में ५ आवाहन
योग्य ६ परमेश्वरको ७ अलंकृत करो ८ हे पापनाशक ९ स्तुतिओं से सन्म-
ख करने योग्य परमेश्वर १० बलवान् शत्रुओं के नाशक तुम ११ सवनोंको
१२ शोभित करो ॥ ७ ॥ वसिष्ठ ऋषि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

न वै दिन्द्रावमवसुत्वपुष्यसि मध्यमे म। सत्रो वि-
ष्वस्य परमस्य राजसिने किमू गोपु वृएवतु ८ ॥ ३८ ॥
हे (इन्द्र) परमेश्वर (अवमम्) अधमं जीवसम्बन्धि (वसु) धनं (तव)

त) तवैव (त्वमे) (मध्यमं) ईश सम्बन्धि धनुं (पुष्यासि) (सत्रा) सत्य
स्वरूपेण (विश्वस्य) जीव समूहस्य (परमस्य) ईश समूहस्योपरि-
(राजसि) ईशिषे (किः) केऽपि (त्वा) त्वां (गोपु) किरण रूपेषु मा-
नसं सूर्येषु (ने) (वृणवते) नवारयन्ति सर्वात्म कत्वात् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जीव सम्बन्धी ३ धन ४ आपका ही है ५ तु-
म ६ मध्यम ईश सम्बन्धी धनको ७ पुष्ट करते हो ८ सत्य स्वरूपसे ९ जीव स-
मूह १० और ईश समूह के ऊपर ११ प्रकाश करते हो १२ कोई भी १३ तुमको
१४ किरण रूप मानस सूर्यो में १५, १६ निवारण नहीं करते है सर्वात्मा होने
से ॥ ८ ॥ मेघातिथिर्मेघातिथिश्चक्रपिर्वहती चन्द्र इन्द्रो देवता-

के यथ के देसि पुरुत्रो चिद्धिते मनः । अलोषियु

ध्रखज कृत पुरन्दर प्रगायत्रो अगासिषुः ६-३९

हे (इन्द्र) परमेश्वर (के) कुत्र लोके (इयथ) गतवानसि (के) (इ-
त) कुत्र वा (असि) इति न (हिं) यस्मात् (ते) तव (मनः) (चित्)
चिदात्मा (पुरत्रो) ब्रह्मविष्णु महेशादीनां देहेषु वर्तते बहुरूपः सर्व
रूपश्चासित्वदन्याभावादित्यर्थः हे (पुरन्दर) कामादीनां पुरां दे-
हानां दारयतः (युष्मे) हे युद्ध कुशल हे (खजकृत) खेमहा आका-
शे जन्मयस्यत इह्ला एण्डं खजंतस्य कर्तृत्वं (अलोषि) आगच्छ (गो-
यत्राः) मन्त्राः (आगासिषुः) त्वां प्रगायन्ति स्तुवन्ति । अलोषीति
गतिकर्मानि ०२। १५ - ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ किस लोकमें ३ गये हो ४, ५ वाकहां ६ होय
हवान नहीं है जिस कारण ७ तेरा ८ मन ९ चिदात्मा १० ब्रह्मविष्णु महेश आ-
दि के देहों में वर्तमान है अर्थात् आपका अन्य न होने से बहुरूप और सर्वरूप हो

१२ हे कामपुर शरीरों के दारक १३ हे युद्ध कुशल १४ हे ब्रह्माण्ड के कर्ता तुम्-
१५ आओ १६ मन्त्र १७ तुमको गाते स्तुत करते है ॥ ६ ॥

कलिऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{३ १ २ ३} वयमनमिदाह्योपीपेमह ^{३ १ २ ३} वज्रिणामानस्मोउ

^{३ १ २ ३} अद्यसवनसुतभरानूनभूषत ^{३ १ २ ३} ऋतु-१० ॥ ४०

(वयम्) यजमानाः (इह) अस्मिन्यज्ञे (एनम्) (वाज्रिणाम्) ज-
नवज्रयुक्तं परमेश्वरं (इत्) एव (आह्यो) अहव्याप्तौ इन्-अहि-
परमात्मानस्य प्रतिविंब आह्यस्तेन (उ) एव (अपीपेम) आप्याय-
याम। प्यायी ओप्यायी दृष्टौ हे वागाद्यत्विजः (अद्य) (सवने) (ते-
स्मै) (उ) एव (सुतम्) अभिपुतात्म प्रतिविंबं (भर) देहि (नूनम्)
(ऋतु) विख्याते परमेश्वरे (आभूषत) १०—॥ ४० ॥

भाषार्थः - १ हम यजमान २ इस यज्ञमें ३ इस ४ ज्ञान वज्र धारी परमेश्व-
रको ५ ही ६ आत्म प्रतिविंबार्पणद्वारा ७ ही चत्वरं ८ हे वागाद्यत्विजो अब
१० सवनमें ११-१२ उसीके लिये १३ अभिपुत आत्म प्रतिविंबको १४ अर्पणक
रे १५ निश्चय १६ विख्यात परमेश्वरमें १७ शोभित होओ ॥ १० ॥ ४०

इति ऋषिभृगुवंशावतंस ऋषिनाथूरामस्तु ज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सामवे-
दीयब्रह्म भाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४ ॥

अथ पञ्चमः खण्डः

पुरुहन्माऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{१ २ ३} योराज्ञाचर्षणीनां ^{३ १ २ ३} यातारथेभिरधिगुः ॥ ^{३ १ २ ३} विंशोसा

^{३ १ २ ३} न्तेरुनापतनानाज्येष्टुयो ^{३ १ २ ३} वृत्रहो गृणो ॥ १ ॥ ४१

(यः) (चर्षणीनां) भक्तानां (राजा) (अधिगुः) अद्यतगमनः अचलः

सन्(रथेभिः) शरीर रूप रथैः(याता) (विष्वा साम्) सर्वासां(घटना
नां) भक्त सेनानां(तरुता) तारकः(यैः)(घृत्रहा) पापस्य हन्ता
तं(ज्येष्ठम्) महापुरुषं(गृणे) स्तौमि ॥१॥

भाषार्थः - १ जो २ भक्तों का ३ राजा ४ परमेश्वर अचल होता ५ शरीर रूप
रथों के द्वारा ६ व्यवहार में चलने वाला है ७ सब ८ भक्त सेनाओं का ९ तारक १०
जो ११ पापनाशक है उस १२ महापुरुष को १३ स्तुत करता हूँ ॥१॥

भर्गश्चरपि वृद्धिती छन्द इन्द्रो देवता

यत इन्द्र भया महतानां अभयं कृधि मघव

जन्धे गिधतवतन ऊतये विद्विषो विमृधो जाहि २-४३

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यतः) यस्मात्संसारान् (भयामहे) (ततः) तस्मा
त्(नः) अस्मभ्यं (अभयम्) (कृधि) कुरु हे (मघवन्) लक्ष्मीपते
(नः) अस्माकं (ऊतये) रक्षणाय (तव) स्वभूतं (तम्) आत्म प्रतिवि
वं (शग्धि) याचस्व (द्विषः) अस्मद्द्वेषन् कामादीन् (विजाहि) (मृधः)
अस्माद्धिसकान् विषयान् (वि) विजाहि ॥२॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जिस संसार मे ३ हम डरते हैं ४ उससे ५ हम
रेलिये ६ अभय ७ करो ८ हे लक्ष्मीपते ९ हमारी १० रक्षा के लिये ११ आपके
धन रूप १२ उस आत्म प्रतिविवको १३ मांगो १४ हमारे द्वेषा काम आदि को
१५ मारो १६ हमारे हिंसक विषयों को १७ मारो ॥२॥

इरिमिठ चरपि वृद्धिती छन्द इन्द्रो देवता

वास्तोषपते ध्रुवा स्थूणां च संत्रं च सौम्यानाम् ॥४३॥

दृप्सः पुराभन्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां च संखा ३

हे (वास्तोषपते) ब्रह्माण्डस्य स्वामिन्त्वं (स्थूणां) सुमेरु रूपः

(ध्रुवा) अचलः (सोम्यानाम्) अभिषुतात्मप्रतिविंबानां भक्तानां
 (अंसत्रम्) कवचं कवचरूपः (द्रप्तेः) द्रवाणां शीलात्मप्रतिविंबरूप
 (शश्वतीनाम्) वह्नीनां नि० ३।१ (पुराम्) बंधकारणालिङ्गदेहानां
 (भेत्ता) विदारयिता (इन्द्रः) परमेश्वरः (मुनीनाम्) महर्षीणां यो
 गिनां भक्तानां (सखा) असि ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे ब्रह्माण्ड के स्वामी तुम २ सुमेरु रूप ३ अचल ४ अभिषु
 त आत्म प्रतिविंब रूप भक्तों के ५ कवच रूप ६ द्रवाण शील आत्म प्रतिविंब रू
 प ७ बहुत ८ बंध कारण लिंग शरीरों के ९ चीरने वाले १० परमेश्वर ११ मह
 र्षी योगी भक्तों के १२ सख हौ - ॥ ३ ॥

जमदग्निर्ऋषिर्वह्नी छन्दसूर्यो देवता

वामहो ॐ असि सूर्य वडो दित्य महो ॐ असि मह
 स्ते सतो महिमा पानि ए मे मन्हा देव महो ॐ असि ४-४४
 हे (सूर्य) सर्वभैरुक परमेश्वरत्वं (महान्) महा पुरुषः (असि) इति
 (वट) सत्यं हे (आदित्य) सूर्यरूप परमेश्वरत्वं (महान्) (असि)
 ब्रह्माण्डे व्यापकत्वात् (वट) इति सत्यं (महो) महतः (सतः)
 (ते) तव (महिमा) महत्वं (पानि ए मे) पनस्यते स्तोत्रभिः स्तुयते
 हे (देव) माया क्रीडन कैः क्रीडन शील परमेश्वरत्वं (मन्हा)
 महत्वेन (महान्) (असि) परात्परत्वात् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वभैरुक परमेश्वर तुम २ महा पुरुष ३ हो ४ यह सत्य
 है ५ हे सूर्य रूप परमेश्वर ६ महान ७ हो ब्रह्माण्ड में व्यापक होने से ८ यह
 सत्य है ९ १० ११ तुम महा पुरुष का १२ महत्व १३ स्तोत्रों से स्तुति किया
 जाना है १४ हे माया के खिलों नो से क्रीडन शील परमेश्वर तुम १५ महत्व से

१६ महान् १७ हौ परात्पर होनेसे ॥ ४ ॥

देवातिथिः ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

अश्वीरथी सुरूप इन्द्रो मां शं इतिन्द्रते सरवा ॥

श्वान् भाजा वयसा सचते सदा चन्द्रयाति स
भासुप ॥ ४ ॥ ४५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तव (सरवा) भक्तः (अश्वी) अश्वैर्युक्तः
(रथी) रथवान् (सुरूपः) शोभनरूपः (इत्) एव भवति तथा (गो
मान्) गोभिर्युक्तः (इत्) एव भवति अपि च (श्वान् भाजा) धन
संयुक्तेन । श्वान् मिति धननाम नि० २।१० (वयसा) अन्नेन नि० २।७
(सचते) समवैति सङ्गच्छते (चन्द्रैः) सर्वेषां माल्हादकैः कान्तिभिः
(सभाम्) जनसंसदं (उपयाति) उपगच्छति ॥ ५ ॥ ४५

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तेरा ३ भक्त ४ घोड़ों से युक्त ५ रथवान् ६ शु-
भरूप ७ ही होता है ८ गौशों से युक्त ९ ही होता है और १० धन संयुक्त ११ अ-
न्नसे १२ संयोग को पाता है १३ सर्वाल्हादक कान्तिशों के साथ १४ सभा को
१५ जाना है - ॥ ५ ॥ ४५ पुरुहन्मा ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यथा व इन्द्रते शतं शतं भूमि रूतस्युः । नत्वा

वज्रिन्सहस्रं सूर्याः अनुजानामुष्टरादसी ॥ ६ ॥ ४६

हे (वज्रिन्) ज्ञानवज्रधर (इन्द्र) परमेश्वर (यद्) यदि (ते) (द्यावः)
द्युलोकाः (शतम्) वहवः (स्युः) (उत्) (भूमिः) भूम्यः (शतम्) (न)
च (सूर्याः) (सहस्रम्) स्युः तथापि (रोदसी) द्यावा एधिव्यौ (जानम्)
महा पुरुष रूपेण यादुर्भूतं (त्वा) त्वां (न) (अन्वष्ट) नव्याप्नुवन्ति
सर्वेभ्योऽधिको सीत्यर्थः यथापादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या

मृतं दिवीत यजु० ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवज्रधारी २ परमेश्वर ३ यदि ४ आपका ५ स्वर्गलो
क ६ शतगुण ७ होवै ८ और ९ भौमदिव्यभूमि १० शतगुण होवें ११ और १२
सूर्य १३ सहस्र होवै तौ भी १४ एधि वी स्वर्ग १५, १६ तुभमहा पुरुष रूपसे मा
दुर्भूतको १७, १८ व्याप्त नही करै - ॥ ६ ॥

देवातिथि ऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{१ २ ३ ३ ३ ३ ३ क ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
यादिन्द्र प्रागपागुदुःन्यग्वाह्येसे नृभिः सिमा
^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
पुरू नृषूतोऽस्यानवांसि प्रशद्ध ऊर्वशे ॥ ७ ॥ ४७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यद) यस्मात् (प्राक्) मान्यां (अपाक्) प्रती
च्यां (उदक्) उदीच्यां (वा) यद्वा (न्यक्) नीचायां दिशि (नृभिः)
प्रवृत्तपुरुषैः (सिमा) सर्वस्मिन्यज्ञे (पुरू) बहुलं (ह्येसे) आह
यसेतस्मात् हे (प्रशद्ध) प्रकर्षेण शर्द्धयितः कामादीनामभिभवि
तः (अस्य) आत्मप्रतिविंवस्य (ऊर्वशे) उरुवद्, अशभोजने वि
राड् रूपान्नं भोजनं यस्य तस्मै निवृत्त मार्गस्थे (आनवे) अनुर्देह
स्तत्र स्यात्मानि (नृषूतः) नृभिर्नैत्तृभिर्वागाद्यत्विग्भिः प्रेरितः (वासि)

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ पूर्व ४ पश्चिम ५ उनर ६ वा
७ नीची दिशामें ८ प्रवृत्त पुरुषों के द्वारा ९ सब यज्ञोंमें १० बहुधा ११ आह्वान
किये जाते हैं उस कारण १२ हे काम आदिके अभिभविता १३ इस आत्मप्रति
विवके १४ विराट् रूपान्न भक्षी १५ आत्मामे १६ वाक् आदि ऋत्विजों से प्रेरि
त १७ हो - ॥ ७ ॥ वासिष्ठ ऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता

^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
कुस्तमिन्द्रत्वावसवाभत्यादधर्षति। अद्धो हि
^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
नेमघवान्पायेदिवि वाजी वाजं ३ सिषासति। ८। ४८

हे (वसो) सर्वव्यापिन् (इन्द्र) परमेश्वर (तमे) यजुमानं (कोः) (म-
 र्त्यः) मनुष्यः शत्रुः (आधिपति) नकोपियः (मघवान्) मखवान्।
 श० १४।१।१।१३ (वाजी) मानससूर्यः श० ६।३।१।२८ (अद्धाहि-
 ते) अद्धया स्थापिते योगयज्ञे (पार्ये) पारेभवे (दिवि) भृकुल्यां
 (वाजम्) आत्ममतिविंवरूपान्नं (त्वा) त्वां (सिषासति) दानुमि-
 च्छति ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ हे सर्वव्यापिन् २ परमेश्वर ३ उस मानससूर्यको ४ कोन ५ शत्रु ६ निरस्त
 तकरना है अर्थात् कोई नहीं जो ७ यज्ञवान ८ मानससूर्य ९ अद्धासे स्थापि-
 तयोगयज्ञमें १०, ११ भृकुटिमंडलके बीच १२ आत्ममतिविंवरूपअन्न १३
 तुम्हको १४ देना चाहता है—॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषिर्दृहती छन्द इन्द्राग्नीदेवते-

इन्द्राग्नी अथादिय पूर्वा गात्पद्वतीभ्यः । हित्वाशि

राजिह्वयारारपञ्च रचि थं शतपदान्यकमीत् ८-४६

हे (इन्द्राग्नी) जीवेशो । इन्द्राग्नीवैसर्वदेवाः श० ६।१।२।२८ (इय-
 म्) (अपात्) पादरहिताः चला महावाक् (पद्वतिभ्यः) पादयुक्ता
 भ्यश्चलाभ्यः (सुपाद्यः) वाग्भ्यः (पूर्वा) मुख्य्यु (आगात्) प्रादु-
 र्भूता (शिरः) मानससूर्य श० ६।३।१।२८ (हित्वा) त्यक्तातेन प्रादु-
 र्भूत्वा (जिह्वया) (रारपत्) भृशं शब्दं कुर्वती (चरते) उपाधिभक्त-
 यन्ती (त्रिंशत्) (पदानि) तत्वानि २४ शरीराणि ३ अवस्थाः ३ (न्य-
 क्मीत्) अतिक्रामति सोपासनीयेत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे जीव ईश्वरो २ यह ३ अचला महावाक् ४ पादयुक्त-
 चल ५ वाक्योंसे ६ मुख्य ७ प्रकट हुई ८ मानससूर्यको ९ त्याग कर अर्थात्

उससे प्रकट होकर १० जिह्वासे ११ शब्द करती १२ और उपाधिको भक्षण करती १३, १४ चौबीस तन्वतीन शरीरतीन अवस्था इन तीसों को १५ अतिक्रमण करती है वही उपासना योग्य है—॥६॥

वाल्खिल्या ऋषयो ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रनेदीय एदिहि मितमेधाभिरुतिभिः। आश

न्तमशन्तमाभिरभिष्टिभिर्गुस्वापेस्वापिभिः १०-५०

हे (शन्तम) महाऽऽनन्दस्वरूप (स्वापे) अस्माकं वंधुभूत (इन्द्र) परमेश्वर (शन्तमाभिः) महाऽऽनन्दस्वरूपाभिः (स्वापिभिः) वंधुभूताभिः (अभिष्टिभिः) अभामायातस्या इष्टिभिः (नेदीयः) अत्यंत समीपस्थत्वं (मितमेधाभिः) मेधयामिताभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः सह (एदिहि) आगच्छ (आ) एदिहि (आ) एदिहि आगच्छ ॥ १० ॥

भाष्यः - १ हे महाज्ञानन्दस्वरूप २ हमारे वंधुभूत ३ परमेश्वर ४ महाज्ञानन्दस्वरूप ५ वंधुभूत ६ माया इष्टिओं के द्वारा ७ अत्यन्त समीपस्थ तु म८ बुद्धिनिर्मित ९ रक्षाओं के साथ १० आओ ११ आओ १२ आओ—॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य पञ्चमः खण्डः ५ ॥

अथ षष्ठः खण्डः

नृमेधऋषिर्ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता

इत ऊतीवो अजरं प्रहेतारं मप्रहितम्। आभुञ्जे

नारं थं हानारं थं रथीतं मम तूत्तन्तु यिया वधं मा ११ १५

हे भक्तजनाः (अजरम्) महापुरुषरूपेण जुरारहितं (प्रहेतारम्) ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपेण देवशत्रूणां मेरकं (अप्रहितं) नृसिंहबुधरूपा

भ्यांकेनाप्यप्रेषितं (आशुम्) वराह रूपेण समन्तात्शूशब्दस्य-
कर्त्तारं (अती) ऊत्यालील यैवावतारेषु (जेतारम्) असुराणां जे-
तारं (वः) (होतारं) अग्नि रूपेण युष्माकं होतारं (रथीतमम्) राम-
रूपेण रथिनां ज्ञेष्ठं (अतूर्त्त) अन्तर्यामि रूपेण केनाप्यहिंसितं तु-
ग्राह्यं (११) कूर्ममत्स्य रूपाभ्यामुदके वर्धमानं परमेश्वरं (इतः) प्रा-
प्तुत ॥ १ ॥

भाषार्थः

हे भक्तजनो १ महापुरुष रूपसे जगत् रहित २ ब्रह्मविष्णु महेश रूपसे शत्रुओं
के भेदके ३ नृसिंहबुधरूपसे किसीसे भी न भेजे ४ वाराह रूपसे सब ओर भूश-
ब्द करने वाले ५ अवतारों में लीलाओं से ही ६ असुरों के जेता ७, ८ अग्नि रूपसे
तुम्हारे होना ९ राम रूपसे रथियों में ज्ञेष्ठ १० अन्तर्यामी रूपमें सबके अहिंसित
११ कूर्ममत्स्य रूपमें जलमें वर्द्धमान परमेश्वर को १२ प्राप्त करो - ॥ १ ॥

वसिष्ठ उवाच -

माधुत्वो वाघतश्च नारश्च स्मन्निरीरमन् । आरा-
त्तोद्वासधमादन्न आगही हवो सन्नुपश्रुधि ॥ २ ॥

हे परमेश्वर (सुवाघतः) मेधाविनो वागाद्यत्विजः (चने) अपित्वा-
त्वां (अस्मत्) अस्मत्तः (आर) दूर (मौ) मैव (निरीरमत्) निनरं मा-
रमयन्तु (आरात्ताद्वा) योगात्पूर्वदूरेऽपि वर्त्तमानः (नः) अस्मदी-
यं (सधमादं) सह माद्यन्ति यत्र स योग यत्तस्तं प्रति (आगहि)
आगच्छ (वा) अथवा (इह) जीवात्मानि (सन्) अन्तर्यामि रूपे-
ण विद्यमानः सन् (उपश्रुधि) अस्मदीयं स्तोत्रमुपश्रुणु ॥ २ ॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ मेधावी वाक् आदि उच्चत्विज २ भी ३ तुमको ४
हमसे ५ दूर ६ मत ७ रमाओ ८ योगसे पूर्वदूर वर्त्तमान भी ९ हमारे १० यज्ञमें ११

आप्सो १२ अथवा १३ इस जीवात्मा में १४ अन्नर्यामीरूपसे विद्यमान होते १५
हमारे स्तोत्र को सुनो ॥ २ ॥

वसिष्ठ ऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

^३ सुनोत^१ सोम^२ पावने^३ सोम^४ सिन्द्रो^५ य^६ वज्रिणो^७ । पंचता

^८ पक्ती^९ रवसे^{१०} कृणु^{११} ध्वामिन्^{१२} एण^{१३} न्नि^{१४} त् प्रणते^{१५} मयः ॥ ३-५३

हे मदीयाः पुरुषाः (वज्रिणो) वज्रवते (सोमपात्रे) सोमस्य पात्रे-
(इन्द्राय) (सोमम्) (सुनोते) अभिषुणुत (अवसे) इन्द्रन्तर्पयि-
तुं (पक्तीः) पक्त्व्यान्पुरोडाशादीन् (आपचत) (कृणुध्वम्) (इत्)
इन्द्रप्रियकराणिकर्माणि च कुरुतैवसः (मयः) सुखं (एणान्नि)
यजमानाय प्रयच्छन्नेव (एणते) हवींषीति शेषः ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे मेरे पुरुषो १ वज्रधारी २ सोमपाता ३ इन्द्रके लिये ४
सोमको ५ अभिषवन करो ६ इन्द्रके तर्पणको ७ पकाने योग्य पुरोडाश-
आदिको ८ पकाओ ९, १० इन्द्रप्रियकारक कर्मां कोही करो ११ वह इन्द्र
सुखको १२, १३ यजमानको देनाही १४ हविषोंको भक्षण करता है ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - हे भक्तजनाः (वज्रिणो) वज्रवते (सोमपात्रे)
आत्मप्रतिविंवस्य पात्रे (इन्द्राय) परमेश्वराय (सोमम्) आत्म-
प्रतिविंव (सुनोते) अभिषुणुत (अवसे) तस्य तर्पयितुं (पक्तीः) प-
क्त्व्यानीन्द्रियाणि (आपचत) (कृणुध्वम्) (इत्) योग क्रियाः
कुरुतैवसः (मयः) मोक्षानन्दं (एणान्नि) (इत्) प्रयच्छन्नेव (एण-
ते) स्वात्मानं प्रयच्छति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे भक्तजनो १ ज्ञानवज्रधारी २ आत्मप्रतिविंवके पाता ३ पर-
मेश्वरके लिये ४ आत्मप्रतिविंवको ५ अभिषवन करो ६ उसका तर्पण करने-

को७ पकाने योग्य इन्द्रियों को ८ पकाओ ९,१० योगक्रियाओं कोही करो ११ वह मोक्षानन्दको १२,१३ देताही १४ अपनेआत्मा को देताहै ॥ ३ ॥

भरद्वाजऋषिर्बृहणी छन्द इन्द्रो देवता-

यः सत्राहो विचर्षाणिरिन्द्रन्तं ह्रमहे वयम् । स
हस्रमन्योतुविन्दमण सत्पते भवो समत्सुनो वृ-
धे ॥ ४ ॥ ५४

(यः) (सत्राहो) सत्रेण योगयत्नेन मायोपाधीनां हन्ता (विचर्षाणि) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टा (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वयम्) (ह्रमहे) आह्वयामः हे (सहस्रमन्यो) सहस्रायनन्ता मन्यवोऽहङ्कारास्पदा आत्मप्रतिविंवा यस्मिन् ससहस्रमन्युस्तत्सन्वोधनं (तुविन्दमण) बहुधनवद्भवत्वा (सत्पते) सतां पालयितः (अ) सर्वव्यापिन् (समत्सु) कामसंग्रामेषु (नः) अस्माकं (वृधे) समष्टिभावाय (भव) प्रादुर्भव ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः - १ जो २ योगयत्नद्वारा माया की उपाधियों का नाशक ३ सर्वद्रष्टा है ४ उस ५ परमेश्वर को ६ ह्रम ७ आह्वान करते हैं ८ हे आनन्तात्मप्रतिविंवाले ९ बहुधनीवां बहुवली १० सत्पुरुषों के पालक ११ सर्वव्यापिन् परमेश्वर १२ कामसंग्रामों में १३ हमारे १४ समष्टिभावके लिये १५ प्रकट हूँजिये ॥ ४ ॥

परुच्छेपऋषिर्बृहणी छन्दो नरनारायणो दे०

शचीभिन्नीः शचीवसू दिवान्कान्दिशस्यतम् ।
मावां रानिरुपदसत् कदाचनास्मद्वातिः क
दाचने ॥ ५ ॥ २५

हे (शचीवसू) शचीसृष्टिकर्मवधनं ययोस्तौ नरनारायणौ युवां-

(शचीभिः) अस्मदीयैः कर्मभिर्यागादिभिर्निमित्तभूतैः (दिवान्क्तम
 अहनिरात्रौ च (नः) अस्मभ्यं (दिशस्यतं) अभिमतं दत्तं दाशतिदान
 कर्मानि० ३।२० (वां) युवयोः (रातिः) दानं (कदाचन) कदाचिदापि
 (मां) (उपदसत्) मोपस्तीणां भवेत् (अस्मद्) अस्माकमपि (रातिः)
 दानं हविरादिप्रदानं (च) (कदा) (न) नोपदसत् । अहमपि (सर्व
 दायुष्मानुद्दिश्य दद्याम् । युवामपि मदाभिमतं सर्वदा दत्तमित्यर्थः ५

भाष्यार्थः - १ हे स्मिन् कर्त्तान्नारायणो २ हमारे यज्ञादिके निमित्त
 ३ दिनरात्रि ४ हमारे लिये ५ अभिमत दीजिये ६ तुम्हारा ७ दान ८ कभी भी ९,
 १० उपक्षयको मत पाओ ११ हमारा १२ दान १३ भी १४ कभी १५ उपक्षय-
 को मत पाओ — ॥ ५ ॥ वामदेव ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

**यदा कदाचमीदृषे स्तोता जरते मर्त्यः । श्रादि
 वन्दे त वरुणां विषा गिरा धर्तारं विव्रतानाम् ६ ॥ ५६ ॥**
 (यदा कदा) (स्तोता) (विषा) वाक्नि० (मीदृषे) धर्म कामार्थ मो
 क्षैः सेक्ते परमेश्वराय (जरते) स्तूयात् (श्रादित्) अनन्तरमेव त-
 स्मिन्काले (मर्त्यः) भूतात्मा (च) अपि (गिरा) (विव्रतानाम्) वि
 विधकमाणा (धर्तारम्) (वरुणाम्) एकाएव समुद्रस्ये शंमहा
 पुरुषं (वन्देत्) नमस्कुर्वीत् नमस्कार भूत्यास्तुतिरनुचितेत्यर्थः ६

भाष्यार्थः - १ जब कभी २ स्तोता ३ वाक् ४ चारों पदार्थ से सेक्ता परमेश्वर
 के लिये ५ स्तुतिकरै ६ उसी समय ७ भूतात्मा ८ वाक्द्वारा ९ बहु कर्माजीवों के-
 १० धारक ११ एकाएव समुद्र के स्वामी महापुरुष को १२ नमस्कार करै अर्थात्
 नमस्कार भूत्यास्तुति अनुचित है ॥ ६ ॥

मेध्यातिथि ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

पाहिगाश्नन्धसोमदइन्द्रोयमेध्यातिये। यः

सामिश्लोहयायोहिरण्ययइन्द्रोवज्रीहिरण्ययः ७-५९

(हेऽ) सर्वव्यापिन (अतिथे) (इन्द्र) परमेश्वर (अयम्) सोमआत्मप्रतिविंबोवात्स्य (अन्धसः) सोमस्यात्मप्रतिविंबस्यवा (मदे) (एधि) एधवृद्धौ (गाः) इन्द्रियाणि (पाहि) विषयेभ्योरस्य (यः) (हिरण्ययः) ज्योतिर्मयस्त्वं (हयाः) जीवेशयोः (सामिश्लः) समिञ्जयिता (यः) (वज्री) ज्ञानवज्रयुक्तः (इन्द्रः) ईश्वरः (हिरण्ययः) ज्योतिर्मयः ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन २ अतिथिरूप ३ परमेश्वर ४ यह सोम वा आत्मप्रतिविंब है उस ५ सोम वा आत्मप्रतिविंबके ६ मदमें ७ इन्द्रियाणि ८ इन्द्रियोंको ९ विषयोंसे रक्षा करो १० जो ११ ज्योतिस्वरूपतुम १२ जीव ईश्वरको १३ संयोग करने वाले हो १४ जो १५ ज्ञानवज्रधोश्वर १६, १७ ज्योतिर्मय है - ७ ॥

भर्गवृषिर्हृती छन्द इन्द्रो देवता -

उभयं श्रृणु वचनं इन्द्रो अवीगिद वचः । सत्रा

च्यो मघवात्सोमपीतयो धिया शविष्ठ आगमत् ८-५८

(इन्द्रः) परमेश्वरः (इदम्) (उभयम्) आधिदैवाध्यात्मविषयं (वचः) वचनं (अवीगि) अस्मदाभिमुखं (श्रृणुवत्) श्रृणोतु (च) (मघवान्) धनवान् लक्ष्मीपतिः (शविष्ठः) अतिशयेन बलवान् परमेश्वरः (सत्राच्या) अस्माकं यज्ञं पूजयन्त्या (धिया) बुद्ध्या (सोमपीतये) सोमस्यात्मप्रतिविंबस्य वापानाय (आगमत्) आगच्छतु ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ इस ३ आधिदैव अध्यात्मविषयक ४ वचनको ५ हमारे सन्मुख

ख६ सुनो७ शौर८ धनवान् लक्ष्मीपति९ अतिशय१० वलवान् परमेश्वर११ इमा
रेयज्ञको सराहती ११ बुद्धि के साथ १२ सोमवा आत्मप्रतिविंबके पानार्थ १३

आशो ॥ ८ ॥ द्वयोर्मेधातिथिमेध्यातिथीऋषीरुहनीछन्दइन्द्रोदे०

^{३ २ ३ १ ३ ३ १ ३ ३ १ ३ ३ १ ३}
महेचनत्वोद्विवः पराशुल्काय दीयसे । नैसहस्रौ

^{३ १ २ ३ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ ३ १ २}
युनायुताय वज्रिवानशताय शतामघ ॥ ८ ॥ ५८

हे (अद्विवः) ज्ञानवज्रयुक्त (शतामघ) बहुधन (वज्रिवः) विज्ञान
वज्रधर परमेश्वरत्वं (महे) योगयज्ञे भक्ति यज्ञे वा (पराशुल्का
य) पराप्रकृतिरूपशुल्काय (न) (दीयसे) (ननु) (सहस्राय)
सहस्ररतीति सहस्रः प्रतिविंबस्तस्मै । सुसरणे (न) (अयुताय)
ब्रह्मण्यसंयुक्ताः अपरातद्रूपशुल्काय (न) (शताय) वहु रूपः
संसारस्तस्मै संसाररूपशुल्काय नदीयसे त्वानपरित्यजामि-
किन्तु मोक्षलाभाय बहुभिर्हविर्भिर्परिचरामीत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवज्रयुक्त २ बहुधनी ३ विज्ञानवज्रधर परमेश्वर तुम
४ योगयज्ञे वा भक्ति यज्ञे ५ पराप्रकृतिरूपशुल्क के लिये ६ नदी ७ दिये जा
तेहो ८ न ९ प्रतिविंबके लिये १० न ११ अपरारूपशुल्क के लिये १२ न १३
संसाररूपशुल्क के लिये दिये जातेहो अर्थात् किसीके लिये तुमको नहीं
त्यागताहं किन्तु मोक्ष के लिये बहुविधहविर्भोंसे सेवा करताहूं यहअभि
प्रायहै ॥ ८ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

^{१ ३ ३ १ ३ ३ १ ३ ३ १ ३ ३ १ ३}
वस्यो थं इन्द्रासिमेपितुरुतं भ्रातुरभुञ्जतः माता

^{३ १ २ ३ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ ३ १ २}
चमे छदयथः समावसो वसुत्वनाय राधसे । १० - ६०

(वसो) हे यज्ञपुरुष (इन्द्र) महापुरुषत्वं (मे) मदीयात् (पितुः)
(उते) अपिच (अभुञ्जतः) अपालयितः (भ्रातुः) आधिक स्नेह-

वान्। वसस्नेहे (आसु) (च) (समा) महालक्ष्मी (मे) मम (मा)
ता) युवाम् (वसुत्वनाय) व्यापनाय (राधसे) योगधनाय च
उभयोर्लाभाय (द्वययः) मां पूजितं कुरुयः। द्वययति र्चति
कर्मानि० ३। १४—॥ १०॥

भाषार्थः - १ हे यज्ञपुरुष २ महापुरुष तुम ३ मेरे ४ पिता से ५ और ६
पालक ७ धाता से ८ अधिक स्नेहवान् ९ हौं १० और ११ महालक्ष्मी १२ मेरी
१३ माता है तुम दोनों १४ व्यापन १५ और योगधनके लाभार्थ १६ मुझको
पूजित करने हौं—॥ १०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनु ज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सा-
मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य षष्ठः खण्डः ६

इति तृतीयः प्रपाठकः

अथ सप्तमः खण्डः। अथ चतुर्थः प्रपाठकः

वसिष्ठ उवाच। इन्द्रो देवता-

इमे इन्द्रोय सुन्विरे सोमो सो दध्या शिरः। तान्

आमदाय वज्रहस्तपीतये हरिभ्यां याह्यो कश्चात् १५

हे (वज्रहस्त) इन्द्र (इमे) (दध्याशिरः) दधिभिज्जिताः (सोमासः)

सोमाः (इन्द्रोय) तुभ्यं (सुन्विरे) सुतावभूवुः (मदाय) मदार्य-

(तान्) (पीतये) पानाय (हरिभ्याम्) अश्वभ्यां (आयाहि) आ-

गच्छ (ओके) यज्ञसदने (आ) आयाहि ॥ १॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ ये ३ दधिभिज्जित ४ सोम ५ तुम इन्द्रके लिये ६

अभिषुत हुए ७ मदके लिये ८ उनके प्रानार्थ ९ हरिनामक अश्वोंकी सवा

रीसे ११ आओ १२ यज्ञशालामें १३ विराजमान हो—॥ १॥

अथाध्यात्मम् - हे (क्ञ्रहस्त) ज्ञानक्ञ्रधरं परमेश्वर (इमे) (दध्याशिरः) निरुद्धमाणमिञ्जिताः पयः प्राणाः श० १२।८।१२० (सोमासः) इन्द्रियमनो बुद्ध्यात्मप्रतिविंवाः (इन्द्रायै) परमेश्वराय तृभ्यं (सुन्विरे) सुनावभूवुः (मदाय) (तान्) (पीतये) पानाय (हरिभ्याम्) नरनारायणरूपाभ्यां (आयोहि) आगच्छ (शोके) योगयज्ञसदने भृकुटिमंडले (शो) आयाहि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानक्ञ्रधारी परमेश्वर २ ये ३ निरुद्धमाणमिञ्जित ४ इन्द्रियमनबुद्धि आत्मप्रतिविंवा ५ तृभुक् परमेश्वरकेलिये ६ अभिषुतद्वा ७ मृदकेलिये ८ उनके पानार्थ ९ नरनारायणरूपसे १० आयो ११ योगयज्ञशालाभृकुटिमंडलमे १२ वैरौ - ॥ २ ॥

वामदेवक्ञ्रपि वृहती छन्द इन्द्रो देवता-

इम इन्द्रमदायते सोमोश्चिकित्वा किंथनेः । मे

धोपपान उपनो गिरः शृणु रास्वस्तोत्राय गिर्विणाः २-६२

हे (गिर्विणाः) गीर्भिर्वननीय (इन्द्रे) इन्द्रपरमेश्वरवा (इमे) (उकिथनः) स्तोत्रयुक्ताः प्राणयुक्तावा श० १४।८।१४।१ (सोमाः) सोमाः । इन्द्रियात्मप्रतिविंवावा (ते) तव (मदाय) (चिकित्वा) ज्ञायन्ते कितज्ञाने । कर्मणि लिट् । इर्योरे इतिरे - इत्यादेशः (मधोः) सोमस्यात्मप्रतिविंवास्यवा (पिपानः) पानं कुर्वाणस्त्वं (नेः) अस्माकं (गिरः) स्तोत्ररूपावाचः (उपशृणु) सम्यक् शृणु (स्तोत्राय) स्तोत्रकर्त्रे मह्यं (रास्व) अभीष्टं स्वात्मानं वादेहि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे वेदवचनोंसे संभजनीय २ इन्द्रवा परमेश्वर ३ ये ४ स्तोत्रयुक्तवा प्राणयुक्त ५ सोमवा इन्द्रियात्मप्रतिविंवा ६ तेरे ७ मृदकेलिये ८

जानेजाते हैं- सोमवा आत्ममतिविंश को १० पान करते तुम ११ हमारे १२ स्तोत्र रूप बंचनों को १३ सुनो १४ मुझ स्तोत्र कर्ताके लिये १५ अभीष्ट वाश्रपने आत्माको दो ॥२॥ मेधातिथि मेध्यातिथी ऋधी रहती छन्द इन्द्रो देवता

एके विश्वामित्र इत्याहः

आत्वा ३ घसर्वदुघां ४ इवे गायत्र वेपसम् । इन्द्र

धेनुं ५ सुदुच्चा मन्यामिष मुरुधरां मरुतम् ॥३-६३

(अथ) (अरुक्तम्) आत्म नालङ्कृतं (दुषम्) विराड् रूपान्न । अन्नं वै विराट् श० १२।२। ४। ५ तथा (सर्वदुघाम्) (ऋ) निवृत्तिः सर्वनिवृत्तिदोग्धी (सुदुघाम्) सुखेन दोग्धुं शक्त्वा (उरुधारां) वज्रधारां (अन्याम्) प्राकृतधेनोरन्यां (धेनुम्) महावाचं । वाचमेव तद्देवा धेनुमकुर्वत श० १।२। १७ तथा (गायत्रवेपसम्) गायत्रेण साम्ना गतिमन्तं । वेप- कम्पे (इन्द्रम्) परमेश्वरं (आह्वये) आह्वये ३

भाषार्थः - १ अथ २ आत्मासे अलंकृत ३ विराटरूप अन्नको तथा ४ सर्व निवृत्तिदोग्धी ५ सुखसे दोहने योग्य ६ वज्रधारा ७ प्राकृतधेनुसे अन्य ८ महा वागुपगौको ९ तथा गायत्र सामद्वारा गतिमान १० परमेश्वरको ११ में आह्वान करता हं ॥३॥ नोधाऋषिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

नत्वा १ वहन्तो २ अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः । यच्छि

क्षसि स्तुवते ३ मावते ४ वसुन किष्टदामिना तिते ५-६४

हे (इन्द्र) श्रीरूपारूप परमेश्वर (वहन्तः) महान्तः (वीडवः) दृढाः (अद्रयः) पर्वताः (त्वा) त्वां (ने) (वरन्ते) ब्राह्मणा पुत्रानयनाय महा पुरुषलोके गन्तारं त्वाननिवारयन्ति (स्तुवते) स्तोत्रं कुर्वते (मावते) (मा) मेधा- मेधावते ब्राह्मणाय (यत्) (वसु) पुत्रधनं (क्षिसि)

ददासिनि० ३।२० (ते) तव (तत्) कर्म (किः) कश्चिन् (न) (आमि
 नाति) नहिनस्ति सर्वेश्वरत्वा^{त्वा}मीजृहिं सायां मीनातेर्निगमे (७।३

।३१) इतिह्रस्वः ॥४॥

भाषार्थः - १ हे श्री कृष्णारूपपरमेश्वर २ वड़े ३ दृढ ४ पर्वत ५ तुमको ई
 नहीं ७ रोकते हैं अर्थात् ब्राह्मणके पुत्रत्वाने को महापुरुषलोकमें जाते तुमको
 नहीं रोकते हैं ८ स्तोत्रकर्ता ९ मेधावी ब्राह्मणके लिये १० जो ११ पुत्रधन १२ देते
 हौ १३ आपको १४ उसकर्मको १५ कोई १६, १७ विघ्नयुक्त नहीं करता है ॥४॥

मेधातिथिऋषिर्दृहती छन्द इन्द्रो देवता-

कडू वेद सुते सचापिवन्त इदृया दधे । अययः

पुरा विभिनन्त्यो जसामन्दानः शिष्यन्धसः ५-६५

(सुते) आत्मप्रतिविंबाभिपुते सति (सचा) पराशक्त्या सह (पिवन्तम्)
 आत्मप्रतिविंबस्य पातारं (ईम) परमेश्वरं (कैः) (वेद) वेत्तिनकोपि
 वेत्तिर्यः (यः) (अयम्) (शिष्यी) (व्यः) अन्नं प्राणादिरूपं (दधे) स्वा
 त्मनि धारयति साकारेश्वरः (अन्धसः) आत्मप्रतिविंबेन (मन्दानः)
 तृप्यन्सन् । मदी तृप्नौ (श्रोजसा) वलेन (पुरः) स्थूलसूक्ष्म कार
 णशरीराणि (विभिनन्ति) इति (कत्) को जानाति नको पीत्यर्थः ५

भाषार्थः - १ आत्मप्रतिविंबके अभिषव होने पर २ पराशक्ति सहित ३
 आत्मप्रतिविंबका पान करने वाले ४ परमेश्वरको ५ कोई ६ जान्ता है अर्थात्
 कोई नहीं जान्ता ७ जो ८ यह ९ साकार ईश्वर १० प्राणरूपान्नको ११ आत्मा-
 में धारण करता है १२ आत्मप्रतिविंबसे १३ तृप्त होता १४ वलसे १५ स्थूल
 सूक्ष्म कारणशरीरो को १६ तोड़ता है यह भी कोई नहीं जान्ता ॥ ५ ॥

द्वयोर्वाग्देवऋषिर्दृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यदिन्द्रशासोऽभवत्तज्यावयोसदसस्परि। अस्मा
कमांशुं शुम्भघवन्पुरुस्पृहवसव्येऽधिर्वह्या ६-६६

हे (मघवन्) धनवन्लक्ष्मीपते (अ) सर्वव्यापिन् (इन्द्र) परमेश्वर
त्वं (यत्) यस्मात् (शासः) शिक्षणीयानां यत्तु विरोधिनां शिक्षक
स्तस्मात् (अभवत्) अकर्माणं याग विरोधिनां कामं (सदस) योग
यत्तु गृह्यात् (परिच्योवय) दूरानिः सारय (पुरुस्पृहं) पुरैर्देहैः स्पृहणीय
(अस्माकम्) (आंशुम्) आत्मप्रतिविंवरूपं सोमं (वसव्ये) वस्तव्ये
निवासयोग्ये गगनमण्डले (अधिर्वह्ये) अधिकं वद्धेय ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ धनवन्लक्ष्मीपते २ सर्वव्यापिन् ३ परमेश्वरतुम् ४ जिसका
रणा ५ याग विरोधियोंके शिक्षक होउसकारणा ६ अकर्मायोग विरोधीकामको ७
योगयत्तु शालासे ८ दूरनिकालो ९ देहोंसे स्पृहणीय १० हमारे ११ आत्मप्रति-
विंवरूपसोमको १२ निवास योग्य गगनमंडलमें १३ अधिक वढ़ाओ ॥ ६ ॥

विनियोगः पूर्ववत् ब्रह्मणा सन्त्याद्या देवताः

त्वष्टा नो देव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणा स्पतिः । पुत्रैर्धा
तृभिरादिति नुपातु नो दुष्टे रन्त्रामणा वचः ॥ ७ - ६७

(त्वष्टा) ज्योतिः स्वरूपः महानारायणः त्विषदीप्तौ (पर्जन्यः) सूर्यः
(ब्रह्मणास्पतिः) ब्रह्मणः विराजस्य स्वामी विष्णुः (नः) अस्मदीय
(देव्यम्) देवस्य परमेश्वरस्य सम्बन्धिनी (वचः) महावाचं (पातु)
(पुत्रैः) (धातृभिः) सहिता (आदितिः) लक्ष्मीः (नु) अपि (नः) अ-
स्माकं (दुस्तरम्) कामादिभिस्तरिणुमशक्यं (त्रामणम्) संसारा
द्रक्षकं (वचः) महावाचं पातु अत्रादिति शब्दार्थप्रकाशको मन्त्रः
आदिति र्द्यौ रदिति रन्तरिक्ष मर्दिनि मर्दिता सापिना सपुत्रः । विश्वेदे-

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसुनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते साम
वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोच्यारव्यानेतृतीयाध्यायस्य सप्तमः खण्डः ७

अथाष्टमः खण्डः

वसिष्ठ ऋषिर्वहती छन्दो महाविद्यादेवता-

प्रत्यु^२ अदृश्या^३ यित्यु^३ च्छन्ती^३ दुहिता^३ दिवः^३ । अपौ^३ मे^३

ही^२ वृणुते^३ चक्षुषा^३ तमा^३ ज्योति^३ कृणोति^३ सूनुरी^३ १-७२

(आयती) फलदानकालरूपा दीर्घरूपावा (व्युच्छन्ती) तमां-
सि वर्जयन्ती (दिवः) महापुरुषलोकस्य (दुहिता) महाविद्या (उ)
एव (प्रत्यदर्शि) योगिजनैः प्रतिदृश्यते सा (मही) सर्वाधारभूता
(सूनुरी) (उ) ईशः (नरः) जीवः सुषुजीवेशरूपा पराशक्तिः (उ)
एव (चक्षुषा) ज्ञानचक्षुर्दानेन (तमः) अज्ञानं (अपवृणुते) अप
वृणोति (ज्योतिः) ज्ञानप्रकाशं (कृणोति) करोति ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ फलदानकालरूपवादीर्घरूप २ अन्धकारनाशक ३
महापुरुषलोककी ४ दुहिता महाविद्या ५ ही ६ योगियोंसे देखीजानी है
वह ७ सर्वाधाररूप ८ जीवेशरूप पराशक्ति ९ ही १० ज्ञानचक्षुके दानसे ११
अज्ञानको १२ दूर करती है १३ ज्ञानप्रकाशको १४ करती है ॥ १ ॥

वसिष्ठ ऋषिर्वहती छन्दोऽश्विनो देवते-

इमा^३ उवा^३ न्दि^३ विष्टयु^३ उस्वा^३ हवन्ते^३ अश्विना^३ । अयु^३

वा^३ महे^३ वसे^३ शची^३ वसु^३ विशो^३ विश^३ थं^३ हि^३ गच्छथः^३ २ ॥

हे (अश्विना) सर्वेषु व्याप्तौ नरनारायणौ (उस्वौ) रसानां ज्योतिषा
न्वाधारभूतौ (वामु) युवां (उ) एव (इमाः) (दिविष्टयः) दिवमि
च्छन्त्यः मजाः (हवन्ते) आह्वयन्ति तस्मात् हे (शचीवसु) स्सृष्टि

कर्मधनौ (युवाम्) (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (आव्हे) आह्वयानि-
(हि) यस्मात् (विशंविशं) प्रत्येकयजमानं प्रति (गच्छतः) ॥२॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापनरनारायण २ रसवाज्योतिके आधाररूप ३
तुमदोनों को ४ ही ५ ये ६ स्वर्गकामा मजा ७ आह्वान करते हैं उस कारण ८ हे
सृष्टिकर्मधनवाले ९ तुमदोनों को १० संसारसे रक्षाके लिये ११ आह्वान कर
ताहूँ १२ जिसकारण १३ प्रत्येक यजमानके १४ ध्यानमें प्राप्त होते हैं - २॥

अश्विनौ वैवस्वता वृषी वृहती छन्दोः श्विनौ देवते ॥

कुष्ठः कौवाम श्विना तपानो देवो मर्त्यः घ्नता वा

मश्नया क्षयमाणांश्च श्मुनेत्यमु शोद्धन्यथा ॥३-७३

हे (देवो) देवो माया की डनकैः की डन शीलौ (अश्विनो) अश्विनो
नरनारायणो (वाम्) युवां (कुष्ठः) कौष्ठिय्यां वर्तमानः (कः)

(मर्त्यः) मनुष्यः (तपानः) परमहंस रूपेण स्वतेजसा तपानो भवति
नको पीत्यर्थः (यथा) (घ्नता) पीडकया (अश्नया) क्षुधया (क्षय
माणाः) क्षीयमाणाः (आहुने) भक्षणकर्त्ता तमो भवति (इत्यमु)
एवमेव (वाम्) युवां (अश्नुना) सोमेनात्मप्रतिविवेन तप्तौ भवतम् ३

भाषार्थः - १ हे मायाके खिलोनोंसे की डन शील २ नरनारायण ३ तुम
दोनोंको ४ भूमिस्थ ५ कोन ६ मनुष्य ७ परमहंस रूपद्वारा अपनेतेजसे तप
ता है अर्थात् कोई नही ८ जैसे ९ पीडक १० क्षुधासे ११ क्षीयमाणा १२ भक्ष
णकर्त्ता तप्त होता है १३ इसी प्रकार १४ तुमदोनो १५ आत्मप्रतिविवे से तप्त
होते हैं ॥३॥ प्रकएवऋषि वृहती छन्दोः श्विनौ देवते-

अथ वाम्मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविषिषु तमो श्वि

नापिवतन्निरो अन्ध्य धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥४-७४

हे (अभिना) अभिनौ नर नारायणौ (दिविष्टिपु) योगयज्ञेषु (अ^३
 यम्) (मधुमत्तम्) ज्ञानवत्तम आत्म प्रतिविंबः (सुतः) अभिपुतः
 (तम्) (तिरोअन्हाम्) देवयान पितृयान मार्गौ तिरस्कृतौ येन तमा
 त्म प्रतिविंबं (पिवतम्) (दाप्नुये) हविर्दत्त वते योगिने (रत्नानि)
 योगैश्वर्याणा (धत्तम्) मयच्छतम् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे नर नारायण २ योग यज्ञों में ३ यह ४ बड़ा ज्ञानी आत्म
 प्रतिविंब ५ अभिपुत हुआ ६ उस ७ देवयान पितृयान मार्ग का तिरस्कार कर
 ने वाले आत्म प्रतिविंब को ८ पान करो ९ हवि दाता योगी के लिये १० योगैश्व-
 र्यो को ११ दीजिये ॥ ४ ॥

मेधा तिथि मेध्या तिथी ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता-
 आत्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन् हज्या ।
 भूषीम्भृ गन्त सवनेषु चुक्रुध कद्दृशान नयानि-
 षत् ॥ ५ ॥ ७५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (भूषीम्) भूमिं नयति भूषीं वराहावतारस्तद्रू-
 पं (ने) च (मृगम्) नृसिंह रूपं (त्वा) त्वां (सवनेषु) योगयज्ञेषु (सो-
 मस्य) आत्म प्रतिविंबं सम्बन्धि न्या (गल्दया) महा वाचा नि० १।
 ११ (सदा) (याचन्) (अहम्) (आचुक्रुधम्) यस्मात् (ज्या) क्षय-
 शीलया बुद्ध्या युक्तः (कः) कामः (ईशानम्) ईश्वरं त्वां (ने)-
 (याचिषत्) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ वाराह रूपधारी ३ और ४ नृसिंह रूपधारी
 ५ तुमको ६ योग यज्ञों में ७ आत्म प्रतिविंबं सम्बन्धी ८ महा वाक् द्वारा ९ स-
 दा १० याचना करता ११ में १२ क्रोधित हुआ १३ जिस कारण क्षय शील बु-

द्विसे युक्त १४ कामने १५ तु भर्द्वाचर को १६ नहीं १७ याचना किया ॥५॥

देवातिथिः ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवताः

अध्वर्यो द्रावयात्वे सोममिन्द्रः पिपासति । उपौनू
नयुयुजे वृषणा हरी आच जगाम वृत्रहा ॥६-७६

हे (अध्वर्यो) मनोरूपा अध्वर्यो मनोवाऽ अध्वर्युः श० १।५।१।२९ (सो
मम्) आत्मप्रतिविंबु (द्रावये) अभिषुणु (अ) सर्वव्यापी (इन्द्रः) पर
मेश्वरः (उ) एव (पिपासति) पानुमिच्छति (वृषणा) वर्षितारो (हरी)
जीवेशो (नूनम्) (उपयुयुजे) उपयोजितवान् (च) (वृत्रहा) पाप
नाशकः परमेश्वरः (आजगाम) स्वरूपं प्रादुश्रकार् ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हेमनरूप अध्वर्यु २ आत्मप्रतिविंबु को ३ अभिषवन करो ४
सर्वव्यापी ५ परमेश्वर ६ ही ७ पान करना चाहता है ८ उसने वृषि कर्ता ९ जीव
ईश्वर को १० निश्चय ११ अपने आत्मा में संयुक्त किया १२ और १३ पापनाश
क परमेश्वरने १४ अपने स्वरूपको प्रकट किया ॥ ५ ॥

द्वयोर्बसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

अभीषतस्तदाभरेन्द्रज्यायः कनीयसः पुरुवसुहि
मघवनवभूविथभरेभरेचह्व्यः ॥७॥७७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (अभीषत) अभीच्छतः । इपवाञ्छयां (कनीय
सः) जीवात्मनः (तत्) (ज्यायः) प्रशस्तं योगधनं (आभरे) आहर
देहि हे (मघवन्) लक्ष्मीपतेत्वं (पुरुवसुः) बहुधनः (हि) (वभूविथ)
(भरेभरे) मत्येक यज्ञे (च) (ह्व्यः) होतव्यो वभूविथ ॥७॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ इच्छावानं ३ जीवात्माके ४ उस ५ प्रशस्त
योगधनको ६ दीजिये ७ हे लक्ष्मीपतेतुम् ८ बहुधनी ९ ही १० हो ११ मत्येक य

ज्ञमें १२ भी १३ आह्वान योग्यहौ ॥७॥ विनियोगः पूर्ववत्-

यादिन्द्रयावत्स्त्वमेतावद्दहमीशीयस्तोतारामद्
धिषेरदावसो न पापत्वाय रंथंसिषं ॥८॥ ७८

हे (रदावसो) धनानां दातः (इन्द्र) परमेश्वरत्वं (यावत्) ऐश्वर्यस्ये
शिषे (यद्) यदि (एतावत्) एतावत् ऐश्वर्यस्य । पश्यात्तुक्, सुपांसुलु
गित्यादिना (अहम्) (इंशीय) ईश्वरो भवेयंतदा (स्तोतारम्) (इत्)
वाचमेव (दाधिषे) आत्मनि धारयेयं मौनी भवेयं (पापत्वाय) पाप-
भावाय (न) (रंसिषम्) नदद्याम् ॥८॥

भाषार्थः - १ हे धनों के दाता २ परमेश्वर तुम ३ जितने ऐश्वर्य के स्वामी
हौ ४ यदि ५ इतने ऐश्वर्य का ६ में ७ स्वामी होऊं तब ८, ९ वाणी को ही १० आ-
त्मा में धारणा करूं अर्थात् मौनी हो जाऊं ११ औसुसवाणी को पापत्व के लिये-

१२, १३ मकट नहीं करूं ॥८॥ नृमेधत्रयिर्वहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभिषिष्वो अशिस्पधेः । अशस्ति
हाजनिता वृत्रनूरसित्वतूर्यतरुष्यतः ॥९॥ ७९-

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (प्रतूर्तिषु) प्रकर्षणात्तूर्यन्ते हिंस्यन्ते-
यत्र स प्रतूर्तिर्योग यज्ञस्तेषु (विष्वाः) सर्वाः (स्पृधेः) कामसेनाः
(अभ्यासि) अभिभवसि (अशस्तिहा) अकीर्तेर्नाशकः (जनिता)
कीर्तिर्जनयिता (वृत्रनूः) पापस्य हन्ता (असि) तस्मात् (त्वम्) (त-
रुष्यतः) वधेच्छून् कामादीन् (तूर्य) प्रतिहिंस ॥९॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुम ३ योग यज्ञों में ४ सब ५ कामसेनाओं
को ६ जय करते हो ७ अकीर्तिकर्ता नाशक ८ कीर्ति के उत्पादक ९ पापनाश
क १० हो ११ उस कारण १२ तुम १३ वधेच्छू काम आदि को १४ मारो ॥९॥

नोधाऽपि र्वंहीती छन्द इन्द्रो देवता-

प्रयोरिरेक्षे श्रोजसा दिवः सदोभ्यस्परि नत्वा वि

व्याचरज इन्द्र पार्थिवमति विश्वववक्षिथं ॥ १०-८०

हे (इन्द्र) परमेश्वरत्वं (दिवः) स्वर्गस्य (सदोभ्यः) आब्रह्मलोके
भ्यः (परिरेक्षे) प्रकर्षेणाधिकोऽसि। रिचेर्लीटि वङ्गलञ्छन्दसीति
श्लुः। प्रत्ययस्वरः (पार्थिवम्) पृथिव्यां भवं (रजः) लोकसमूहः (त्वा-
त्वां (न) (परिविव्याच) समन्तान् व्याप्नोति (यः) त्वं (विश्वम्) स-
र्वब्रह्माण्डं (श्रोजसा) तेजसा वलेन च (अति) अतिक्रम्य व्याप्य-
(ववक्षिथं) महानसि नि० ३। ३॥ - १०॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर तुम २ स्वर्गके ३ स्थान ब्रह्मलोक तकसे ४ अ-
धिक हो ५ पृथिवी सम्बन्धी ६ लोकसमूह ७ तुमको ८ व्याप्त नहीं करता है-
१० जो तुम ११ सर्व ब्रह्माण्डको १२ तेज वा वलसे १३ व्याप्त कर १४ महान हो
॥ १०॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते
तेसामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्याष्टमः खण्डः ८॥

अथ नवमः खण्डः

द्वयोर्वसिष्ठः ऋषिस्त्रिष्टुप छन्द इन्द्रो देवता-

असाविदेव गोऽरुजी के मन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुष
मुवोच। वोधो मसित्वा हर्यश्वयज्ञे वोधानः स्तोम म
न्धेसोमदेषु ॥ १॥ ८१॥

(देवम्) मायाक्रीडाणकैः क्रीडाणशीलं (गोऽरुजीकम्) गोभिरिन्द्रि-
यैर्भिन्नितं (अन्धः) आत्मप्रति० रूक्षान्नं (असावि) अभिषुतं (इन्द्रो)
परमेश्वरः (अस्मिन्) आत्मप्रतिविंबे (जनुषा) योगसंस्कारेणाल-

भ्यं (ईम्) शान्तिं न्यवोच (नितरामुक्तवान् हे (हर्यश्च) ब्रह्मविष्णु
 महेशेषु व्यापक (त्वा) त्वां (यज्ञैः) अर्चाप्रभावैः (बोधामसि) बोध-
 यामः (अन्धसः) आत्मप्रतिविंवरूपान्नस्य (मदेषु) (नः) अस्माकं
 (सोमम्) स्तोत्रं (बोध) बुध्यस्व ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ मायाकेखिलो नो से कीडनशील २ इन्द्रियों से मिश्रित
 ३ आत्म प्रतिविंवरूप अन्न ४ अभिषुत हुआ ५ परमेश्वरने ६ इस आत्म प्रति-
 विंवरूपमें ७ योग संस्कार से लभ्य ८ शान्ति को ९ उपदेश किया १० हे विदेवमें व्या-
 पक ११ तुमको १२ अर्चाप्रभावों से १३ जतलाते हैं १४ आत्म प्रतिविंवरूप-
 अन्नके १५ मदोंमें १६ हमारे १७ स्तोत्र को १८ जानो - ॥ १ ॥ विनियोगः पूर्वक

योनिषु इन्द्र सदने अकारितमानृभिः पुरुहूतप्रयाहि।

असौ यथानो वितो वृधश्चिद्वदो वसूनि ममदश्च सोमैः २-८

हे (पुरुहूत) बृहभिराहूत (इन्द्र) (सदने) यज्ञगृहे (ते) तव (योनि)
 स्थानं (अकारि) अहं कृतवानस्मि (नृभिः) नेतृभिर्मरुद्भिः सार्द्धं (तम)
 स्थानं (आप्रयाहि) (यथा) (वृधः) महान्त्वं (नः) अस्माकं (अवितो)
 रसुकः (चित) आपि (असः) भवासि (वसूनि) धनानि (ददः) दोहि
 (सोमैः) (ममदः) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे बृहत् से आहूत २ इन्द्र ३ यज्ञ गृहमें ४ तेरा ५ स्थान ६ में
 ने संस्कृत किया ७ ने नामरुद्राणों के साथ ८ उस स्थानको ९ प्राप्त करो १० जैसे
 ११ महान् तुम १२ हमारे १३ रसुक १४ भी १५ होओ १६ धनों को १७ दो १८
 सोमों से १९ मंद को पाओ - ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (पुरुहूत) बृहभिराहूत (इन्द्र) परमेश्वर (नृ-
 भिः) वागाद्यत्विभिः सहितो हं (सदने) योग यज्ञ गृहे भृकुटिमाण्ड

ले (ते) तव (योनिः) स्थानं (अकारि) संस्कृतवानस्मि (तम्) (आप्त
 याहि) (यथा) (वृधः) ज्योतिस्वरूपत्वं वृधदीप्तौ (नः) अस्माकं (अ
 विता) संसाराद्द्रक्षकः (चित्) अपि (असः) (वसूनि) योगधनानि
 (ददः) (सोमैः) इन्द्रियप्राणात्मप्रतिविंवैः (ममदः) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे वृद्धतसे आहूत २ परमेश्वर ३ वागाद्यृत्विजों से सहित मैंने
 ४ योगयज्ञ गृह भृकुटि मंडलमें ५ आपके ६ स्थानको ७ संस्कृत किया ८ उ
 सको ९ प्राप्त करो १० जैसे ११ ज्योतिस्वरूपतुम १२ हमारे १३ संसार से रक्षा क
 रने वाले १४ भी १५ होवें १६ योगधनोंको १७ दो १८ इन्द्रिय आत्म प्रतिविंव
 से १९ ममको पासो - ॥ २ ॥ गानुर्धरेषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

अददुरुत्समस्तजो विषानित्वमेणवान्वेद्वधनां च्छ
 रमाः महान्तो मिन्द्र पर्वत विवदः स्तजद्धारो अवयद्वा
 नवान्हन ॥ ३ ॥ ८२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) तदा तदा (उत्सम्) वाचं। मनो वै सरस्वा
 न्वाक्षरस्वत्येतौ सारस्वताः उत्सौ श० ७। ५। १। ३२ (अददः) मौन
 साधनाय विदारित वानसि (खानि) इन्द्रियाणि कमलानि वा (व्य
 स्तजः) ऊर्ध्वं मुखान्यन्तर्मुखानि वा कृत वानसि (वृध्धानान्) व
 द, स्थैर्ये - वधसंयमने - स्थैर्येणानिरुद्धाः (अणवान्) मनो वृत्ती
 मनो वै समुद्रः श० ७। ५। २। ५२ (अरमाः) योगे विस्तृष्ट वानसि
 (महान्तम्) (पर्वतम्) गगनमण्डलमेघं (विवः) विवृत वानसि
 (धारो) अमृतधाराः (विस्तजत्) व्यस्तजः विसर्जित वानसि (यद्)
 (यद्) यदा यदा (दानवान्) कामादीन् (अवहन्) अभिहत वान
 सि ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुमने तव तव ३ वाणीको ४ यौन साधनके लिये
 विदारण किया है ५ इन्द्रियोवा कमलोंको ६ ऊर्ध्वमुखवा अन्नर्मुखकिया
 है ७ स्थिरता से निरुद्ध ८ मनोवृत्तियोंको ९ योगमें रमाया है १०, ११ गगन
 मंडलके मेघको १२ प्रकट किया है १३ अमृत धाराओंको १४ छोड़ा है १५
 १६ जवजव १७ काम आदिको १८ मारा है ॥ ३ ॥

एथोवैन्यऋषिस्त्रिष्टुपृच्छन्दइन्द्रो देवता-

सुष्वाणासइन्द्रस्तुमासित्वा सनिष्यन्तोश्चित्तुवि
 नृम्णा वाजम् । आनाभरसुवित यस्य कोना तनात्म
 नो सह्यामा त्वाताः ॥ ४ ॥ ८४ -

हे (तुवि नृम्णा) वहु बल वहु धनवा (इन्द्र) परमेश्वर (सुष्वाणासः)
 सोममात्मप्रतिविंबवाः भिषुतवन्नः (वाजम्) चरुपुरोडाशादि-
 लक्षणांभूतात्मारूपम्वाऽन्नं (सनिष्यन्तः) सम्भक्तवन्तो वयं (त्वो-
 चित्) त्वामेव (स्तुमासि) स्तुमः (नः) अस्माकं (सुवितम्) सुप्रप्रत्या-
 हारेण युक्तं यज्ञं योगयज्ञंवा (आभर) आहरप्रयच्छ (अ) हे सर्व-
 व्यापिन् (यस्य) यज्ञस्य (कोनाः) कः कामस्तेन - ऊनाः निष्का-
 माः (त्वाताः) त्वयि श्रोताः श्रोता वयं (त्मना) आत्मन् आत्मनि बु-
 ष्णौ (तना) तनानि सांसारिक धनानि (सह्याम) अभिभवाम । सह-
 अभिभवे ॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ हे बहु बली वा वहु धनी २ परमेश्वर ३ सोमवा आत्मप्रतिविंबका अभिषवक
 रनेवाले ४ चरुपुरोडाश आदिवाभूतात्मारूपअन्नको ५ विभाग करने वाले
 हम ६ तुमको ७ ही ८ स्तुत करते है ९ हमारे १० सुप्रप्रत्याहार से युक्त यज्ञवा
 योगयज्ञको ११ सिद्ध करो १२ हे सर्वव्यापिन् १३ जिस यज्ञके १४ निष्काम-

१५ श्रौगनुभमें प्रोत हम् १६ बुद्धिमें १७ सांसारिक धनों को १८ तिरस्कार करें

॥४॥ सप्तगुर्जरपिच्छिपुषु छन्द इन्द्रो देवता-

जगृह्णानेदाक्षिणामिन्द्रहस्तवसूर्यवो वसुपतेवसु
नाम ॥ विद्मोहित्वां गोपतिं भूरगोनामस्मभ्यचि
त्रवृषणां रयिन्द्रोः ॥ ५ ॥ ८५

हे (१) सर्वव्यापिन् (वसुपते) धनानां स्वामिन् (इन्द्र) परमेश्वर
(वसूर्यवः) धनकामावयं (ते) तव (दाक्षिणम्) (हस्तम्) (जगृह्ण)
गृह्णीमः हे (२) सर्वव्यापिन् (भूर) (त्वाम्) (हि) (गोपतिम्) गो-
पालं श्रीकृष्णं (विद्म) जानीमत्वं (अस्मभ्यम्) (वसूनाम्) स्व-
णीदीनां (गोनाम्) गवां (चित्रम्) नानारूपधारणो नाद्भुतं (वृषणा
म्) दधिदुग्धघृतानां वर्षकं (रयिम्) धनं (दाः) देहि ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ धनों के स्वामी ३ परमेश्वर ४ धनकामा-
हम् ५ आपके ६ दाहिने ७ हाथको ८ पकडते हैं ९ हे सर्वव्यापिन् १० भूर ११ तु-
मको १२ ही १५ गोपाल श्री कृष्ण १४ जानते हैं तुम १५ हमारे लिये १६ स्वर्ण
आदि १७ गौश्रों के १८ नानारूपधारणसे अद्भुत १९ दधिदुग्धघृतों के वर्षक
२० धनको २१ दीजिये ॥ ५ ॥ वसिष्ठऋषिच्छिपुषु छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रनरोनेमाधिताहवन्ते यत्पायायुनजतो धिय
स्ताः । भूरानुषाता भ्रवसभ्रव काम आगो मतित्रजे
भजात्वना ॥ ६ ॥ ८६

(यद्) यदा (ताः) (पाय्याः) पारलौकिकाः (धियः) बुद्धयुः (युनजते)
प्रयुज्यन्ते तदा (नरः) प्राणानां नेतारो योगिनः (नेमाधिना) नेमोः
न्तद्वीयते यत्र सनेमाधितो यस्तस्तेन योग यत्नेन (इन्द्रम्) परमेश्व

रं(त्वा) त्वां (हवन्ते) ह्यन्ति हे परमेश्वर तस्मिन्काले (भूरः) (नृषा
 ता) भक्तानां दातात्वं (भवसेः) योगवलस्य (चकामे) चकानेका
 म्यमाने सति (गोमति) (वृजे) गोमिरिन्द्रियैर्युक्ते गोष्ठे मनसि (नः)
 अस्मान् (भज) सेवय ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ जव २ वे ३ पारलौकिक ४ बुद्धियां ५ आत्माने युक्त हो
 ती है तव ६ प्राणोंके नेता योगी ७ योग यज्ञ द्वारा ८, ९ नुभ परमेश्वर को १०
 आवाहन करते है हे परमेश्वर उस समय ११ भूर १२ भक्तोंके दाता तुम १३
 योग वलके १४ काम्य मान होनेपर १५ इन्द्रिय युक्त १६ मनमें १७ हम
 को १८ सेवन करो - ॥ ६ ॥ गौरिवीत ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

वयः सुपणा उपसे दुरिन्द्रे म्रियु मेधा ऋषयो नाधु
 मानाः । अपध्वान्त मूर्णाहि पूष्टिन्वक्षु मुमुग्धा ३स्मा
 निधये ववद्धान् ॥ ७ ॥ ८ ७

(प्रियमेधाः) प्रिया मेधा येषान्ते (ऋषयः) साक्षात्कृत धर्माणां
 (नाधमानाः) मज्ञां याचमानाः नि० ३। ४ (वयः) पक्षि सदृशाः (सु
 पणाः) जीवाः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उपसेदुः) उपसृन्ना अभवन् हे
 परमेश्वर (ध्वान्तम्) अन्धकाररूपमज्ञानं (अपोर्णाहि) परिहर (च
 क्षुः) ज्ञानचक्षुः (पूष्टिः) पूरय। नि० ४। ३ (अस्मान्) (निधयो) नि
 धापाश्रया भवति पाश्रया पाश समूहः, जन्म मरणादि पाश समूहे
 न (एव) (वद्धान्) (मुमुग्ध) मोचय ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ मेधा जिनकी प्रिय है उन धर्मको साक्षात् करने वाले ३
 मज्ञा याचक ४ पक्षी सदृश ५ जीवां आत्माओंने ६ परमेश्वर को ७ उपासना
 किया है परमेश्वर ८ अन्धकार रूप अज्ञानको ९ दूर करो १० ज्ञानचक्षुको

११ परिपूर्णकरो १२ ह्रम १३ जन्म मरण आदिपाश समूह से १४ ही १५ बद्धों को १६ ब्रुदाशो ॥७॥ वेनो भार्गव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता-

नाके सुपर्णा मुपयन्तन्तं हृदा वेनन्तो अभ्येक्ष
तत्वा ॥ हिरण्यपक्षवरुणास्य दूतयमस्य योनौ शकुने
भुरायुम् ॥ ८ ॥ ८८

(यत्) यस्मात् (हृदा) हृदयेन मनसा (उपवेनन्तः) समीपे पूजय-
न्तः वेनति र्खतिकर्मानि० ३।१४ तस्मात् (नाके) स्वर्गे (पतन्तम्)
गच्छन्तम् (हिरण्यपक्षं) ब्राह्मज्योतिः पक्षीयस्य त्नादृशं (सुपर्णा)
(वरुणास्य) एकाणिवेशस्य महानारायणास्य (दूतम्) (यमस्य)-
(योनौ) स्थाने संसारे (शकुनेम्) शक्तं समर्थं सूर्य आत्मा जगस्तस्थु-
षश्चेति मन्त्रात् (भुरायुम्) शीघ्रगामिनं नि० २।१५ (त्वां) त्वां सूर्य-
रूपमीश्वरं (अभ्येक्षते) अभिपश्यन्ति यथा वज्जानन्तीत्यर्थः ॥ ८

भाषार्थः - १ जिस कारण २ हृदयमनसे ३ समीप पूजन करने वाले हुए उस कारण ४ स्वर्गमें ५ जाते ६ ब्राह्मज्योतिरूप पक्ष वाले ७ पक्षीरूप ८ एकाणिवेश महानारायणके ९ दूत १०, ११ संसारमे १२ समर्थ १३ शीघ्रगामी १४ तु भ्रूसूर्यरूप परमेश्वरको १५ यथावत् जान्ते हैं ॥ ८ ॥

ब्रह्मस्मिन् कालो वा ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता-
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् द्विसीमतः सुरुचो वेनशो
वः । सवुभ्यो उपमांशस्य विधाः सतश्चे योनि मसतश्चे
विवः ॥ ८ ॥ ८८

(पुरस्तात्) पूर्वस्मिन् काले (प्रथमम्) स्तृष्ट्यादौ (जज्ञानम्) प्रादुर्भूतं
(ब्रह्म) सूर्यरूपं ब्रह्म श० ७।४।१।१४ (सीमतः) ब्रह्माण्डस्य मध्यतः

श०७।४।१।२४ (सुरुचैः) शोभमानानि मानूलोकान् श०७।४।१।२४
 (विभावः) स्वप्रकाशेन विवृतान करोत् (सः) (वेनः) कामनीयो मेधा
 वीसूर्यः (उपमाः) सावकाशाः (चै) (अस्य) जगतः (विष्टोः) विविध
 स्थानरूपाः (बुभ्याः) दिशाः श०७।४।१।२४ तथा (सूतः) मूर्त्तस्य
 घटपटादेः (चै) (असतः) अमूर्त्तस्य वा व्यादेः (योनिम्) प्रभवंब्रह्मा
 एडं (विवः) प्रकाशयति सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति मन्त्रात् ॥
भाष्यार्थः - १ पूर्वकालमें २ स्थिती की आदिमें ३ प्रादुर्भूत ४ सूर्यरूपब्रह्मने
 ५ ब्रह्माएड के मध्य ६ इन शोभनलोकों को ७ अपने प्रकाश से विवृत किया
 ८ वह ९ कामनीय मेधावी सूर्य १० अवकाशवान् ११ और १२ इस १३ जगत
 की विविध रूप १४ दिशाओं को तथा १५ मूर्त्तघटपट आदि १६ और १७ अमूर्
 त्त्वायु आदि के १८ प्रभव ब्रह्माएड को १९ प्रकाशित करता है ॥ ८ ॥ ८९ ॥

सहोत्ररूपिस्त्रिषुषु छन्दो महानारायणो देवता-

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महवीराय तवसे नुरायो विर

प्सिने वज्रिणो शन्तमानि वचांस्यस्मै स्थविराय तसु २० ६०

स्तोतारः (महे) यज्ञे उत्सवे वा (अस्मै) (वीराय) असुराणां मारयित्रे
 (तवसे) ब्रह्मवते (नुराय) (न) विष्णुः (उ) शिवः (र) ब्रह्मा त्रिदेवरूपा
 य (विरप्सिने) विशेषेण वेदानां वक्ते महते वा । एष व्यक्तवाक्ये (वज्रि
 णो) ज्ञानवज्रवते (स्थविराय) ब्रह्माय महानारायणाय (अपूर्व्या)
 पूर्व्या णियेषां सन्तानि (पुरुतमानि) बहुतमानि (शन्तमानि)
 आनन्दरुतमानि (वचांसि) वेदस्तुतिरूपाणि वाक्यानि (तसुः) त
 तसुः । तसतिः करोतीत्यर्थः ॥ २० ॥

भाष्यार्थः - स्तोता मनुष्यों ने १ यज्ञवाउत्सव में २ इस ३ असुरनाशक ४

बलवान् ५ त्रिदेवरूप ६ विशेषं करवेदोके वक्ता वामहान् ७ ज्ञानवज्रधारी ८
 वृद्धमहानारायणके लिये ९ अपूर्ववेदोक्त १० वज्रतम ११ अन्यानन्दकन्ती
 १२ वचनोंको १३ उच्चारणकिया ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम घृणुज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते सा
 मवेदीयब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य नवमः खण्डः ९

अथ दशमः खण्डः

द्वयोर्द्युतान चरपि स्त्रिष्टुप् छन्द आत्मा देवता-

अवद्रेप्सु अथ भुमती मतिष्ठदा यानेः कृषादिश
 भिः सहस्रैः । आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमपस्त्रीहि
 तिनृमणा अधद्रोः ॥ १ ॥ ९ ॥

(कृषाः) तमप्रधानः (सहस्रैः) सहस्रवत्तस्य दातृभिः (दशभिः)

इन्द्रियैः (द्वयानः) द्वयमानः (द्रेप्सुः) आत्मप्रतिविंवरूपोरसः (अंशु

मनीम्) मनोरूपां नदी (अवातिष्ठत्) (शच्या) कर्मणानि ० २ १

(तम्) (धमन्तम्) अहंममेति शब्दं कुर्वन्त आत्म प्रतिविं (इन्द्रः)

आत्मारूपयजमानः । इन्द्रो वै यजमानः श० १ । १ । २ । ११ आत्मा वै य

ज्ञस्य यजमानो ऽङ्गान्यत्विजः श० ९ । ५ । २ । १६ (आवत्त) प्राञ्चोत्-

(अध) अनन्तरं पश्चात् (नृमणाः) नृपुने तृषु वागाद्यत्विषु मनो यस्य

स आत्मारूपयजमानः (स्त्रीहितम्) हिंसित्रीं कामसेनां (अपद्रोः)

अपगमयत् ॥ १ ॥

भाषार्थः

१ तमप्रधान २, ३, ४ वत्तदाता इन्द्रियोंके साथ गतिमान ५ आत्म प्रति विंवरूप
 रस ६ मनरूपनदीमें ७ स्थित इन्द्रा ८ आत्मारूपयजमानने ९ कर्मद्वारा १० उस
 ११ मेंमेरा यह शब्द करनेवाले आत्म प्रति विंवरूपको १२ मामाकिया १३ पीछे १४

वाक् आदिमें मन करने वाले आत्मारूपयजमानने १५ हिंसक कामसेनाको

१६ हटा दिया ॥ १ ॥ इन्द्रो देवता शेषं पूर्ववत्-

वृत्रस्य त्वाश्वसथादीषमाणो विभ्वे देवा अजहुयस
खायः । मरुद्भिर्इन्द्रसख्यन्तैश्च स्वयमाविभ्वाः पृ-
तनाजयासि ॥ २ ॥ ६२

हे (इन्द्र) यजमानते (यै) (सख्यः) (विभ्वे देवाः) शमदमादयः (वृत्र-
स्य) पापस्य (श्वसथात्) श्वासादीनाः । श्वसेरौणादिकोऽयमत्ययः
(ईषमाणाः) सर्वतः पलायमानाः (त्वा) त्वां (अजहुः) त्यक्तवन्तः
(ते) तव (सख्यम्) (मरुद्भिः) माणैः (अस्तु) (अथ) अनन्तरं (इमाः)
(पृतनाः) कामसेनाः (जयासि) स्ववलेनाभिभवसि ॥ २ ॥

भाषार्थः— हे यजमानतेरे २ जो ३ सखा ४ शमदम आदिहैं ५ पापके
६ श्वास से भय युक्त ७ श्व और भागते उन्होंने ८ तुमको ९ त्याग किया १० तेरी
११ मित्रता १२ माणोंको साथ १३ हो १४ फिर १५ इन्द्र १६ कामसेनाओंको-
१७ अपनेवलसे जय करोगे ॥ २ ॥

बृहदुक्थञ्चरषिस्त्रिष्टुप् छन्द आत्मा देवता-

विधुन्दुद्राणां च समने वह्ना युवानं च सन्नं पलि-
तोजगार । देवस्य पश्य काव्यं माहित्वा घाममारसह्यः
समान ॥ ३ ॥ ६३

(पलिता) (उ) वृद्धा वस्थैव (विधुम्) देहस्य धारयितारं (समने)
संग्रामे (वह्नाम्) कामादीनां (द्राणाम्) द्रावकं (युवानम्) (स-
न्नम्) यजमानं (जगार) निर्गिरतस्म (काव्यम्) क वित्वं (पश्य)
(देवस्य) विद्वतः (माहित्वात्) माहात्म्येन (या) पलिता (ममार)-

(सह्यः) ^{१६} ईशेनै कत्वं प्राप्तो योगी (समान) ^{१७} जीवन्मुक्तोऽभवत् ॥३॥
भाषार्थः - १२ वृद्धा अवस्थानेही ३ देह धारक ४.५.६ संग्राममें बहु
 त काम आदिके भगाने वाले ७ युवान ८ होने यजमान को ९ निगला १० बुद्धि
 मानों को ११ देखो १२ विद्वानके १३ महात्म्य से १४ जो पलिता १५ मरी १६ परमे
 श्वरसे एकत्व को प्राप्त योगी १७ जीवन्मुक्त हुआ - ॥३॥

द्युतानञ्चरिषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^३ त्वं ^३ हत्यत्सप्त ^३ भ्याजयमानो ^३ शत्रुभ्यो ^३ अभवः
^३ शत्रुरिन्द्रः । ^३ गूढे ^३ द्यावा ^३ पृथिवी ^३ अन्व ^३ विन्दो ^३ विभु
^३ मद्भ्यो ^३ भुवनेभ्यो ^३ रणान्धाः ॥ ४ ॥ ६४

हे (इन्द्र) यजमान (ह) खलु (त्वमे) (यत्) यस्मात् (जायमानः)
 योग संस्कारेण जायमानः सन् (सप्तभ्यः) (शत्रुभ्यः) कामको ध-
 लोभमोहाहङ्कारममत्वमत्सरेभ्यः (शत्रुः) (अभवः) (गूढे) गुप्ते (द्या
 वापृथिवी) मनोभृकुटी (अविन्दः) अलभथाः (तत्) तस्मात् (विभु-
 मद्भ्यः) भुवनपालयुक्तेभ्यः (भुवनेभ्यः) चतुर्दश भुवनेभ्यः (रणान्) ^{१६}
 युद्धं (धाः) धारय कुरु मोक्षार्थी भवेत्यर्थः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे यजमान २ निश्चय ३ तुम ४ जिस कारणसे ५ योग संस्का-
 रसे संस्कृत होते ६ ७ सान शत्रु कामको धलोभमोह अहंकारममत्वमत्सरेके
 लिये ८ शत्रु ९ हुए १० गुप्त ११ मनभृकुटिको १२ लब्धकिया १३ उस कारणसे १४
 भुवनपालयुक्त १५ चतुर्दश भुवनों से १६ युद्ध १७ करो अर्थात् मोक्षार्थी हो

वामदेवञ्चरिषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^३ मोडि ^३ न्तवा ^३ वज्रिणा ^३ म्भृष्टि ^३ मन्त ^३ स्पूरु ^३ धस्मान
^३ वृषभं ^३ स्थिर ^३ प्सुम् । ^३ करो ^३ ष्यथ ^३ स्तरुपी ^३ दुवस्यु

रिन्द्रद्युक्षदृत्रहृणां गृणीषे ॥ ५ ॥ ६५

हे (इन्द्र) यजमान (दुवस्युः) दुवः परिचरणां स्तुत्यादिलक्षाणां तदिच्छुः (अर्यः) इन्द्रियाणामीशत्वं (मेडिम्) महावाचं नि० १।११।१६ (तरुपीः) तारकायोगभक्तिभूमिञ्च (करोषि) लभसितस्मात् (वज्रिणम्) ज्ञानवज्रधरं (भृष्टिमन्नम्) असुराणां भूर्जनवन्तं (पुरुधस्मानं) वहनां व्यष्टिसमष्टिदेहानां धारकं (वृषभम्) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकं (स्थिरप्सुम्) स्थिररूपमच्युतस्वरूपं (दृत्रहृणां) पापनाशकं (द्युक्षम्) महानारायणलोके वर्तमानं परमेश्वरं (नत्व) नमस्कृत्य (गृणीषे) स्तौषि ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे यजमान २ स्तुति आदि सेवाके चाहने वाले ३ इन्द्रियों के स्वामी तुम ४ महावाक् को ५ और योगभक्ति की भूमियों को ६ लब्ध करते हो उस कारण ७ ज्ञानवज्रधारी ८ असुरों के नाशक ९ बहुत व्यष्टि समष्टि देहों के धारक १० चारोंपदार्थके दाता ११ स्थितरूप अच्युतस्वरूप १२ पापनाशक १३ महानारायणलोकमें वर्तमान परमेश्वर को १४ नमस्कार करके १५ स्तुत करते हो - ॥ ५ ॥ वसिष्ठऋषिष्विपदाविराट् छन्द इन्द्रो देवना-

प्रवोमहे महे दृधे भरध्वं प्रचेतसे प्रसुमति कृणु

ध्वं। विशः पूर्वीः प्रचर चर्षिणां प्राः ॥ ६ ॥ ६६

हे भक्तजनाः (महे) (महे) प्रत्येकोत्सवे यज्ञे वा (वे) युष्माकं (प्रचेतसे) ज्ञानस्वरूपाय (दृधे) महापुरुषाय (प्रभरध्वम्) पुष्यचन्द्रादीनि वस्तूनि प्रार्पयत (सुमतिम्) सुष्ठु तिञ्च (प्रकृणुध्वम्) प्रकुरुत हे परमेश्वर (चर्षिणां प्राः) कामैर्भक्तानां पूरयितात्वमपि (पूर्वी) (विशः) यज्ञाः स्वपूजकान् (प्रचर) अभिगच्छ ॥ ६ ॥ ६६

भाषार्थः - हे भक्तजनो १, २ मन्त्येक उत्सववायज्ञमें ३ तुम्हारे ४ ज्ञानस्वरूप
५ महापुरुषके लिये ६ पुष्पचन्दन आदिवस्तुओंको अर्पण करो ७ भेष्ट स्तुति
को ८ करो हे परमेश्वर ९ कामनाओंसे भक्तोंके पूरकतुमभी १० अपनी पूजा
कमजाको ११ प्राप्त करो - ॥ ६ ॥ ६६

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

भुन^३थं^२ हु^३वे^२म^३ म^३घ^३वा^३ना^३मि^३न्द्र^३ मा^३स्मि^३न्^३ नरे^३ नृ^३त^३म^३ वा^३
ज^३सा^३तो^३ । भृ^३ए^३व^३न्त^३ मु^३य^३ मृ^३त^३य^३ स^३म^३त्सु^३ घ^३त^३ वृ^३चा^३णि^३
स^३ज्जि^३त^३ ध^३ना^३नि ॥ ७ ॥ ६७

वेदोपदेशः (वाजसातो) हविषांदानं यस्मिन्नास्मिन्यज्ञे (जतेये)
संसारदक्षिणाय (अस्मिन्) (नरे) जीवात्मानि (नृतमम्) अन्त-
र्यामिरूपं (भुनम्) आनन्दस्वरूपं (मघवानम्) धनवन्तं (उग्रम्)
ईशस्वरूपं (समत्सु) कामयुद्धेषु (वृचाणि) पापानि (घतम्) हिं-
सन्तं (धनानि) असुराणां धनामि (सज्जितम्) सम्यग्जेतारं (भृ-
एवन्तं) स्तुतिं भृएवन्तं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (हुवेम) आह्वयेम ॥ ७

भाषार्थः - वेदका उपदेश १ हविदानवाले यज्ञमें २ संसारसे रक्षाके लि-
ये ३ इस ४ जीवात्मा में ५ अन्तर्यामीरूप ६ आनन्दस्वरूप ७ धनवान् ८ ईश
रूप ९, १०, ११ कामयुद्धोंमें पापोंके नाशक १२, १३ असुरोंके धनोंको जीतने
वाले १४ स्तुतिके जोता १५ परमेश्वरको १६ हम आह्वान करते हैं ॥ ७ ॥

वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

उ^३द^३ब्र^३ह्मा^३ ए^३यै^३र^३त^३ भ्र^३व^३स्ये^३न्द्र^३ स^३म^३य^३े मह^३या^३ व^३सि^३ष्ठ^३ ।
आ^३यो^३ वि^३श्व^३ानि^३ भ्र^३व^३सा^३त^३ त्वा^३ना^३ प^३भ्र^३ा^३ता^३ म^३इ^३व^३ता^३
व^३चा^३थं^३ सि^३ ॥ ८ ॥ ६८

(वसिष्ठ) हेवाक् । वाग्वैवसिष्ठाश० १४। १। २। २ (समेधे) यज्ञे (अव
 स्या) अवणीयानि (ब्रह्माणि) वैदिक स्तोत्राणि (उ) एव (उदैर
 त) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (महय) पूजय (यः) (अः) सर्वव्यापी (वि-
 श्वानि) सर्वाणि भुवनानि (अवसा) अन्नेन (आतनान) (मे) म-
 म (ईवतः) शान्तिवतः वीजको० (वचांसि) स्तुतिरूपाणि वाक्या-
 नि (उपज्ञोता) अन्तर्यामिरूपत्वात् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हेवाक् २ यज्ञमे ३ अवणयोग्य ४ वैदिक स्तोत्रों को ५ ही
 ६ उच्चारण करो ७ परमेश्वरको ८ पूजो ९ जैसे १० सर्वव्यापीने ११ सब भुवनों
 को १२ अन्न सहित १३ विस्तृत किया १४ बहुत १५ शान्ति वानके १६ स्तु-
 तिरूपवचनोको १७ अन्तर्यामी रूपसे सुन्ने वाला है - ॥ ८ ॥

गौरिवीति ऋषिष्विष्णुषु छन्दो विष्णुर्देवता-

३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२ ३ १२ २२
 चक्र यदस्याश्चानिषत्तमुतानदस्मै माध्विच्च छद्धा
 त् । एधिच्या मतिषितं यदूधः पयो गाश्चा दधा औ
 षधीषु ॥ ८ ॥ ८ ८

(अस्य) विष्णोः (तत्) (चक्रम्) सूर्यख्यं (अप्सु) अन्नरिक्षोपुष्पा
 निषत्तं) सर्वतो निषण्णमासीत् (यत्) (अस्मै) विष्णावे (मधु) (इत्)
 यज्ञजुममृतरसमेव (वच्छद्धान्) प्रापयति (उत्) आपिच (यत्)
 (अतिषितं) अतिशितं चूकं (एधिच्याम्) (जोषधीषु) (गोषु) (उ)
 (अपि) ऊधः पयः) (आदधा) आदधानि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इस २ विष्णुका ३ वह ४ सूर्यरूपचक्र ५ अन्नरिक्षोंमें ६
 सब ओर विद्यामान हुआ ७ जो ८ इस विष्णुके लिये ९ यज्ञज अमृतरसको
 ८ ही १० प्राप्त कराना है ११ और १२ जो १३ अतिशित चूक १४ एधिची १५ जोष-

धि १६ और गौश्लोमें १७ भी १८ अमृत दुग्धके स्तनोंको १९ धारण करता है
इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाभसादशर्मविरचिते सा-
मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य दशमः खण्डः १०

अथैकादशः खण्डः ११

ताक्ष्यपुत्रोऽरिष्टनेमिऋषिष्विष्टुषु छन्दो गरुडो देवता-

त्यमूषु वाजिनन्देवजूतं संहोवानं तं तरुतारं
रथानाम् । अरिष्टनेमिपुत्रनाजमाभु स्वस्तये
ताक्ष्यमिहाहुवेम ॥ १ ॥ १००

(इह) यज्ञे (स्वस्तये) क्षेमाय (तम्) (यम्) बालं (देवजूतं) सोमा
हरणाय देवेषु प्रेरितं (सुवाजिनम्) सुपुत्रवन्तं त्वं (सहोवानम्)
वलवन्तं । सुहस्रशब्दाहनिपमत्वर्थीयः (पुत्रनाजम्) देवसेनाया
जेतारं (आमृतम्) शीघ्रगामिनं (अरिष्टनेमिम्) इन्द्रस्य वज्रेणा-
हिंसितं नि० २।२० (रथानाम्) वैष्णावरथानां (तरुतारम्) वृक्षज-
ध्वजायास्तारकं (ताक्ष्यम्) ईशावतारं गरुडं (उ) अपि (आहुवेम)

भाषार्थः - १ इसयज्ञमें २ क्षेमकेलिये ३ उस ४ बालक ५ सोमला
नेकेलिये देवताश्लोमें प्रेरित ६ पिताके वताये अन्नसे त्वम् ७ बलवान् ८
देवसेनाके जेता ९ शीघ्रगामी १० इन्द्रके वज्रसे अहिंसित ११ वैष्णावरथों
की १२ ध्वजाके तारक १३ ईशावतार गरुडको १४ भी १५ हम आह्वानक
रते हैं ॥ १ ॥

भरद्वाज ऋषिष्विष्टुषु छन्दो इन्द्रो देवता

जातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवे
भूरमिन्द्रम् । हवनुशकं पुरु इतमिन्द्रमिदं
हविमघवावत्विन्द्रः ॥ २ ॥ १०१

र्मबाले ३ घोड़ोंके ४ आनेता ५ इन्द्रको ६ सोमनामहविषोंसेहम पूजनकरते हैं वह ७ डाढ़ी मूछोंको ८ बारम्बार कंपित करता ९ ऊंची धारणा करता १० प्रकट होता है ११ मरुद्गणादिकी सेनाओंसे १२ शत्रुओंको कंपाता १३ धनकेद्वारा १४ विशिष्ट होता है ॥ ३ ॥ १०२ ॥

अथाध्यात्मम् - वागाद्यत्विजां वचनं वयं (वज्रदाक्षिणाम्) - ज्ञानवज्रधरं (इन्द्रम्) आत्मारूपं यजमानं (विब्रतानाम्) विविधकर्मणां (हरीणाम्) प्राणानां (रथ्या) मार्गेण (यजामहे) आत्मप्रतिविंवारव्यहृविषा पूजयामः सः (श्मश्रुभिः) श्मश्रुप्रभृतिरोमैः सहदेहं (दोधुवत्) कम्पयन् सन्माणां (ऊर्ध्वाः) (विभुवत्) किञ्च (सेनाभिः) श्मादिसेनाभिः (भयमानः) कामादीन्कम्पयन्सन् (राधसा) योगैश्वर्येण (वि) विशिष्टो भवति ॥ ३ ॥

भाषार्थः वाक् आदिऋत्विजोंका वचन हम १ ज्ञानवज्रधारी २ आत्मारूपयजमानको ३ विविधकर्मबाले ४ प्राणोंके ५ मार्गसे ६ आत्मप्रतिविं वनामहविकेद्वाराहम पूजते हैं वह ७ श्मश्रु आदिरोमों सहितदेहको ८ कंपित करता ९ प्राणको १० ऊंचाधारणा करनेवाला ११ होता है और १२ श्मश्रु आदिसेनाओंसे १३ काम आदि को कंपित करता १४ योगैश्वर्यसे १५ विशिष्ट होता है - ॥ ३ ॥ निस्त्रेणां वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो देवता-

सत्राहणादा धृषितु भ्रमिन्द महामपार वृषभ थं सु

वज्रम् । हन्ता यो वृषं थं सानिता तवाजन्दाता मघानि

मघवासुराधाः ॥ ४ ॥ १०३

(यः) परमेश्वरः (वृषम्) पापं (हन्ता) (मघवा) मघवान् धनवान् (वाजम्) अन्नं (सानिता) दाता (उत्त) अपिच (सुराधाः) शोभनधन

युक्तः तं (मघानि) धनानि (दाता) (सत्राहणं) रुद्ररूपेण सर्वस्य
 हन्तारं (दाधीपिं) विष्णु रूपेणाति शयेन धर्षकं (नुषुम्) अन्नर्यामि
 रूपेण सर्वस्य प्रेरकं । नुमिः प्रेरणकर्मा (महां) महापुरुष रूपेण महान्
 न्तं (अपारम्) ब्रह्मात्मनाऽपारं (वृषभम्) सूर्यरूपेण वर्धितारं (सु
 वज्रम्) इन्द्ररूपेण वज्रधरं वेदास्तुवन्तीत्यर्थः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ जोपरमेश्वर २, ३ पापनाशक ४ धनवान् ५, ६ अन्नदाता
 ७ और ८ शोभनधनवाला ९, १० धनदाता है उस ११ रुद्ररूपसे सब के हन्ता
 १२ विष्णु रूपसे अति शय धर्षक १३ अन्नर्यामी रूपसे सबके प्रेरक १४ महापु
 रुष रूपसे महान् १५ ब्रह्म नामसे अपार १६ सूर्यरूपसे कृषि कर्ता १७ इन्द्र
 रूपसे वज्रधारी को वेद स्तुति करते हैं - ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

यो नो वनुष्यन्नेभिदाति मत्त उगोणा वामन्यमान
 स्तुरावा । क्षिधी युधा शवसा वातमिन्द्राभीष्याम
 वृषमाणस्त्वोताः ॥ ५ ॥ १०४

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यः) (मत्तः) मनुष्यः (वनुष्यन्) हन्तुमिच्छन्
 (नः) अस्मान् (अभिदाति) आभिमुख्येन छिनत्ति (वा) अथवा (उग
 णाः) भूतप्रेतादयः (वा) (मन्यमानः) अहंकारास्पदं (तुरः) हिंसकं
 मनःतुर्वतिवधकर्माणि ० २ । १८ (वा) (क्षिधी) क्षिप्तयेधीयते कि
 यते अनेनेति स्रयकरः कामः (युधा) युद्धेन पीडयति (वृषमाणः)
 वृषांडुवाचरन्तः (त्वोताः) त्वया उता रक्षिता वयं (तम्) शत्रुसमूहं
 (शवसा) वलेन योगवलेन वा (अभीष्याम) अभिभवेम ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जो ३ मनुष्य ४ मारना चाहता ५ हमको ६
 सन्मुख होकर घायल करता है ७ अथवा ८ भूतप्रेत आदि ९ वा १० अहंका-

रास्पद ११ हिंसक मन १२ वा १३ क्षयकर्ता काम १४ युद्धसे पीडा देता है १५
 वृषकी समान घूमते १६ आपसे रक्षित हूँ १७ उस शत्रु समूह को १८ बलवायो-
 गत्रलसे १९ जय करे - ॥ ५ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

य^३वृ^३त्रेषु^{१२}क्षि^३तय^३स्पृ^३ह्यमाना^३य^३यु^३क्तेषु^३तुर^३यन्ता^३हवन्ते^३
 य^{१२}थं^{१२}भूर^३सातो^३यम^३पामु^३पज्म^३न्य^३वि^३प्रा^३सो^३वा^३ज^३यन्ते^३
 स^३इ^३न्द्रः^३ ॥ ६ ॥ १० ४

(क्षि^३तयः) मनुष्याः नि० २। ३ (वृ^३त्रेषु) पापेषु (स्पृ^३ह्यमानाः) सन्तः
 (यम्) (हवन्ते) आह्वयन्ति (युक्तेषु) प्राणोन्द्रियाणामात्मनि युक्ते
 षु (तुरयन्तः) कामादीन् हिंसन्तः (यम्) आह्व० (भूरसातो) काम
 संग्रामे (यम्) आह्व० (अपामु) अमृतोदकानां (ज्मन्) ज्मनि भू-
 मोगगनमाडले (यम्) (उप) उपाह्वयन्ति (विप्रासो) मेधाविन-
 (यम्) (वाजयन्ते) पूजयन्ति वाजयतीति अर्चति कर्माणि ०३। १५
 (सः) (इन्द्रः) परमेश्वरः ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ मनुष्य २ पापोंमें ३ स्पृह्यकरते ४ जिसको ५ आह्वान क-
 रते हैं ६ प्राणोन्द्रियोंके आत्मा में युक्त होनेपर ७ काम आदि को मारते ८
 जिसे आह्वान करते हैं ९ काम संग्राममें १० जिसे आह्वान करते हैं ११ १२ अ-
 मृतजलोंकी भूमि गगन मंडल में १३ जिसे १४ समीप आह्वान करते हैं १५
 मेधावी ब्राह्मण १६ जिसे १७ पूजते हैं १८ वही १९ परमेश्वर है ॥ ४ ॥

विश्वामित्र ऋषिस्त्रिषुपृच्छन् इन्द्रा पर्वता देवते-

इ^३न्द्रो^३पर्वता^३वृ^३हता^३र^३यन^३वा^३मी^३रि^३ष^३आ^३वृ^३ह^३त^३थं^३
 सु^३वी^३राः^३। वी^३त^३थं^३ह^३व्या^३न्य^३ध्व^३रेषु^३दे^३वा^३वृ^३ह^३था^३ङ्गी^३
 भि^३रि^३ड्या^३म^३द^३न्ता^३म् ॥ ७ ॥ १० ५

हे (इन्द्रा^१पर्वता) हे इन्द्रा^२पर्वतौ नरनारायणौ । जीवरूप^३पर्वीणि
 सन्तियस्यसपर्वतो नरः (बृहता^४) महता (रथेन^५) आगत्य (वा-
 मीः) सम्भजनीयाः (सुवीरोः^६) शोभनपुत्रोपेताः (दुषः^७) अन्नानि
 (आवहन्तम्) अस्मासु धारयन्तं प्रयच्छन्तमित्यर्थः किञ्च हे-
 (देवा^८) देवौ नरनारायणौ (अध्वरेषु^९) यज्ञेषु (हव्यानि^{१०}) हवींषि (वी-
 तम्) भक्षयन्तमूतथा (इडयो^{११}) अस्माभिर्दत्तेनान्नेनानि० २।७
 (मदन्ता^{१२}) मदन्तौ हृष्यन्तौ युवां (गीर्भिः^{१३}) स्तुतिभिः (वर्द्धथां^{१४}) प्रवृ-
 द्धौ भवतौ ॥ ७ ॥

भाष्यार्थः - १ हे नरनारायण २ बड़े ३ रथकी सवारी से आकर ४ सेवनये
 ग्य ५ श्रेष्ठ पुत्र से युक्त ६ अन्नोंको ७ हमें दो ८ हे नरनारायण देवताओं ९ यज्ञों
 में १० हविषोंको ११ भक्षण करो तथा १२ हमारे दिये अन्नसे १३ हर्षित तुम दो
 नों १४ स्तुतियोंसे १५ प्रवृद्ध हूजिये ॥ ७ ॥

रेणु ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता-

इन्द्रो^१यगिरो^२अनि^३शित^४सर्गाः^५अपः^६प्रैरयन्सगरस्य^७
 बुभ्रातु^८। यो^९अक्षणे^{१०}वच^{११}क्रियो^{१२}शचीभि^{१३}विष्वक्स्त-
 म्भृष्टि^{१४}वीमुनद्याम् ॥ ८ ॥ १०७

(अनिशित सर्गाः) शान्तिरूपसङ्घातवन्तः (गिरोः) अनाहतशब्दा
 (सगरस्य) गगनांतरिक्षस्थानि० १।२ (बुभ्रातु) प्रदेशात् (इन्द्रोय)
 आत्मारूपयजमानाय (अपः) अमृतोदकानि (प्रैरयन्) (यः) आ-
 त्मा (शचीभिः) कर्मभिः नि० २।१ (ष्टिवीम्) (उत) अपिच (द्याम्)
 दिवं मनोभृकुटीवा (विष्वक्) सर्वतः (तस्तम्भ) अस्तम्भात् (द्व)
 यथा (चक्रियो) द्यचक्रौचक्रतुल्यो मनः प्राणौ (अक्षणे) योग

रथाक्षेण ॥८॥

भाषार्थः

१ शान्तिरूपसंघात बाले २ अनाहतशब्दोंने ३ गगनान्तरिक्षके ४ प्रदेशसे
५ आत्मारूपयजमानके लिये ६ अमृतजलोंको ७ प्रेरितकिया ८ जिसआ-
त्माने ईश्वरकोसे ९ पृथिवी १० और ११ स्वर्गवाभृकादि मनको १२ सबओ-
रसे १३ स्तम्भितकिया १४ जैसे १५ चक्रानुल्य मन माण १६ योगरथाक्ष-
द्वारा ॥८॥ वामदेवऋषिष्विष्टुप् छन्दो देवता-

आत्वा^३ सर्वायः^१ सर्वा^३ ववृत्त्यु^३ स्तिरः^३ पुरु^३ चिद^३ ए^३
वा^३ ज्जु^३ ग^३ म्याः^३ ॥ पि^३ तु^३ न^३ पा^३ त^३ मा^३ द^३ धी^३ त^३ वे^३ धा^३ अ^३ स्मि^३
न^३ क्ष^३ ये^३ प्र^३ त^३ रा^३ दी^३ द्या^३ नः^३ ॥ ८ ॥ १०८

हे परमेश्वर (सर्वायः) भक्तजनाः (सर्वा) भक्तिभावेन (त्वा) त्वां
(ववृत्त्युः) अभिमुखं कुर्वन्ति यस्मात् (वेधा) मेधावीत्वं (तिरः)
तिर्यग्भूत्वा (पुरु चिद ए) मनः। मनोवैसमुद्रः शं०
७। १। २। ५२ (जगम्याः) अगच्छः (अस्मिन्) (क्षये) शरीररूपगृहे
(एतराम्) प्रकृष्टं (दीद्यानः) अन्नर्यामिरूपेण दीप्यमानः सन्-
(पितुः) महानारायणस्य (नपातम्) पौत्रमात्मप्रतिविंबं (आदधी-
त) महानारायणस्य पुत्र ईशस्तस्य पुत्र आत्मप्रतिविंब इति ॥ ८ ॥

भाषार्थः -

हे परमेश्वर १ भक्तजन २ भक्तिभावसे ३ तुमको ४ सन्मुख करने हैं ५ जिस कारण मेधावी तुम ६ तिरछे होकर ७ विस्तीर्ण ८ मनमें-
ई विराजमान हुए ९ इस ११ शरीररूप गृहमें १२ प्रकृष्ट १३ अन्नर्यामीरु-
पसे दीप्यमान होते १४ महानारायण के १५ पौत्र आत्मप्रतिविंबको १६ स-
पने आत्मा में धारण करो - ॥ ८ ॥

मोतमऋषिष्विष्टुप् छन्दो जीवेशो देवते-

कोऽद्य युक्ते धुरिगा ऋतस्य शिमी वतो भामिनो दु
 हृणा यून । आसन्नेषा मप्सु वाहो मयो भून्य एषा
 भृत्या मृण धत् सजीवात् ॥ १० ॥ १०८

(अद्य) अस्मिन्काले (ऋतस्य) सत्यस्य योगरथस्य (धुरि) शि
 मीवतः) योगक्रियोपेतान् नि० २।१ (भामिनः) तेजसा युक्तान्
 (दुहृणायून) परैर्दुसहेन् क्रोधेन युक्तान् नि० ३।१३ (अप्सुवाहो
 अन्तरिक्षेषु मापकान् (मयोभून्) सुखप्रदान् (गाः) माणान् (क
 प्रजापतिरेव । कं वै प्रजापतिः श० २।५।२।१३ (युङ्क्ते) (यः) यो
 गी (एषाम्) प्राणरूपाश्वानां (आसन्) आस्ये मुखे (भृत्याम्) भ
 रणयोग्यां योग रक्षानां (ऋण धत्) धारयति । ऋणाद्धि परिचर
 ण कर्मानि० ३।५ (सः) (जीवात्) जीवन्मुक्तो भवेत् ॥ १० ॥

भाष्यार्थः - १ अद्य २ योगरथकी ३ धुरिमें ४ योगक्रियावान् ५ तेजस्वी
 ६ शत्रुओंके दुःसह क्रोधसे युक्त ७ अन्तरिक्षोंमें पहुंचाने वाले ८ सुखदाता
 ९ प्राणोंको १० प्रजापतिही ११ युक्त करता है १२ जो योगी १३ इन प्राणरूप
 घोड़ोंके १४ मुखमें १५ धारण योग्य १७ योग रक्षनाको १६ धारण करता है
 १७ वह १८ जीवन्मुक्त होवै ॥ १० ॥ १०८

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वाला प्रसादशर्मविरचिते साम
 वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्यैकादशः खण्डः

इति त्रैष्टुभमैन्द्रम् - अथ द्वादशः खण्डः

मधुच्छन्दा ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

गायन्ति त्वा गायत्रिणा चन्त्यकं मकिणः । ब्रह्मा
 एस्त्वा शतकृत उद्धृशामिवयेमिरे ॥ १॥ ११०



हे (शतक्रतो) वद्भकर्मन्परमेश्वर (त्वा) त्वां (गायत्रिणां) गायत्रं
 सामतस्योद्गतारः (गायन्ति) स्तुवन्ति नि० ३।१४ (अर्चिणां) अर्च-
 च्चन हेतुमन्त्रयुक्ताहोतारः (अर्चन्) अर्चनीयं त्वां (अर्चन्ति) -
 शास्त्रगतैर्मन्त्रैः प्रशंसन्ति (ब्रह्माणां) ब्रह्मभृतयः दूतरे ब्राह्म-
 णाः (त्वा) त्वामेव (उद्येभिरे) उन्नतिं प्रापयन्ति (द्वे) यथा (वंश-
 म्) पुत्राः स्वकीयं कुलमुन्नतं कुर्वन्ति ॥ १॥

भाषार्थः - श्वेद्वकर्मपरमेश्वर २ तुमको ३ गायत्रसामके गाना ४
 गाने है ५ होता ६ तुम पूजनीयको ७ प्रशंसा करते हैं ८ ब्रह्मा आदि ब्राह्म-
 ण ९ तुमको ही १० उन्नति प्राप्त करते हैं ११ जैसे १२ पुत्र अपने कुल को
 उन्नत करते हैं - ॥ १॥ जैतां माधुश्चन्द्रसक्तरपिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रं विश्वा अवी वृधन्समुद्रव्यचसदिरः । रथी

तमथं रथानां वाजानां थं सत्यातिं पातिम् ॥ २ ॥ १११

(विश्वाः) सर्वाः (गिरः) वेदस्तुतयः (समुद्रव्यचसं) मनो व्याप्तव-
 न्तं मनो वै समुद्रः शू० ७।५।२।५२ (रथीनाम्) योगरथयुक्तानां
 योगिनां (रथीतमम्) योगेश्वरं (वाजानां) यजानां (पातिम्)
 स्वामिनं (सत्यातिम्) सन्मार्गवर्तिनां भक्तानां पालकपरमेश्वरं
 (अवीवृधन्) वर्द्धितवत्यः । नान्यंतस्य सर्वरूपत्वात् ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ सव २ वेदस्तुति ३ मनमेव्याप्त ४ योगरथारूढ योगियों
 के ५ योगेश्वर ६ यज्ञोंके स्वामी ७ भक्तपालक ८ परमेश्वरको ही ९
 बढ़ाती हैं उसके सर्वरूप होनेसे ॥ २ ॥

गौतमक्तरपिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

इमामिन्द्रसुताम्पिवज्येषममत्यमदम् । भुक्तस्य

३क १२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
 त्वाभ्यक्षरन्धारां ऋतेतस्य सादने ॥ ३ ॥ ११२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ज्येष्ठम्) योगप्रभावाज्ज्येष्ठं (मदम्) मदरूपं (अमर्त्यम्) तवांशत्वाद् विनाशिनं (सुतम्) अभिषुतं (इमम्) आत्ममतिविंवं (पिव) यस्मात् (ऋतस्य) योगयज्ञस्य (सादने) अ + सदाने ललाटरूपगृहे (शुक्रस्य) मानससूर्यस्य । एष वै भुक्तो य एष तपति श० ४। ३। १। २६ (धाराः) इन्द्रियशक्तिरूपधाराः (त्वा) त्वां (अभ्यक्षरन्) त्वां प्राप्तुं सयमेवागच्छन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ योगप्रभावसे ज्येष्ठ ३ मदरूप ४ आपका अंश होनेसे अविनाशी ५ अभिषुत ६ इत्स आत्ममतिविंवको ७ पानकरो जिस कारण ८ योगयज्ञके ललाटरूपगृहमें ९ मानससूर्यकी १० इन्द्रियशक्तिरूपधारा १२, १३ तुम्हें प्राप्त करने को आपही आती हैं ॥ ३ ॥

अत्रि ऋषि रनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

यदिन्द्र चित्रम इह नास्ति त्वादात मदिवः । रा

धस्तन्ना विदद्दस उभया हस्त्याभर ॥ ४ ॥ ११३

हे (चित्र) सर्वेभ्यो विलक्षणत्वाद्भुत (अद्विव) विराडात्मसूर्यानां धारका विदद्दसो) ज्ञानधनविद ज्ञाने (इन्द्र) परमेश्वर (यतमे) मम (राध) धनं (इह) अस्मिन् लोके (न) (अस्ति) (त्वादातम्) त्वया दातव्यं (तत्) धनं योगधनंच (उभयो) ऐहिकपारलौकिकभेदवत्या (हस्त्या) हस्तगृहीतया धनशक्त्वा (न) अस्मभ्यम् (आभर) आहर देहि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वविलक्षण होनेसे अद्भुत २ विराडात्मासूर्योके धारक ३ ज्ञानधन ४ परमेश्वर ५ जो ६ मेरा ७ धन ८ इत्सलोकमें ९ नहीं १०

हे ११ तुभसे देने योग्य १२ वह धनवा योगधन १३ रोहिक पारलौकिक भेद
वती १४ हस्तगृहीत धनशक्ति द्वारा १५ हमारे लिये १६ दीजिये ॥ ४ ॥

तिरश्ची आङ्गिरस ऋषि रनुपुष्ये इन्द्रो देवता-

^{३ १३ २२ ३ २३ ३ १ ३ ३ १ ३ ३}
अधीहवन्ति रश्च्या इन्द्रयस्त्वो सपर्यति सुवी
^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
र्यस्य गोमतो रायस्पृद्धि महो थं स्पृसि ॥ ५ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यः) जीवात्मापशुः (तिरश्च्या) बुद्धिरूपपत्न्या
सह (त्वा) त्वां (सपर्यति) परिचरतितस्य (हवम्) आह्वानं (अधी)
भृणु (सुवीर्यस्य) शोभनवीर्योपेतस्य (गोमतः) गोलोकस्य (रा
यः) धनं (स्पृद्धि) पूरय देहि यस्मात्त्वं (महान्) महापुरुषः (स्पृसि)

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जीवात्मापशु ३ बुद्धिरूपपत्नी के साथ-
४ तुमको ५ सेवन करता है ६ उसके आह्वानको ७ सुनो ८ शोभन बल युक्त
९ गोलोकके १० धनको ११ दो जिस कारणतुम १२ महापुरुष १३ हो ॥ ५ ॥

गौतम ऋषि रनुपुष्ये इन्द्रो देवता-

^{१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३}
असाविसोम इन्द्रते शविष्ठ धृषावागहि आत्वा
^{३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३}
पणात्किन्द्रियं थं रजः सूर्यान् रश्मिभिः ॥ ६ ॥ ११५

हे (शविष्ठ) अति शयेन बलवन् (धृषावा) असुराणां धर्षयितः
(इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदर्थं (सोमः) आत्मप्रतिविवः (असाविवृ)
अभिषुतोः भूत् (आगहि) आगच्छ प्रादुर्भव (त्वा) त्वां (इन्द्रिय
म्) इन्द्रिय समूहः (आपणात्कु) व्याप्नोतु । एव सम्पर्के (ने) य-
था (सूर्यः) (रजः) लोकान् (रश्मिभिः) किरणैर्व्याप्नोति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अति शय बली अंसुरोंके जीतने वाले ३ परमेश्व
र ४ आपके लिये ५ सोमवा आत्म प्रतिविव ६ अभिषुत हुआ ७ आसो ८

तुमको ८ इन्द्रियसमूह १० प्राणकरो ११ जैसे १२ सूर्य १३ लोकोको १४ किरणों से व्याप्त करना है ॥ ६ ॥

कण्वोनीपातिथिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दइन्द्रो देवता-

एन्द्रयाहिहरिभिरुपकएवस्य सुष्टुनिम् । दिवो
अमुष्यशासतो दिवययदिवावसो ॥ ७ ॥ ११६

हे (दिवोवसो) सूर्यरूप (इन्द्र) परमेश्वर (दिवः) भृकुटेः (शास-
तः) (अमुष्य) (कएवस्य) मेधाविनो योगिनः (सुष्टुनिम्) शोभ-
नां स्तुतिं प्रति (हरिभिः) ब्रह्मविष्णु महेशादिरूपैः (उपायाहि)
आगच्छ (दिवम्) स्वलोकं (यय) प्रापय । यागतौ ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे सूर्यरूप २ परमेश्वर ३ भृकुटिका ४ शासन करते-
५ इस ६ मेधावी योगी की ७ शोभनस्तुतिप्रति ८ ब्रह्मा विष्णु महेशादि
रूपों से ९ आओ १० अपनेलोकको ११ प्राप्त कराओ - ॥ ७ ॥

द्वयोस्तिरश्चीरुषिरनुष्टुप्छन्दो देवता

आत्वो गिरो रथी रिवोस्थः सुतेषु गिर्विणाः । अभित्वो
सुमनूपत गावो वत्स न धेनवः ॥ ८ ॥ ११७

हे (गिर्विणाः) गीर्भिर्वननीयपरमेश्वर (सुतेषु) सोमेषु । प्राणोन्द्रि-
यात्मप्रतिविवेष्वभिपुतेषु सत्सु (गिरैः) वेदस्तुतयः (रथी) (द्व-
व) (त्वो) त्वाम् (आस्थुः) अभिमुख्येन शीघ्रं गच्छन्ति तथा-
(त्वा) त्वां (अभि) अभिलक्ष्य (समनूपत) सम्यक् स्तुवन्ति (ने-
यथा (धेनवः) (गावः) (वत्सम्) अभिलक्ष्य हम्भारवादिशब्दं
कुर्वन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ हे वेदवाक्यों से संभजनीय परमेश्वर २ सोमवा प्राण इन्द्रियआत्मप्र-

तिविंवके अभिषुत हाने परं ३ वेद स्तुति ४ रथीके समान ६ आपके ७ सन्मुख शीघ्र
जाती हैं तथा ८ तुमको ९ सन्मुख देखकर १० भले प्रकार स्तुति करती हैं ११ जै
से १२-१३ धेनुगौ १४ बछड़ेको देखकर हम्भा आदि शब्द को करती हैं ॥ ८ ॥

विश्वामित्र ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

३ ३ ३ ३ १ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
एतो न्विन्द्रं थं स्तवाम भुद्धं थं भुद्धेन साम्ना । भुद्धे
३
रुक्थै वा वृध्वा थं स थं भुद्धे राशीर्वान्ममत्तु ॥ ८ - ११८

हे ऋत्विजः (तु) सिप्रं। नि० २। १५ (एतो) आगच्छतैव (भुद्धेन)
(साम्ना) (भुद्धे) (रुक्थै) शस्त्रैः (भुद्धे) (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्व-
रं वा (स्तवाम) स्तुयाम (आशीर्वान्) गव्यादिभिः संस्कृतः सोमः ।
निरुद्ध प्राणेन सहित आत्मप्रतिविंबो वा (भुद्धे) सामभिरुक्थैश्च
(वा वृध्वासं) वर्द्धमानमिन्द्रं परमेश्वरं वा (ममत्तु) मादयतु (माद्यते)
श्चान्दसः श्नुः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विजो १ शीघ्र २ आशोही ३ भुद्ध ४ साम ५ और भु-
द्ध ६ शस्त्रों से ७ भुद्ध ८ इन्द्र वा परमेश्वर को ९ स्तुत करे १० गव्य आदि से
संस्कृत सोमवानिरुद्ध प्राण सहितात्मप्रतिविंब ११ भुद्ध साम और शस्त्रों
से १२ वर्द्धमान इन्द्र वा परमेश्वर को हर्षित करो ॥ ८ ॥

शंयुर्वाहीस्पत्य ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

३
यो रायि वीर्ये न्न मा यो द्यु न्ने द्यु मन् वत्तमः । सामैः
३
सुतः स इन्द्रतः स्ति स्वधा पते मदः ॥ १० ॥ ११९

हे (स्वधापते) (इन्द्र) परमेश्वर (यै) (वै) निवृत्तात्मा (रायिम्) तव ध-
नरूपः परारूपत्वात् (रायिन्तमः) अतिशयेन योगधनवान् (यै) (द्यु-
न्ने) यशोभिः (द्युमन्वत्तमः) अतिशयेन यशस्वी (सैः) (सुतः) आभि-

घृतः (सोमः) ^{१२}आत्मप्रतिविंबः (ते) ^{१३}नव (मदः) (अस्ति) ^{१४}॥ १० ॥

भाषार्थः - हे अमृतपति २ परमेश्वर ३ जो ४ निवृत्तात्मा ५ तेरा धन रूप है परा रूप होने से ६ जो महा योग धनवान है ७ जो ८ यज्ञों के द्वारा ९ प्रति यशस्वी है १० वह ११ अभिपुत्र १२ आत्मप्रति विंब १३ तेरा १४ मदरूप- १५ है ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य द्वादश-खण्डः ॥

अथ चतुर्थाध्याय आरभ्यते

तत्र प्रथमः खण्डः

भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^१प्रत्यस्मै ^२पिपीषते ^३विश्वानि ^४विदुषे भर। ^५अरुद्रमायै ^६जग्मयेऽपश्चाद्दुधने नरः ॥ १ ॥ १२० ॥

हे (अध्वर्यो योगिनु (नरः) प्राणानां नेतस्त्वं (अस्मै) (पिपीषते) पानुमिच्छते (विश्वानि) सर्वाणि (विदुषे) सर्वज्ञाय (अरुद्रमायै) पर्याप्तगमनाय (जग्मये) यज्ञेषु प्रादुर्भावशीलाय (अपश्चाद्दुधने) सर्वेषामग्रगामिने सर्वगत्वात् दधिर्गति कर्मानि ० २। १४ परमेश्वराय (प्रतिभर) सोममात्मप्रतिविम्बं वा प्रतिहरप्रयच्छ ॥ १ ॥

भाषार्थः - हे अध्वर्यु वा हे योगी १ प्राणों के नेता तुम २ इस ३ पानेच्छु ४, ५ सर्वज्ञ ६ पर्याप्तगमनवाले ७ यज्ञों में प्रादुर्भावशील ८ सर्वगन होने से सबके अग्रगामी परमेश्वर के लिये ९ सोमवा आत्मप्रतिविंब को दो - ॥ १ ॥

वामदेवः शाक पूतो वा ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^१आनो ^२वयो ^३वयः शयमहान्तं ^४गह्वरेषां ^५महान्तं ^६पूर्वि ^७नेष्टाम्। ^८उग्रवचो ^९अपावधीः ॥ २ ॥ १२१ ॥

वागाद्यत्विजां प्रार्थनाहे परमेश्वर (नः) अस्माकं (वयः) जीवरूपं
 सुपर्णतथा (वयः शयं) जीवरूपः सुपर्णः शय्यायस्यतं (महान्तम्)
 अन्नयीमिनं (गह्वरेष्वां) मानसगुहायां वर्तमानं (महान्तम्) म
 नः (पूर्वनेष्टाम्) पूर्वकर्त्तरि स्थितां बुद्धिञ्च (आ) आहर स्वात्मनि
 स्थापय (उग्रम्) भयंकरं (वचः) क्षुधितो हन्तृपितो हामित्यादिः (अ
 पावधीः) अपजहि ॥ २ ॥

भाषार्थः - वाक् आदि ऋत्विजों की प्रार्थना - हे परमेश्वर २ हमारे २ जी
 वरूप सुपर्णको तथा ३ अन्नयीमी ४ मानसगुहामें वर्तमान ५ मनको ७ पूर्वक
 र्त्तारिमें स्थित बुद्धिको ८ अपने आत्मामें स्थापन करो ९ भयंकर १० में भूतामें
 प्यासइस वचनको ११ दूर करो - ॥ २ ॥

प्रियमेध ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

आत्वारथं यथा तय सुन्नायै वर्त्तयामसि । तु विकृ
 मि मृतीषहं मिन्द्रं शविष्ठ सत्यतिम् ॥ ३ ॥ १२२

हे (शविष्ठ) बलवन्तम् (तु विकृमिम्) बहुब्रह्माण्डानां कर्त्तारं (ऋती-
 षहं) हिंसकानामभिभवितारं (सत्यतिम्) सतां पालकं (इन्द्रम्)
 परमेश्वरं (त्वा) त्वां (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (सुन्नाय) मोक्षसु-
 खाय च (आवर्त्तयामसि) आवर्त्तयामः (यथा) (रथम्) रक्षणाय सु
 खाय च वर्त्तयन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे महाबली २ ब्रह्मण्डानोंके कर्त्ता ३ हिंसक जयी ४ सत्पु
 रुषपालक ५ परमेश्वर ६ तुमको ७ संसारसे रक्षाकेलिये ८ और मोक्षसुखके
 लिये ९ अनुभव गोचर करते हैं १० जैसे ११ रथको रक्षा और सुखके लिये आमकर

सृष्ट्या महानावेनः क्रतुभिरानजे । यस्य द्वारो मनुः
पिता देवपुत्रिय आनजे ॥ ४ ॥ १२३-

(सः) (वेनः) मेधावी (महानोम्) मघोनां योगधनवतां मध्ये (पूर्व्यः)
मुख्यः यः (क्रतुभिः) योगयज्ञैः (आनजे) आत्मतत्त्वं व्यक्ती करोति-
(मनुः) द्युस्थानदेवता (यस्य) (द्वारा) द्वाराणि प्रास्युपायानि (धियः)
कर्माणि बुद्धीर्वा (आनजे) व्यक्ती करोति । अनजव्यक्तौ स (देवेषु)
विद्वत्सु । विद्वं सोहि देवाः श० ३।७।३।१० (पिता) पितृवत्पूज्यः ॥ ४

भाषार्थः - १ वह २ मेधावी ३ योगधनियोंके मध्य ४ मुख्यहै जो प्रयोग
यज्ञोंसे ६ आत्मतत्त्वको अनुभव करता है ७ स्वर्गका देवता ८ जिसके ९ प्राप्तिउपा
ओंको १० और कर्मवाबुद्धिको ११ प्रकट करता है वह १२ विद्वानोंमें १३ पिताकी
समानपूज्य होता है ॥ ४ ॥

श्यावाश्व आत्रेयऋषि रनुषु चन्द्र आत्मा देवता-

यदी वहन्त्या शशी भ्राजमाना रथेष्वो ॥ पिवन्तो म-
दिरमधु तत्र ऋवा थं सिकृ एवते ॥ ५ - १२४

(यदी) यत्र समाधि काले (भ्राजमानाः) दीप्यमानाः (आश्वः) क्षिप्र-
गामिनः आत्मा रूपयोगिनः (रथेषु) कमलेषु (आवहन्ति) स्वात्मानं
प्रापयन्ति (तत्र) (मदिरम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदस्य कर्त्तारं (मधु) आ-
त्म प्रतिविंबं (पिवन्तः) (ऋवा थं सिकृ) स्थूल सूक्ष्म कारण देह रूपान्ता-
नि (कृ एवते) हिंसन्ति कृत्वा हिंसायां ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ जिस समाधिकालमें २ दीप्यमान ३ शीघ्र गामी आत्मारूप-
योगी ४ कमलोंमें ५ अपने आत्माको प्राप्त करते हैं ६ वहां ७ में ब्रह्महं इस मदके
कर्त्ता ८ आत्मप्रतिविंबको ९ पान करते १० स्थूल सूक्ष्म कारणरूप अन्तोंको ११

नाशकतेहै ॥ ५ ॥ शंयुंरूपिनुष्टुपुखन्द इन्द्रो देवता-

न्यमुवाञ्च प्रहृणं गृणीषे शवसस्पतिम् । इन्द्रं विश्वा

साहनरथं शचिष्ठं विश्ववेदसम् ॥ ६ ॥ १२५

(य) हेयोगिन् (वः) निवृत्तात्मात्वं (तम्) (अप्रहृणं) अप्रहर्त्तारं भ
क्तानामनु ग्राहकं (शवसस्पतिम्) वल्लपतिं (विश्वासाहं) सर्वश
त्रोरंभिभवितारं (नरम्) नेतां (शचिष्ठं) उत्पत्तिपालनसंहारक-
र्माणस्थितं (विश्ववेदसम्) महाधनपतिं परमेश्वरं (उं) एव (गृणी
षे) नान्यंतस्यान्याभावात् ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे योगी २ निवृत्तात्मा तु म ३ उत ४ भक्तानु ग्राही ५ वल्लप
ति ६ सर्वजयी ७ नेता ८ उत्पत्तिपालनसंहारकर्मणो स्थित ९ महाधनपतिप
रमेश्वरको १० ही ११ स्तुत करते हैं - ॥ ६ ॥

वामदेवऋषिरनुष्टुपुखन्दो दधिक्रावादेवता

दधिक्रावाणो अकारिषं जिषो रश्वस्य वाजिनः ।

सुरभिनी मुखो करत्पुन आयूँ धितारिषत् ७ - १२६

वागाद्युत्विजां वचनं (जिषोः) कामजयशीलस्य (वाजिनः) वेग
वानः (दधिक्रावाः) प्राणः पयः श० ६। ५। ४। १५ निरुद्धः प्राणोद
धितेनोर्ध्वं कामतितस्य (अश्वस्य) मानससूर्यस्य श० ६। ३। १। २६
संस्कारं (अकारिषं) (नः) अस्माकं (मुखो) मुखानि (सुरभि) सुर-
भीणि (करत्) करोतु (नः) अस्माकं (आयूँधि) (प्रतारिषत्) प्रव-
र्द्धयतु ॥ ७ ॥

भाषार्थः

वाक् आदिऋत्विज कहते हैं १ कामजयशील २ वेगवान् ३ निरुद्धप्राणदा
राऊपरचलने वाले ४ मानससूर्यका ५ संस्कार किया वह ६ हमारे ७ मुखों

कोऽ सुगंधितकरे ईहमारी १० आयुको ११ वहासो ॥ ७ ॥

जेतामाधुबन्दसत्ररपिरनुपुषु बन्दइन्द्रो देवता-

पुराभिन्दयुवाकविरामितोजा अजायत इन्द्रो वि
श्वस्य कर्मणो धर्ता वञ्ची पुरुष्टुतः ॥ ८ ॥ १२७

तेन संस्कारोऽ (इन्द्रः) आत्मारूपयजमानः (पुराम्) देहानां (भि-
न्दुः) भेत्ता (युवा) अजरामरः (कविः) मेधावी (शमितोजा) मभूत
बलुः (विश्वस्य) सर्वस्य (कर्मणः) ब्रह्माण्डस्य तस्य कर्मरूपत्वात्
(धर्ता) (वञ्ची) ज्ञानवञ्चयुक्तः (पुरुष्टुत) ब्रह्मभिः स्तुतः (अजायत)

भाषार्थः - उक्तसंस्कारसे १ आत्मारूपयजमान २ स्थूलसूक्ष्मकारणा
देहोका ३ भेत्ता ४ अजरामर ५ मेधावी ६ ब्रह्मबली ७, ८ सत्त्वब्रह्माण्डका ईधा
रक १० ज्ञानवञ्चयुक्त ११ ब्रह्मसेस्तुत १२ ब्रह्मा - ॥ ८ ॥

इमिन्ती भृगुवंशा वनंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालामसादशर्म विरचिते साम
वेदीय ब्रह्मभाष्ये इन्द्रो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः १

अथ द्वितीयः खण्डः

प्रियमं पात्ररपिरनुपुषु बन्द इन्द्रो देवता-

प्रप्रवास्तिपुभमिपवन्दे हीरायन्देव । धियावाभेध
सानये पुरन्द्या विवासानि ॥ १ ॥ १२८

हे वागाशुत्विजः (वः) युष्माकं (वन्दे हीराय) योवीगान् प्राणान् स्तो-
तितस्मै । प्राणावैदशवीरः श० १२। ८। १। २२ (इन्द्रो) आत्मयानं
विवाय (विदुभं) (दुपम्) ज्ञानारूपमन्त्रं । आत्मावै विदुषु श० ६। ४
२। ६ (म्) प्रभान (म्) प्रभानयः (मेधसातये) यज्ञसम्भजनाय
(पुरन्द्या) ब्रह्मज्ञप्ता (धिया) कर्मणानि ० २। १ (वः) युष्मान-

(आविधासति) परिचरति नि० ३।५-॥१॥

भाषार्थः - हेवाक् आदिऋत्विजो १ तुम्हारे २ माए लोता ३ आत्मप्रतिबिंबके लिये ४, ५ आत्मा रूपधन्वको ६ अर्पणकरो ७ अर्पणकरो ८ जोकि यज्ञसंभजनके लिये ९ वद्धप्रज्ञावान १० कर्मके द्वारा ११ तुमको १२ सेवन करताहै ॥१॥ वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्दो नरादेवते -

कश्यपश्च स्वर्षिदोयावाहुः सयुजा विनि। ययोर्वि
श्वमपि व्रत यज्ञधीरो निचाप्य ॥ २ ॥ १२९

(स्वर्षिदोः) स्वर्गभृकुटिमण्डलं लब्धवन्तः (धीरोः) पंडिताः योगिनः (यज्ञम्) योगयज्ञं (निचाप्य) निश्चित्य समाप्य (आहुः) (यो) जीवेशो (कश्यपस्य) कश्यमहंकाररूपं मूढं पितृतीति कश्यपो भूतात्मा तस्य (सयुजो) सहवर्त्तिनो (विश्वम्) सर्वं ब्रह्माण्डं (ययोः) जीवेशयोः (व्रतम्) कर्म (दति) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ भृकुटिमंडलको पानेवाले २ पंडितयोगियोंने ३ योगयज्ञको ४ समाप्तकरके ५ कहा ६ कि जीवईश्वर ७ भूतात्माके सहवर्त्तीहैं ८ सब ब्रह्माण्ड ९ भी ११ जिस जीवेश्वरका १२ कर्महै - ॥२॥

प्रियमेधऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता -

अर्चन्त प्रार्चन्तानरः प्रियमेधासो अर्चन्त। अर्चन्तु
पुत्रका उत पुरमिदं धृषावर्चन्त ॥ ३ ॥ १३०

(प्रियमेधासः) प्रिये परमेश्वरमेधा बुद्धिर्येषांते (नरः) इन्द्रियाणां नेतारो भक्ताः (अर्चन्त) गंधपुष्पादिभिः पूजयत (प्रार्चन्त) स्तोत्रपाठेन पूजयत (अर्चन्त) ध्यानेन पूजयंत (उत) अपिच (पुत्रकाः) (पुरम्) मूर्त्तिमयं परमेश्वरं (दत्) एव (अर्चन्तु) (धृषणु) (धधात्री)

(ऋ, गणेशः) (घ, सूर्यः) (ए, विष्णुः) (उ, शिवः) रूपाणि यस्य तं परमेश्वरं (अर्चत) - ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर में बुद्धि लगाने वाले २ इन्द्रियो के नेता भक्तो ३ गधपुष्प आदि से परमेश्वर को पूजो ४ स्तोत्रपाठ से पूजो ५ ध्यान से पूजो ६ श्लोक ७ तुम्हारे बालक पुत्र ८ भूर्नि मय परमेश्वर को ९ ही १० पूजो ११ शक्ति गणेश सूर्य विष्णु शिव स्तत्र वाले परमेश्वर को १२ पूजो - ॥ ३ ॥

मधुच्छन्दाऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता

उक्तमिन्द्राय शो^३थं^२स्यं^३वर्द्धनं^३पुरुनिषि^३धि^३। शं^३क्तौ^३
यथा^३सुते^३पु^३नो^३रा^३रा^३त्स^३ख्ये^३षु^३च ॥ ४ ॥ १३२

पुरुनिषिधे) पुरूणां वहनां कामादीनां निषेधकारिणे (इन्द्राय) परमेश्वराय (वर्द्धनम्) वृद्धिसाधनं (उक्तम्) शस्त्रं (शंस्यम्) अस्माभिः शंसनीयं (यथा) (शक्तः) सर्व शक्तिमान् परमेश्वरः (नः) अस्मदीयेषु (सुतेषु) अभिपुत्रेषु प्राणोन्द्रियादिषु (च) (सख्येषु) भक्तिभावेषु (रारणत्) वरं ब्रूहीति शब्दं कुर्यात् ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ वहन कामादिके निषेधकर्त्ता २ परमेश्वरके लिये ३ वृद्धि साधन ४ शस्त्र ५ हमसे उच्चारण योग्य है ६ जैसे ७ सर्व शक्तिमान् परमेश्वर ८ हमारे ९ अभिपुत्र प्राण इन्द्रिय आदि १० और ११ भक्ति भावों में १२ वर मागौ यह शब्द उच्चारण करे - ॥ ४ ॥

प्रियमेधऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वानरस्य वस्पति मनो नतस्य शर्वसः । एवैश्व
र्षीणां मृती हुवे रथानाम् ॥ ५ ॥ १३२

हे वागाद्यत्विज आत्मा रूप यजमानोऽहं (रथानाम्) देहानां (एवैः)

मकृतौ गमनैः (चुर्षणीनाम्) कृताकृतज्ञानवतां वागाद्यत्विजां-
 (वः) युष्माकं (च) मय्यात्मनि गमनैः सह (विश्वानरस्य) सर्वजु-
 नानां (अनानतस्य) अप्रहस्य (शवसः) योगवलस्य (पातिम्)
 परमेश्वरं (ऊती) ऊतये रक्षणाय (हुवे) आह्वयामि ॥ ५ ॥

भाषार्थः - हे ऋत्विजो आत्मारूपयजमान में १ देहो के २ प्रकृति में गमन
 ३ और कृताकृतज्ञानवाले ४ तुमवाक् आदि ऋत्विजो के ५ मुझ आत्मा में
 गमनो के साथ ६ सब मनुष्यों के ७ पूज्य ८ योगवल के ९ स्वामी परमेश्वर को
 १० संसार से रक्षा के लिये ११ मैं आह्वान करता हूँ ॥ ५ ॥

भारद्वाज ऋत्विगुपुच्छन्द इन्द्रो देवता-

सघायस्ते दिवा नराधिया मन्तस्य श्मन्तः । ऊती
 सहहता दिवा द्विषांश्च १२ ह्यनूतरति ॥ ६ ॥ १३३

हे परमेश्वर (श्मन्तः) शान्तस्य (मन्तस्य) देहस्य मध्ये (यः) (नर-
 जीवः) (ते) तव (धिया) पूजन कर्मणा (दिवः) कमल समूहस्य-
 (सखा) (स) (सघायः) सहायः सहचरोऽनुकूलः । हस्य घत्वं (द्वि-
 हतः) महतः (दिवः) कमल समूहस्य (ऊती) ऊत्या रक्षया (द्वि-
 षः) द्वेषून् कामादीन् (अंहः) (न) पापमिव (तरति) अतिकाम-
 ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः

हे परमेश्वर १ शान्त २ देह के मध्य ३ जो ४ जीव ५ आपके पूजन कर्म से ६ क-
 मल समूह का ७ सखा है वह १० सहचर भक्त ११, १२ कमल समूह की १३ र-
 खा द्वारा १४ द्वेषाकाम आदिको १५, १६ पापकी समान १७ अतिक्रमण कर-
 ता है ॥ ६ ॥ अविश्वानरस्य इन्द्रो देवता-

विभोष्ट इन्द्रो राधसो विभ्वी रतिः शतक्रतो । अथो

नोविश्व चर्षणोद्युम्नं सुदत्रमथंहय ॥७॥ १३३४
 हे (सुदत्र) कल्याणदान (विश्वचर्षणो) सर्वस्यद्रष्टः (शतकतो)
 बहुकर्मन्परमेश्वर (विभोः) प्रभूतस्य (राधसे) धनस्य योगधन
 स्यवा (ते) तव (रातिः) दानं (विन्वी) महत् (अथ) अतः कारणात्
 (ने) अस्मभ्यं (द्युम्नं) धनं योगधनम्वा (महये) प्रयच्छन्नि० ३१२०
 ॥७॥ **भाषार्थः**

१ हे कल्याणदान २ सबकेद्रष्टा ३ बहुकर्मापरमेश्वर ४, ५ बहुतधनवा योगधनका
 ६ तेरा ७ दान ८ बढ़ाहै ९ इसकारणा १० हमारे लिये ११ धनवा योगधनको
 १२ दीजिये ॥७॥ प्रस्तावः ऋषिरनुष्टुप् चन्द्रोऽषादेवता-

वयोश्चित्तेपतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि। उपः प्रार
 न्तूथं रनुदिवो अन्तेभ्यस्परि ॥८॥ १३५

हे (अर्जुनि) शुभ्रवर्णो (उपः) उपो देवते समाधिकाल (ते) तव (चत
 तून्) ब्राह्ममुहूर्त्नकालान् (अनु) अनुलक्ष्य (द्विपात्) नरो जीवा
 त्मा (चतुष्पात्) प्राणः। प्राणो वै पशुः श० ३। ८। ३। १५ (पतत्रिणा)
 पतनशीलाः (वयः) (चित्) पक्षिणा इव (दिवः) भृकुट्यादि कमल
 समूहस्य (अन्तेभ्यः) प्रान्तेभ्यः (परि) उपरि गगनमण्डले (प्रान्त
 प्रकषेण गच्छन्ति। अश्छति गति कर्मानि० २। १४। ३५—॥८॥

भाषार्थः - हे शुभ्रवर्णो २ उपानाम समाधिकाल ३ तेरे ४ ब्राह्ममुहूर्त्न रूप
 कालोंको ५ देखकर ६ जीवात्मा ७ प्राण ८ पतनशील ९, १० पक्षियोंकी सम
 न ११ भृकुटि प्पादिकमल समूहके १२ प्रान्तोंसे १३ ऊपर गगनमंडलमें १४
 जाते है—॥८॥ प्राणोऽस्ति तत्र ऋषिरनुष्टुप् चन्द्रो देवादेवताः-

अमीयेद्वास्थनमध्यःपाराचनदिवः। कहु चरत

कदमृतकोप्रत्नोवशाहुतिः ॥ ६ ॥ २३६

तत्र समाष्टि ज्ञानाय प्रश्नान् कुर्वन्ति हे (देवाः) कमलस्थाः (यो)
 (समी) यूयं (दिवः) पिण्डस्थस्वर्गस्य (आरोचने) दीप्तिविषये
 (न) च (मध्ये) अधः कमल समूहे (स्थ) तेषां (वः) युष्माकं (स्त
 तम्) यज्ञं (कत) कुत्र भवति (अमृतं) सोमं (कत) कुत्रास्ति (वः)
 युष्मदीया (प्रत्नो) पुराणी (आहुतिः) (का) = ॥ ६ ॥

भाषार्थः - वहां समाष्टि ज्ञानके लिये प्रश्नों को करते हैं - १ हे कमलस्थ
 देवताओं २ जो ३ तुम ४ पिण्डस्थस्वर्गके ५ दीप्तिविषय ६ और ७ नीचेके क-
 मलसमूहके मध्य ८ होउन ९ आपका १० यज्ञ ११ कहां होता है १२ सोम १३
 कहां है १४ तुम्हारी १५ पुराणी १६ आहुति १७ कौन है - ॥ ६ ॥

वामदेवत्रधिरनुष्टुप् छन्द ऋक्सामे देवने

ऋचं सामं यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते ।

वितसदासिराजतो यज्ञन्देवेषु वक्षतः ॥ १० ॥ २३७

उत्तरं लब्धा कथयति वयम् (ऋचं) (सामं) (यजामहे) पूजयाम
 (याभ्याम्) ऋक् सामाभ्यां (कर्माणि) शस्त्र स्तोत्र प्रमुखानि
 (कृण्वते) होतार उद्गातार भ्रु कुर्वन्ति (ते) ऋक्सामे (सदासि)
 सदोमण्डपे (विराजतः) स्तोत्र शस्त्र रूपेण विशेषेण प्रकाशयतः
 (देवेषु) (यज्ञं) (वक्षतः) प्रापयतः । तत्र जपयन् एव भवतीत्यर्थः १०

भाषार्थः उत्तरको पाकर कहता है हम १ ऋग्वेद २ सामवेद को ३ पूजने हैं
 ४ जिनके द्वारा ५ शस्त्र स्तोत्र रूपके र्माके ६ होतार उद्गातार करते हैं ७ वे ऋ-
 ग्वेद सामवेद ८ सदोमंडपमें ९ स्तोत्र शस्त्र रूपसे विशेष प्रकाश करते हैं १०
 देवताओंमें ११ यज्ञको १२ प्राप्त करते हैं वहां जप यज्ञही होता है यह आभि

प्रायहे ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामधनुज्वालाप्रसादशर्मा
विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः
खण्डः ॥ २ ॥

अथ तृतीयः खण्डः

रेभस्वरापिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ ३ १ २} विष्वाः ^{३ १ ३ ३ २ २} पृतना अभिभूतरं ^{३ १ ३} नरः ^{३ १ ३} सजू ^{३ १ ३} स्तुत ^{३ १ ३} क्षुरिन्द्रं ^{३ १ ३} ज्ज
^{३ १ २ ३ १ २} जनुश्च ^{३ १ २ ३ १ २} राजसो ^{३ १ २ ३ १ २} क्रत्वे ^{३ १ २ ३ १ २} वरस्थे ^{३ १ २ ३ १ २} मन्या ^{३ १ २ ३ १ २} मुरी ^{३ १ २ ३ १ २} मुनी ^{३ १ २ ३ १ २} यमोजि
ष्ठन्तरं संतरस्विनम् ॥ १ ॥ २३८

(नरः) नेत्र्यः (सजू) परस्परसङ्गताः (विष्वाः) सर्वाः (पृतनाः) प्रा-
णादीनां सेनाः (अभिभूतरं) कामादीनामन्वर्थमभिभवितारं (इ-
न्द्रं) यजमानं (ततस्सुः) योगकुठारेण (च) किञ्च (राजसे) आ-
त्मनो विराजनार्थं स्तुमर्थे असे प्रत्ययः (उत) अपिच (क्रत्वे) यज्ञ-
लाभाय (वर) श्रेष्ठे (स्थेमानि) अचले ब्रह्मणि (आमुरिम्) कामा-
दीनां मारयितारं (उग्रम्) रुद्रस्वरूपं (ओजिष्ठम्) ओजस्वितमं-
(तरसम्) बलवन्तं (तरस्विनम्) वेगवन्तं (जजनुः) जनयामसुः ॥

भाष्यार्थः - १ नेत्ररूप २ परस्परसंगत ३ सब ४ प्राणा आदिकी सेनाने ५
काम आदिके जेना ६ यजमानको ७ योग कुठार से ८ और ९ आत्माके विरा-
जन १० और ११ यज्ञलाभके लिये १२ श्रेष्ठ १३ अचल ब्रह्ममें १४ कामादिके
नाशक १५ रुद्रस्वरूप १६ तेजस्वी १७ बलवान १८ वेगवान् परमेश्वरको १९
संस्कृतवाज्ञानदृष्टिगोचरकिया - ॥ १ ॥

सुवेदः शैलूपिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता

^{१ २ ३} अतदधामि ^{३ १ २ ३ ३ ३ ३} प्रथमाय ^{३ १ २ ३ ३ ३} मन्यवे ^{३ १ २ ३ ३ ३} हन्ये ^{३ १ २ ३ ३ ३} हस्युन्नय ^{३ १ २ ३ ३ ३} विवरपः ॥
^{३ १ २ ३ ३ ३} उभयत्वारो ^{३ १ २ ३ ३ ३} दसौ ^{३ १ २ ३ ३ ३} धावता ^{३ १ २ ३ ३ ३} मनुभ्यसा ^{३ १ २ ३ ३ ३} नेशु ^{३ १ २ ३ ३ ३} प्मात्पृथिवी

चिददिवः ॥२॥ १३६ ॥

हे (अदिवः) ^१ज्ञानवच्चवन्नात्मारूपयजमान (ते) ^२तव (प्रथमोय) ^३मुख्याय (मन्यवे) ^४रुद्ररूपाय (अद्भ्यामि) ^५अद्भ्यां करोमि (यते) -
^६यस्मात् (नर्याम्) ^७नराणां जीवानां सम्बन्धिनं (दस्युं) ^८कामं (अ-
^९हन्यत्) (अपः) ^{१०}अमृताप (विवे) ^{११}प्रत्यागमयः हे रुद्ररूप परमेश्व-
^{१२}र (उभे) (रोदसी) ^{१३}द्यावापृथिव्यौ (त्वा) ^{१४}त्वां (अनुधावताम्) ^{१५}त्वद-
^{१६}धीने भवतः (पृथिवी) ^{१७}अन्तरिक्षानि० १।३।६ (चित्) ^{१८}आपि (शुष्मा-
^{१९}त्) ^{२०}त्वदीयाह्वानानि० २।६ (भ्यसाते) ^{२१}भयेन कम्पते ॥२॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवच्च धर आत्मारूपयजमान २ मुझ ३ मुख्य ४
रुद्ररूपके लिये ५ अद्भ्यां करता हूँ ६ जिस कारण ७ जीव सम्बन्धी ८ चौर का
मकोर्द मारा ९ अमृत जलोको १० उतारा ११ दोनो १२ पृथिवी स्वर्ग १३, १४
तेरे आधीन होते हैं १५ अन्तरिक्ष १६ भी १७ तेरे बल करके १८ भयसे कांपता है

— ॥२॥ वामदेवऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-
^३समेत^२विश्वो^३ऋजो^४सोपति^५दिवो^६एकद्व^७द्वरा^८नाथि^९
^{१०}जनानाम्। ^{११}संपू^{१२}व्या^{१३}नूतन^{१४}माजि^{१५}गीषन्^{१६}वर्तनी
^{१७}रनुवा^{१८}वृते^{१९}एकद्व^{२०}त् ॥३॥ १४०

हे (विश्वोः) विश्वदेहाभिमानिनो जनाः (ऋजोसो) भक्तिबलेन
(दिवोः) (पातिम्) गोलोक स्वामिनं परमेश्वरं (समेत) सम्यक् प्रा-
^६प्तुत (सः) (एकः) (द्वत्) एव (जनानाम्) भक्तानां (अतिथिः) (भू-
^{१२}भवंति सः (पूर्व्यः) ^{१३}आद्यपुरुषः (एकः) (द्वत्) एव (आजिगीषन्तं) का-
^{१४}मादीन् जेतुमिच्छन्तं (नूतनम्) ^{१५}संस्कृतं भक्तं (अनुवावृते) अनु-
^{१६}वर्तयति सामिप्यं ददाति ॥३॥

भाषार्थः— ११ विश्वदेहाभिमानी मनुष्यो २ भक्ति बलसे ३, ४ गोलोक-
स्वामी परमेश्वरको ५ भले प्रकार मामको ६ वह ७ अकेला ८ ही ९ भक्तों
का १० अतिथि ११ होता है १२ वह १३ अकेला १४ ही १५ कामादि को जीत
ना चाहते १६ संस्कृत भक्त को १७ सामिप्य मोक्ष को देता है—॥ ३ ॥

सव्यः प्राङ्गिरस ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ १ २} इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुते यत्वारभ्य चरा मसि सप्रभू
^{३ २ ३ २ २} वसा । न हित्व दन्या गिर्विणो गिरः सघन्क्षोणी रिव
^{३ १ २} प्रति हर्ष्यनी वचः ॥ ४ ॥ २४१

हे (प्रभू वसो) प्रभूत धन (पुरुष्टुते) बहुभिः स्तुत (इन्द्र) परमेश्वर
(यै) (वयं) (त्वा) (त्वां) (वारभ्य) आप्नायतयावलंब्य (चरामसि) चरा
मः कर्मोपासनयोर्वर्त्ता गहे (ते) (इमे) (ते) तव स्वभूताः हे (गिर्वि-
णो) गीर्भिवननीय परमेश्वर (त्वत्) त्वत्तः (अन्यः) (गिरः) स्तुतीः
(नहि) (सघत्) प्राप्नोति त्वदन्या भावात् (क्षोणी) (द्वे) भूमारू
पस्त्वं (नः) अस्माकं (तत्) (वचः) (प्रति हर्ष्य) कामयस्व नि० २
६—॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ हे महाधनी २ बहुतसे स्तुत ३ परमेश्वर ४ जो ५ हम ६ तुमको ७ आप्नाय-
मानकर ८ कर्म उपासना के द्वारा सेवन करते हैं ९ वे १० ये ११ आपके ही हैं
१२ हे वेदवचनों से संभजनीय परमेश्वर १३ आपसे १४ अन्य देवता १५ स्तु
तियोंको १६, १७ प्राप्नही करता है अर्थात् आप सर्वात्मा हो १८, १९ भूमा
रूप तुम २० हमारे २१ उस २२ वचन को २३ चाहो—॥ ४ ॥

विश्वामित्र ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

^{३ २ ३ २ ३} चर्षणी धृतं मघवानमुक्थ्यो ३ मिन्द्र गिरो वहः

तीरभ्यनुषतं । वावृधानुं पुरुहूतं २ सुवृत्तिभिरे
मर्त्यञ्जरमाणान्दिवेदिवे ॥ ५ ॥ १४२

(वृहती) महतीः वेदोक्ताः (गिरः) वाचः (चर्षणीघृतं) भक्ताना
मभिमत्फलप्रदानेन धारकं पोषकं (मघवानं) धनवन्तं (उ-
क्थ्यम्) उक्थैः शस्त्रैः शंसनीयं (वावृधानं) भक्तानां स्तोत्रैर्व
र्द्धमानं (पुरुहूतम्) बहुभिः स्तोत्रभिराहूतं (अमर्त्यम्) अविना
शिनं (सुवृत्तिभिः) शोभनस्तुतिवाक्यैः (दिवे दिवे) मर्त्यहं (जर-
माणम्) स्तूयमाणानि० १४ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अभ्यनुषत)
अभितः सर्वस्तुवन्तु ॥ नि० ३१४— ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ महती २ वेदोक्तवाणी ३ अभीष्टफलदानसे भक्तोंकेपो-
षक ४ धनवान ५ शस्त्रोंसे शंसनीय ६ भक्तोंके स्तोत्रोंसे वर्द्धमान ७ वहुत-
स्तोत्रोंसे आहूत ८ अविनाशी ९ शोभनस्तुतिवाक्योंसे १० ११ प्रतिदिन १२
स्तूयमान १३ परमेश्वरको १४ सर्वेश्वरसे स्तुतकरो— ॥ ५ ॥

कृष्णआङ्गिरसऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

अच्छाव इन्द्र मर्त्यस्वयुवः सधीची विष्वा उशती
रनुषत । परिष्वजन्त जनयो यथा पतिमयन शुध्यं
मघवान मृतये ६ ॥ १४३

(वेः) युष्माकं भक्तानां (स्वयुवः) आत्मनि मिश्रायि त्र्यः (सधीचीः)
सङ्गताः (ने) च (उशतीः) कामयमानाः (विष्वाः) सर्वाः (मृतयः)
स्तुतयः बुद्धयोवा (ऊतये) संसाराद्क्षणाय (मघवानम्) धन-
वन्तं (मुन्ध्यम्) भुङ्क्षन्मायारहितं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अच्छा)
अभिमुख्येन (अनुषते) (ने) च (परिष्वजन्त) (यथा) (जनयः)

सव्यऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता

त्यं^{२३} सु^३मे^३ष^३मह^३यास्वा^३विदे^३थं^३ शत^३ यस्य^३ सु^३भुवः^३ सा^३कमी^३
 रते। अत्यं^३ नवा^३जं^३ थं^३ हव^३स्य^३ दे^३थं^३ रथ^३मेन्द्रं^३ ववृ^३त्या^३ मे^३व
 से^३सु^३वृ^३क्तिभिः॥८॥१४५

(यस्य) परमेश्वरस्य (सुभुवः) योगभूमिस्थाः भक्ताः (साकम्) पुत्र
 दिभिः सह (यम्) (मेषम्) अभक्तैः स्पृष्टमानं (स्वविदम्) स्वभक्तै
 ल्भिः। आत्मनो लब्ध्वा स्व (हवनस्य दम्) आह्वानं प्रति गन्तारं।
 स्यन्दति गति कर्मा (शतम्) बहु रूपं (रथम्) मूर्तिरूपं (सुमहया)
 सुपूजया (इरते) प्रेरयन्ति (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (यम्) महापुरु
 षं (सुवृक्तिभिः) सुस्तुतिभिः (अवसे) (न) तर्पणायैव (अत्यम्) भक्ष
 णीयं (वाज) आत्मप्रतिविंवरूपा न्नं प्रति (आववृत्त्याम्) प्रावर्तयेयम्

भाषार्थः - १ जिस परमेश्वरके २ योगभूमिस्थ भक्त ३ पुत्र आदिके साथ
 ४ जिस ५ अभक्तों से स्पृष्टमान ६ निजभक्तों से लभ्य ७ आह्वान होने पर आने
 वाले ८ बहु रूप ९ मूर्तिरूपको १० ओष्ठपूजाके द्वारा ११ प्रेरित करते हैं १२ उस १३
 परमेश्वर १४ महापुरुषको १५ ओष्ठस्तुतिके द्वारा १६ रक्षा १७ और तर्पणके लि
 ये १८ भक्षणीय १९ आत्मप्रतिविंवरूपके समीप २० प्राप्त करूं ॥ ८ ॥

भरद्वाजऋषिर्जगती छन्दो वरुणो देवता-

घृ^३ती^३वती^३भुव^३ना^३ना^३मि^३भि^३ज्जि^३या^३वी^३पृ^३थ्वी^३म^३धु^३दु^३धे^३
 सु^३प^३श^३सा^३। द्या^३वा^३पृ^३थि^३वी^३वरु^३ण^३स्य^३ ध^३मे^३णा^३ वि^३ष्क
 म्पि^३ते^३ अ^३जरे^३ भू^३रि^३रे^३तु^३सा ॥ ९ ॥ १४६

(भुवनानाम्) (अभिजिया) अन्नयंभूते (उर्वी) विस्तीर्णी (पृथ
 वहकार्यरूपेण प्रथिते। मधुदुधे) आहुतिजलरूपस्य रे

(सुपेशसा) सुरूपे (अजरे) नित्ये (भूरितेसा) बहुरेतस्के (घृतवती)
दीप्तिमत्यौ (द्यावापृथिवी) द्यावापृथिव्यौ (वरुणस्य) एकाएव
पतेर्महापुरुषस्य (धर्मणा) धारणाशक्त्या (विष्कभिते) धारिते

भाषार्थः - १ भुवनोंके २ आत्मरूप ३ विस्तीर्ण ४ बहुकार्यरूपसेप्रस्थित
५ आहुतिजलरूपसकेदाना ६ सुरूप ७ नित्य ८ बहुवीर्यवान ९ दीप्तिमान
१० पृथिवीस्वर्ग ११ एकाएवपति महापुरुषकी १२ धारणाशक्तिसे १३ धारित
हैं ॥८॥ मेधातिथिः अपिर्महापंक्तिम्ब्रन्दइन्द्रो देवता-

उभेयादिन्द्रो रोदसी आप प्रोथोषा इव । महान्तं त्वा
महीनाम् १० संभ्राज च्वर्षणीनाम् । देवीजनिञ्जी
जुनेद्राजनिञ्जीजनत् ॥ १० ॥ १४७ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यस्मात् त्वं (उभे) (रोदसी) द्यावापृथि
व्यौ (आपप्रोथ) स्वतेजसा आपूरयसि । आपूरणो आदादिकः (प०)
ब्रन्दसोत्तिद् (इव) यथा (उपा) स्वभासा सर्वजगदापूरयति (तम
महीनाम्) महतां देवानामपि (महान्तं) स्वर्षणीनाम्) भक्तानां
(सम्भ्राजम्) स्वामिनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (त्वा) त्वां (देवी) (जनि
ञ्जी) अपराशक्तिः (अजीजनत्) भूतात्मरूपेणाजनयत् (जुनेर्ण
न्तात्लुङि-चडिः रूपमेतत्) तथा (भद्रा) परारूपा (जनयिञ्जी)
(अजीजनेत्) जीवेशरूपेणाजनयत् ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हेपरमेश्वर २ जिसकारणानुमने ३ दोनों ४ पृथिवीस्वर्ग-
को ५ अपनेतेजसेपूर्णाकिया ६ जैसे ७ उपा अपनेप्रकाशसेसबजगत्को
८ उत्त ९ महान्देवताओंकेभी १० महान्त ११ भक्तोंके १२ स्वामी १३ परमे-
श्वर १४ तुमको १५, १६ अपराशक्तिने १७ भूतात्मारूपसेप्रकट किया १८

१८ परग्रूपमात्माने २० जीवर्द्धशरूपसे प्रकट किया ॥ १० ॥

कुत्सऋषिर्जगती छन्द आत्मा देवता-

प्रमन्दिने पितुमदर्वितावचोयः कृषागर्भानि
रहन्नुजिश्चना । अक्स्यवावृषणो वज्रदाक्षिणं
मरुत्वन्तं सरव्याय हुवे महि ॥ ११ ॥ १४८

हे भूतात्मानः (मन्दिने) स्तुतिमूते आत्मारूपयजमानाय (पितु
मत) स्वात्मारूपान्नेनोपेतं (वचः) स्तुतिलक्षणं वचनं (प्रार्थित)
प्रकर्षणोच्चारयत (यः) (जिश्चना) स्थैर्यवत्या बुद्ध्या साहि
तः सन् (कृषागर्भाः) कृषांमनुस्तस्य गर्भभूताः कामवृत्तीः (नि
रहन्) नितुरामवधीत् (अक्स्यवः) रक्षणोच्छ्रवो वयं वागाद्यत्वि
जः (वृषणम्) अमृतस्य वर्धितारं (वज्रदाक्षिणं) ज्ञानवज्रयुक्ते
नदाक्षिणं हस्तेनोपेतं (मरुत्वन्तम्) प्राणवन्मात्मारूपयज
मानं (सरव्याय) सरव्युः कर्मणो (हुवे महि) आह्वयामः ॥ ११ ॥

भाषार्थः - हे भूतात्माओ १ स्तुतिमान आत्मारूपयजमानके लिये २ अ
पने आत्मारूप अन्न से युक्त ३ स्तुतिरूप वचन को ४ उच्चारण करो ५ जिसने ६
स्थिर बुद्धि के साथ ७ कामवृत्तियों को ८ निरन्तर नष्ट किया ९ रक्षाकामाहम
वाक् आदि ऋत्विज १० अमृतवर्षक ११ ज्ञानवज्रधारी १२ प्राणवान आत्मा
रूपयजमान को १३ सरवा कर्मके लिये १४ आह्वान करते हैं - ॥ ११ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते साम
वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

नारदऋषि रुषिण क् छन्द इन्द्रो देवता-

^{१ २ ३ २ ३ २ २ ३ २ ३} इन्द्रसुतेपुसामिपुक्रतुम्पुनीपउकथ्यम् । विदेवृध
^{३क २२} ^{३ २ ३ १} स्यदक्षस्य महो^३ं हिपः ॥ २ ॥ १४६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (सामेपु) प्राणोन्द्रियप्रतिविंवेपु (सुतेपु) अभि
 पुतेपुसत्सु (क्रतुम्) योग क्रिया मयं योगिनं (उकथ्यम्) प्रशस्यं
 नि० ३।८।६ (वृधस्य) वर्द्धकस्य (दक्षस्य) योगबलस्य (विदे)
 लाभाय (पुनीपे) शोधयसि (हि) यस्मात्त्वं (महान्) (षः) वासु-
 देवः ॥ १ ॥

भाषार्थः

१ हेपरमेश्वर २ प्राणइन्द्रियप्रतिविंवेके ३ अभिपुनहोनेपर ४ प्रशस्य ५
 योगक्रियामययोगीको ६ शद्धिकर्त्ता ७ योगबलकेलाभार्थ ८ शोधनक
 रतेहो ९ जिसकारणानुम १० महान् १२ वासुदेवहो ॥ १ ॥

द्वयोर्गीपुक्तश्वसृक्त्तिनावृथ्युष्णिक छन्दइन्द्रो देवता-

^{१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३} तमु^{३ १} अभिप्रगायतपुरुहूतं^{३ २} थं^{१ ३ ३} पुरुपुतम् । इन्द्रो^३
^{२ ३ २ ३ २ ३ २ ३} भिस्तिविपमा विवासत ॥ २ ॥ १५०

(तम्) (पुरुहूतम्) बहुभिराहूतं (पुरुपुतम्) बहुभिस्तुतं (तविपम)
 महान्तं नि० ३।३ (इन्द्रो) परमेश्वरं (उ) एव (गीर्भि) स्तुतिभिः (४)
 अभिप्रगायत) अभिमुखंप्रकर्षेण स्तुध्वम् (आविवास्तन) परि-
 चरत नि० ३।५ — ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ उत २ वदतसेआहूत ३ वदतसेस्तुत ४ महान्त ५ परमे
 श्वरको ६ ही ७ स्तुतिद्वारा ८ सन्मुखहोकर स्तुनकरो ९ सेवाकरो - ॥ २ ॥

विनियोग पूर्वयत्-

^{३ ३ २ ३} तन्नमदङ्गीमासृष्ट्यामृष्टसुसासाहिम् । उला
^{३ ३ ३ ३} ककान्तुमाद्विवाहारेभ्ययम् ॥ ३ ॥

हे (अद्विवः) अद्विवन् अद्विः सूर्यः बहु भिव्यष्टि समष्टि सूर्यै रूपेण-
 महापुरुष (ते) त्वदीयं (तमे) (वृषणम्) धर्मार्थकाम मोक्षाणां व-
 र्धितारं (एक्षु) (पसावित्री) (अनिवृत्ति) (क आत्मा) तेषु (सासे
 द्विम्) विभानामभिभवितारं (लोक कृत्नुमो ब्रह्माण्डस्य कर्त्तारं (ह
 रिश्रियम्) हरीभिर्ब्रह्म विष्णु महेशादिभिः अयणी यंसेव्यं (उ)
 एव (मदम्) (गृणीमसि) गृणीमः प्रशंसामः । गृशब्देत्तपादिः
 प्वादीनां ह्रस्वः (७।४।८०) इदन्तोमसि (७।१।४६) इति मसद्-
 कारागमः ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे बहुत व्यष्टि समष्टि सूर्यो से युक्त महापुरुष २ आपके उ-
 तस ४ चारोंपदार्थ के दाना ५ सावित्री निवृत्ति और आत्मा में ६ विघ्ननाश-
 क ७ ब्रह्माण्ड के कर्त्ता ८ विदेवसे सेव्य ९ मद्रको १० ही ११ हम प्रशंसाक
 रते हैं ॥ ३ ॥ पर्वत अरु पिरुष्णिक छन्द इन्द्रो देवता

यत्सोममिन्द्रविष्णोर्विद्यदोघात्रित आत्ये । यद्वा
 मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥ ४-॥ १५२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (विष्णोर्वि) अन्तर्यामिनि (यत्) (सोमम्)
 आत्मं प्रति विंवरूपा मृतं (वा) अथवा (आत्ये) अपाम्पुत्रे (त्रिते)
 जीवात्मानि (यत्) (वा) अथवा (मरुत्सु) प्राणेषु (यत्) (घ) प्र-
 सिद्धतैः (इन्दुभिः) आत्मप्रति विंवे (सम्मन्दसे) सम्यक् माद्यसि ४

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ अन्तर्यामी में ३ जो ४ आत्म प्रति विंवरूपा
 अथवा ६, ७ जीवात्मा में ८ जो आत्म प्रति विंवरूपा ९ अथवा १० प्राणों से ११
 जो आत्म प्रति विंवरूपा १२ प्रसिद्ध है १३ उन आत्म प्रति विंवरूपा से १४ आप भले
 प्रकार हर्षित होते हैं - ॥ ४ ॥

तिष्ठणां विश्वमनावैयश्वन्नरपिरुणिक् छन्दो महापुरुषो देवता-
 एतमधोमदिन्तरं^{२३} सिञ्चा^{२३} ध्वयो^{२३} अन्धसः^३। एवो^३
 हि^३ वीर^३ स्तवते^३ सदा^३ वृधः^३ ॥ ५ ॥ १५३

हे (अध्वयो) ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वैयज्ञस्याध्वर्युः श० १४। ६। १। ६।
 (मधोः) प्राणस्य। प्राणो वै मधु श० १४। १। ३। ३० (उ) च (अन्धसः)
 अन्नरूपस्यात्मप्रतिविंबस्य (मदिन्तरम्) अत्यर्थमादयित्व तमू-
 मात्मारूपरसं (इत्) एव (आसिञ्च) अभिस्तर (हि) यस्मात् (स-
 दा वृधः) सदा वृद्धियुक्तः (वीरः) असुराणां जेता (अः) महापुरुषः
 (एव) (स्तवते) स्तोत्रशस्त्रादिभिः स्तूयते नान्य इत्यर्थः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानचक्षु २ प्राणों के ३ और ४ अन्नरूप आत्मप्रतिविंब
 के ५ अतिहर्षकारक आत्मारूपरसको ६ ही ६ सींचो ७ जिस कारण ८ सदा
 वृद्धियुक्त ९ असुरजयी १० महापुरुष ११ ही १२ स्तोत्रशस्त्र आदिके द्वारा १३
 स्तुतिकिया जाता है ॥ ५ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

एन्दुमिन्द्राय^३ सिञ्चते^३ पिवाति^३ सोम्य^३ मधु^३। प्ररा^३
 धो^३ थं^३ सिचो^३ दयते^३ महित्वेना^३ ॥ ६ ॥ १५४

हे योगिनः (इन्दुम्) आत्मप्रतिविंबरूपसोमं (इन्द्राय) परमेश्व-
 राय (आसिञ्चते) अभिमुख्येन प्रत्याक्षरयतसः (सोम्यम्)
 सोमस्यात्मप्रतिविंबस्य दानारं (मधु) प्राणं (पिवाति) समाधौ
 पिवाति पुनः (महित्वेना) स्वमहत्वेनैव (राधांसि) योगैश्वर्याणि
 (प्रचोदयते) वदति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - हे योगिजनो १ आत्मप्रतिविंबरूपसोमको २ परमेश्वरके-
 लिये ३ अर्पण करो ४ वह आत्मप्रतिविंबके दाना ५ प्राणको ६ समाधिमें

पान करता है फिर ७ अपनेमाहात्म्य सेही ८ योगेश्वर्योंको देता है-६।

विनियोगः पूर्ववत्

एतो^३न्विन्द्र^३ं^३ स्त^३वाम^३सखायः^३ स्तो^३म्यन्^३नरम्^३।

कृ^३षी^३यो^३वि^३श्वो^३ अ^३भ्य^३स्ते^३ क^३इ^३त् ॥७॥ १५५

हे (सरखायः) वागाद्यत्विजः (नु) क्षिप्रं (एतउ) आगच्छतैव-
(स्तोम्यम्) स्तोमार्हं स्तवार्हं (नरम्) सर्वस्यनेतारं परमेश्वरं
(स्तवाम्) (युः) (एकः) (इत्) एव (विश्वोः) सर्वाः (कृषीः) असुर
रसेनाः (अभ्यस्ति) अभिभवति नानावतारैः ॥७॥

भाषार्थः - १ हेवाक् सादिऋत्विजो २ शीघ्र ३ ही आशो ४ स्तुति-
योग्य ५ सवकेनेतापरमेश्वरको ६ स्तुतकरे ७ जो ८ एकला ९ ही १० सव ११
असुरसेनाको १२ नानाप्रकारके अवतारोंसेजय करता है ॥७॥

नृमेधऋषिरुषिणाक् छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्राय^३ साम^३गायत^३विप्राय^३ वृहते^३ वृहत्^३ । ब्रह्म^३कृ^३

तौ^३विपश्चिते^३पनस्यवे^३ ॥८॥ १५६

हे भक्तजनाः (विपश्चिते) विदुषे (पनस्यवे) अर्चनमिच्छते (ब्र-
ह्मकृते) तपः कर्त्वे (विप्राय) वामननिष्कलंक परशुरामादिरूप-
वते (वृहते) महते (इन्द्राय) परमेश्वराय (वृहत्) (साम) (गा-
यत) ॥८॥

भाषार्थः

हे भक्तजनो १ विद्वान् २ पूजाचाहते ३ तपकर्त्ता ४ वामननिष्कलंकं परशु-
राम आदिरूपवाले ५ महान् ६ परमेश्वरके लिये ७, ८ वृहत्सामको ९-
गाशो-॥८॥

गौतमऋषिरुषिणाक् छन्द इन्द्रो देवता-

या^३एक^३इ^३द्वि^३दयते^३वसु^३मती^३यदा^३भुषे^३ । इ^३शानो^३अ^३

प्रतिष्कृत इन्द्रो अद्भुतः ॥ ८ ॥ १५७

(यः) (अप्रतिष्कृतः) प्रतिष्कृत शब्द रहितः सर्वेश्वरत्वात् (देशानुः) सर्वस्य जगतः स्वामी (इन्द्रः) परमेश्वरः (एकः) (इत्) एव (दाभु) (पे) हविर्दत्तवते (मर्त्याय) मनुष्याय भक्ताय (वसु) धनं योग-
धनं वा (अद्भुतः) क्षिप्रं नि० ५ ॥ १७ (विदयते) विशेषेण ददाति ॥ ८ ॥
भाषार्थः - १ जो २ सर्वेश्वर होनेसे प्रतिष्कृत शब्द रहित ३ सब जगत का स्वामी ४ परमेश्वर ५ अकेला ६ ही ७ हविदाता ८ भक्त के लिये ९ धन वा योगधनको १० शीघ्र ११ देता है ॥ ८ ॥

विश्वमनाऽऽपि रुषिणा क्व छन्द इन्द्रो देवता-

सखाय आशिषामहे ब्रह्मन्द्राय वज्रिणे । स्तुषे
ऊषुवानृतमाय घृणावे ॥ १० ॥ १५८

हे (सखायः) योगिनो भक्ताः वयं वेदाः (वज्रिणे) ज्ञानवज्रधरा
य परमेश्वराय (उ) एव (ब्रह्म) स्तोत्रं (आशिषामहे) आशास्म
हे शास शासने वाग्यूपहोता कथयति हे चक्षुराद्यत्विजः (वः) यु
ष्माकं (घृणावे) कामादीनां धर्षण शीलाय (नृतनाय) नेत्रत
माय यजमानाय (उ) एव (सुस्तुषे) सुष्टुस्तौ मितमेव परमेश्वर
॥ १० ॥ **भाषार्थः** - १ हे योगी भक्तो २ हम वेदज्ञानवज्रधारी परमेश्वर
के लिये ३ ही ४ स्तोत्रको ५ उच्चारण करते हैं वाक् रूपहोता कइता है हे
चक्षुः आदिवत्त्विजो ६ तुम्हारे शत्रु ७ काम आदिके धर्षण शील ८ मह
नेता यजमान के लिये ९ ही १० उस परमेश्वर की स्तुति करता हूं ॥ १० ॥
इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामधनुज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते साम वे-
दीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४

इतिचतुर्थःप्रपाठकः

अथपञ्चमःखण्डः।अथपंचमःप्रपाठकः

भरद्वाजःअपिरुषिणःकच्छन्दःइन्द्रोदेवता-

गृणोतदिन्द्रतेशवउपमान्देवतातये। यद्धृत्थं
सिञ्चन्मोजुसाशचीपते ॥१॥१५८॥

हे(इन्द्र)(तन्)(ते) तव(उपमाम्) सर्ववलानां उपमाभूतं(शवः)
वलं(देवतातये) यज्ञार्थं(गृणो) स्तुवेहे(शचीपते)(यत्)यस्मा
त्(हृत्थम्)(मोजुसा) वलेन(हंसि) ॥१॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ तेरे ३ उस ४ सब वलों का उपमा रूप ५ वल को ६ यज्ञ के लिये ७ स्तुत करता हूँ ८ हे शचीपति ९ जिस कारण तुम १० हृत्तासुर को ११ वल से १२ मारते हो - ॥१॥ द्वितीयोर्थः

हे(इन्द्र) यजमान(ते) तव(तत्) (उपमाम्) उपमाभूतं(शवः) यो
गवलं(स्तुवे) हे(शचीपते) योगकर्मणां स्वामिन् नि० २।१।२३
(यत्) यस्मात्वं(देवतातये) योगयज्ञाय(मोजुसा) योगवलेन-
(हृत्थम्) पापं(हंसि) - ॥१॥

भाषार्थः - १ हे यजमान २ तेरे ३ उस ४ उपमा रूप ५ योग वल को ६ स्तुत करता हूँ ७ हे योग कर्मों के स्वामी ८ जिस कारण तुम ९ योग यज्ञ के लिये १० योग वल से ११ पाप को १२ नाश करते हो - ॥१॥

भरद्वाजःअपिरुषिणःकच्छन्दःइन्द्रोदेवता-

यस्यत्यच्छ्वरमेददिवोदासायरन्धयन्।अ
यत्थं ससोमइन्द्रते सुतःपितृ ॥२॥१६०

हे(इन्द्र) परमेश्वर(यत्) यस्मात्(यस्य) आत्मप्रतिविंबस्य(मेद)

होर्पेपानजनिने सनि (शम्बरम्) शुम्बंदरिंद्रानिददानि सशम्बरः
 कामस्तं (दिवः) गोलोकस्य (दासाय) भक्ताय (रन्धयन्) हन्ता-
 भवसि (तत्) तस्मात् (सः) (अयम्) (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (ते)
 त्वदर्थं (सुतः) अभिपुतस्तं (पिव) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ आत्मप्रतिविंबके ४ पान
 जानित हर्षमे ५ कामको ६, ७ गोलोक कामा भक्त के लिये ८ नाश करते हो
 ईउस कारण १० वह ११ यह १२ आत्मप्रतिविंब १३ तेरे लिये १४ अभिपुत
 हुआउसको १५ पानकरो ॥ २ ॥ **द्वितीयोर्थः**

हे (इन्द्र) (यत्) यस्मात् (यस्य) सोमस्य (मद) सनि (दिवः) स्व-
 र्गस्य (दासाय) यज्ञानुष्ठात्रे यज्ञमानाय (शम्बरम्) मेघनि ११
 १० (रन्धयन्) हन्ता भवसि (तत्) तस्मात् (सः) (अयम्) (सोमः)
 (ते) त्वदर्थं (सुतः) अभिपुतस्तं (पिव) ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ जिस कारण ३ सोमका ४ मद होने पर ५ स्वर्गके
 ६ यज्ञानुष्ठाता यज्ञमान के लिये ७ मेघको ८ वर्षी के लिये ताडित करते हो
 ईउस कारण १० वह ११ यह १२ सोम १३ तेरे लिये १४ अभिपुत हुआउसको
 १५ पानकरो ॥ २ ॥ नृमेघञ्चपिरुषिणक् इन्द्र इन्द्रो देवता-

एन्द्र नोगाधिप्रियसत्राजिदगोह्य। गिरिर्नविश्व
 तः पृथुः पातोदिवः ॥ ३ ॥ १६९

हे (प्रिय) सर्वेषां प्रियतम (सत्राजित) सर्वेषामसुराणां जेतः (अगो-
 ह्य) असंवरणीय (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वरत्वा (गिरि) (ते) पर्वत इ-
 व (विश्वतः) सर्वतः (पृथुः) विस्तीर्णः (दिवः) स्वलोकस्य (पाति)
 ईश्वरत्वं (ने) अस्मान्प्रति (आगहि) आगच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे सबके मियतम २ सब असुरोंके जेता ३ असंवरणीय ४ इन्द्रवा परमेश्वर ५ पर्वत की समान ७ सब ओरसे ८ विस्तीर्ण ९ स्वर्गलोक के १० ईश्वरतुम ११ हमारे पास १२ आओ - ॥ ३ ॥

पर्वत ऋषिरुषिणक् चन्द्र इन्द्रो देवता-

^{१ ३} य^{३ १ २ ३ ३ १ २} इन्द्र^{३ १ ३} सोमपाते^{३ १ ३} मोमदः^{३ १ ३} शविष्ठ^{३ १ ३} चेतति । येनो^३
^३ हं^{३ १ ३} सिन्या^{३ १ ३} ३^{३ १ ३} त्रिणान्त^{३ १ ३} मीमहे ॥ ४ ॥ २६२

हे (शविष्ठ) बलवत्तम (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (मदः) अहं ब्रह्मास्मि
तिमदः (चेतति) सर्वजानाति (सोमपातेमः) सोमस्यात्मप्रतिविं
वस्य पानात्वं (येन) मदेन (अत्रिणाम्) अन्तारं कामं (निहंसि)
निहिनस्सिनि कृष्णां हिंसां प्रापयसि (तम्) मदं (ईमहे) याचा
महे नि० ३।१९।१-॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे महाबली २ परमेश्वर ३ जो ४ अहं ब्रह्मास्मिरूपमद ५
सबको जानता है ६ सोमवा आत्मप्रतिविंवके पातानुम ७ जिसमदसे ८ भ
सक कामको ९ मारने हो १० उसमदको ११ हममांगते हैं - ॥ ४ ॥

द्विमिठ ऋषिरुषिणक् चन्द्रो त्रिदेवा देवताः

^{३ १ २ ३ १ ३} तु^{३ १ ३} चेतुनाय^{३ १ ३} तत्सुना^{३ १ ३} द्राघीय^{३ १ ३} आयुजीवसे । आ^{३ १ ३}
^{३ १ ३} दित्यासः^{३ १ ३} सुमहसः^{३ १ ३} कृणोतन ॥ ५ ॥ २६३

हे (सुमहसा) शोभनतेजस्काः (आदित्यासः) आदितेः पराशक्ते
पुत्रा ब्रह्म विष्णु महेशाः (नः) अस्माकं (तुचे) पुत्राय नि० २।२
(तुनायै) पौत्राय । तनोति कुलमिति । उकारोपजनृश्चान्द्रसः
(जीवसे) जीवनाय (तत्) (द्राघीयः) दीर्घतमं (आयुः) (सु) सु
ष्टु (कृणोतन) कुरुत ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे ऋषतेजवाले २ पराशक्ति के पुत्र ब्रह्माविष्णु महेशो ३ हमारे ४ पुत्र के लिये ५ पौत्र के लिये ६ और जीवन के अर्थ ७ उस पव्द्रतवड़ी ८ आयु को ९-११ दान कीजिये—॥ ५॥

विश्व मनाञ्चरपि रुषिणाक् छन्दो इन्द्रो देवताः

वेत्था^३हिनि^{१२}ञ्चर^३तीना^३वञ्च^३हस्त^३परि^३वृज^३म्। अह^१
रहः^३मुन्ध्युः^३परि^३पदामि^३व ॥ ६ ॥ २६४

हे (वञ्चहस्त) ज्ञानवञ्च युक्त (अ) सर्वव्यापिन् परमेश्वरत्वं (हि)
(निञ्चरतीनाम्) नानामृत्यूनां (परिवृजम्) परित्यागं वृजत्या
गे (वेत्थ) जानीये (द्व) यथा (मुन्ध्युः) शोधनहेतुः सूर्यः (अ
हरहः) प्रतिदिनं (पदाम्) लोकानां (परि) परित्यागं ॥ ६॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवच धारी २ सर्वव्यापी परमेश्वर तुम ३ ही ४ नाना
प्रकार की मृत्यु के ५ परित्याग को ६ जानते हो ७ जैसे ८ शोधन हेतु सूर्य ९ प्र
तिदिन १० लोकों के ११ परित्याग को—॥ ६॥

इरिमिठञ्चरपि रुषिणाक् छन्दो विदेवा देवताः

अपामीवाम^{१२}पस^३ध^३मप^३से^३धत^३दुर्मति^३म्। आदि^३
त्यासो^३युयोत^३नानो^३अ^३हंसः^३ ॥ ७ ॥ २६५

हे (आदित्यासः) आदितेः पराशक्तेः पुत्राः ब्रह्माविष्णु महेशाः (अ
मीवाम्) संसाररोगं (अपसेधत) अस्मत्तोपगमयत (स्त्रिधम्)
वाधकं कामं (अप) अपसेधत (दुर्मतिम्) दुष्टां बुद्धिं (अप) अपसे
धत (नः) अस्मान् (अहंसः) पापात् (युयोतन) पृथक्कुरुत तस
नमनयनाञ्च (७।१।४५) इतितस्यतनादेशेरूपम्—॥ ७॥

भाषार्थः - १ हे पराशक्ति के पुत्र ब्रह्माविष्णु महेशो २ संसाररोगको

३हमज्ञेदूर करो ४ वाधकं कामको ५ दूरकरो ६ दुष्टावुद्धिको ७ दूरकरो ८हम
को ९ पापसे १० पृथक् करो—॥७॥

वासिष्ठत्रयपि विराट् छन्द इन्द्रो देवता-

पिवा^३स^३सो^१मामिन्द्र^२मन्द^३तु^३त्वा^३यन्त^३सुषा^३वह^३र्य^३

श्रु^३दिः। सो^३तु^३वाहु^३भ्या^३ सु^३यतो^३ नो^३वी^३। ८। १६६

हे^३(हर्य^३श्व^३)(इन्द्र^३)(सोम^३म्)(पि^३व^३)(सो^३)(अ^३)अमृत^३:(त्वा^३)त्वां^३
(मन्द^३तु^३)मादय^३तु^३(सो^३तुः^३)अभिप^३व^३कर्त्तुः^३(वाहु^३भ्याम्^३)(अ^३र्वा^३)
(न^३)अश्व^३इव^३(सु^३यतः^३)सु^३पु^३परि^३गृही^३तः^३(श्रु^३दिः^३)ग्रा^३वा^३(ते^३)त्वद^३
र्थ^३(सोम^३म्)(सुषा^३व^३)॥८॥

भाषार्थः - १ हे हरिनाम अश्वपते २ इन्द्र ३ सोमको ४ पानकरो ५ व
ह ६ अमृत ७ तुमको ८ हर्षित करो ९ अभिपव कर्त्ता की १० भुजाओं से ११
१२ घोड़े की समान १३ ग्रहण किये हुए १४ पापाणने १५ तैरे लिये १६ सोम
को १७ अभिपुत्र किया—॥८॥

अथाध्यात्मम् - हे^३(हर्य^३श्व^३)हरि^३पु^३ब्रह्म^३विष्णु^३महेश^३पु^३मा-
नस^३सूर्य^३रूप^३(इन्द्र^३)परमेश्वर^३(सोम^३म्)आत्मप्रतिविं^३(पि^३व^३)
(सो^३)(अ^३)अमृतरूपः^३(त्वा^३)त्वां^३(मन्द^३तु^३)मादय^३तु^३(सो^३तुः^३)अभि
पव^३कर्त्तु^३र^३आत्मारूपयजमानस्य^३(वाहु^३भ्याम्^३)ग्रह^३ण^३शक्ति^३भ्यां^३
(अ^३र्वा^३)(न^३)अश्व^३इव^३(सु^३यतः^३)निरुद्धः^३(श्रु^३दिः^३)प्रा^३णाः। प्रा^३णा^३वै
ग्रा^३वा^३णः १४। २। २। ३३ (सोम^३)आत्मप्रतिविं^३(सुषा^३व^३)॥८॥

भाषार्थः - १ हे विदेवमें मानस सूर्यरूप २ परमेश्वर ३ आत्मप्रतिविं
को ४ पानकरो ५ वह ६ अमृतरूप ७ तुमको ८ हर्षित करो ९ अभिपव कर्त्ता
आत्मारूपयजमान की १० ग्रहणशक्तियों से ११, १२ घोड़े की समान निरु

छ १४ प्राणान् १५ आत्मप्रतिविंबको १६, अभिपुतकिया ॥८॥
इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सप्तज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सा
मवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य पंचमः खण्डः ५

अथ षष्ठः खण्डः

सौभरिर्ऋषिः ककुप् छन्द इन्द्रो देवता-

^३अभ्रातृव्यो ^{२३}अना ^३त्वमना ^{२७}पिरिन्द्र ^३जनुषो ^२सनादे
सि। ^३युधे ^३दोषे ^३त्वमिच्छ ^३षे ॥ १ ॥ १६७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (जनुषो) प्रादुर्भावकालात् (सनादे)
चिरादेव (अभ्रातृव्यः) सपत्नरहितः सर्वरूपत्वात् (अना) अने
तृकः ब्रह्मरूपत्वात् (अनापि) बन्धुवर्जितः । अद्वैतत्वात् (सिसि)
तथापि (युधा) (इत्) कामयुद्धे नैव निमित्तेन (आपित्वं) भ
क्तैः सहवान्धवत्वं (इच्छसे) इच्छसि भक्तवत्सलत्वात् व्य
न्सपत्ने (४।१।१४५) इति व्यन्प्रत्ययः (अना) ऋत छन्द
सि (५।४।१५८) इति कपः प्रतिषेधः ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुम ३ प्रादुर्भावकाल ४ दीर्घकाल से ५ स
र्वरूप होने के कारण शत्रुहीन ६ ब्रह्मरूप होने से अनेता ७ अद्वैत होने से
बंधुरहित ८ होतौभी ९, १० कामयुद्ध के निमित्त ११ भक्तों के बांधवत्व को
१२ चाहते हो ॥ १ ॥ सौभरिर्ऋषि रुषिणा क् छन्द इन्द्रो देवता-

^३योनइदमिदं ^२पुरा ^३प्रवस्य ^{२७}आनि ^३नायत ^२मुवस्तुपो।
सखाय इन्द्र मृतये ॥ २ ॥ १६८

वेदोपदेशः हे (सखायः) भक्ताः (यः) (वस्यः) निवास योग्यः वस
निवासे (पूर्वम्) स्थापित काले (इदम्) (इदम्) इकामस्तस्य दा-

तारमज्ञानं (माणिनाय) प्रकर्षेण नीतवान् कूर्मफलैः (तम्)
 (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उं) एव (वै) युष्माकं (ऊतये) संसाराद्
 क्षणाय (स्तुषे) स्तोमि ॥ २ ॥

भाषार्थः— वेदकहना है १ हेमक्तो २ जिसं ३ निवास योग्य परमेश्वरने
 ४ सृष्टिकालपर ५ इन्द्र ६ अज्ञानको ७ कर्मफलोंके द्वारा प्राप्त कराया उस
 ८ परमेश्वरको ९ ही ११ तुम्हारी १२ संसार संरक्षाके लिये १३ स्तुत करता-
 हूँ ॥ २ ॥ सौभरिर्ऋषिः रुषिणाक् छन्दो मरुतो देवताः

अगन्ता मारि प्रणयत प्रस्था वानो मापे स्यात्स
 मन्यवः । दृढा चिद्यमयिष्णावः ॥ ३ ॥ १६६

हे (प्रस्थावानः) प्रस्थातारः प्रगुन्तारः (मरुतेः) देवाः (आगन्त)
 अस्माना गच्छन्त (मा) (रिषणयत) अना गमने नूनोऽस्मान्मा
 हिंसिषत हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (दृढा चित्) दृढान्य
 पिपर्वतादीनि (यमयिष्णावः) नियमयितृ शीलाः । नियमयि
 तारः (मा) (अपस्थात्) अस्मन्नो न्यत्रमा तिष्ठत ॥ ३ ॥

भाषार्थः— १ हे गति शील २ मरुद्गण देवताओ ३ आओ ४, ५ न जाने
 से हमको हिंसित मत करो ६ हे समानतेज वालो ७ दृढपर्वत आदिके भी ८
 नियमन शीलानुम ९, १० हमसे दूर मत जाओ— ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्— हे (प्रस्थावानः) प्रगुन्तारः (मरुतेः) प्राणाः
 (आगन्त) अन्तरा गच्छन्त (मा) (रिषणयत) समाधित्यागे
 नूनोऽस्मान्मा हिंसिषत हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (दृढा
 चित्) दृढानपि कामादीन् (यमयिष्णावः) नियमयितारः (मा)
 (अपस्थात्) समाधेरन्यत्रमा तिष्ठत अस्मा स्वेवा वतिष्ठध्वमि

माहि^३सं^{२१}स्थ^{३१}जन^३स्य^{१२}गौ^३मतः^२ ॥५॥ १७१

(दृष्यमानं) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्धितः परमेश्वर (गौमतः) इन्द्रिययुक्तस्य (जनस्य) जीवात्मनः (संस्थे) स्थानेशूरीरे (श्वसन्तमं) कामं (युजो) सहायेन (त्वया) (इत्) एव (वयम्) योगिनः (सु) सुप्तु (प्रतिब्रुवीमहि) प्रतिबचनं कुर्मः ॥५॥

भाषार्थः - १ हे चारोंपदार्थकेदाता परमेश्वर २ इन्द्रिययुक्त ३ जीवात्माके ४ स्थानशरीरमें ५ स्वांसलेते कामको ६ ७ तुम्हसहायकके साथ ८ ही देहमयोगी १०, ११ अच्छेउनरदानाहोते हैं ॥ ५॥

सौभरिर्ऋषिरुषिणकच्छन्दो मरुतो देवताः

गा^१वो^३श्चि^३ह्वा^३सम^३न्य^३वः^३ स^३जा^३त्ये^३न^३म^३रु^३तः^३ स^३व^३न्ध^३
वः^३ रि^३ह^३ते^३ क^३कु^३भो^३मि^३थः^३ ॥६॥ १७२

हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (मरुतः) प्राणाः (सजात्येन) समानजातित्वेन (सवन्धवः) समानबन्धुकानि (गावः) इन्द्रियाणि (चित्) अपिमिथः परस्परं (ककुभः) योगभूमोर्दिशः (रिहते) लिहन्ति ॥६॥

भाषार्थः

१ हे समानतेजवाले २ प्राणो ३ समानजन्मा होनेसे ४ समानबन्धुरूप ५ इन्द्रियां ६ भी ७ परस्पर ८ योगभूमि की दिशा को ९ स्पर्शकरती हैं ॥ ६॥

द्वयोर्नृमेषः ऋषिरुषिणकच्छन्द इन्द्रो देवता-

त्व^२न्त्^३इ^३न्द्रो^३भ^३र^३ः^३ श्रौ^३जो^३नृ^३मो^३थं^३ श^३त^३क^३तो^३ वि^३च^३र्य^३
णो^३ । श्रा^३वो^३र^३ह^३त^३नो^३ स^३ह^३म् ॥७॥ १७३

(हे (शतकतो) बहुकर्मन् (विचर्यणो) विशेषदृष्टः परमेश्वर (त्वम्) (नः) अस्मभ्यं (शौजः) योगबलं (नृमोम्) योगधनञ्च (शौ

भर) आहरदेहि (वीरम्) वीर्योपेतं (एतनासहं) असुरसेनानाम-
भिभवितारंत्वां (आ) आह्वयामहे ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे बहुकर्मा २ विशेषदृष्टा परमेश्वर ३ तुम ४ हमारे लिये ५
योगबल ६ शौरयोगधनको ७ दीजिये ८ वीर ९ असुरसेनाके जेतानुमको १०
हम आह्वान करते हैं ॥ ७ ॥ विनियोगः पूर्ववत्.

अधाहीन्द्र गिर्वणा उपत्वा कामेद्महे सस्तुगम
हे उद्वग्मन्त उदभिः ॥ ८ ॥ २७४

(अध) अयहे (अ) सर्वव्यापिन् (गिर्वणाः) गीर्भिर्वननीय (द्वन्द्व
परमेश्वर (कामे) निमित्तं सति (त्वा) त्वां (हि) (द्महे) याच्नाम-
हे नान्यत्वदन्याभावात् (उपसस्तु नामहे) तन्कामाञ्च समीप-
संयोजयामः (इव) यथा (उद्वग्मन्तः) ऊर्ध्वं गच्छन्तः सूर्यादयः
(उदभिः) उदकेः । उपसंयुक्ता भवन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः १ तदनन्तर २ हे सर्वव्यापी ३ वेदवचनोंसे संभजनाय ४ परमे-
श्वर ५ कामनाके निमित्त ६ तुमको ७ ही ८ हमयाचना करते हैं ९ शौरउन-
कामनाओं को प्राप्त करते हैं १० जैसे ११ ऊंचे चलने सूर्य आदि १२ जनोंमेंमें

पुनः पुनः ॥ ८ ॥ द्वयोः सोभारिर्जरीपिरुषिणक चन्द्रद्वन्द्वो देवता-

सोदन्तस्त्नवयो यथा गोभ्राने मधो मतिरिवि-
क्षणे । अभित्वा मिन्द्र नानुमः ॥ ९ ॥ २७५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (गोभ्राने) इन्द्रियैर्मिञ्जने (मतिर) मदक-
रे (विविक्षणे) महावाचं वक्तुमिच्छते (ते) त्वदीये (मधा) आत्म म-
ति विवे (वयः) (यथा) प्राज्ञाणा इव (सोदन्तः) निवसन्तो वागा-
द्यान्विजो वयं (त्वाम्) (आभि) आभिमुख्येन (नानुमः) पुनः पुनः

भृशं वास्तुमः ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ इन्द्रियों से मिश्रित ३ मदकर्ता ४ महावाकू कहना चाहते ५ आपके ६ प्रतिविम्बें ७, ८ पक्षी की समान ९ निवास करते वाक् आदि चरत्विज हम १० तुमको ११ सन्मुख होकर १२ नमस्कार वास्तुतिकरते हैं ॥ ९ ॥ सौभरिः ऋषिः ककुपु छन्द इन्द्रो देवता-

वयमुत्त्वामपूर्यस्थूरनकाच्चिद्वरन्तोवस्यवः।
वज्रिच्चित्रं हवामहे ॥ १० ॥ १७६

हे (वज्रिन्) ज्ञानवज्रयुक्त (अपूर्य) पूर्वे रक्तसर्वकारणरूपपरमेश्वर (अवस्यवः) रक्षणमात्मनश्च्छन्तः (न) च (त्वाम्) (उ) एव (भरन्तः) हविर्भिः पोषयन्तः (वयम्) (कच्चित्) कच्चित् (स्थूरः) स्थूलदृष्टिगोचरं (चित्रं) स्वरूपं विष्णवादिकं (हवामहे) आह्वयामः ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे ज्ञानवज्रयुक्त २ सर्वकारणरूपपरमेश्वर ३ अपनी रक्षा चाहते ४ और ५, ६ तुमको ही ७ हविषों से तृप्त करते ८ हम ९ किसी १० स्वरूप ११ स्थूलदृष्टि विषय विष्णु आदिको १२ हम आह्वान करते हैं - ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वाला मसादशर्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य षष्ठखण्डः ॥ ६ ॥

इत्यौषिाहं काकुभम् ॥ अथ सप्तमः खण्डः

गौतमऋषिः पङ्क्ति छन्दो गौर्यो देवता-

स्वादोरित्था विष्वतो मेधोः पिवन्ति गौर्यः । या इन्द्रो
था एतयावरी वृषणा मदन्ति शोभन्स्वीरनुस्वराज्यम् १
(गौर्यः) महापुरुषस्य रश्मयः (इत्था विष्वतः) इत्थमनेन प्रका

रेण देहे व्याप्तस्य विपुल्व्याप्तौ (स्वादोः) स्वादुभूतस्य (मधोः) आ-
 त्मप्रतिविंबस्य (पिवन्ति) पानं कुर्वन्ति (योः) रश्मयः (वृषणा)
 धर्मकामार्थमोक्षाभिवर्षकेण (इन्द्रेण) महापुरुषेण (सथाव-
 रीः) सह गच्छन्त्यः सत्यः (मदन्ति) दृष्टा भवन्ति हे (वस्वीः) योग
 धनवन्त्यः रश्मयः यूयं (स्वराज्यम्) ब्रह्माण्डान्तर्गतं स्वकीयं
 राज्यं (अनु) अनुलस्य (शोभथाः) ॥१॥

भाषार्थः - १ महापुरुषकी किरणों २ इस प्रकार देहमें व्याप्त ३ स्वादुभूत
 ४ आत्मप्रतिविंबका ५ पान करती हैं ६ जो किरणों ७ चारों पदार्थके दाता ८
 महापुरुषके साथ रहती ९ १० हर्षित होती हैं ११ हे योगधनवती किरणोत्तम
 १२ ब्रह्माण्डान्तर्गत निजराज्यको १३ देखकर १४ शोभित होती हो-॥१॥

गोतम ऋषिः पांडुः ऋन्द इन्द्रो देवता-

इत्याहि सोम इन्मदो ब्रह्मचकार वद्धेनम। शविष्ठवज्रि
 न्नाजसापथिव्यानिः शशाः अहिमचन्नुस्वराज्यम् २-१५

(इत्याहि) इत्यमेव। अनेन प्रकारेणैव (सोमः) आत्मप्रतिविंबः
 (इत्) एव (ब्रह्म) महावाचं (मद्वद्धेनम्) अहं ब्रह्मास्मीति मूढ
 वद्धेनं (उ) एव (चकार) हे (शविष्ठ) अतिशयेन बलवन् (वज्रि)
 ज्ञानवज्रवन् परमेश्वरत्वं (स्वराज्यम्) स्वकीयं राज्यं (अन्वचन्नु)
 प्रशंसयन् (शोजसा) बलेन (अहिम्) आहन्तारं कामं (सापथिव्या)
 मानसभूमेः सकाशात् (निः शशाः) निरगमय शशपुत्रगतौ ॥२॥

भाषार्थः - १ इस प्रकार से २ आत्मप्रतिविंबने ३ ही ४ महावाक्को ५ मदव
 दाने वाला ईही ६ किया ७ हे महाबली ८ ज्ञानवज्रधर परमेश्वर तुम ९ नि-
 जराज्यको ११ प्रशंसा करते १२ बलसे १३ पीडक कामको १४ मानसभूमि

से १५ निकालो ॥ २ ॥ गौतमऋषिः पंक्तिश्चन्द्रइन्द्रोदेवता-

^२इन्द्रो^३मदायवा^२वृधे^३शवसे^३वृत्रहा^३नृभिः^३। तामिन्म

^२हस्त्वा^३जिघृति^३मम^३हवामहे^३सवाजेषु^३प्रनाविषत्^३३-१७

(वृत्रहा) पापस्यहन्ता (इन्द्रः) परमेश्वरः (मदाय) ज्ञानन्दार्थं (शवसे) योगवलार्यञ्च (नृभिः) यज्ञस्यनेत्रभिर्वीगाद्यत्विजैः (वावृधे) स्तोत्रशस्त्ररूपाभिः स्तुतिभिः प्रवर्द्धितो बभूव (तम) (ऊतिम्) रक्षास्वरूपं रक्षकं (महत्सु) (आजिषु) उपाधिना संग्रामेषु (अर्भ) अल्पे काम संग्रामे (इत्) एव (हवामहे) (स) (वाजेषु) पूर्वोक्त संग्रामेषु (नः) अस्मान् (प्राविषत्) प्रावतु प्रकर्षणा रक्षतु । अवतेर्लेटि रूपम् ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ पापनाशक २ परमेश्वर ३ ज्ञानन्दवल ४ और योगवल्केलिये ५ यज्ञकेनेतावाक् आदि ऋत्विजोंसे ६ स्तोत्र शस्त्र रूप स्तुति से वर्धित हुआ ७ उस ८ रक्षा स्वरूप रक्षक को ९ उपाधियों के संग्राम में १० काम संग्राम में ११ ही १२ इस आह्वान करते हैं १३ वह १४ पूर्वोक्त संग्रामों में १५

हमको १६ रक्षा करो - ॥ ३ ॥ गौतमऋषिः पंक्तिश्चन्द्रइन्द्रोदेवता-

^३इन्द्रो^३तुभ्यमिदं^३द्विवो^३नुत्तं^३वाजिन्वीर्यम्^३। यद्धृत्य

^३मायिनं^३मृगन्तवत्यन्मायया^३वधी^३स्वन्ननु^३स्वरो

ज्यम् ॥ ३ ॥ १८०

हे (आद्विवः) आद्विवन् प्राणवन् (वाजिने) ज्ञानवन्वन् (इन्द्र) आत्मारूप यजमान (त्यत्) (अनुत्तं) शत्रुभिरतिरक्तं (वीर्यम्) योगवलं (तुभ्यम्) (इत्) एव (यद्ध) यस्मादेव (वृत्रम्) पापं (मायया) संसारस्थ मिथ्यात्व बुद्ध्या (अवधीः) हतवानसि (तव)

१४ (त्यत्) तत् (स्वराज्यम्) आत्मराज्यं (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ४ ॥
 भाषार्थः - १ हे प्राणवान् २ ज्ञानवज्रधर ३ आत्मारूपयजमान ४ वह-
 ५ शत्रुओं से अनिरसकृत ६ योगवल् ७, ८ तेरे ही लिये है ९ जिसके द्वारा ही
 १० पापको ११ संसारके मिथ्यात्व बुद्धि द्वारा १२ नाश किया १३ तेरे १४ उस
 १५ आत्मराज्यको १६ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ४ ॥

गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्दोऽन्द्रो देवता-

प्रेह्य^३भीहि^१ धृष्ण^३हि^३ नते^३ वज्रो^३ नियं^३ सते^३ । इन्द्रे^३ नृ^३
 मां^३ थं^३ हिने^३ शवो^३ हनो^३ वृत्र^३ ज्ञया^३ अपा^३ च^३ न्ननु^३ स्व-
 राज्यम् ॥ ५ ॥ - १८२

हे (इन्द्र) आत्मारूपयजमान (प्रेहि) प्रकर्षणा गच्छ (अभीहि)
 कामादीन् शत्रून् आभिमुरख्येन प्राप्नुहि (धृष्णहि) तानभिभव-
 (ते) तव (वज्रो) ज्ञानवज्रः (न) (नियंसते) कामादिभिः ननिय-
 म्यते अप्रतिहतगतिरित्यर्थः (ते) तव (शवो) योगवल् (नृमा-
 म्) नृणां नेत्राणामिन्द्रियाणां नामकं । अभिभावकं (हि) य-
 स्मादेवं तस्मात् (वृत्रम्) पापं (हनो) जहि (अपः) कमलान्तरि-
 क्षाणि (जयोः) जयतव (स्वराज्यम्) आत्मराज्यं (अन्वर्चन्)
 विद्वांसः ॥ ५ ॥ भाषार्थः

१ हे आत्मारूपयजमान २ चलो ३ कामादि शत्रुके सन्मुख हो ४ उनको जी-
 तो ५ तेरा ६ ज्ञानवज्र ७, ८ नहीं रूकता है ९ तेरा १० योगवल् ११ इन्द्रियों का
 वशमें करने वाला है १२ उसी कारण १३ पापको १४ मारो १५ कमलान्तरि-
 क्षोंको १६ जीतो १७ तेरे आत्मराज्यको १८ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ५ ॥

द्वितीयोर्थः

हे (इन्द्र) (मेहि) प्रकर्षेण गच्छ (अभीहि) हन्तव्यान् शत्रून्
 आभिमुख्येन प्राञ्चहि प्राप्य च (धृषाहि) अभिभव (ते) तव (व
 ज्रः) (न) (नियंसते) शत्रुभिः न नियम्यते (ते) तव (शवः) वलं
 (नृणाम्) नृणां पुरुषाणां नामकं अभिभावकं (हि) यस्मादे-
 वंतस्मात् (वृत्रम्) मेघम् (हनः) जहि (अपः) उदकानि (जयां)
 जयतव (स्वराज्यं) (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ चलो ३ मारण योग्य शत्रुओं को सम्मुखमा-
 स करो ४ उनको जीतो ५ तेरा ६ वज्र ७, ८ शत्रुओं से नहीं रोका जाता है ९
 तेरा १० बल ११ माणियों को जय करने वाला है १२ उसी कारण १३ मेघ को
 १४ वर्षा के लिये ताड़न करो १५ जलों को १६ बरसाओ १७ आपके निज-
 राज्य को १८ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ५ ॥

गोतमऋषिः पंक्तिश्चन्द्र इन्द्रो देवता-

यदेदीरत आजयो धृषावे धीयते धनम् । युद्ध्वा
 मदच्युता हरी कं हनः कन्वसौ दधोस्मां
 इन्द्र वसौ दधः ॥ ६ ॥ १८२

(यद्) यदा (आजयः) काम सङ्गामाः (उदीरते) उद्गच्छन्निउत्प-
 द्यन्ते तदानीं (धनम्) योगधनं योगैश्वर्यं (धृषावे) कामजे च
 (धीयते) निधीयते हे (इन्द्र) आत्मा रूप यजमान (मदच्युता)
 कामादीनां गर्वस्य च्चावयितारौ (हरी) जीवेशौ (आयुद्ध्वा)
 योजंय (कम्) कामं (हनः) हन्याः (कम्) स्वात्मानं (वसौ)
 योगधने (दधः) स्थापय (अस्मान्) त्रागाद्यत्विजः (वसौ) यो-
 गधने (दधः) स्थापय ॥ ६ ॥

तेपनीयसीसमिद्धीदयतिद्यवीपथं स्तोत्रभ्य

आभर ॥ १ ॥ १८७

हे (देव) माया^१ क्रीडन^२ कैः क्रीडन^३ शील (आभे) आत्मा-
 गे (ते) तव (द्युमन्तुम्) दीप्ति मन्तं (अजरं) जरा रहितस्वरूपं-
 (आ) सर्वतः (इधीमाहि) दीपयामः (यद्ध) यत् खलु (ते) त्वदी-
 या (पनीयसी) स्तुत्यर्हा (समिद्धे) प्राणरूपा । प्राणवै समि-
 धः श्रु० १।५।४।१ (स्था) सा । यकारो योगवाचकः (द्यवि) हृदये
 (दीदयति) दीप्यते (स्तोत्रभ्यः) (इषम्) विराड् रूपान्नं (आभर)
 आहर देहि ॥ १ ॥ १८७

भाषार्थः - १ हे माया के खिलोनों से क्रीडन शील २ आत्मा मे ३ ते

रे ४ दीप्यमान ५ निर्जरा मररूपको ६ सब ओर से ७ हम दीप्त करते हैं ८
 निश्चय जो ईतेरी ९ स्तुतियोग्य १० वह ११ प्राण रूप समिध १२ हृदय
 में १३ प्रज्वलित है आप १४ स्तोताओं के लिये १५ विराट् रूप अन्न को
 १६ दीजिये ॥ १ ॥ १८७ विमदत्रयिः पंक्तिश्चन्द्रोभिर्देवता-

आग्निं स्ववृत्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे । शौरं
 म्पावकं शोचिषं विवा मदे यज्ञेषु स्तीर्णं वहिषं
 विवक्षसे ॥ २ ॥ १८८

(होतारम्) महापुरुषपुरुषाणा माह्वतारं (शीरम्) इन्द्रियेषु नु-
 शायिनं (पावकं शोचिषम्) शोधक दीप्ति (न) च (यज्ञेषु) योग
 यज्ञेषु (स्तीर्णं वहिषं) आसादित सुषुम्नं (आग्निम्) आत्माग्निं (त्वा)
 त्वां (स्ववृत्तिभिः) आत्मप्रकाशकभिः स्तुतिभिः (वृणीमहे) संभ-
 जामहे (विमदे) विगतमदे सति (वक्षसे) वक्षस्थलाय (विवः)

प्रादुर्भव ॥ - २ ॥

भाषार्थः

१ महापुरुष पुरुषों के आह्वाता २ इन्द्रियो में अन्नशायी ३ शोधक दीप्तिवा
ले ४ और ५ योग यज्ञों में ६ सुपुत्रा को प्राप्त करने वाले ७, ८ तुम्हारे आत्मामि
कोई आत्मिकाशक स्तुतियों के द्वारा १० हम भजते हैं ११ हे आत्मा मे मद्
के विगत होने पर १२ वसुस्थल के लिये १३ प्रकट हुईये ॥ २ ॥

सत्यम्नवा ऋषिः पंक्तिश्छन्द उपादेवता-

महे^३ना^२ अद्य^३वो^३धयो^३षो^३राय^३दिवि^३त्मनी^३ । यथा^३चि^३न्ना^३

अ^३वो^३धयः^३ सत्य^३म्नव^३सि^३वाय्य^३सुजा^३त^३अ^३श्व^३सू^३नुते^३ ३-१८

हे^३सुजा^३ते^३ (अ^३श्व^३सू^३नुते^३) आदित्य^३भार्ये^३ (उपे^३) उषा^३देवि^३ (यथा

चित्^३) यथैव^३ (चाय्ये^३) गति^३शीले^३ । वय^३गतौ^३ (सत्य^३म्नव^३सि^३) सत्य-

कीर्ति^३वति^३देहे^३ (नः^३) अस्मान्^३ (अ^३वो^३धयः^३) तथैव^३ (अद्य^३) (दिवि-

त्मनी^३) दीप्ति^३मती^३त्वं^३ (नः^३) अस्मान्^३ (महे^३) महापुरुषो^३त्सवाय^३ (रा

ये^३) योगधनाय^३ (वोधय^३) ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे सुजन्मा २ आदित्यभार्या ३ उषादेवि ४ जैसे ५ गति

शील ६ सत्यकीर्ति मान देह में ७ हमको ८ जगाया ९ उसी प्रकार १०

दीप्ति मती तुम ११ हमको १२ महापुरुषोत्सव १३ और योगधन के लिये

१४ जगाओ - ॥ ३ ॥ विमदऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

भद्र^३न्ना^३ अपि^३वा^३तय^३मना^३दक्ष^३मु^३त^३क्रतु^३म् । अथा^३तस^३

ख्य^३अ^३न्ध^३सा^३वि^३वा^३मद^३रणा^३ गा^३वा^३नय^३वु^३सि^३वि^३वसु^३से^३ ४-१८

(अ^३) हे परमेश्वर (भद्रम्) कल्याण रूपं (मनः) (दक्षम्) जीवा

त्मानं (उत) अपिच (क्रतुस्) ज्ञानं (अपि) (नः) अस्मभ्यं वा

गाद्यत्विग्भ्यः (वातय) प्रापय (अथ) अनन्तरं वा गाद्यत्विजः

(अन्धसः) आत्मप्रतिविम्ब रूप सोमात् (ते) (मदे) सति (ते) तव-
 (मन्व्ये) (विराणोः) विशेष प्रीति युक्ता भवन्तु (ने) यथा (गावः)
 (यवसे) घासेत्वञ्च (वक्षसे) वक्षः स्थलाय (विवः) प्रादुर्भव ॥ ४

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २, ३ कल्याण रूप मन ४ जीवात्मा ५ और ६ ज्ञान
 नको ७ भी ८ हम वाक् आदि ऋत्विजों के लिये ९ प्राप्त कराओ १० तदनन्तर
 वाक् आदि ऋत्विज ११ आत्मप्रतिविम्बरूप सोमसे १२ आपका १३ मदहो
 ने पर १४ तेरी १५ भक्तिमें १६ विशेष प्रीति युक्त हों १७ जैसे १८ गौ १९ घा
 सके लिये और आप २० वक्षस्थल के लिये २१ प्रकट हूजिये ॥ ४ ॥

गीतमन्त्रपिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवना-

क्रत्वा महान् अनुष्वधं भीमं आवाच न शवः श्रिय
 ऋष्वुपाकयोनिश पीहरिवाद्ध हस्ते यो वज्र
 मायसम् ॥ ५ ॥ २९ ॥

(क्रत्वा) अवतार सम्बन्धि कर्मणा (भीमः) असुराणां भयंकरः
 (महान्) महापुरुषः (अनुष्वधं) आत्मप्रतिविम्बलक्षणस्याच्च
 स्थपाने सति (शवः) योगवलं (आवाचते) आभिमुख्येन प्रवर्त
 यत् (ऋष्वः) महान् (शिपी) साकारः (हरिवान्) विष्णु स्वरू
 पो भूत्वा (उपाकयोः) समीपवर्तिनोः नि० २। १६ (हस्ते योः) आ
 त्मारूपयजमानस्य वाहोः (आयसम्) अचलं । अयः गमने।
 (वज्रम्) ज्ञान वज्रं (श्रिये) योगलक्ष्म्यर्थं (निद्ध) निदधा
 ति स्थापयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ अवतार सम्बन्धी कर्मसे २ असुरों का भयंकर ३ महापु
 रूप ४ आत्मप्रतिविम्बरूप अन्न का पान होने पर ५ योगवल को ६ देता है ७

८ वह महासाकारं विष्णु स्वरूप हो कर १० समीपवर्ती ११ आत्मा रूप यजमान की भुजाओं में १२ अचल १३ ज्ञान वज्र को १४ योग लक्ष्मी को लिये १५ स्थापन करता है ॥ ५ ॥ गोमन्त्रापिः पंक्तिञ्छन्दो देवता-

सघान्तृषाणं रथमधिनिष्ठाति गोविदमयः
पात्रं हारियोजनम् पूर्णमिन्द्रोचिकेतनियो
जान्विन्दते हरी ॥ ६ ॥ १६२

(सः) यजमानः (घो) मेधया (तम्) (दृषाणं) ज्ञानाभि वर्षकं (गो विदं) महावाचां लम्भयितारं (रथम्) वेद रूपं रथं (आधिनिष्ठाति) अधिनिष्ठति । अकारोऽध्यात्म ज्ञापकः (यः) रथः (हारियोजनम्) छन्दो मयं । छन्दां सुवैहारियोजनः श० ४।४।२।२। (पूर्णं) (पात्रम्) (आचिकेतानि) ज्ञापयति हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौ जीवेशौ (नु) क्षिप्रं (योज) योजय ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ वह यजमान २ बुद्धि द्वारा ३ उस ४ ज्ञान दृष्टि कर्ता ५ महावाकों के प्रापक ६ वेद रूप रथ में ७ सवार होना है ८ जो वेद रूप रथ ९ छन्दो मय १० ११ पूर्ण पात्र को १२ जनलाना है १३ हे परमेश्वर १४ अपने १५ किरण रूप जीव ईश्वर को १६ शीघ्र ७ संयुक्त करो ॥ ६ ॥

वसुभ्रुतञ्चपिः पंक्तिञ्छन्दोग्निर्देवता-

अग्निमन्यया वसुरस्तययन्ति धेनवः । अस्तम
यवन्त आशवास्तानित्यासो वाजिन इपं स्तो
तृभ्य आभर ॥ ७ ॥ — १६३

(तम्) (अग्निम्) आत्माग्निं (मन्ये) स्तोमि (यः) (वसुः) ब्राह्मर-

शिमरूपः (यम्) ^६ (अंस्तम्) ^७ गृहरूपं (घेनवः) ^८ इन्द्रियाणि (यन्ति) ^९
 गच्छन्ति (आशवः) ^{१०} शीघ्रगामिनः (अर्वन्तः) ^{११} प्राणाः यं (अस्तं) ^{१२}
 गृहरूपं गच्छन्ति (नित्यासः) ^{१३} (वाजिनः) ^{१४} मानससूर्याः यं (अस्तं) ^{१५}
 गृहरूपं गच्छन्ति हे आत्माग्ने (इषम्) ^{१६} विराड् रूपान्नं (स्तोत्-
 म्यः) ^{१७} अस्मभ्यम् (आभर) ^{१८} आहर देहि ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ उ स २ आत्माग्नि को ३ स्तुत करता हं ४ जो ५ ब्राह्मर-
 शिमरूप है ६ जिस ७ गृहरूप आत्माग्नि को ८ इन्द्रियां ९ प्राप्त करती हैं १०
 शीघ्र गामी ११ प्राण १२ जिस गृहरूपको प्राप्त करते हैं १३ नित्य १४ मान
 ससूर्य १५ जिस गृहरूपको प्राप्त करते हैं हे आत्माग्ने १६ विराड् रूप अन्न-
 को १७ हम स्तोनाओं के लिये १८ दीजिये ॥ ७ ॥

अहो मुग्धामदेव्य ऋषि रूपि विराट् रहती छन्दो मित्राद्या देवताः

^{२३} नतमै ^{२४} थं ^{२५} हान ^{२६} दुरित ^{२७} देवासो ^{२८} अष्टमर्त्यम् । ^{२९} सजोषसो

^{३०} यमयमा ^{३१} मित्रानुयति ^{३२} वरुणा ^{३३} अति द्विषः ॥ ८ ॥ १८ ॥ ४

हे (देवासः) ^{३४} विद्वांसः (तम्) ^{३५} (मर्त्यम्) ^{३६} मनुष्यं (अहः) ^{३७} पापं (न) ^{३८} च
 (दुरितं) ^{३९} तत्फलरूपं (न) ^{४०} (आष्ट) ^{४१} नव्याप्नोति नि० २। २८ (यम्)
 (सजोषसः) ^{४२} सद्गताः (अयमा) ^{४३} मनः (मित्रः) ^{४४} प्राणाः (वरुणाः)
 अपानः (द्विषः) ^{४५} द्वेषन् कामादीन् (अति) ^{४६} अतिक्रम्य (नयति)
 आत्मनि प्रापयन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - अहो विद्वानो २ उ स ३ मनुष्यको ४ पाप ५ और ६ पाप फल
 ७ नहीं ८ व्याप्त करते हैं ९ जिसको १० मिले हुए ११ मन १२ प्राण १३ अपा-
 न १४ द्वेष कांम आदि को १५ अतिक्रमण कर १६ आत्मा में प्राप्त करते हैं १७
 इति श्री भृगुवंशं वतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते सा

मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्याष्टमः खण्डः ॥ ८ ॥

अथ नवमः खण्डः

आद्यानां षण्णां ऋणा - असदस्यू सहिता वृषी द्विषदा पंक्तिश्छन्दः सोमो दे

वता-

पवमानो देवता तत्रादि द्विपदा

परिप्रधन्वेन्द्राय सोमस्वादुभिर्त्राय पूषा भुगाय १-२६५

हे (सोमे) आत्मप्रतिविं व (स्वादुः) स्वादुरसस्त्वं (इन्द्राय) महा
पुरुषाय (पूषो) विष्णावे (भुगाय) सूर्याय (परिप्रधन्व) परितः
कमलरूप पात्रेषु प्रक्षर ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविं व २ स्वादुरसरूप तुम ३ महापुरुष ४ विष्णु
५ श्वोरसूर्यकेलिये ६ सब श्वोरसे कमलरूपपात्रों में गिरो ॥ १ ॥

त्रिपदा अणुपुपिपीलिक मध्या सोमो देवता -

पर्युषु प्रधन्व वाजसातये परिष्ट्राणि सक्षाणि

द्विषस्तरध्या ऋणायानुईरसे ॥ २ ॥ १६६

हे (सोमे) आत्मप्रतिविं व (सुवाजसातये) सुष्ट्राणोन्द्रियरूप
न्नानां दानाय (परिप्रधन्व) परितः प्रगच्छ (सक्षाणि) सहन
शीलस्त्वं (वृत्राणि) पापानि (उ) एव (परि) परिगच्छ (नः) अ-
स्माकं वागाद्यन्विजां (ऋणाय) ऋणानां यापयिता विनाश
यितात्वं (द्विषः) द्वेषन् कामादीन् (तरध्या) तरीतुं हन्तुं (ईरसे)
परिगच्छसि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविं व २ आणुन्द्रियरूप अन्नोके दानार्थ
३ सब श्वोरसे चलो ४ सहनशील तुम ५ पापों पर ६ ही ७ धावा करे ८ हमवा
रुआदि ऋन्विजां के ९ ऋणानाशक तुम १० द्वेषाकाम आदिके ११ नारने

को १२ धावा करते हैं ॥ २ ॥ द्विपदापंक्तिश्छन्दः सोमो देवता-
^{१ २} ^{३ २} ^{३ ३ ३} ^{३ २ ३ ३ ३} ^३
 पवस्व सोम महत्समुद्रः पिता देवानां विश्वा
^{२ २} ^{२ २}
 भिधाम ॥ ३ ॥ १६७

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (महान्) समाधिभावापन्नः (देवानाम्)
 इन्द्रियाणां (पिता) (समुद्रः) मनोरूपस्त्वं (विश्वा) विश्वानि स-
 र्वीणि (धाम) धामानि कमलानि (अभिपवस्व) अभिगच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ समाधिभावापन्न ३ इन्द्रियों को ४
 पिता ५ मनरूपतुम ६ सब ७ कमलों को ८ सन्मुख प्राप्त करो ॥ ३ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

^{१ २} ^{३ ३ ३} ^{३ २} ^{३ ३} ^{३ ३ ३ ३} ^{३ ३}
 पवस्व सोम महद्दक्षायोश्वा ननित्तो वाजीध-
^{२ २} ^{२ २}
 नाय ॥ ४ ॥ - १६८

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (नित्तः) देहाभिमानेन लज्जितः (श्वे-
 तः) इव (वाजी) वेगवानूत्वं (महे) महापुरुषस्योत्सवाय (द-
 क्षाय) योगवलाय (धनाय) (योगधनाय (पवस्व) गच्छ ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ देहाभिमान से लज्जित ३, ४, ५ घोड़े
 की तुल्य वेगवान तुम ६ महापुरुषोत्सव ७ योगवला ८ और योगधनके लि-
 ये ९ ऊपर को चलो - ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

^{१ २} ^{३ २} ^{३ २} ^{३ ३} ^{३ ३} ^{३ ३} ^{३ ३} ^{३ ३} ^{३ ३} ^{३ ३}
 इन्दुः पविष्ठ चारु मृदाया पोमुपस्थे कविभगाय ४-
^{२ २} ^{२ २}
 चारुः कल्याणरूपः (कविः) मेधावी (इन्दुः) आत्मप्रतिविंबः

(अंपाम्) कमलान्तरिक्षाणां (उपस्थे) (मृदाय) अहं ब्रह्मास्मी
 ति मृदार्थं (भगाय) योगैश्वर्याय (पविष्ठ) पवने गच्छति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ कल्याणरूप २ मेधावी ३ आत्मप्रतिविंब ४ कमलान्त

न करने वाले होते हैं ॥७॥ पदपंक्ति रामेयी वामदेवऋषिः

अग्नेतमृद्याश्वन्स्तौमैः क्रतुन्नभद्रं हृदिस्पृ

शम्। ऋध्या मान शोहैः ॥ ८ ॥ २०२

(अतः) हे (अग्ने) आत्माग्ने (अद्य) (तम्) (अश्वं) (न) सूर्यरूपं (क्रतुं) (न) भूतात्मरूपं (भद्रम्) अन्तर्यामी रूपं (हृदिस्पृशम्) हृदये वर्तमानं त्वां (शोहैः) ऊह गानीयैः (स्तौमैः) स्तोत्रसमूहैः (ऋध्याम) समर्द्धयामः ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इत्सकारण २ हे आत्माग्ने ३ अश्व ४ उत्स ५, ६ सूर्यरूप ७, ८ भूतात्मा रूप ९ अन्तर्यामी रूप १० हृदयमें वर्तमान तुम्हको ११ ऊह गानों- १२ और स्तोत्र समूहों से १३ हम बढाते हैं - ॥ ८ ॥

पुरउषिणक्छन्दोऽर्वन्तो देवताः

आविर्मया आवाजं वाजिनो अगमन्देवस्य सवि

तुः सवम् स्वर्गं अर्वन्तो जयत ॥ ९ ॥ २०३

(मर्या) मरणधर्मा माया (आवि) प्रकटीभूता (वाजम्) विराट् रूपान्नं (आ) प्रकटीभूतं (वाजिनः) इन्द्रियात्म प्रतिविंवाः (सवितुः) (देवस्य) प्रेरकस्य परमेश्वरस्य (सवम्) योग यज्ञं (अगमन्) अगमन्हे (अर्वन्तः) प्राणाः (स्वर्गम्) भृकुटिचक्रं (जयत)

भाषार्थः - १ मरणधर्मा माया २ प्रकट हुई ३ विराट् रूप अन्न ४ प्रकट हुआ ५ आत्म प्रतिविंवा सहित इन्द्रियों ने ६ प्रेरक ७ ज्योतिस्वरूप परमेश्वरके ८ योग यज्ञ को ९ प्राप्त किया १० हे प्राणो ११ भृकुटिचक्रको १२ जय करो - ॥ ९ ॥

ऐश्वरयोधिषायाऋषयः। द्विपदा छन्दः सोमो देवता-
पवस्व सोमद्युम्नी सुधारो महो अवीना मनु

पूर्व्यः ॥२०॥२०४

हे^१(सोम^२) आत्मप्रतिविं^३(द्यु^४न्नी) यशस्वी^५(सुधार^६) अमृतस्य^७
दाता^८(पूर्व्यः) पुरातनः^९(महान्) समाष्टिभावं^{१०} प्राप्तस्त्वं^{११}(अवी^{१२}नी
म्) कमलस्थ^{१३}सूर्याणां^{१४}(अनु) समीपे^{१५}(पवस्त्व) गच्छ ॥२०॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविं २ यशस्वी ३ अमृतका दाता ४ पुरा-
तन ५ समाष्टिभावापन्नतुम ६ कमलस्थसूर्योके ७ समीप चलो-२०॥
इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसुनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचितेसा
मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य नवमः खण्डः ६

इतिपञ्चमस्यार्द्धः प्रपाठकः

अथदशमः खण्डः

द्विपदा छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वतो^१दावन्विश्वतो^२न^३आभर^४यत्वो^५शविष्टः^६
मीमहे ॥२॥२०५

हे^१(विश्वतोदावन्) सर्वतोदानवन्परमेश्वर^२(विश्वतः) सर्वतः^३
(नः) अस्मभ्यं^४(आभर) आहरुदेहि^५(यम्) (शविष्टम्) अतिशये
नवलवन्तं^६(त्वा) त्वांपति^७(इमहे) अभीष्टं यान्चा महे ॥२॥

भाषार्थः - १ हे सवशोरसेदानापरमेश्वर २ सवशोरसे ३ हमको ४ दे
५ जिस ६ महावली ७ तुमसे ८ हम अभीष्टको मांगते है - ॥२॥

विनियोगः पूर्ववत्

एष^१ब्रह्माय^२ऋत्विष्य^३इन्द्रो^४नाम^५श्रुतो^६गृणो ॥२-२०६

(ऋत्विष्य) स्पष्टिसमये प्रादुर्भूतः (यः) (इन्द्रः) परमेश्वरः (ना
मश्रुतः) नाम्ना विश्रुतः (एषः) (ब्रह्मा) तमहं (गृणो) स्तोमि ॥२

भाषार्थः - १ स्तुति समयमें आदुर्भूत २ जो ३ परमेश्वर ४ नामसे विख्यात हुआ ५ यह ६ ब्रह्माहें में उसकी ७ स्तुति करता हू ॥ २ ॥

त्रसदस्युः ऋषिर्द्विपदा छन्दो देवता-

ब्रह्माणा इन्द्रं महं यन्तो अकरवर्द्धयन् न हयह
न्तवाउ ॥ ३ ॥ २०७

(अहये) (हन्तवै) पापस्य नाशाय (अकैः) मानससूर्यः (महं यन्तः) पूजयन्तः (ब्रह्माणाः) योगिनः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अवर्द्धयन्) ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १, २ पापनाशकके लिये ३ मानससूर्योसे ४ पूजने ५ योगियोंने ६ परमेश्वरको ७ बढ़ाया - ॥ ३ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

अनवस्तरथमश्वायतक्षुस्त्वष्टावज्रम्पुरुहुत
द्युमन्तम् ॥ ४ ॥ २०८

हे (पुरुहुत) बहुभिराहुत परमेश्वर (ऋभवः) मानससूर्यरश्मिरूपाः नि० ११।१६ (अनवः) वागाद्युत्विजुः (तेष्वदीयाय (अश्वाय) मानससूर्याय श० (रथम्) योगरथं (तक्षुः) कृतवन्तः तक्षतनूकरणो (त्वष्टा) अन्तर्यामीत्वं (द्युमन्तम्) दीप्तिमन् (वज्रम्) ज्ञानवज्रं दत्तवानसि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे बहुवहुतसे आहुत परमेश्वर २ मानससूर्यकी किरणरूप ३ चाकू आदि ऋत्विजोंने ४ तुम्ह ५ मानससूर्यके लिये ६ योगरथको ७ बनाया ८ अन्तर्यामीतुमने ९ दीप्तिमान १० ज्ञानवज्रको दिया ॥ ४ ॥

द्विपदापंक्तिश्छन्दोऽत्रतो देवता-

शम्पदमद्यथरयीषिणानकाममव्रतो हिनोति

^२नस्पृशद्वि^३यिम् ॥ ५ ॥ — २०६

(रथीपिणः) रथिंधनं हविर्नक्ष्णं प्रेषयन्तो जनाः (शम्) सुखं
(मघम्) धनं योगधनम्वा (पदम्) परंपदं लभन्ते इति शेषः (अत्र
तः) उभयव्रतं रहितः पुरुषः (न) (हिनोति) न प्राप्नोति (कामम्)
अभीष्टं (रथिम्) धनं (न) (स्पृशत्) न स्पृशति ॥ ५ ॥ २०६

भाष्यः १ हविः अर्पण करने वाले भक्त २ सुख ३ धन वा योगधन ४ औ
परंपद को प्राप्त करते हैं ५ दोनों व्रत से रहित पुरुष ६ नहीं ७ पाता है ८ अभी
ष्ट धन को १० नहीं ११ पाता है — ॥ ५ ॥ २०६

द्विपदापंक्तिश्रुत्याधिको विश्वेदेवादेवता.

^२सदा^३गावः^३भुच^३यौ^३विश्व^३धायसः^३सदा^३देवा^३श्रै^३
पसः ॥ ६ ॥ २१० ॥

(गावः) वेदवाचः नि० १। ११। ४ (सदा) (भुचयः) पवित्राः (विश्व-
धायसः) विश्वधारकान् वत्यः (देवाः) तासां देवाः (सदा) (श्रैप
सः) निष्पापाः शुद्धाः ॥ ६ ॥ २१० ॥

भाष्यः - १ वेदवाणी २ सदा ३ पवित्र ४ श्रैर विश्व धारक अन्नवती
हैं ५ उनके देवता ६ सदा ७ निष्पाप शुद्ध है — ॥ ६ ॥ २१०

सम्पातः ऋषिर्द्विपदापंक्तिश्रुत्याधिको इन्द्रो देवता-

^१आयाहि^३वन^३सासह^३गावः^३सचन्त^३वर्त्तिन^३यदु^३धाभिः^३

हे परमेश्वर (वनसा) रश्मिना तेजसा (सह) (आयाहि) आगच्छ
(यत्) यस्मात् (गावः) गोरूपा वेदवाचः (ऊर्धाभिः) स्वधा स्वाहा-
दिभिः (वर्त्तिनं) यज्ञमार्गं (सचन्त) पचपेचने। यथां भ्रुतिः वा
चंधेनुमुपासीत तस्याश्चत्वारस्तनाः स्वाहा कारो वपद्गारो हन्त

रर्षेणकेशत्रुकाम आदि को सब शोर से मारना है ॥ ६ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

^{३ ३ १ ३} प्रवड्न्द्राय ^{३ १ ३} वृत्रहन्त ^{३ १ ३} मायविप्राय ^{३ १ ३} गाय गायतय ^{३ ३}
^३ जुजोषते ॥ १० ॥ २१४

(विप्राय) मेधाविने (वृः) युष्माकं (वृत्रहन्तमाय) अतिशयेन
पापस्यहन्तमाय (न्द्राय) परमेश्वराय (गायम्) स्तोत्रं (प्रगा
यत) प्रकर्षेण पठत (यम्) स्तोत्रं (जुजोषते) सेवते ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ मेधावी २ शौरतुम्हारे ३ अतिशय पापनाशक ४ परमे-
श्वरकेलिये ५ स्तोत्रको ६ पढ़ो ७ जिस स्तोत्र को ८ वह सेवन करता है ॥ १० ॥
वृत्तिभृगुवंशावतंस भृगुनाथुराम सूनु ज्वाला मसादशर्म विरचिते सामवे
दीयव्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्या ध्यायस्य दशमः खण्डः १०

अथैकादशः खण्डः ११

सम्पात ऋषिर्द्विपदापंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

^{१ ३ ३} अचेत्यमि ^{३ ३} श्चिकिति ^{३ ३} हव्यवाड् ^{३ ३} नसुमद्रथः ॥ १ ॥ २१५

(हव्यवाड्) हविषां वोढा (चिकितिः) विशिष्ट मन्त्रः (न) च (समु
द्रथः) सम्यग् उद्यतयोगरथः (अग्निः) आत्माग्निः (अचेति) सर्व
जानाति व्यत्ययेन कर्त्तरि प्रत्ययः (३१५८५) - ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हविषां काधारक २ विशिष्ट प्रस्तावान ३ शौर ४ उद्य-
तयोगरथवान् ५ आत्माग्नि ६ सबको जानता है - ॥ १ ॥

वन्धुर्ऋषिर्द्विपदापंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

^{३ ३ ३} अमेत्वेन्ना ^{३ ३} अन्तम ^{३ ३} उतत्राता ^{३ ३} शिवा ^{३ ३} भुवो ^{३ ३} वरूथ्यः ॥ २ ॥ २१५
हे (अग्ने) आत्माग्ने (वरूथ्यः) निवास योग्य गृह रूपः (उत) अपि च

(४) (त्रुता) रक्षकः (शिवः) सुखरूपः (त्वम्) (नः) अस्माकं (अन्नम्) (भुवः) भव ॥ २ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्माग्ने २ निवासयोग्य गृहरूप ३ शौर ४ रक्षक ५ आनन्दस्वरूपत्वम् ६ हमारे ७, ८ अन्नमर्हजिये ॥ २ ॥

वन्द्यत्रयिर्गायत्री छन्दोभिर्देवता-

भगोन्नुचित्रोऽग्निमृहानान्दधाति रत्नम् ॥ ३ ॥ २१७

(भगः) (नः) सूर्यइव (चित्रः) अद्भुतः (अग्निः) आत्माग्निः (रत्नम्) रमणीयमात्मप्रतिविंबं (दधाति) स्वात्मानिधारयति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १, २ सूर्यकीसमान ३ अद्भुत ४ आत्माग्नि ५ रमणीय आत्मप्रतिविंबको ६ अपने आत्मामें धारण करता है - ॥ ३ ॥

वन्द्यत्रयिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वस्य प्रस्तोभपुरावासन्यद्विह नूनम् ॥ ४ ॥ २१८

हे परमेश्वर (इह) अर्चाकाले (विश्वस्य) सर्वस्य भक्त समूहस्य (यतः) (पुरा) बहु (वा) (नूनम्) नस्तुतिस्तेनो नमस्यं (इव) (एव) भवेत्तत् (प्रस्तोभ) प्रशंस गृह्णीष्वनि० ३। १४ यथा गीतायाम् पत्रं पुष्यं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहं भक्तपुपहतमश्नामि प्रयत्नः अ० ८ श्लोक २६ - ॥ ४ ॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ यहां पूजनकालपर २ सब भक्त समूह का ३ जो ४ बहुत ५ अथवा ६ अत्य ७ ही ८ होवै ९ उसको ग्रहण करो - ॥ ४ ॥

सम्बर्तत्रयिः द्विपदापंक्ति छन्द उपा देवता-

उषा अपस्व सुष्टमः सम्बर्तयति वर्तनि थं सुजो ततो ॥ ५ ॥ - २१९

यदा (उषाः) समाधिकालः (स्वसुः) भगिन्याः रात्रेः (तमैः)
 अन्धकारं (अपसंवर्त्तयति) आत्मीयेन तेजसा अपगुमयति त
 दा (सुजा) योगेन संस्कृता जीवात्मारूपा परा (वर्त्तनि) योग-
 मार्गमिति (तता) व्याप्ता भवति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - जब १ समाधिकाल रूस उषा २ भगिनी रात्रिके ३ अन्ध-
 कारको ४ अपने तेजसे दूर करनी है तब ५ योगसे संस्कृत जीवात्मारूप प-
 रा ६ योगमार्गमें ७ व्याप्त होती है - ॥ ५ ॥

भौवन आत्यञ्जपि द्विपदापंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

इमानु कम्भुवना सीपधे मेन्द्रश्च विभ्वे च देवाः ॥ ६ ॥ २२०
 इन्द्रः आत्मा (च) (विभ्वे देवाः) माणाः शः २४।२।२। ३७ (इमा-
 इमानि (भुवना) भुवनानि कमलानि (वयम्) वागाद्यात्विजः (च-
 सापि (कम्) परमेश्वरं। कंवै प्रजापतिः शः २। ५। २। २३ (नु) सि-
 प्रं (सीपधेम) साधयामः वशी कुर्मः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ आत्मा २ शौर ३ माणा ४ इन्द्र ५ कमलोंको ६ शौर इन्द्र-
 याक् सादिञ्जपि त्विज ७ भी ८ परमेश्वरको ९ शीघ्र १० साधन करे - ॥ ६ ॥

कवपएलुपञ्जपि द्विपदापंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

वित्तुतयो यथापथाद्य इन्द्रत्वत्तुरातुयः ॥ ७ ॥ २२१ ॥
 हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वत्) त्वत्समीपे (रातयः) द्वावर्त्तिसृष्टानि
 दानानि (यंतु) गच्छन्तु (यथा) (वित्तुतयः) विविधा मार्गाः (पु-
 था) राजमार्गिणा सह संयोगं प्राप्नुवन्ति ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ आपके समीप ३ द्विविध रूपदान ४ प्राप्त करें
 ५ जैसे ६ नाना प्रकारके मार्ग ७ राजमार्गके साथ संयोगको प्राप्त हों ॥ ७ ॥

शकरता है ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंसंज्ञीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसाद
शर्माविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्यै
कादशः खण्डः ११ ॥ इति द्वैपदमेन्द्रं समाप्तम् ॥

अथ द्वादशः खण्डः

गृत्समद्वयधिराष्टिश्छन्दो जीवेशो देवते-

त्रिकद्रुकेषु महिषायवाशिरन्तुविशुष्मे स्त्रिम्प
सोममपिविष्णुना सुतयथावशम् । सईम्मेना
दमहिकर्मकर्त्तवमहो मुरुथं सश्वदेवो देव थंस
इत्यइन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ १ ॥ २२५

(महिषः) महान्नि० ३।३ (तुविशुष्म) बहुवलः परमेश्वरः नि०
२।१ तथा २।६ (त्रिम्पत्) तृप्तवान् कथं (त्रिकद्रुकेषु) स्थूल सूक्ष्म
कारणाख्यकामवृक्षरूपदेहेषु (सुतम्) अभिपुतं (यवाशिरम्)
प्राणैः मिश्रितं । अन्नं हि प्राणः श० (सोमम्) (विष्णुना) अन्नया
मिना सह (यथावशं) यथोत्साहं (अपवित्) (सः) आत्मप्रतिविं
वः (महाम्) महान्तं (उरुम्) विस्तीर्णं (ईम्) पराशक्तिं (इन्द्रम्)
परमेश्वरञ्च (महि) महत् (कर्म) (कर्त्तव) कर्त्तुम् मोक्षदानाय
(ममाद्) अमादयत् (सः) (सत्यः) (देवः) (इन्दुः) जीवात्मा (सं-
त्यम्) (देवम्) (एनम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (सश्वत्) व्याप्नोतु-
स्पृचति गीति कर्मानि० २।१४—॥ १ ॥

भाषार्थः - १ महान् २ बहुवली परमेश्वर ३ तृप्तवृक्षा ४ जिस कारण-
स्थूल सूक्ष्म कारणानाम कामवृक्षरूप देहों में ५ अभिपुत ६ प्राणों से मिश्रि-
त ७ आत्मप्रतिविंव को ८ अन्नया मी के साथ ९ उत्साह पूर्वक १० पान किया ११

आत्मप्रतिविम्बने १२ महान्त १३ विस्तीर्ण १४ पराशक्ति १५ और परमेश्वर
को १६ १७, १८ महत्कर्मकरने अर्थात् मोक्षदानके लिये १९ त्वत्तकिया
२० वह २१ सत्य २२ विद्वान् २३ जीवात्मा २४ सत्य २५ देव २६ इत्स २७
परमेश्वर को २८ व्याप्त करो ॥१॥

गौराङ्गिः रसः ऋषिर्जगती इन्द्रः सूर्यो देवता-

अयं सहस्रमानवाद्दृशः कवीनाम्मतिज्यो
तिविधर्मः । ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः
सचेतसः स्वसरे मन्यु मन्ताश्चितागोः ॥२॥ २२६

यदा (सहस्रमानवः) अनन्ताभक्तायुस्यसः (दृशः) द्रष्टा (क
वीनाम्) मेधाविनां (मतिः) मेधा (विधर्म) विधातृ (ज्योतिः)
तेजः (अयम्) (ब्रध्नः) सूर्यरूपः परमेश्वरः (समीचीः) भुद्धाः नि-
र्मलाः (अरेपसः) पापरहिताः (सचेतसः) समानचित्ताः (उषसः)
(समैरयत्) सम्यक् प्रेरयति तदा (गोः) मानससूर्यस्य नि० २१६
(मन्यु मन्तः) मन्युः प्रकाशस्तद्वन्तः नि० २१६ वागाद्यत्विजः
(स्वसरे) आत्मनद्यां (चिताः) भवन्तीति शेषः ॥२॥

भाषार्थः - जव १ अनन्तभक्त रखनेवाला २ द्रष्टा ३ मेधाविशोंका
४ मेधारूप ५ विधाता ६ तेजस्वी ७ यह ८ सूर्यरूप परमेश्वर ९ भुद्ध निर्मल
१० पापरहित ११ समानचित्तवाली १२ उपाशोंको १३ भले प्रकार प्रेरणा क
रता है तव १४ मानससूर्यके १५ प्रकाशमान्वाक् आदि ऋत्विज १६ आत्मा
रूपनदीमें १७ प्रवेश करते हैं ॥२॥

परुच्छेपः ऋषिरत्यङ्गि इन्द्रो देवता-

इन्द्रया ह्युपनः परावतो नाथ मच्छा विदधानी

वसत्यातिरस्ता राजवसत्यातिः । इवामहेत्वा
 प्रयस्वन्तः सुतेष्वपुत्रासानपितरवाजसा
 तयेमथं हिष्ठवाजसातये ॥३॥ २२७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (परावते) ब्रह्मणः प्रादुर्भूत्वा (ने) अस्मान्
 (उपायाहि) अस्मत्समीपं प्रत्यागच्छ (ने) यथा (अयम्) (सत्प
 तिः) सुतामृत्विजां पालको यजमानः (विदधानीव) यज्ञानीव
 (अच्छा) आभिप्राप्तुं यज्ञगृहमागच्छति (इव) यथा (सत्पतिः)
 (राजा) (अस्ता) गृहाणि यस्मात् (प्रयस्वन्त) हविलक्षणान्
 वन्नो वयं (त्वा) त्वां (सुतेषु) अभिपुत्रेषु प्राणोन्द्रियात्मप्रतिविं
 वेषु (वाजसातये) विराड् रूपान्नलाभाय (आहवामहे) आभि
 मुख्येनाहवामहे (ने) यथा (पुत्रासैः) पुत्राः (महिष्ठम्) पूज्यत
 मं (पितर) (वाजसातये) अन्नस्य सम्भजनाय ॥३॥ २२७

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ ब्रह्म से प्रकट होकर ३ हमारे ४ समीप
 आओ ५ जैसे ६ यह ७ ऋत्विजों का पालक यजमान ८ यज्ञोंको ही ९ मा
 मकरने को यज्ञशाला में आता है १० अथवा जैसे ११ सत्यरूपों का पालक
 १२ राजा १३ राजभवनों में प्रवेश करता है जिसकारण १४ हवि रूप अन्न
 वान् हम १५ तुमको १६ प्राण इन्द्रिय आत्म प्रतिविं के अभिपुत्र होनेपर
 १७ विराटरूप अन्नके लाभार्थ १८ आह्वान करते हैं १९ जैसे २० पुत्र २१
 पूज्यतम २२ पिताको २३ अन्न संभजनके लिये — ॥३॥

रेभावरपिरनिजगती चन्द्र इन्द्रो देवता-
 तमिन्द्रज्जो हवीमि मेघवो नमुग्रं सत्रादधान
 मप्रतिष्कृतं अवां सिभूरि मं हिष्ठो गी

भिराच्ययन्ति यो ववर्त्त राये नो विष्वा सुपथा कृ-
णो नुवञ्जी ॥४॥ - २२८

(तम्) (मघवानम्) इन्द्ररूपं (उग्रम्) शिवरूपं (सत्रां) सत्ये
नसत्यप्रतिश्रया (भूरि) भूरीणि (अवासि) वलानि रामकृ-
ष्णादिरूपस्थानि (दधानम्) तेष्वतारेषु (अप्रतिष्कृतम्) श-
त्रुभिरप्रतिरोधनीयं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (जोहवीमि) पुनः पुन
राह्वायामि (मंहिष्ठः) पूज्यतमः (यज्ञियः) यज्ञार्हः (वञ्जी) ज्ञा-
नवञ्जवान् परमेश्वरः (गीर्भिः) स्ममदीयाभिः स्तुतिभिः (आवे-
वर्त्त) यज्ञेष्वभिमुख्येन वर्त्तमानोऽभवत् (राये) योगधनाय
(विष्वा) सर्वाणि (सुपथा) सुमार्गीणि (कणोतु) करोतु ॥४॥

भाषार्थः - १ उसर इन्द्ररूप ३ शिवरूप ४ सत्यप्रतिज्ञासे ५ बहुत
६ वलराम कृष्ण आदिरूपस्थोंको ७ धारणा करने वाले ८ शत्रुओं से
प्रतिरोधनीय ९ परमेश्वरको १० बारम्बार आवाहन करता हू ११ बहुपू-
ज्यतम १२ यज्ञ योग्य १३ ज्ञानवञ्ज धारी परमेश्वर १४ हमारी स्तुति-
द्वारा १५ यज्ञोंमें सन्मुख वर्त्तमान हुआ १६ योगधनके लिये १७ सब १८
सुमार्गी को १९ शोधन करो ॥४॥

पुरुच्छेप इन्द्रपितृषु इन्द्रो मीन्द्रवायवो देवताः
अस्तु अषट्पुरो अग्निधिया दधे आनुत्यच्छदो
दिव्य वृणी मह इन्द्र वायु वृणी मह । यद्वा क्रो-
णा विवस्वते नाभो सन्दाय नव्यसे । अधप्रसू-
नमुप यन्ति धीतयो देवो थं अच्छो यन धीत
यः ॥५॥ २२९

(पुरः) प्रचुरः समाष्टिभावापन्नोः^१ हं (आग्निमे)^२ आत्माग्निन् (धियो)^३
 योगबुद्ध्या^४ (द्वे) धारित वानास्मि (त्यत्) तत् । यकारो योगज्ञापकः
 (दिव्यमे) (शब्दः) योगवलं (नु) क्षिप्रं (आवृणी महे) वागाद्यत्ति
 जो वयमाभिमुख्येन सम्भजामहे किञ्च (इन्द्रवायु)^{१०} मनः प्रा-
 णौ । मन एवेन्द्रः श० १२। १। १३ (वृणी महे) (यद्) यस्मादे-
 वतौ (नव्यसे) नवतराय संस्कृताय (विवस्वते) मानस सूर्या-
 य (नाभौ) नाभौ योगयज्ञे (सन्दाय) संयुज्य (क्राणा) योग
 क्रियायाः कुवीणौ भवतः (ऋषद) अस्याः स्तुतेः ऋवणां (अ-
 स्तु) (अध) अथ अनन्तरं (ने) (धीतयः) अस्माकं वागाद्य-
 त्विजां योगसम्बन्धीनि कर्माणि (प्रसूनम्) जातं संस्कृतं जी-
 वात्मानं (उपयन्ति) उपगच्छन्ति (ने) यथा (अयनधीतयः)
 उत्तरायणसम्बन्धीनि कर्माणि (देवान्) (अच्छ) आभिमुख्ये-
 न प्राप्तुं गच्छन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ समाष्टिभावापन्नमेने २ आत्माग्निको ३ योग बुद्धि-
 द्वारा ४ धारण किया है ५ उस ६ दिव्य ७ योगवल को ८ शीघ्र ९ हमवा-
 क आदि ऋत्विज सेवन करते हैं १० और मन प्राणों को ११ मर्त्यनाक-
 रते हैं १२ जिस कारण वेदों में १३ संस्कृत १४ मानस सूर्यके लिये १५
 योग यज्ञ में १६ संयोग करके १७ योग क्रियाके कर्त्ता होते हैं १८ इसस्तु-
 तिकां ऋवणा १९ हो १९ तदनन्तर २० हमवाक आदि ऋत्विजों के २१ योग सम्ब-
 धीकर्म २२ संस्कृत जीवात्मा को २३ प्राप्त होते हैं २४ जैसे २५ उत्तरायण-
 सम्बन्धीकर्म २६ देवान्को २७ सन्मुख प्राप्त करनेके लिये जाते हैं - ५

एवयामरुदापिरतिजगतीच्छन्द इन्द्रो देवता-

प्रवामहे मतयो यन्तु विषावे मरुत्वते गिरिजा
 एवं यामरुत । प्रशुद्धाय प्रयज्येव सुखादयेते
 वसे भन्द दिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥ ६ ॥ २३०

(स्तुतयः) स्तुतयः (वः) युष्माकं (महे) महते (मरुद्वृते) प्राण
 वते (विषावे) अन्नर्यामिने (प्रयन्तु) प्रगच्छन्तु (याः) मरु
 द्विरिजाः) समष्टि प्राणास्य वाचि संभूताः स्तुतयः (प्रशुद्धाय)
 महाबल रूपाय (प्रयज्येव) प्रकर्षेण यष्टव्याय (सुखादये)
 सुखप्रदाय (तवसे) योगबलवते (भन्ददिष्टये) स्तुति रूप यज्ञ
 वते (धुनिव्रताय) अमृत मेघस्य चालनं कर्म यस्य तादृशाय
 (शवसे) धनवते परमेश्वराय (एवं) तस्यान्याभावात् ॥ ३ ॥

भाष्यार्थः - १ स्तुतियां २ हमारं ३ महान् ४ प्राणवान् ५ अन्नर्या-
 मीके लिये ६ जाओ ७ जो ८ समष्टि प्राणकी वाणी में प्रकट स्तुतियां
 ९ महाबल रूप १० पूजनीय ११ सुखदाता १२ योगबलवान् १३ स्तुति
 रूपवत्त्ववान् १४ अमृत मेघके प्रेरक १५ धनवान् परमेश्वरके लिये १६
 ही है उसके अद्वैत होनेसे ॥ ३ ॥

आनानतः पारुच्छे पित्र्यैः पितृष्विन्द्रः सोमो देवता-

प्रयास्त्वा हरिणा पुनानो विश्वादेषां शंसितर
 तिसयुग्वाभिः सुरानस युग्वाभिः । धाराष्ट्रस्य
 रोचते पुनानां अरुषा हरिः । विश्वायद्रूपा परि
 यात्युक्ताभिः सप्तास्यैभिर्ऋक्ताभिः ॥ ७ ॥ २३१

(सयुग्वाभिः) सह युक्तैर्वागाद्यन्विभिः सहितः (पुनानः) पूज-
 मानः । अहं ममत्वादिदोषैरहितः संस्कृत आत्मप्रतिबिंबः (अ-

या) चैतन्यया अयगतौ (हरिण्या) वैष्णव्या (रुचा) पराख्य
 दीप्त्या (विश्वो) सर्वाणि कामादीनि (द्वेषांसि) द्वेषाणि रक्षांसि
 (तरति) विनाशयति (न) यथा (सूरः) सूर्यः (सयुग्वाभिः) सह
 युक्तै रश्मिभिर्नमांसिहिनस्ति (यद्) यद् (पुनानः) (अरुषः)
 आरोचमानः (हरिः) मानससूर्यः (सप्तास्यैभिः) सप्तमुखतुल्यै
 (अरुक्ताभिः) वागाद्यृत्विग्रूपस्वकीयतेजोभिः (विश्वो) सर्वाणि
 (रूपाणि) कमलस्थानां देवानां रूपाणि (परियोति) परितः प्रा
 प्नोति तदा (प्रष्टस्य) गगनमण्डलप्रष्टस्य (धारा) अमृतधारा
 (अट् कभिः) तेजोभिः (रोचते) दीप्यते ॥७॥

भाष्यार्थः - १ सह योगीवाक् आदि ऋत्विज सहितं २ अहं ममत्व
 दोषोऽसेरहित संस्कृत आत्म प्रतिबिंब ३ चैतन्य ४ वैष्णवी ५ परानाम दी
 प्तिके द्वारा ६ सब ७ द्वेषा राक्षसवाकाम आदि को ८ विनाश करता है ९ जे
 से १० सूर्य ११ सहवर्ती किरणों से १२ जब १३ शुद्ध १४ आरोचमान १५
 मानससूर्य १६ सप्त मुखतुल्य १७ वाक् आदि ऋत्विजरूप अपनेतेजों से १८
 सब १९ कमलस्थ देवताओं के रूपों को २० सब ओर से प्राप्त करता है २१
 तव गगनमंडल एष्टि की २२ अमृत धारा २३ तेजों से २४ प्रकाश करती
 है ॥७॥ नकुल ऋषिरतिशक्ती छन्दः परमेश्वरो देवता-

अभित्यन्देव १७ सवितारमाण्याः १८ कवि क्रतुम्
 चोमिसत्यसव १९ रत्नधामभिप्रियम्मेतिम् २०
 द्वायस्यामेति भो आदि द्युतत सर्वा मनि हिरण्य
 पाणि रामी मीत सुक्रतुः कृपास्वः ॥८॥ २३३

(त्यम्) तं (कवि क्रतुम्) मेधाविनां यत्तपुरुषं (सत्यसवम्)

सत्यमेरुं (रत्नधां) रमणीयानां धनानां दातारं (अभिप्रिय-
 म्) सर्वतः प्रियं सर्वेश्वरत्वात् (मतिम्) मननीयं स्तुत्यं (स-
 वितारं) सर्वस्य मेरुकं सर्वात्मत्वात् (देवम्) माया क्रीडनकैः
 क्रीडाण शीलं परमेश्वरं वाक् व्यापारेण (अभ्यर्चामि) सर्वतः
 पूजयामि (यस्य) (सवीमनि) प्रसवे सति (उर्धा) उन्नता-
 (भा) दीप्तिरूपा पराशक्तिः (अमतिः) जडात्मिका अपरा प्र-
 कृतिश्च (ओरायोः) द्यावा एधिब्योः रूपे (अदिद्युतत्) प्रका-
 शितवान् (हिरण्यपाणिः) ज्योतिर्हस्तः (सुकतुः) दिव्य-
 यज्ञवान् विष्णुः (रूपा) स्तुत्या भक्तानां स्तुतिनिमित्तेन (स्वः)
 सूर्यं (अभिमीत) निर्मितवान् द्यावा एधिब्यो मायां शे-
 सूर्यस्तु पुरुषांशः पुरुषावतार इत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाष्यार्थः - १ उस २ मेधावियोंके यज्ञपुरुष ३ सत्यमेरुण ४ रमणी-
 यधनोंके दाता ५ सब ओर से प्रिय ६ स्तुति योग्य ७ सबके मेरुक ८ माया
 के खिलोनों से क्रीडाण शील परमेश्वर को वाक् व्यापार से ९ पूजनकर-
 ताहं १० जिसकी ११ आज्ञा होनेपर १२ उन्नत १३ दीप्तिरूपा पराशक्ति
 १४ और जडात्मिका अपरा प्रकृति ने १५ एधिबी स्वर्गके रूपोंको १६ प्र-
 कट किया १७ ज्योतिरूपहस्त वाले १८ दिव्य यज्ञवान् विष्णुने १९ भक्तों
 की स्तुतिनिमित्त २० सूर्यको २१ निर्माण किया - ॥ ८ ॥

परुच्छेप ऋषिरत्याष्टि ऋन्दोमिर्देवता-

अग्निं^३ ध्वं^{१२} द्योतारं^{३२} मन्ये^३ दा^३ स्वन्तं^३ वसोः^३ सन्नु^३ धं^३
 सहसो^३ जात^३ वेदसं^३ विप्रं^३ नजात^३ वेदसम्।^३ यजुं^३
 इया^३ स्वध्वरो^३ देवा^३ देवा^३ च्या^३ रूपा^३ घृतस्य^३ विधा^३।

^३१^२ ^३२ ^३२ ^३१ ^३२ ^३१ ^३२ ^३१ ^३२
 ष्टिमनुभुक्तशौचिषःपूजह्वानस्यसर्पिषः६-२३३
 (होतारम्) देवानामाह्वारं (वसोः) धनस्य योगधनस्य वा
 (दास्वन्तम्) अतिशयेन दानवन्तं । दासति दीनकर्मा नि० ३
 ॥२०॥३ (सहस्रः) ब्राह्मज्योतिषः (सूनम्) पुत्रं (जातवेदसम्)
 सर्वज्ञं (विप्रम्) मेधाविनं (न) च (जातवेदसम्) जातधनं
 धनवन्तं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निस्वा (मन्ये) स्तौमि (यः)
 (स्वधरेः) शोभनयज्ञवान् (देवः) (ऊर्ध्वयो) उन्नतया उत्कृष्ट
 या (देवाच्या) देवान्पूजयन्त्या (रूपा) सामर्थ्यलक्षणाया कृ
 पया युक्तः सन् (भुक्तशौचिषः) दीमतेजस्कस्य मानससूर्य-
 तेजोरूपस्य वा श० ४॥३॥१॥२६ (आजुह्वानस्य) आसमन्ता-
 द्दृश्यमानस्य (सर्पिषः) सरणशीलस्य घृतस्येन्द्रियशक्तेर्वी
 प्राणाः पयः शीर्षस्तन्याणं श० ६॥५॥४॥१५ (विभ्राष्टिम्) विशेष
 पदीमि (अनुवाष्टि) कामयते स्वीकरोतीत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः — १ देवताओके आह्वाना २ धनवा योगधनके ३ दाता
 ४ ब्राह्मज्योतिके ५ पुत्र ६ सर्वज्ञ ७ मेधावी ८ शौर ९ धनवान् १० अग्नि-
 वा आत्माग्नि को ११ स्तुत करता हूँ जो १२, १३ शोभनयज्ञवाला १४ देव-
 ता १५ उत्कृष्ट १६ देवपूजक १७ सामर्थ्यरूपरूपासे युक्त होना १८ दी-
 मतेजस्क वा मानससूर्यके तेजरूप १९ होमेहुए २० घृतवा इन्द्रियशक्ति
 की २१ विशेषपदीमि को २२ स्वीकार करता हूँ — ॥ ६ ॥

गुत्समदःत्रयि रति शकरी छन्दोजीवेष्वरो देवते
^२३ ^२२ ^२२ ^३२ ^३२ ^३२ ^३२ ^३२
 तवत्यन्त्यन्तृपातुन्दप्रथमस्युव्यन्दिवि
 प्रवाच्यदुतम् । यादेवस्यशवसाप्रारिणाश्च-

सुरिणान्नपः^{२ ३ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ ३} । भुवो विभ्वसुभ्यदेवभोजसावि^३
देदूर्जं^२ शतक्रतुविदेदिषम् ॥ १० ॥ २३४

हे (चतः) वागाद्यृत्विजांनर्तयितः (इन्द्र) यजमान (तव) (त्य
त्) तत् यकारो योगज्ञापकः (कृतम्) (अपः) कर्म (नयम्) न
राणां पुत्रादीनां हिनकरं (प्रथमम्) मुख्यम् (पूर्वम्) सनातनं
(दिवि) स्वर्गलोके (प्रवाच्यम्) श्लाघनीयं प्रकर्षणावक्तव्यं (यः)
त्वं (देवस्य) इष्टदेवस्य (शवसा) वलेन (असुरिणम्) असुं प्रा
णं रिणान् प्रेरयन् (अपः) अमृतोदकांनि (अरिणः) गगनमंडला
त्प्रेरय (शतक्रतुः) बहुकर्मा परमेश्वरः (विभ्वम्) सर्व (अदेवम्)
क्रोधादि समूहं (भोजसा) वलेन (अभिभुवत्) अभिभवतु पर
मेश्वर एव (ऊर्जम्) योगवलं (इषम्) विराड् रूपान्नं (विदेत्)
लम्भयेन्नान्य इत्यर्थः ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे वाक् आदि ऋत्विजों के नचाने वाले २ यजमान ३ ते
रा ४ वह ५ किया हुआ ६ कर्म ७ पुत्र आदि का हिनकारी ८ मुख्य ९ सनातन
१० स्वर्ग में ११ श्लाघा योग्य है १२ जोतुमने १३ इष्टदेवके १४ वलसे १५ प्राण
को प्रेरणा करते हुए १६ अमृतजलोंको १७ गगनमंडलसे प्रेरणा किया १८
बहुकर्मा परमेश्वर १९ सब २० क्रोध आदि समूहको २१ वलसे २२ निरस्का
रकरो परमेश्वरही २३ योगवल २४ और विराट् रूप अन्नको २५ प्राप्तकरा
वेन दूसरा यह अभिप्राय है ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते सा
मवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य द्वादशः खण्डः

समाप्तम् चतुर्थेऽध्यायः ४

समामम् ऐन्द्रं पर्व ऐन्द्रकाण्डं वा
इति द्वितीयं पर्व-

ओं नमः सामवेदाय

अथ पञ्चमाध्यायः

गतमाग्नेयं पर्व, गतञ्चैन्द्रमद्दानीमिदं तृतीयं सम्प्रवर्त्तते अत्र-
पर्वीणि सोमस्य संस्तुतिः। ब्रह्माणो यत्प्रादुर्भवति तत्सर्वं सोम ए-
व यथा श्रुतयः सोमो वैराजायज्ञः प्रजापतिः। तस्यैतास्तन्वो या-
एता देवताः श० १२।६।२।१ सोमा हुतयो हवाऽ एता देवानाम्
यत्सामानि ११।५।६।६ प्राणः सोमः श० ७।२।४।२ प्राणो वै
सोमः श० ७।३।१।४५ ज्योतिः सोमः श० ५।१।५।२८ सोमो वै-
भ्राट् ३।२।४।६ इत्यादयः एवं सति यत्र योर्यः संभविष्यति तं क-
थायिष्यामः॥ अमही युक्तेपि गयित्री छन्दः सोमो देवता

उच्चाते जान्मन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रं
शर्ममाहि ऋवः ॥१॥

आत्मारूपयजमानः कथयति हे आत्म प्रतिविं (ते) तव-
(अन्धसः) अन्नरूपस्य (जानम्) जन्म (उच्चा) उत्कृष्टचैतन्य
शक्त्या परयाऽस्ति (उग्रम्) उत्कृष्टं (शर्म) सुखं (माहि) मह-
त्नि० ३।४।१ (ऋवः) विराड् रूपान्नि० २।७ (दिवि) महापु-
रुषलोके (सत्) विद्यमानं (भूम्या) योगभूम्या (आददे) गृ-
ह्णामि ॥१॥

भाषार्थः - आत्मारूपयजमानकहताहै हे आत्म प्रति विं १ तव
२ अन्नरूपका ३ जन्म ४ उत्कृष्टचैतन्य शक्ति परासेहै ५ उत्कृष्ट ६ सुख

७) ८ श्रौरविराटरूपमहा अन्नको षोडशोकि महा पुरुष लोकमे १० विद्यमान है उसे ११ योग भूमिद्वारा १२ ग्रहण करता है ॥ २ ॥

मधुच्छन्दाः ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता-
^२स्वादिष्ट्या^३मदिष्ट्या^३पवस्व^३सोमधारया^३। इ^१
^३न्द्राय^३पातु^३वे^३सुतः^३ ॥ २ ॥ २

हे (सोम) (इन्द्राय) (पातुवे) पातुं (सुतः) अभिषुतस्त्वं (स्वादिष्ट्या) स्वादुतमया (मदिष्ट्या) अतिशयेन मादयिष्या (धारया) (पवस्व) क्षर ॥ २ ॥ २

भाषार्थः - १ हे सोम २ इन्द्र के ३ पानार्थ ४ अभिषुत तुम ५ वड़ी स्वादु ६ वड़ी मादक ७ धारा के साथ ८ पात्र में गिरो - ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम् हे (सोम) आत्म प्रतिविं (इन्द्राय) (पातुवे) परमेश्वरस्य पानाय (सुतः) अभिषुतस्त्वं (स्वादिष्ट्या) स्वादुतमया (मदिष्ट्या) अतिशयेन मादयिष्या (धारया) (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्म प्रतिविं २ परमेश्वर के पानार्थ ४ अभिषुत तुम ५ स्वादिष्ट ६ वड़ी मादक ७ धारा के साथ ८ सुषुम्णा मार्ग से चलो ॥ २ ॥

भृगुर्वारुणि ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता-

^१तृषो^३पवस्व^३धारया^३मरुद्धते^३चमत्सरः^३। विश्वा^३
^३दधाने^३श्रोजसा^३ ॥ ३ ॥

हे आत्म प्रतिविं (मत्सरः) पातु रात्मनः मदकरः मदि धातो रौणादिके संरप्रत्यये रूपम् (च) (श्रुषो) मानस सूर्य रूपस्त्वं (श्रोजसा) योगवत्नेन (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि योगेश्वर्या

णि (दधानः) धारयन् (प्ररुद्धते) वागाद्यं त्विग्भिः संयुक्ता याः
 त्मारूप यजमानाय नि० ३।१८ (धारया) ज्योतिर्धारया (प
 वस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे आत्मप्रतिविंब १ आत्माके मदकारक २ और ३ मा-
 नस सूर्य रूपतुम ४ योगबल से ५ सब योगैश्वर्यों को ६ धारण करते ७ वा
 क आदि ऋत्विज संयुक्त आत्मारूप यजमान के लिये ८ ज्योतीरूप धा-
 रके साथ ९ सुषुम्णा मार्ग से चलो ॥ ३ ॥

अमही युर्दपि शेषं पूर्ववत्

यस्ते मदी वरेण्यस्तेनापवस्वान्धसा । देवावी
 रघशं सहा ॥ ४ ॥ ४

हे आत्मप्रतिविंब (ते) तव (यः) (देवावीः) देवकामः वीकान्तौ
 कान्तिरिहेच्छा (अघशंसहा) अघं पापं यः शंसति तस्य काम
 स्य हुन्ता (वरेण्यः) सर्वैर्वराणीयः (मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदः
 (तेन) (अन्धसा) अन्नरूपेण (आपवस्व) आत्मन्या गच्छ ४

भाषार्थः - हे आत्मप्रतिविंब १ तेरा २ जो ३ देवकामा ४ कामनाशक
 ५ सबसे वरण योग्य ६ अहं ब्रह्मास्मि नाम मद है ७ उस ८ अन्नरूपके सा
 थ ९ आत्मा में प्राप्त हो ॥ ४ ॥ वितर्कपि शेषं पूर्ववत्

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरि
 रेति कानिक्रदन् ॥ ५ ॥ ५

(तिस्रः) (वाचः) ऋग्यजुः सामूलक्षणा (उदीरते) ऋत्विज उ
 च्चारयन्ति (धेनवः) (गावः) (मिमन्ति) दोहार्थशब्दा यन्ति तस्मि
 न्काले (हरिः) मानस सूर्यः (कानिक्रदन्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं

कुर्वन् (एति) गगनमंडलं गच्छति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १, २ ऋग्यजुसामरूपतीन प्रकारके वचनों को ३ ऋत्विज उच्चारण करते हैं ४ दुग्धदाता ५ गौ ६ दोह के लिये शब्द करती हैं उस समय पर ७ मानस सूर्य = अह ब्रह्मास्मि यह शब्द करता ८ गगन मंडल को जाता है ॥ ५ ॥ कश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्-

इन्द्रो^१येन्द्रो^२ मरुत्वने^३ पवस्व^४ मधुमत्तमः^५ अर्के^६
स्य^७ योनिमा^८ सदम् ॥ ६ ॥ ६

हे (इन्द्रो) सोम (मधुमत्तमः) अतिशयेन मधुमान्त्वं (अर्के-स्य) अर्चनीयस्य यज्ञस्य (योनिम्) स्थानं (आसदम्) उपवे-
पुं (मरुत्वेने) (इन्द्राय) इन्द्रार्थं (पवस्व) सर ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे सोम २ अत्यन्त मधुमान् तुम ३ पूजनीय यज्ञके ४ स्थानमें ५ स्थित होनेको ६ मरुद्गण युक्त ७ इन्द्रके लिये ८ पात्रमें गिरो ९

अथाध्यात्मम् - हे (इन्द्रो) आत्मप्रतिविंबं (मधुमत्तमः) विज्ञानवान्त्वं (सदम्) सदैव (मरुद्गते) वागाद्यत्विग्वते (इन्द्राय) आत्मारूप यजमानाय (अर्केस्य) अर्चनीयस्य महा-
पुरुषस्य (योनिम्) स्थानं गगनमण्डलं (आपवस्व) सुषुम्णा
मार्गेणा गच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंबं २ विज्ञानी तुम ३ सदैव ४ वागादि ऋत्विजवान् ५ आत्मारूप यजमानके लिये ६ पूजनीय महापुरुषके ७ स्थान गगन मंडल को ८ सुषुम्णा मार्गसे जाओ ॥ ६ ॥

जमदग्निऋषिः शेषं पूर्ववत्-

असाव्यं^१ भुर्मदाया^२ प्सुदक्षो^३ गिरिष्ठाः^४ श्ये^५

नौनयोनिमासदत् ॥७॥७

(गिरिष्ठाः) देहेस्थितः (अभुः) आत्मप्रतिविंबुः (मदाय) अहंब्र
ह्मास्मीति मदाय (असावि) अभिपुतः (अप्सु) कमलान्तरि-
क्षेषु (श्येने) (न) इव शीघ्र गमनः (अयम्) आत्मप्रतिविंबुः
(योनिम्) स्थानं गगनमण्डलं (आसदत्) प्राप्तवान् ॥७॥७

भाषार्थः - १ देहेनेस्थित २ आत्म प्रतिविंबु ३ अहंब्रह्मास्मि मदके
लिये ४ अभिपुत हुआ ५ कमलान्तरिक्षोंमें ६ श्येनकी तुल्य शीघ्रगा-
मी ७ इस आत्म प्रतिविंबुने ८ गगन मंडल नाम स्थान को ९ प्राप्त किया
-॥७॥७

दृढच्युत आगस्त्य ऋषिः शेषपूर्ववत्

पवस्वदक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे मरु
द्ध्यौर्वायवे मदः ॥ ८ ॥ ८

हे (हरे) हरितवर्ण सोम (दक्षसाधनः) बलस्य साधकः (मदः)
मदरूपत्वं (देवेभ्यः) (मरुद्भ्यः) (वायवे) पीतये) पानाय (पव
स्व) सर ॥ ८ ॥ ८

भाषार्थः

१ हे हरितवर्ण सोम २ बलसाधक ३ मदरूपतुम ४ देवताओं ५ मरुद्भ्यों
६ और वायुके ७ पानार्थ ८ पावमे गिरो - ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् हे (हरे) मानससूर्य (दक्षसाधनः) योग
बलस्य साधकः (मदः) मदरूपत्वं (मरुद्भ्यः) प्राणोभ्यः (वाय
वे) समष्टिप्राणाय (देवेभ्यः) महापुरुष पुरुषेभ्यः (पीतये)
पानाय (पवस्व) सुपुम्णा मार्गेण गच्छ ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे मानससूर्य २ योगबलके साधक ३ मदरूपतुम ४
प्राणों ५ समष्टिप्राण ६ और महापुरुष पुरुषोंके ७ पानार्थ ८ सुपुम्णा

मार्गसेचलो-॥८॥ अस्याः परस्याञ्च कश्यपोः सितः करपिः शेषं पूर्ववत्-

परिस्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् । मदेषु

सर्वधा असि ॥ ८ ॥ ८

(स्वानः) सुवानः अभिषूयमाणः (गिरिष्ठाः) गिरौ वर्तमानः (सोमः) (पवित्रे) ऊर्णमये दशा पवित्रे (पर्य्यक्षरत्) परिक्षरति सत्त्वं (मदेषु) (सर्वधा) सर्वेषां देवानां धारकः (असि) - ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ अभिषूयमान २ पहाड़ी ३ सोम ४ ऊर्णमय दशा पवित्रपर ५ गिरता है वह तुम ६ मदे में ७ सर्व देवताओं के धारक - हो - ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - (स्वानः) आत्मैवानो यस्य सः (गिरिष्ठाः) महावाचिस्थितः (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (पवित्रे) प्राणे । पवित्रं वै प्राणोदानौ व्यानञ्च श ० १ १ ३ १ (पर्य्यक्षरत्) सत्त्वं (मदेषु) अहं ब्रह्मास्मीति मदेषु (सर्वधा) सर्वस्य ब्रह्माण्डस्य धारकः (असि) ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ आत्मरथस्य २ महावाक् में स्थित ३ आत्मप्रतिविंब ४ प्राण में ५ स्थित हुः आवह तुम ६ अहं ब्रह्मास्मि मदे में ७ सब ब्रह्माण्ड के धारक - हो ॥ ८ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

परिप्रियादिवः कविर्वया थं सिन स्याहितः स्वा

नैयीति कविः क्रतुः ॥ १० ॥

(कविः) मेधावी (कविः क्रतुः) योग यत्नानुष्ठाता (न स्याः) मनोहृदययोर्मध्ये (हितः) निहित आत्मप्रतिविंबः (स्वानैः) स्वकीयवागाद्यात्विग्भिः सह (दिवः) कमल समूह रूप स्वर्गस्य (प्रिया) प्रियाणि (वयांसि) ईशरूपाणि यथा - ह्यमुपार्ण सयुजा सर्वा

यासमानंवृक्षं परिष्वजानेतयोरन्यः पिप्लवं स्वहृत्त्यनश्नन्न
न्योऽभिचा कशीति म. १३. २२ सू १६४ (परियाति) गच्छति १०

भाषार्थः - १ मेधावी २ योगयज्ञका अनुष्ठाता ३ मनहृदयमें ४ स्था
पित आत्म प्रतिविंब ५ अपने वाक् आदि ऋत्विजों के साथ ६ कमल समूह
रूप स्वर्गके ७ मिय - ईश रूप देवताओंको ८ प्राप्त करता है - ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते-
सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ५

अथ द्वितीयः खंडः

श्यावाश्व ऋषिः शेषं पूर्ववत् -

^{१२} प्रसो^{२२}मासो^३ मद^३च्युतः^३ ऋव^{१२}सेनो^३मघो^३नाम्^३। सुतो^३
^३विदथे^३ अक्रमुः ॥ १॥ ११

(सुतोः) अभिषुताः (मदच्युतः) अहं ब्रह्मास्मीति मदस्त्राविणः
(सोमासः) प्राणाः (मघोनाम्) योगधनवतां योगिनां (विदथे)
यज्ञेनिः (ऋवसे) विराड् रूपान्नाय यथा श्रुतिः यदिदं किंचा
भुभ्य आक्रिमिभ्य आकीटपतङ्गेभ्यस्त त्वाणस्यान्नं १४। ६। २
१४ (प्रक्रमुः) प्रगच्छन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ अभिषुत २ और अहं ब्रह्मास्मि मदके उन्पादक ३ प्राणा
४ योगधनी योगियोंके ५ यज्ञमें ६ विराड् रूप अन्नके लिये ७ जाते हैं ॥ १॥

वित ऋषिः शेषं पूर्ववत् -

^१ प्रसो^{२२}मासो^३ विपश्चितो^३ पो न^३ यन्त^३ ऊर्मय^३ श्वना^३
^३निमृहिषो^३ इव ॥ २ ॥ १२

(विपश्चितः) मेधाविनः (सोमासः) प्राणाः (मनयन्त) कमले

पुगच्छन्ति^४ (इव) यथा (जर्मयः) (अपः) वा (महिषाः) प्रवृद्धा
मृगाः (वनानि) गच्छन्ति ॥२॥

भाषार्थः - १ मेधावी २ प्राण ३ कमलों में जाते हैं ४ जैसे ५ लहरें ६
जलों को और ७ बड़े मृग ८ वनों को प्राप्त करते हैं ॥२॥

अमहीयुर्वरिषिः शेषं पूर्ववत्

पवस्वेन्दो^१ वृषा^२ सुतः^३ कृधा^४ नो^५ यश^६ सो^७ जने^८ । वि
श्व^९ अपा^{१०} हिषा^{११} जहि ॥३॥ १३

हे (वृषा) मानससूर्यरूप (इन्दो) आत्मप्रतिविंब (सुतः) अ
भिषुतस्त्वं (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ (जने) योगिपुत्रः
अस्मान् (यशसः) यशस्विनः (कृधि) कुरु (विश्व) सर्वान्
(हिषः) हेष्टनकामादीन् (अपजहि) मारय ॥३॥

भाषार्थः - १ हे मानससूर्यरूप २ आत्मप्रतिविंब ३ अभिषुततुम ४ सुषु
म्णा मार्ग से चलो ५ योगियों के मध्य ६ हमको ७ यशस्वी ८ करो ९ सब १०
हेष्टाकाम आदि को ११ मारो - ॥३॥ १३

भृगुर्वरिषिः शेषं पूर्ववत्

वृषा^१ ह्यसि^२ भानुना^३ द्युमन्तन्त्वा^४ हवामहे^५ । पव
मान^६ स्वदृशम् ॥४॥ १४

हे (पवमान) शोध्यमानात्मप्रतिविंबत्वं (वृषा) मानससूर्य
रूपः (असि) (स्वदृशं) सर्वस्य द्रष्टारं (भानुना) तेजसा (द्युम
न्तं) दीप्तिमन्तं अतिशयेन तेजस्विनं (त्वा) त्वां (हि) (हवाम
हे) आह्वयामहे ॥४॥

भाषार्थः - १ हे शोध्यमानात्मप्रतिविंबतुम २ मानससूर्यरूप ३

^{१२}पवस्व^{३१}देव^२आयुष^{३१२}गिन्द्र^{२२}ङ्गच्छ^{३१२}तुते^{३१२}मदः^{३१२}। वायुमा^{३१२}
^{१२}रोह^{३१}धर्माणा^२ ॥ ७ ॥ १७

हे (आयुषक) माणसम्बद्धजीवात्मन्ः शू० ४। २। ३। १ (देवः) वि
द्वान्त्वं (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ (ते) तव (मदः) अहं म-
मेति मदः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गच्छतु) त्वञ्च (धर्मणा) योग-
धारणया (वायुम्) माणं (आरोह) ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ हे माणसम्बद्धजीवात्मन् २ विद्वान्तुम ३ सुषुम्णा
मार्गसेचलो ४ तेरा ५ मेमेरा यह मद ६ परमेश्वर को ७ माण करो और तुम
८ योगधारणके द्वारा ९ माणपर १० चढो - ॥ ७ ॥

मही युर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{१२}पवमानो^{३१} अजीजन^{३१}द्विविचित्रं^{३१} नतन्यतुम्^{२२}।

^१ज्योतिर्वैश्वानरम्वहत् ॥ ८ ॥ १८

(पवमानः) संस्कृतः शुद्ध आत्म प्रतिविंबः (वहत्) महत् (वैश्वान-
रम्) (ज्योतिः) ब्राह्मज्योतिः (अजीजनत्) मादुष्प्रकारयत्-
(दिवः) द्युलोकस्य (चित्रम्) विचित्रं (तन्यतुं) (न) अशनिमि
वास्ति ॥ विद्युद्ब्रह्मेत्याहुः ॥ विद्वानाद्द्विद्युद्द्विद्यत्येन ७ सर्वस्मात्पा
प्सुनो य एवं वेद विद्युद्ब्रह्मेति विद्युद्धेव ब्रह्मा श० १४। ८। ७। १-॥ ८

भाषार्थः - १ संस्कृत शुद्ध आत्म प्रतिविंबने २ महान् ३ वैश्वानर ४
ब्राह्मज्योति को ५ अनुभवकिया जोकि ६ स्वर्गलोक की ७ विचित्र ८ वि-
जली के ९ समान है ॥ ८ ॥ द्वयोः काश्यपोः सितऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{१२}परिस्वानास^{३१} इन्द्रो^{३१} मदाय^{३१} वहणा^{३१} गिराम^२
^{३१}धो^{३१} अर्षन्ति^{३१} धारया ॥ ९ ॥ १९

हे (मधो) प्राण। प्राणो वै मधुश० २४। १। ३। ३० (स्वनासुः) आ
 त्मैवानोयेषांते (इन्द्रवः) इन्द्रियात्मप्रतिविंवाः (वर्हेणा) म
 हत्या (गिरा) महावाचा (धारया) (पर्यर्षन्ति) समन्ताद्गच्छ
 न्ति तस्मात्त्वमपि गच्छेत्यर्थः ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ हे प्राण २ आत्मारथस्य ३ इन्द्रियआत्मप्रतिविं ४.
 ५ ६ महावाक् रूप धारा के साथ ७ सब ओर जाते हैं उस कारण तुम भी
 चलो ॥ ९ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

परिप्रासिष्यदत्कविः सिन्धो रूमीवधिञ्जि
 तः। कारुम्बिभ्रत्पुरुस्पृहम् ॥ १० ॥ २०

(सिन्धोः) मनसः मनोवैसुमुद्रः श० ७। ५। २। ५२ (ऊर्मो) (अ
 धिञ्जितः) आञ्जितः (कविः) मेधावी। आत्मप्रतिविंवाः (पुरु
 स्पृहं) बहुभिः स्पृहणीयं (कारुं) कर्त्तारमन्तर्यामिन आत्मा
 नं (विभ्रत्) धारयन् (परिप्रासिष्यदत्) परिस्यन्दते ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ मनकी २ लहरमें ३ आञ्जित ४ मेधावी आत्मप्रतिविंवा
 वहुतके स्पृहणीय ६ कर्त्ता अन्तर्यामी आत्मा को ७ धारणा करता ८ ऊप
 रको जाता है ॥ १० ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्र
 सादशर्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्या
 यस्य द्वितीयः खण्डः २॥ इति पंचमः प्रपाठकः

अथ षष्ठः प्रपाठकः

अथ तृतीयः खण्डः

अमही युज्वरीपिः शेष पूर्ववत्

उपोषु जानमभुरङ्गोभिर्भङ्ग म्परिष्कृतम्। इन्दु

^३१ ^३२
१ न्देवा अयासिषुः ॥ १ ॥ २२

(सुजातम्) सुसंस्कृतं (अधुरम्) कमलान्तरिक्षेषु वेगवन्तं (भङ्गम्) देहेन प्रथमभूतं (गोभिः) इन्द्रियैः (परिष्कृतम्) अलङ्कृतं (इन्दुम्) आत्मप्रतिविंबं (देवाः) (उपायासिषुः) उपगच्छन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ अच्चे संस्कृत २ कमलान्तरिक्षों में वेगवान् ३ देहाभिमानसे पृथक् ४ इन्द्रियों से ५ अलंकृत ६ आत्मप्रतिविंबको ७ देवता ८ दर्शन देते हैं - ॥ १ ॥

वृहन्मति आङ्गिरसः ऋषिः शेषं पूर्ववत्
पुनानो अक्रमी द्भिर्विष्वा मृधा विचर्षणिः ॥

^३३ ^३३ ^३३ ^३३
१ शुम्भन्ति विप्रन्धीतिभिः ॥ २ ॥ २२

(विचर्षणिः) द्रष्टा (पुनानः) संस्कृत आत्मप्रतिविंबः (विष्वाः) सर्वाः (मृधाः) कामसेनाः (अभ्यक्रमीत्) अभिक्रामितं (विप्रमेधाविनं देवाः) (धीतिभिः) प्रज्ञाभिः (शुम्भन्ति) अलंकुर्वन्ति ॥

२२ ॥ **भाषार्थः** - १ द्रष्टा २ संस्कृत आत्मप्रतिविंब ३ सब ४ कामसेनाओंको ५ सन्मुख होना है उस ६ मेधावी को देवता ७ प्रज्ञाओंसे ८ अलंकृत करते हैं - ॥ २ ॥ २२

आविशन्कलशं सुतो विष्वा अर्षन्निभिभि
यः । इन्दुरिन्द्राय धीयते ॥ ३ ॥ २३

^३३ ^३३ ^३३ ^३३
१ सुतः) अभिपुनः (इन्दुः) सोमः (विष्वाः) सर्वाः (भियः) सम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितो गमयन् (कलशम्) द्रोणं (आविशन्) (इन्द्राय) (धीयते) दशापवित्रे अर्चयुभिर्निधीयते ॥ ३ ॥

(सुतः) अभिपुनः (इन्दुः) सोमः (विष्वाः) सर्वाः (भियः) सम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितो गमयन् (कलशम्) द्रोणं (आविशन्) (इन्द्राय) (धीयते) दशापवित्रे अर्चयुभिर्निधीयते ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ अभिपुन २ सोम ३ सब ४ सम्पदाओंको ५ सब ओरसे प्राप्त कराना ६ द्रोणकलशमें अर्पण करता ७ इन्द्रके पानार्थ दशापवि

त्र परस्थापन किया जाता है - ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - (सुतः) अभिषुतः (इन्दुः) आत्मप्रतिविम्बः
(विम्बोः) सर्वाः (अभियः) योगसम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितोग-
मयन् (कलशम्) अन्नर्यामिनं । प्रजापतिर्वेद्रोण कलशः श
४।३।१।६ (आविशन्) (इन्द्राय) परमेश्वराय (धीयते) प्राणे
निधीयते ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ अभिषुत २ आत्मप्रतिविम्ब ३ सब ४ योगसम्पदाओं
को ५ सबशोरसे प्राप्तकरना ६ अन्नर्यामीमें ७ प्रवेशकरता ८, ९ परमेश्व-
रके पानार्थप्राणपरस्थापन किया जाता है ॥ ३ ॥

प्रभुवसुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
**असजि रथ्यो यथा पवित्रं चम्बो सुतः । कार्ष्म-
न्वाजीन्य क्रमीत् ॥ ४ ॥ २४ ॥**

(चम्बोः) अधिपवणफलकयोः (सुतः) अभिषुतः सोमः (पवित्रं
(असजि) सृष्टोः भूत (रथ्यः) (यथा) अश्व इव (वाजी) वेगवा-
नसोमः (कार्ष्मन्) देवानामाकर्षणा वतियज्ञे (न्यक्रमीत्)
नितरां क्रामति ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ अधिपवणफलोंपर २ अभिषुतसोम ३ पवित्रपर ४
गिरा ५, ६ तबघोड़ेकी तुल्य ७ वेगवानसोम ८ यज्ञमें ९ प्राप्तहोता है ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - (चम्बोः) प्राणापानयोः । चम्बगतौ (सुतः)
अभिषुत आत्मप्रतिविम्बः (पवित्रं) प्राणे पवित्रं वै प्राणो दानौ व्य-
नश्वश १० ११ ३।१ (असजि) सृष्टोः भूततदा (रथ्यः) (यथा) अ-
श्व इव (वाजी) वेगवान् (कार्ष्मन्) कार्ष्मिनि देवानामाकर्षणा

शील ३ योग यज्ञकेज्ञातानुम ४ हिंसक शत्रु काम आदिको ५ मारते ६ चल
तेहो उसकारण ७ अदेव कामामनको ८ योग कर्ममें प्रेरण करो-॥ ६॥

विनियोगः पूर्ववत्

^{१ २} अयापवस्व ^{३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २} धारया यया सूर्यमरोचयः ^३ हिन्वा
^{१ २} नो मानुषी ^{३ २} रूपः ॥ ७ ॥ २७

हे आत्म प्रतिविंबु (मानुषीः) नरसम्बन्धीनि (अपेः) कमलान्त
रिक्षाणि (हिन्वानः) सेवमानस्त्वं। द्विविभीणाने (स्वा० प०) (अया)
आत्मरूपया (धारया) (पूर्वस्व) ब्रह्मणि गच्छ (यया) आत्मारू
पधारया (सूर्यम्) (अरोचयः) प्रकाशयः ॥ ७ ॥

भाषार्थः— हे आत्म प्रतिविंबु १ नरसम्बन्धी २ कमलान्तरिक्षों को ३ से
वन करते तुम ४ आत्मारूप ५ धाराके साथ ६ ब्रह्ममें जाओ ७ जिस आत्मा
रूप धाराके द्वारा ८ सूर्यको तुमने प्रकाशित किया है-॥ ७ ॥

अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{१ २} सपवस्व ^{३ २ ३} यथाविथ ^{३ १ २ ३ २ ३ १ २} न्द्रवृत्राय हन्तवे। ^३ वृत्रा १०
^{१ २} समहीरूपः ॥ ८ ॥ २८

(यः) त्वं (वृत्राय) पापस्य (हन्तवे) हन्तुं (महीः) महान्ति (अपेः)
कमलान्तरिक्षाणि (वृत्रांसम्) नानादेवरूपैः निरुन्धानं (ड
न्द्रम्) परमेश्वरं (आविथ) तर्पयसि। अवतर्पणो (स) त्वं (पवस्व)
ब्रह्मणि गच्छ ॥ ८ ॥ २८

भाषार्थः— १ जो तुम २, ३ पापनाशकेलिये ४ महान ५ कमलान्तरिक्षों
को ६ नानादेव रूपसे व्याप्त करने वाले ७ परमेश्वर को ८ त्वत्प्रकरे हो ९ व
ह तुम १० ब्रह्ममें जाओ ॥ ८ ॥ अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अया वीती परिस्त्रव यस्त इन्द्रो मदेष्वा । अवाह
नवतीर्नव ॥ ९ ॥ २९

हे (इन्द्रो) आत्मप्रतिविंव (अयो) आत्मरूपेण (वीती + आ) वी
त्यायोगमार्गेण (परिस्त्रव) परिगच्छ (यः) (ते) तव योगमार्गः (म
देषु) अहं ब्रह्मास्मीति मदेषु (नवतीर्नव) नवनवति संख्याकारुपा
धीः (अवाहन्) जघान ॥ ९ ॥

भाषार्थः — १ हे आत्मप्रतिविंव २ आत्मारूप ३ योगमार्गसे ४ चलो ५
जिस ६ तेरे योगमार्गने ७ अहं ब्रह्मास्मि मदे में ८ नवनवति संख्यावाली
उपाधियोंको ९ नष्ट किया — ॥ ९ ॥ उवथ्य ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

परिद्युक्षुं सनद्रयिभ्रद्वाजन्नो अन्धसा । स्वा
नो अर्षपवित्रे ॥ १० ॥ ३०

हे आत्मप्रतिविंव (स्वानः) आत्मैवानो यस्य सत्वं (नः) अस्माकं वा
गाद्यत्विजां (द्युक्षुम्) द्युतौ क्षियन्तं दीमं (सनद्रयिम्) सनातन-
धनवन्तं (भ्रद्वाजम्) मनः । मनो वै भ्रद्वाज ऋषिः श० ८ । १ । १९
(अन्धसा) भूतात्मारूपान्नेन सह गृहीत्वा (पवित्रे) प्राणो (अर्ष-
र्ष) पर्यर्षिपरिगच्छ ॥ १० ॥ ३०

भाषार्थः — हे आत्मप्रतिविंव आत्मरथस्थनुम २ हमवाक आदि ऋ
त्विजोंके ३ दीप्त ४ सनातनधनवान ५ मनको ६ भूतात्मारूप अन्न सहित
लेकर ७ प्राणमें ८ प्रवेश करो — ॥ १० ॥ ३०

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म विरचिते साम-
वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

मेधातिथिर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अचिक्रदृषाहरिमहोन्मित्रो न दर्शतः । स^{१२}थं^{३२}
सूर्येण दिद्युते ॥१॥ ३१

यदा (मित्रः) (न) सूर्य इव (दर्शतः) दर्शनीयः (महान्) वागाद्यु^४
त्विग्भिः पूज्यः (दृषा) धर्मात्मा (हरिः) मानससूर्यः (अचिक्रदत्^५
महावाचमुच्चारयति तदा (सूर्येण) समष्टिसूर्यरूपेण (दिद्युते)
दिवि प्रकाशते ॥१॥

भाषार्थः - जव १,२ सूर्यकी समान ३ दर्शनीय ४ वाक् आदि ऋत्वि^५
से पूज्य ५ धर्मात्मा ६ मानससूर्य ७ महावाक् को उच्चार^८ करता है तब ८ स
मष्टिसूर्य के साथ ९ स्वर्ग में प्रकाश करता है ॥१॥

भृगुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

आनदक्षुम्मयो भुवं वह्नि मद्यावृणीमहे । पा^२
न्तमापुरुस्सहम् ॥२॥ ३२

वागाद्युत्विजः कथयन्ति हे आत्म प्रति विं व (अद्य) (मयो भुवम्) जी^३
न्मुक्ति सुखस्थ भावयितारं (ते) तव (दक्षम्) बलं (आवृणीमहे)
सम्भ्रजामहे (वह्निम्) मोक्ष प्रापकं बलं (आ) आवृणीमहे (पु^४
रुस्सहम्) वह्निभिः स्पृहणीयं (पान्त्नम्) संसारदक्षकं बलं (आ^५
आवृणीमहे ॥२॥

भाषार्थः - वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं हे आत्म प्रति विं व १ अद्य २
जीवन मुक्ति सुख के दाता ३ तेरे ४ बल को ५ हम सेवन करते हैं ५ मोक्ष प्रा
पक बल को ६ सेवन करते हैं ७ वह्नं के स्पृहणीय ८ संसार से रक्षक बल
को ९ सेवन करते हैं ॥२॥

उच्यन्तः ऋषिर्गायत्री छन्दोऽध्वर्युर्देवता-
^१अध्वर्यो^२अद्रिभिः^३सुतं^४सोमम्पवित्रं^५आनय।

पुनाहीन्द्रायपानवे ॥ ३ ॥ ३३

हे (अध्वर्यो) (अद्रिभिः) ग्रावभिः (सुतम्) अभिषुतं (सोमं) (पवित्रे) (आनये) प्रापय (इन्द्राय) (पानवे) इन्द्रस्य पानाय (पुनाहि) पूतं कुरु ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे अध्वर्यु २ ग्रावाओं से ३ अभिषुत ४ सोम को ५ पवित्र पर ६ धारण करो ७, ८ इन्द्र के पानार्थ ९ पवित्र करो - ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (अध्वर्यो) ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वै यज्ञस्य अध्वर्युः श० १४। ६। १। ६ (अद्रिभिः) प्राणैः। प्राणावै ग्रावाणः शू० १४। २। २। ३३ (सुतम्) अभिषुतं (सोमम्) आत्म प्रतिविंबं (पवित्रे) प्राणे (आनये) (इन्द्राय) (पानवे) परमेश्वरस्य पानाय (पुनाहि) पूतं कुरु ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे ज्ञानचक्षु २ प्राणों से ३ अभिषुत ४ आत्म प्रतिविंब को ५ प्राण पर ही ६ धारण करो ७, ८ परमेश्वर के पानार्थ ९ पवित्र करो - ॥ ३ ॥

अवत्सारः ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता-

^१तरत्स^२मन्दी^३धावति^४धारा^५सुतस्यान्धसः। तरत्स^६मन्दी^७धावति ॥ ४ ॥ ३४

(सः) (मन्दी) अहं ब्रह्मास्मीति मदरतः प्रतिविंबस्थ आत्मा (सुतस्य) अभिषुतस्य (अन्धसः) अन्नरूप प्रतिविंबस्थ (धाराः) इन्द्रियरूपाधाराः (तरत्) तरन्सन् (धावति) ब्रह्माणि गच्छति (सः) (मन्दी) आत्मा (तरत्) मायोपाधिं तरन् (धावति) ब्रह्म

णि गच्छति ॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ वह २ अहं ब्रह्मास्मि मदमें प्रीति मान प्रति विंवस्थ आत्मा ३ अभिपुत ४
अन्नरूप प्रति विंवकी ५ इन्द्रियरूप धाराओंको ६ तरना ७ ब्रह्ममें जाता-
है ८ वह ९ आत्मा १० मायोपाधिको तरना ११ ब्रह्ममें प्राप्त होता है ॥ ४

द्वयोर्निधुविर्करीपिः शेषं पूर्ववत्-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५
 आपवस्वसहस्रिणो थं रयि थं सोमसुवीर्य्य
 म्। अस्मे अवा थं सिधारय ॥ ५ ॥ ३५

वागाद्यत्विजः मर्थ यन्ति हे (सोम) आत्म प्रति विंवत्वं (सह-
स्त्रिणम्) सहस्रः प्रकाशको महानारायणस्तत्सम्बन्धिनं (सुवी-
र्य्यम्) सुवृत्त सम्पन्नं (रयिम्) योगधनं (आपवस्व) अभिमु-
ख्येन ह्यर अपि च (अस्मे) अस्मासु (अवांसि) योगार्हान् जानि
(धारय) स्थापय ॥ ५ ॥ ३५

भाषार्थः - वाक् आदि चरत्विजमर्थना करते हैं १ हे आत्म प्रति विव
तुम २ महानारायण सम्बन्धी ३ सुवृत्त सम्पन्न ४ योगधनको ५ प्राप्त करा
ओ ६ और हमारे पास ७ योग योग्य अन्तोंको ८ स्थापन करो - ॥ ५ ॥

विनि योगः पूर्ववत्-

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 अनुप्रत्नास आयवः पदन्न वीयो अक्रमुः।

१ रुचं जनन्त सूर्य्यम् ॥ ६ ॥ ३६

(प्रत्नासः) पुराणाः (आयवः) प्राणाः (नवीयः) नवतरं (पदम्)
स्थानं ब्रह्माण्डं (अन्वक्रमुः) व्याप्तवन्तः (सूर्य्यम्) मानस सूर्य्य
(रुचं) ब्राह्मज्योतिषि (जनन्त) जनयन्त। जीव एव ब्रह्माण्डो
पांथेः कारणस्तस्मान्नस्य सायुज्य एवोपाधेर्नाश इत्यर्थः ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ पुण्ये २ आणोने ३, ४ नवतर स्थान ब्रह्माण्डको ५ व्या प्रकिया ६ मानस सूर्य्य को ७ ब्रह्मज्योति सूर्य्यमें ८ स्थापन किया ॥ ६ ॥

भृगु ऋषिः शेषं पूर्ववत्
^{१ २} अषीसोमद्युमत्तसोभिद्रो ^{३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३} णानिरोरुवत् ।
^{३ १ २ ३ १ २ ३} सीदन्यो नौवनेष्वो ॥ ७ ॥ ३ ७

हे (सोम) आत्म प्रतिविंब (द्युमत्तमः) अतिशयेन दीप्तिमान्त्वं (रोरुवत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (वनेषु) अन्नरिक्षेषु (द्रोणानि) कमलानि (आसीदन्) (योनौ) ब्रह्माणि (अर्ष) गच्छ ॥ ७ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्म प्रतिविंब २ महादीप्तिमाननुम ३ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को उच्चारण करते ४ अन्नरिक्षों में ५ कमलों को ६ प्राप्त करते ७ ब्रह्ममें ८ प्रवेश करो ॥ ७ ॥

कश्यप ऋषिः शेषं पूर्ववत्-
^{१ २} वृषासोमद्युमां ^{३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३} ऽसि वृषा देव वृषे व्रतः ।
^{३ १ २ ३ १ २ ३} वृषाधर्माणि दधिषे ॥ ८ ॥ ३ ८

हे (देव) विद्वन् (सोम) आत्म प्रतिविंब (वृषा) धर्मरूपः (वृषा) मानस सूर्य्य स्त्वं (द्युमान्) दीप्तिमान् (वृषव्रतः) धर्मव्रतः (असि) (वृषा) समष्टि सूर्य्यरूपस्त्वं (धर्माणि) धारणा योग्यानि लोकानि (दधिषे) दधिषे धारयसि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे विद्वन् २ आत्म प्रतिविंब ३ धर्मरूप ४ मानस सूर्य्यनुम ५ दीप्तिमान ६ धर्मव्रत ७ हौं ८ समष्टि सूर्य्यरूपनुम ९ धारणा योग्यलोकों को १० धारण करते हो ॥ ८ ॥

कश्यप ऋषिः शेषं पूर्ववत्-
^{३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३} वृषेपवस्व धारया सृज्यमानो मनीषिभिः ।

इन्द्रो रुचाभिगा इहि ॥ ६ ॥ ३६

हे (इन्द्रो) आत्मप्रतिविंब (मनीषिभिः) मेधाविभिर्वागाद्यत्विभिः
(मृज्यमानैः) शोधमानस्त्वं (इषे) अमृत वृष्यै (धारया) (पवस्व)
ऊर्ध्वगच्छ पुनः (रुचा) दीप्त्या (गाः) इन्द्रियाणि (अभीहि)
उत्थाने प्राप्नुहि ॥ ६ ॥ **भाषार्थः**

१ हे आत्मप्रतिविंब २ मेधावी वाक् आदि ऋत्विजों से ३ शोधमान तुम ४
अमृत वर्षों के लिये ५ धारा द्वारा ६ ऊँचे कोचलो फिर उत्थान में ७ दीप्ति द्वा-
रा ८ इन्द्रियो को ९ प्राप्त करो ॥ ६ ॥ असित ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

मन्द्रयो सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः । अय्या
वारोभिरस्मयुः ॥ १० ॥ ४०

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (अस्मयुः) उत्थाने अस्मत्कामः (देवयुः)
समाधौ देवकामः (वृषा) मानससूर्यस्त्वं (अय्या वारोभिः) सूर्येण
त्वया आच्छादितैर्वागाद्यत्विभिः सहितः सन् (मन्द्रयो) अहं
ब्रह्मास्मीति गम्भीरधनिवत्या (धारया) (पवस्व) ऊर्ध्वगच्छ ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ उत्थानमें हमको चाहने वाले ३ समा-
धिमें देव कामा ४ मानससूर्यतुम ५ वाक् आदि ऋत्विज सहित ६ अहं ब्र-
ह्मास्मि नाम गंभीरधनि वाली ७ धाराके साथ ८ ऊपरकोचलो - ॥ १० ॥

कविः ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अय्या सोम सुकृत्यया महात्सनेभ्य वर्द्धयाः ।
मन्दान इहूषायसे ॥ ११ ॥ ४१

हे (सोम) आत्मप्रतिविंबत्वं (सुकृत्यया) (अय्या) शोभनकृत्या
रूपपराशक्त्या (महान्) (सन्) (अभ्यवर्द्धयाः) वृद्धिमाप्नोसि (

(मन्दानः) ब्रह्मानन्दयुक्तः (इत्) एव (वृषायसे) वृषवदाचर
सि ॥ ११ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्म प्रतिविंबतुम २, ३ शोभन कृत्या रूपपराशक्ति द्वारा ४ महान् ५
होते ६ वृद्धि को पाओ ७ ब्रह्मानन्द युक्त ८ ही ९ वृषभकी समान आचरण
करते हो ॥ ११ ॥

जमदग्नि ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अयं विचर्षाणिहितः पवमानः । सचेतनि । हि
न्वान् आप्य वृहत् ॥ १२ ॥ ४२

(अयम्) (विचर्षाणिः) विद्वष्टा (हितः) योगमार्गे निहितः (हिन्वा
नः) प्रेरितः (पवमानः) संस्कृत आत्म प्रतिविंबः (आप्यम्) गगना
न्तरिक्षस्थं (वृहत्) ब्रह्म (सचेतनि) सम्यगान यति प्राप यति ॥ १२

भाषार्थः - १ यह २ विशेषद्वष्टा ३ योगमार्ग में स्थापित ४ प्रेरित ५ सं
स्कृत आत्म प्रतिविंब ६ गगनान्तरिक्षस्थ ७ ब्रह्म को ८ प्राप्त करता है ॥ १२

अयास्य ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

पुन इन्दो महतु न ऊर्मिन्नं विभ्रदषसि । अभि
देवो ऽं अयास्यः ॥ १३ ॥ ४३

हे (इन्दो) आत्म प्रतिविंबत्वं (नः) अस्माकं वागाद्यत्विजां (महे
(तुने) महाधनाय योगधनाय (प्रार्थसि) प्रगच्छसि (न) च (अ)
अमृतरूपस्त्वं (ऊर्मिन्) योगोर्मि (विभ्रत्) धारयन् (देवान्) म
हापुरुष पुरुषान् (अभ्ययासि) मापयसि । अयगतौ ॥ १३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्म प्रतिविंबतुम २ हम वाक् आदि ऋत्विजों
के ३, ४ महाधन योगधनके लिये ५ योगमार्ग में चलते हो ६ और ७ अ
मृतरूपतुम ८ योग ऊर्मि को ९ धारण करते १० महा पुरुष पुरुषों को ११

प्राप्त कराने हो-॥१३॥ अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अपघ्नन्पवते मृधोपसोमो अरावाः । गच्छ

निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥१४॥ ४४

(सोमः) आत्मप्रतिविंबः (अरावाः) अदानशीलान् (मृधः) हिंसकान्कामादीन् (अपघ्नन्) ताडयन् (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (निष्कृतम्) संस्कृतं लोकं (गच्छन्) (पवते) संस्कृतो भवति १४

भाषार्थः - १ आत्मप्रतिविंब २ अदानशील ३ हिंसक कामआदिको ४ ताडनकरता ५ परमेश्वरके ६ संस्कृतलोकको ७ प्राप्तकरता ८ संस्कृतहोता है-॥१४॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य चतुर्थखंडः

अथ पञ्चमः खण्डः ५

भरद्वाजादयः सप्तऋषयः बृहती छन्दः सोमो देवता-

पुनानः सोमधारयो पावसानो अर्षसि । आ
रुन्धायानि मृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्य
यः ॥१॥ - ४५

हे (सोम) जीवात्मन् (देवः) विद्वान् (हिरण्ययः) (उत्सः) ज्योतिर्मयजलप्रवाह रूपः (पुनानः) अस्माकं वागाद्यत्विजां शोधकस्त्वं (अर्षः) कमलान्तरिक्षाणि (धारया) (वसानः) आच्छादयन् (अर्षसि) गच्छसितथा (रुन्धा) योगधनानां धारकस्त्वं (ऋतस्य) ब्रह्मणः (योनिर्भू) लोकं (आसीदसि) ॥१॥

भाषार्थः - १ हे जीवात्मन् २ विद्वान् ३, ४ ज्योतिर्मयजलप्रवाह

रूप ५६ मवाक आदि अरन्विजोंके शोधकतुम ६, कमलान्तरिक्षोंको ७ धारासे
 ८ आच्छादन करते ९ चलते होतया १० योग धनोंके धारकतुम ११ बलके १२
 लोकको १३ प्राप्त करते हैं ॥ १ ॥ अरिषिञ्चन्दश्च पूर्ववत्-

^{२ ३ १ २} परितापिञ्चतासुतं ^{३ ३ ३} सोमायउत्तमं ^{३ १ ३ ३ ३} हविः । द

^{३ ३ ३} धन्वाङ्गो नया ^{३ ३ ३} अपस्वा ^{३ ३ ३} अतुरा ^{३ ३ ३} सुषाव ^{३ ३ ३} सोममादिभिः २४

हे (आः) आत्मारूपयजमानाः (सुतम्) अभिषुतमात्म प्रतिविंव
 (इतः) मानसकमलादूर्ध्वं (परिषिञ्चत) (अः) ज्ञानचक्षुः (सोम-
 म्) यमात्म प्रतिविंव (अदिभिः) प्राणैः (आसुषाव) अभिषुतंचका
 र (यः) (सोमः) आत्म प्रतिविंवः (उत्तमम्) (हविः) (यः) (नर्यः)
 नरयोग्यः (अप्सु) ^{१५} कमलान्तरिक्षेषु (अन्तः) मध्ये (दधन्वान्)
 प्राप्नो भवति ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मारूपयजमानो २ अभिषुत आत्म प्रतिविंव ^{को}
 इस मानस कमल से ऊपर ४ सींचो ५ ज्ञान चक्षुने ६ जिस आत्म प्रतिविंव
 को ७ प्राणोंसे ८ अभिषुत किया ९ जो १० आत्म प्रतिविंव ११, १२ उत्तम ह
 वि है १३ जो १४ नरयोग्य १५ कमलान्तरिक्षों के १६ मध्य १७ प्राप्त होता
 है ॥ २ ॥

अरिषिञ्चन्दश्च पूर्ववत्सोमो देवता-

^{३ १ २ ३} आसोमस्वाना ^{३ १ २ ३} आदिभिस्तिरा ^{३ १ २ ३} वाराण्यव्यया ।

^{३ १ २ ३} जनानपुरिचम्बो ^{३ १ २ ३} विशद्वरिः ^{३ १ २ ३} सदावनुषुदधिपे ३-४९

हे (सोम) आत्म प्रतिविंव (अदिभिः) प्राणैः (स्वानः) अभिषूयमा
 णस्त्वं (अव्ययावाराण्य) अव्ययेन सूर्येणाच्छादितान् लोका
 न् (तिरः) तिरस्कुर्वन् (आपवसे) सुषुम्णामार्गीण गच्छसितथा
 (हरिः) मानससूर्यस्त्वं (चम्बोः) प्राणापानयोर्मध्ये। चम्बगतौ-

(विशत) प्रविष्टः सन् (वनेषु) कमलान्तरिक्षेषु (सदः) स्थानं
(दाधिषे) दाधिषे (ने) यथा (जनः) (पुरि) ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ प्राणों से ३ आभिष्यमाण तुम ४
सूर्य से आच्छादित लोकों को ५ तिरस्कार करते ६ सुपुत्राण मार्ग से जाते हो
तथा ७ मानस सूर्यनुम ८ प्राण अपान के मध्य ९ प्रविष्ट होते १० कमलान्त
रिक्षों में ११ स्थान को १२ करते हो १३ जैसे १४ मनुष्य १५ पुरी में - ॥ ३ ॥

विनियोगः पूर्ववत्.

प्रसोमदेववीतये सिन्धुनीपिप्ये अर्णासा। अशो
शाः पयसा मदिरानजागृवि रच्छाकोशमधुश्रु
तम् ॥ ३ ॥ ४८

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (मदिरः) मयात्मना प्रेरितः (न) च (जा
गृविः) जागरण शीलस्त्वं (देववीतये) देवस्य तर्पणाय (अशोः)
ब्रह्मांशुरूपस्य स्वकीयात्मनः (पयसा) प्राणो न श० ६। ५। ४। १५
(अर्णासा) नदीरूपेन्द्रियसमूहेन। अर्णाः नद्यः नि० (मधुश्रुतं)
ब्रह्मज्ञानस्य क्षारयितारं श० १४। ५। ५। २६ (कोशम्) गगनम
ण्डलं (अच्छ) आशुं (प्रापिप्ये) प्रवर्द्धसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ मुझ आत्मा से प्रेरित ३ और ४ जा
गरणशील तुम ५ देवताके तर्पणार्थ ६ ब्रह्मांशुरूप अपने आत्मा ७ प्राण ८
और नदी रूप इन्द्रिय समूह के साथ ९ ब्रह्मज्ञानदाता १० गगनमंडल के ११
प्राप्त करने को १२ बड़ी वृद्धि पाते हो ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

सोम उष्वाणः सोहाभिरधिष्णुभिरवीनाम्।

अश्वयं वहरितायानि धारयामन्द्यापुतेधारया

(सोमभिः) पुण्वदिर्वीगांश्चत्विभिः (ध्वानेः) सुवानोऽभिषूय-
 माणाः (उ) आत्मप्रतिविंबः (अवीनाम्) अन्नवतां प्राणानां ।
 अश्वः अन्नं नि० (षुभिः) नाडीभिः सुपुम्णादिभिः (आधियाति)
 आधिकं गच्छति तथा (अश्वया) मानससूर्यरूपया (मन्द्रया)
 अहं ब्रह्मास्मीति गम्भीरध्वनिवत्या (धारया) (याति) (इव) य-
 था (हरिता) हरितवर्णवत्या (धारयो) (सोमः) ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ अभिषवण कर्त्ता वाक्सादिऋत्विजो से २ अभिषूय-
 मान ३ आत्मप्रतिविंब ४ अन्नवान प्राणोंकी ५ नाडी सुपुम्णा आदिके द्वा-
 रा ६ आधिकचलता है ७ तथा मानस सूर्यरूप ८ अहं ब्रह्मास्मि गम्भीर-
 ध्वनिवाली ९ धारके साथ १० जाता है ११ जैसे १२ हरित वर्णवती १३ धा-
 राके साथ १४ सोम—॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्

तवाहं^३ सोम^२ राराणा^३ सरव्ये^२ इन्द्रो^३ दिवे^२ दिवे^३ ।
 पुरूणि^३ वध्ना^३ विचरन्ति^३ मामव^३ परिधी^३ रति^३
 तां^३ इहि^३ ॥ ६ ॥ ५०

हे (वध्ना) अग्निरूप (सोम) ईश्वर (अहम्) (दिवेदिवे) अन्वहं
 (तव) (सरव्ये) सारिव कर्मणि (राराणाः) रमे (रणोर्लिङ्गउत्तमेण-
 लिरूपम्) (पुरूणि) स्थूलसूक्ष्मकारणा शरीराणि (न्यवचरन्ति)
 नीचीनं चरन्ति वाधन्ते (तान्) (परिधीन्) देहान् (अतीहि) अ-
 गच्छ (माम्) (अव) रक्ष ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे अग्नि २ सोम ३ ईश्वर ३ में ४ प्रतिदिन ५ आपकी ६ भक्ति
 में उरमाण करता हूँ परन्तु ८ स्थूलसूक्ष्मकारणा शरीर ९ वाधा करते हैं १० उ-
 न ११ शरीरोंको १२ मामको १३ सौर मुक्तको १४ रक्षा करो ॥ ६ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

पुनानः सोमजागृविख्यावारैः परिप्रियः। त्ववि
 प्राग्भवोद्भिर् स्तमध्वा यज्ञमिमिक्षाः ६॥ ५३
 हे (सोम) आत्मप्रतिविंबु (जागृविः) जागरणशीलः (प्रियः) वा
 गाद्यत्विजां प्रियः (पुनानः) शोध्यमानस्त्वं (अख्यावारैः) त्वया
 मानससूर्येणाच्छादितैर्वागाद्यत्विभिः सह (परि) परिगच्छ
 सिहे (अद्भिः रस्तम्) समाहिप्राण। प्राणो वाऽ अद्भिः राश० ६। १।
 २। ५ (त्वम्) (विप्रः) मेधावी (अभवः) भवसि (नेः) अस्मदीयं
 (यज्ञम्) यज्ञपुरुषं (मध्वा) प्राणेन श० १४। १। ३। ३ (मिमिक्षा)
 सिञ्च ॥ ६॥

भाषार्थः

१ हे आत्मप्रतिविंबु २ जागरणशील ३ वाक् आदिऋत्विजों का प्रिय ४ शोध्य
 मानस ५ तुभ्यमानससूर्यसे आच्छादितवाक् आदिऋत्विजों के साथ ६
 चलते हो ७ हे समाहि प्राण ८ मेधावी ९ हो १० हमारे ११ यज्ञपुरुषको १२
 प्राणसे १४ सींचे ॥ ६॥

विनियोगः पूर्ववत्-

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः। सहस्र
 धारा अत्यव्यमर्षतितमी मृजन्त्या यवः १०॥ ५४
 (सुतः) अभिषुतः (मदः) मद्रूपः (सोमः) आत्मप्रतिविंबु (मरु
 द्वते) वागाद्यत्विग्वते (इन्द्राय) आत्मारूपयजमानाय (पवते)
 गच्छति कथं (सहस्रधाराः) प्रकाशक धारा रूपः (अव्यम्) मा
 नससूर्यस्थानं मानसकमलं (अति) अतिक्रम्य (अर्षति) ग
 च्छति (तम्) (आयवः) प्राणाः (मृजन्ति) शोधयन्ति ॥ ६॥

भाषार्थः - १ अभिषुत २ मद्रूप ३ आत्मप्रतिविंबु ४ वाक् आदिऋत्

त्विजवाले ५ आत्मारूपयजमानकेलिये ६ जाता है ७ प्रकाशक धारा रूप
८ मानस सूर्यके स्थान मानस कमल को ९ अतिक्रमण कर १० जाता है
११ उसको १२ प्राण १३ शोधन करते हैं—॥ १० ॥

विनियोगः पूर्ववत्

^{१ ३} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २}
पवस्त्ववाजसातमाभिविश्वा निवाय्या । त्वं

^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २}
समुद्रः प्रथमे विधर्मन्देवभ्यः सोममत्सरः ११ ५५

हे (सोम) आत्म प्रतिविंब (वाजसातमः) प्राणोन्द्रिय रूपान्नादा
ता (देवभ्यः) (मत्सरः) मयान्नर्यामिना प्रेरित (समुद्रः) मनो-
रूपः (त्वं) (विश्वा नि) सर्वाणि (वाय्या) वरणीयानि देवस्थान-
कमलानि (आभि) अभिलक्ष्य (प्रथमे) मुख्ये (विधर्मन्) विशेषे
षेण धारके गगन मण्डले (पवस्व) गच्छ ॥ ११ ॥

भाषार्थः— १ हे आत्म प्रतिविंब २ प्राण इन्द्रिय रूप अन्तों के दाता
३ देवताओं के लिये ४ मुझ अन्नर्यामी से प्रेरित ५ मनरूप ६ तुम ७ सब ८
वरणीय देवस्थान कमलो को ९ देख कर १० मुख्य ११ विशेष धारक गगन
मंडल में १२ जाओ ॥ ११ विनियोगः पूर्ववत्

^{१ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २} ^{३ १ २}
पवमाना अस्तसन्त पवित्र मति धारया । मरुत्व
न्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभिप्रया ११ ५६

च ॥ १२ ॥ ५६

(मरुत्वन्तः) प्राणैर्युक्ताः (मत्सराः) मयान्नर्यामिना प्रेरिताः
(इन्द्रियाः) इन्द्रियरूपाः (हयाः) अश्वाः (मेधाम्) योगलक्ष
णां प्रज्ञां (च) (प्रियांसि) देवस्थान कमलानि (आभि) अभि-
लक्ष्य (पवमानाः) शोध्यमानाः सन्तः (धारया) (पवित्रम्)

प्राणं (१२) अतीत्यं (अस्तक्षते) आत्मनि स्तज्यन्ते ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ प्राणों से युक्त २ मुक्त अन्न र्यामी से मेरित ३ इन्द्रिय रूप ४ घोड़े ५ योगलक्षणा प्रज्ञा को ६, ७ और देवस्थान कमलों को ८ देखकर ९ शोध्यामान होने १० धारा से ११ प्राण को १२ अतिक्रमण कर १३ आत्मा में गिरते हैं ॥ १२ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्य विरचिते सोमवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य पंचमः खण्डः ५

अथ षष्ठः खण्डः

उशाना ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

प्रनुद्रवपरिकोषनिषीदन्तृभिः पुनानो अभिवा
जमर्ष। अश्वन्त्वा वाजिनमर्जयन्तोच्छावही
रशनाभिर्नयन्ति ॥ १ ॥ ५७

हे आत्मप्रतिविंब (नु) क्षिप्रं (प्रद्रव) प्रगच्छ (कोशम्) गगनम
एड (परिनिषीद) निषण्णो भव (न) च (नृभिः) नेतृभिः प्राणैः (पु-
नानः) शोध्यामानः (वाजिन्) विराड् रूपान्न आत्मारूप यजमा-
नार्थं मुद्दिश्य (अभ्यर्ष) अभिगच्छ यस्मात् (वाजिनम्) बलव-
न्तं (अश्वम्) मानससूर्यं (त्वाम्) (अर्जयन्तः) शोधयन्तः प्रा-
णाः (रशनाभिः) नाडीभिः (वाहिः) सुषुम्णां प्रति (अच्छा) आ-
भिमुख्येन (नयन्ति) प्रापयन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः - हे आत्मप्रतिविंब १ शीघ्र २ दौड़ो ३ गगन मंडल में ४ पहुँ-
चो ५ और ६ नेता प्राणों से ७ शोध्यामान ८ विराड् रूप अन्न को आत्मारूप
यजमान के लिये उद्देश करके ९ प्राण करों जिस कारण १० बलवान ११ प्रा-

नससूर्य १२ तुमको १३ शोधन करते प्राण १४ नाड़ी द्वारा १५ सुपुष्पा के १६
सन्मुख १७ प्राप्त करते हैं ॥ १ ॥

दृषगणो वासित ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः ऋजी वाराहो देवता-

१ २२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ ३
प्रकाव्यमुशन्ववु वाणो देवो देवानां जानिमा
विवक्ति। महि व्रतः भुचिवन्धुः पावकः पदा वरा
हो अभ्येति रेभन् ॥ २ ॥ ५८ ॥

(उशना) भुक्ः (इव) (काव्यं) स्तोत्रं (वुवानः) उच्चारयन्
(देवः) वेदाभिमानि देवः (देवानाम्) अवताराणां (जानिमा) ज
न्मानि (प्रविवक्ति) प्रकर्षणावदति (महि व्रतः) पृथिव्या धार-
कः दृभृतौ (भुचिवन्धुः) दीमतेजस्कः (पावकः) पापानां शोध
कः (वराहः) ऋजी वाराहावतारः (रेभन्) शब्दं कुर्वन् (पदा) पा
देन (अभ्येति) देवानां समीपे गच्छति ॥ २ ॥

भाषार्थः - १, २ भुक् जी की सन्तान ३ स्तोत्र को ४ उच्चारण करता
५ वेदाभिमानि देवता ६ अवताररूप देवताओं के ७ जन्मों को ८ कहता है
भूमि को धारण करने वाले १० महानेजस्वी ११ पापनाशक १२ ऋजी वारा-
ह १३ शब्द करते १४ पदानि १५ देवताओं के समीप जाते हैं ॥ २ ॥

वि.

पराशर ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

ति गोवाचैर् इर यति प्रवन्दि ऋतस्य धीतिवृ
ह्णाणो मनीषाम्। गोवा यन्ति गोपातिं पृच्छमा
नोः सोमं यन्ति मतयो वावशानोः ॥ ३ ॥ ५९ ॥

(वन्दिः) भूमेर्वीढा ऋजी वाराहावतारः (तिस्त्रेः) (वाचः) ऋ-
ग्यजुः सामान्तिकाः तथा (ऋतस्य) विष्णोः (धीतिम्) पाल-

नकर्म (ब्रह्मणाः) (मनीषाम्) स्तष्टि कर्त्री बुद्धिं (प्रेरयति) तस्मि
 न्काले (गावः) इन्द्रिय रूपात्मांशवः (एच्छमानाः) गुरुं प्रच्छ-
 न्तः सन्तः (गोपतिम्) आत्मानं (यन्ति) गच्छन्ति (वावशानाः)
 कामयमानाः (मतयः) बुद्ध्यः (सोमम्) आत्म प्रतिविंवं (यन्ति)
 गच्छन्ति ॥३॥

भाषार्थः - १ भूमिके धारक श्रीवाराहजी २३ ऋग्यजुसामरूप-
 वचनों को तथा ४ विष्णु के ५ पालन कर्म ६ और ब्रह्माजी की ७ स्तष्टि कर्त्री
 बुद्धिको ८ प्रेरणा करते हैं उस समय ९ इन्द्रियरूप आत्मांश १० गुरुको पूछ-
 ते ११ आत्माको १२ माप्त करने हैं १३ कामयमान १४ बुद्धियां १५ आत्म प्रति-
 विंवको १६ प्राप्त करती हैं - ॥३॥ वसिष्ठ ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समष्ट
 ऋरसम् । सुतः पवित्रं स्पृशति रभन्मि तव सद्यप
 भुमन्ति होता ४ ॥ ६०

(अस्य) महापुरुषावतारवराहस्य (प्रेषा) प्रकर्षेच्छया (देवः)
 सूर्यः (हेमना) हिमजलेन (देवेभिः) मेघैश्च (रसम्) समष्टं
 भूमौ समयोजयति तदा (पूयमानः) शोध्यमानः (सुतः) अभिपु-
 त आत्म प्रतिविंवः (रेभन्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (पवि-
 त्रम्) प्राणं (स्पृशति) परिगच्छति (इव) यथा (मिती) मनुष्यः
 (होता) देवानामाह्वानात्कृत्विक् (पभुमन्ति) (सद्य) सद्यः
 निवस्य गृहान् ॥४॥ **भाषार्थः**

१ महापुरुषावतारवराहजीकी २ इच्छासे ३ सूर्यदेवता ४ हिमजल ५ और
 मेघोंके द्वारा ६ रसको ७ भूमिपर प्राप्त करता है ८ तव शोध्यमान ९ अभिपु-

तश्चात्मप्रतिविंबं १० अहं ब्रह्मास्मि शब्द करता ११ प्राण को १२ प्रात करता है
१३ जैसे १४, १५ देवताओं का आह्वाना मनुष्यऋत्विज १६, पशुमान १७ यज्ञ
शालाओं को—॥४॥ प्रतर्दनऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महा पुरुषो देवता-

सोमः पवते जनिता मतीनाञ्जनिता दिवोजनि
ता एथिव्याः । जनिताग्नेजनिता सूर्यस्य जनिता
इन्द्रस्य जनिता त विष्णोः ५-६१

(मतीनाम्) विद्यानां (जनिता) जनयिता (दिवः) द्युलोकस्य-
(जनिता) (एथिव्याः) (जनिता) (अग्नेः) (जनिता) (सूर्यस्य)
(जनिता) (इन्द्रस्य) (जनिता) (उत) (अपिच) विष्णोः (जनि
ता) (सोमः) महापुरुषो महानारायणः (पवते) भक्तानां हृदये
प्राप्तो भवति ॥ ५ ॥ **भाषार्थः**

१ विद्याओं का २ उत्पादक ३ स्वर्गलोक का ४ जनिता ५ एथिवी का उत्पन्न
करने वाला ७ अग्निका ८ सृष्टा ९ सूर्य का १० जनक ११ इन्द्र का १२ रचने वा
ला १३ और १४ विष्णु का १५ प्रकट करने वाला १६ महापुरुष महानाराय-
ण १७ भक्तों के हृदय में प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विराट् पुरुषो देवता-

अभिन्निष्टष्टृषणवयोधामङ्गोपिणमवाव
शान्तवाणीः । वनावसानावरुणानसिन्धुवि
रत्नधादयते वायीणि ॥ ६ ॥ ६२

(त्रिष्टुष्टं) भूम्युन्नरिस्तस्वर्गारव्यानिष्टष्ठानि यस्यनं (ष्टृषणम्)
वर्षकं (वयोधाम्) अन्नस्य धारकं (अङ्गोपिणं) अंगे विराट् रूपः
देहेऽपिणं वसन्तं पुरुषं (वाणीः) वेदवाचः (अभ्यवावशान्त)

काम यन्नेसु (रत्नधाः) रत्नानां धारकः (वार्याणि) वननीयानि
 धनानि (दयते) स्तोत्रभ्यः प्रयच्छति (ने) यथा (वरुणः) (सि-
 न्धुः) च (वना) वनानि उदकानि (वसानः) धारयन् रत्नानि प्र-
 यच्छति ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ भूमि अन्नरिक्त स्वर्गनाम एष्यवाले २ वृष्टि कर्त्ता ३ अन्नधारक ४ विराट्
 देहमें वसने वाले पुरुष को ५ वेदवाणी ६ चाहती हैं ७ वह रत्नधारक पुरुष
 ८ काम्यधनों को ९ स्तोत्राओं के लिये देना है १० जैसे ११ वरुण १२ सोम
 समुद्र १३ जलों को १४ धारण करते रत्नों को देते है ॥ ६ ॥

पराशरऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महापुरुष पुरुषो देवते.

अक्रात्समुद्रः प्रथमे विधर्मज्जनयन् प्रजाभुव-
 नस्य गोपाः । वृषा पवित्रे अधिसानो अथ्ये वृह-
 त्सोमो वा वृधे स्वानो अद्रिः ॥ ७ ॥ ६३

यदा (समुद्रः) यस्मात्सुन्दरान्नि देवादयः स (गोपाः) गोलोक
 पतिर्नहा पुरुषः (भुवनस्य) ब्रह्माण्डस्य (प्रथमे) मुख्ये (विध-
 र्मन्) विधर्मनि विधारके गोलोके (प्रजाः) (जनयन्) उत्पा-
 दयन् (अक्रान्) सर्वव्याप्नोति तदा (वृषा) वर्षिता (स्वानः) आ-
 त्मरथः (वृहत्सोमः) वृहत्सोमरूपः (अद्रिः) सूर्यः (अथ्ये) सूर्य
 योग्ये (पवित्रे) समष्टिमाणे (अधिसानः) अभिषिच्यमानः
 (वा वृधे) वद्धते ॥ ७ ॥

भाषार्थः

१ जब सबके प्रादुर्भावका स्थान २ गोलोकपति महापुरुष ३ ब्रह्माण्डके ४
 मुख्य ५ विधारक गोलोकमें ६ प्रजाको ७ उत्पन्न करता ८ सब को व्याप्त कर
 ता है तब ९ वृष्टिकर्त्ता १० आत्मरथस्य ११ वृहत्सोमरूप १२ सूर्य १३ सूर्यसं-
 बन्ध

न्धी १४ समाप्तिप्राणमें १५ अवसिच्यमान १६, वृद्धि पाता है ॥७॥

प्रस्ताएव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दो विष्णुर्देवता-

कानिकान्ति हरिरास्त्यमानः सीदन्वनस्य
जदरे पुनानः । नृभिर्यतः कृणुते निणिजङ्गाम
तोमतिज्जनयत स्वधाभिः ॥ ८ ॥ ६४

(वनस्य) जलस्य क्षीर समुद्रस्य (जदरे) (सीदन्) (पुनानः) पञ्च
नत्रयो देवा देह रूपा रथा यस्य स क्षीर शायी (आस्त्यमानः) सं-
स्तूयमानः (हरिः) विष्णुः (कानिकान्ति) उपदेशति (यतः) (गाम्)
पृथिवीं (नृभिः) (निणिजं) रूपवतीं (कृणुते) करोति (स्यतः) (म-
तिम्) स्तुतिं (स्वधाभिः) हविर्भिः सह (जनयत) उत्पादयत कुरुत

भाष्यार्थः - १ जलक्षीर समुद्रके २ जदरेमें ३ विराजमान ४ विदेवरू-
पवाला क्षीर समुद्रशायी ५ भले प्रकार स्तूयमान ६ विष्णु ७ उपदेश करता है
८ जिस कारण ९ पृथिवीको १० मनुष्यों सहित ११ रूपवती १२ करता है १३ उ-
सकारण १४ तुम स्तुति को १५ हविर्भिः सहित १६ प्रकट करो ॥ ८ ॥

अग्ना ऋषिः त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

एषस्यते मधुमाथं इन्दुसोमो वृषो वृषोः परिप
वित्रे अक्षाः । सहस्रदाः शतदाभूरिदो वा भवत्तम
स्वहिरावाज्य स्यात् ॥ ९ ॥ ६५

हे (इन्दु) परमेश्वर (वृषोः) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्षकस्य (ते)
तव (एषः) (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानी (वृषो) वर्षकः (स्यः) समाप्तिप्रा-
णः (पवित्रे) वायौ । अयं वै पवित्रं योऽयं पवतेश ० १।१।३।२ (पर्य-
क्षाः) पर्यस्रवत् (यः) (सहस्रदाः) सहस्रसङ्ख्याकस्य धनस्य

दाता (शतदाः) (वा) (भूरिदाः) (वाजी) सूर्यः श० ६।३।१।२।६।
 (शाश्वन्मम) अतिशयेन पुराणं (वाहिः) लोकं। अयं लोको व-
 हिः श० १।४।१।२४ (अस्थात्) अधितिष्ठति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ चारों पदार्थों के दाता ३ आपका ४ रह ५
 ब्रह्मज्ञानी ६ ऋषि कर्त्ता ७ समाधि सूर्य ८ वायु में स्थित हुआ ९ जो ११ स
 हस्र संख्या वाले धनका दाता १२ शत संख्या वाले धनका दाता १३ वा १४
 बहुदाता १५ सूर्य १६ अतिशय पुराण १७ लोक में १८ स्थित होता है - ॥ ६ ॥

प्रतर्दन ऋषिस्त्रिषुषु छन्दः सोमो देवता-

पवस्व सोम मधुमा थं ऋता वापो वसानो अधि
 सानो अव्ये । आव द्रोणानि घृतं वन्ति रोह मदि
 न्तमो मत्सर इन्द्र पानः ॥ १० ॥ ६६ ॥

हे सोम) आत्म प्रतिविंब (अपः) इन्द्रियान्तरिक्षाणि (वसानः) आ-
 च्छाद्यन् (अव्ये) मानस कमले (अधिसानः) अभिपिच्यमानस्त्व
 (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानी सन् (पवस्व) ऊर्ध्वगच्छ पुनः (मदिन्तमः)
 अतिशयेन मदकरः (इन्द्र पानः) परमेश्वरेण पातव्यः (मत्सरः)
 मयान्तर्यामिना मेरितस्त्वं (घृतं वन्ति) रसवन्ति (द्रोणानि) क-
 मलानि (अवरोह) ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे आत्म प्रतिविंब २ इन्द्रियान्तरिक्षों को ३ आच्छादन करते
 ४ मानस कमल में ५ अभिपिच्यमान तुम ६ ब्रह्मज्ञानी होते ७ ऊपर को चलो
 फिर ८ अतिशय मदकर्त्ता ९ परमेश्वर के पान योग्य १० मुझ अन्तर्यामी से मेरि
 त तुम ११ संवत् १२ कमलों में १३ उतरों ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सामवे-

दीयवह्नभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः ६,

अथ सप्तमः खण्डः

प्रतर्दन ऋषिपिष्टिष्टुप् छन्दः श्री कृष्णो देवता

प्रसेनानी भूरो अग्रयाना इव्यन्नेति हर्षते अस्य
सेना । भद्रान् कृण्वन्निन्द्र हवा त्सखिभ्यः आसा
मोवस्त्रारभसानिदत्ते ॥ १ ॥ ६७

(सेनानी) भक्तसेनानामग्रेनेता (भूरो) असुरगुणां वाधकः काम
जयीवा (सोमो) श्रीकृष्णरूपः परमेश्वरः (गव्यन्) इच्छन् (रथा-
नां) वृक्षाणां (अग्रे) (प्रैति) प्रकर्षेण गच्छति (अस्य) (सेना)
गोपीसेना (हर्षते) हृष्यति (सखिभ्यः) गोपीभ्यः (इन्द्रहवान्) ता
भिः कृतानि परमेश्वरस्य व्रतादीनि (भद्रान्) कल्याणानि यथा
र्थानि (कृण्वन्) (रभसा) वेगेन (वस्त्रानि) (आदत्ते) गृह्णाति । १

भाषार्थः -

१ भक्तसेनाओंकानेता २ असुरोंका वाधक वा कामजयी ३
श्रीकृष्णरूपपरमेश्वर ४ चाहता ५ वृक्षाके ६ अग्रपर ७ चढता है ८ इसकी
गोपकन्यारूपसेना ९ हर्षित होती है १० गोपकन्याओंकेलिये ११ उन व्रतों
को १२ कल्याणरूपसाफल १३ करता १४ वेगसे १५ वस्त्रोंको १६ गृह्णाणक
रताहै ॥ १ ॥ पराशरऋषिपिष्टिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

प्रतधारा मधुमती रस्तग्रनवार यत्पूतो अत्यथ्य
व्यम् । पवमान पवसे धामगाना ज्जनयत्सूयमपि
न्वो अंकेः ॥ २ ॥ ६८

हे (पवमान) शोधमानात्मप्रतिविम्ब (यद्) यदा (पूतो) पवित्र
भूतस्त्वं (अव्यम्) तवमानससूर्यस्य योग्यं (वारम्) सुपुमां (अ

न्येपि) प्राप्नोपित्त^७ (गोनाम्) रश्मीनां (धाम^८) ब्रह्म (पवसे) ग-
च्छसि (सूर्यम्) (जनयन्) उत्पादयन् (अर्केः) अर्चनीयैः स्वतेजो
भिः (अपिन्वः) पूरयसि ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ हे शोधमान आत्मप्रतिविंब २ जव ३ पवित्रतुम ४ तुम्ह-
मानस सूर्यके योग्य ५ सुपुष्पा को ६ प्राप्त करते हो ७ तव किरणों के धाम ब्रह्म
को ८ प्राप्त करते हो ९ सूर्यको १० प्रकट करते ११ अपने तेजों से १२ पूर्ण करते
हो ॥ २ ॥ इन्द्रममतिर्वासिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

प्रगायताभ्यर्चामदेवात्सोमं^१ हिनोतमहते^२
धनाय^३ स्वादुःपवतामतिवारमव्यमासीदतुक^४
लशन्देवइन्दुः^५ ॥ ३ ॥ ६६

हेवागाद्यात्विजः (सोमम्) आत्मप्रतिविंबं (प्रगायते) प्रकर्षणाभि
ष्टुतवेदावयं (देवान्) महापुरुषपुरुषान् (अभ्यर्चामः) अभिष्टुमः
(महते) (धनाय) योगैश्वर्याय (हिनोत) आत्मप्रतिविंबं (स्वादुः)
मधुर आत्मप्रतिविंबः (अव्यम्) मानससूर्ययोग्यं (वारम्) सुष
मणां (अतिपवताम्) आभिसुरव्येन गच्छतु (देवः) विद्वान् (इन्दुः)
आत्मप्रतिविंबः (कलशम्) प्रजापतिं परमेश्वरं। प्रजापतिर्वेद्गोणा-
कलशः ४।३।१।६६ आसीदतु आभिसुरव्येन तिष्ठतु ॥ ३ ॥

भाषार्थः - हे वाक् आदि ऋत्विजो १ आत्मप्रतिविंबको २ स्तुत करो ह-
मवेदभी ३ महापुरुष पुरुषोंको ४ स्तुत करते हैं ५, ६ योगैश्वर्यके लिये ७
आत्मप्रतिविंबको प्रेरित करो ८ मधुर आत्मप्रतिविंब ९ मानससूर्यसम्बन्धी
१० सुपुष्पाको ११ सन्मुखप्राप्त करो १२ विद्वान् १३ आत्मप्रतिविंब १४ प्र-
जापतिपरमेश्वरकी १५ सायुज्यको पाओ ॥ ३ ॥

रूपं (इन्द्रम्) १६ आत्मप्रतिविंबं (वावशानाः) १७ कामयमानाः (कलशे) १८
मनासि (आयन्) १९ आगच्छन्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ जव २ वाक् ३ धारक योगयज्ञमें ४, ५ मानसी स्वर्गस्य आ-
त्माके ६ मुखमें ७ कामयमान ८ मनका ९ संस्कार करता है १० तदनंतरही ११
इन्द्रियां १२ वरणीय १३ मनसे सेवित १४ यति १५ परारूप १६ आत्म प्रतिविंब-
को १७ चाहती १८ मनमें १९ प्रवेश करती हैं ॥ ५ ॥

नौधाऽऽपिष्टिषुषु चन्दः सोमो देवता

साक^३ मुक्षी^१ मर्ज^२ यन्त^३ स्वसारो^३ दश^१ धीरस्य^२ धीनयो^३
धनुत्रीः । हरिः^३ पर्यद्वज्जाः^३ सूर्यस्य^३ द्रोणं^३ ननक्षे^३
अत्यो^३ नवाजी ॥ ६ ॥ ७ ॥

(साकमुक्षः) सह सेचनशीलाः । उक्ष सेचने (स्वसारः) परमेश्वरग
तिशीलाः (धीरस्य) प्राज्ञस्य (धनुत्रीः) रक्षकः (दशधीनयः) दश
महाविद्याः । धीवृद्धिस्तां तनोतीति धीतिः धीनयो महाविद्याः
(मर्जयन्ते) आत्मप्रतिविंबं शोधयन्ति ततः (हरिः) मानससूर्यः
(सूर्यस्य) सर्वप्रेरकपरमेश्वरस्य (जाः) अपत्यरूपान्कमलस्य
न्देवान् नि० २।२ (पर्यद्वज्जाः) परितो गच्छति (अत्यः) अतनशी
लः (अश्वः) सूर्यः (न) इव (द्रोणं) गगनमण्डलं (ननक्षे) प्रा-
प्नोति नक्षतिर्व्याप्तिकर्मानि० २।१८।२ - ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ साधसीचनीवाली २ परमेश्वरमें गतिशील ३ ज्ञानीकी
रक्षक ४ दशमहाविद्या ६ आत्मप्रतिविंबका शोधन करती हैं तदनन्तर ७
मानससूर्य ८ सर्वप्रेरकपरमेश्वरके ९ सन्तानरूपकमलस्य देवताओंको
१० प्राप्त करता है ११ गतिशील १२, १३ सूर्यकी समान १४ गगनमंडलको

१५ व्याप्तकरता है ॥६॥ काएवञ्चरपिः शेषं पूर्ववत् :

अधियेदास्मिन्वाजिनीवभ्रुभस्पद्धन्तोधियः सूर
 नाविशः। अपोवृणानः पवते कवीयान्त्रजन्नपभ्रु
 वर्द्धनायमन्म ॥७॥७३

(यद्) यदा (अस्मिन्) (वाजिनि) मानससूर्ये (द्व) आत्मप्रतिविं
 वे (भ्रुभधियः) महाविद्याः (अधिस्यद्धन्ते) अहं पुरस्ताच्छोधयाम्य
 हं पुरतः शोधयामीत्यहमि कया उपतिष्ठते (न) यथा (विशः) प्रजा
 (सूर) सूर्ये तदा (कवीयान्) कविरिवाचरन्नात्मप्रतिविंवः (अपः)
 कमलान्तरिक्षाणि (वृणानः) आच्छादयन् (पवते) गच्छति (न)
 यथा (मन्म) मननीयं बोद्धव्यं रक्षितव्यं (वजम्) गवांगोष्ठं (पभ्रु
 वर्द्धनाय) गोपालः परिगच्छतीति शेषः ॥७॥

भाषार्थः - १ जव २ इस ३, ४ मानससूर्यरूप आत्म प्रतिविंव के निकट

५ महाविद्या ६ में पहिले शोधन करूं इस स्पर्धीके साथ स्थित होती हैं ७ जे
 से ८ प्रजा ९ सूर्यके सन्मुख १० तवमेधावी न्नात्म प्रतिविंव ११ कमलान्त-
 रिक्षोंको १२ आच्छादन करना १३ चलता है १४ जैसे १५ रक्षा योग्य १६ गोष्ठ
 को १७ पभ्रुवृद्धिके लिये गोपाल ॥७॥

मन्युर्वीसिष्ठञ्चरपिः शेषं पूर्ववत्

इन्दुवाजी पवते गोन्योघा इन्दु सामः सह इन्व
 न्मदायहान्ति रक्षा वाधतपयराति वारिवस्त्वा एव
 न्वृजनस्य राजा ॥८॥७४

(वृजनस्य) योगवलस्य (राजा) ईश्वरः (इन्दुः) क्षरणशीलः
 (गोन्योघाः) गोइन्द्रियाणि (अन्य) बुद्धिर्मनश्चतेषामोघायं

स्मिन्स^५ (वाजी) मानससूर्यरूपः (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (मदा-
य) अहंब्रह्मास्मीति मदाय (सहः) स्वात्मज्योतिः (इन्द्रे) परमे-
श्वरे (इन्वन्) प्रेरयन् (पवते) ऊर्ध्वं गच्छति (वरिवः) योगधनं (कु-
एवन्) कुर्वन् (रक्षः) रक्षः कुलं क्रोधादि समूहं (हन्ति) हिनस्ति
(अरतीः) शत्रून् कामादीन् (परिवाधते) परितः संहरति ॥८॥

भाष्यः - १ योगवल का २ स्वामी ३ क्षरणशील ४ इन्द्रियमनबु-
द्धिसे युक्त ५ मानससूर्यरूप ६ आत्मप्रतिविंब ७ अहंब्रह्मास्मि मदकेलिये-
८ अपनी आत्मज्योति को ९ परमेश्वरमें १० प्रेरण करता ११ ऊपरको चलता
है १२ योगधनको १३ प्राप्तकरता १४ राक्षसकुल क्रोध आदि को १५ मारता
है १६ शत्रुकाम आदि को १७ सब ओरसे संहार करता है ॥८॥

कुत्सञ्जयः शंभुं पूर्ववत्

अयापवापवस्वनावसानिमाश्च^१ श्रुत्व^२ इन्दोस^३
रसिप्रधन्व^४ ब्रध्नाश्च^५ यस्य^६ वातान^७ जूति^८ म्पुरुमेधा^९
श्चित्तकवेन^{१०} रन्धात् ॥९॥ ७५

हे (इन्दो) आत्मप्रतिविंब (अयो) अ आत्मा य योगः आत्म योगरू-
पया (पवा) श्रुद्ध्या पूशोधे (एना) एनानि (वसानि) योगधनानि
(पवस्व) क्षर (मांश्रुत्वे) सूर्यरूप शिवसम्बन्धिने नि० (सरसि) क
मलस्थाने भृकुटि मण्डले (वातः) प्राणः (न) इव (प्रधन्व) प्रग-
च्छ (यस्य) (तकवे) गच्छतः । [तकतिर्गति कर्मसु पठितः । अस्मा
दौणादिक उन्प्रत्ययः यस्येति (२, ३, ३७)] (जूतिम्) वेगं (ब्रध्नाः)
(चित्) सूर्योपि (पुरुमेधाः) (चित्) महापुरुषोपि (न) (रन्धात्)
नाहिं स्यात् न दूषयेत् ॥९॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ आत्म योगरूप ३ शुद्धिद्वारा ४ इन
५ योगधनों को ६ प्रगट करो ७ सूर्यरूपशिव सम्बंधी ८ कमलस्थानभृकुटि
मंडलमें ९, १० पाणकीसमान ११ चलो १२ जिस १३ चलते के १४ वेगको १५,
१६ सूर्यभी १७, १८ खौर महापुरुषभी १९, २० नही रोके ॥९॥

पराशरऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{३ १२} महत्तसोमो ^{२ २} महिषश्च ^{३ १} कारोपायद्गर्भो ^{२ ३} वृणीत
^{३ ३} देवान् । ^{१ २} अदधादिन्द्र ^{३ ३} पवमानं ^{३ १} भोजाजनयत्सूर्य
^{३ ३} ज्योतिरिन्दुः ॥ १० ॥ ७६

(महिषः) योगभूमेः सूर्यः (अपाङ्गर्भः) कमलान्तरिक्षाणां गर्भभूतः
(पवमानः) योगेन शुद्धः संस्कृतः (इन्दुः) क्षरणशीलः (सोमः)
आत्मप्रतिविंबः (ततः) (महत्) कर्म (चकार) (यत्) देवान् (कम
लस्थान् (अवृणीत) समभजत (भोजः) सामर्थ्यशक्तिं (इन्दुः)
परमेश्वरे (अदधात्) न्यधात्ततः (सूर्ये) (ज्योतिः) तेजः (अज
नयत्) ॥ १० ॥

भाषार्थः

१ योगभूमिके सूर्य २ कमलान्तरिक्षोंके गर्भरूप ३ योगसे शुद्ध संस्कृत ४ क्ष
रणशील ५ आत्मप्रतिविंबो ६ उस ७ महत्कर्मको ८ किया ९ जो १० कमलस्थ
देवताओंको ११ सेवनकिया १२ सामर्थ्यशक्तिको १३ परमेश्वरमें १४ स्थापन
किया फिर १५ सूर्यमें १६ तेजको १७ मकट किया ॥ १० ॥

कश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्

^{१ २} असजिवकारथ्ये ^{३ २} यथा ^{३ ३} जो ^{३ ३} धियामनीता ^{३ ३} मथमा
^{३ ३} मनीषा । ^{१ २} दशस्वसाराः ^{३ ३} अधिसानो ^{३ ३} अव्यमृजन्ति
^{३ ३} वान्निधं ^{१ २} सदनष्वच्छे ॥ ११ ॥ ७७

(वका) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दाय माना (मनोतो) यस्य मनो ब्रह्म-
 णि प्रोतंसा (प्रथमा) आद्या (मनीषा) ज्ञान स्वरूपा जीवरूपा परा
 (यथा) (रथ्ये) योग रथाहं (आजौ) अजन्तिकर्मार्थं मृत्विज इति
 आजिर्यन्तः तस्मिन् योग यज्ञे (धिया) योग क्रियया (असर्जि) स्त-
 ज्यते तथा (दशस्वसारः) आत्मनिसरण शीला महा विद्या (सदनेषु)
 कमलेषु मध्ये (अव्ये) मानससूर्यसम्बन्धिनि (सानौ) शिखरे
 मानस कमले (वद्विम्) देहस्य बोद्धारमात्म प्रतिविवं (अच्छ) आ-
 भिमुख्येन (आधि मृजन्ति) आधिकं शोधयन्ति ॥११॥

भाषार्थः - १ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को करती २ मन को ब्रह्म में धारण कर-
 ने वाली ३ आद्या ४ ज्ञान स्वरूपा जीवरूपा परा ५ जिस प्रकार ६ योग रथ योग्य ७
 योग यज्ञ में ८ योग क्रिया द्वारा ९ कमलों में जाती है उसी प्रकार १० आत्मामें-
 गति शील महा विद्या ११ कमलों के मध्य १२ मानस सूर्य सम्बन्धी १३ शिखर
 मानस कमल में १४ देह धारक आत्म प्रतिविंव को १५ सन्मुख होकर १६ अ-
 धिक शोधन करती हैं ॥११॥

प्रक्ता एव त्रयिष्विषुषु चन्दो महा विद्या देवताः

अपामिव दमयस्तनुराणाः प्रमनीषा इरते सो
 ममच्छ । नमस्यन्ती रूपचयन्ति सञ्चा च विश
 न्त्युशतीरुशन्तम् ॥१२॥ ७८

(अपाम्) (ऊर्मयः) (इव) (तनुराणाः) त्वरमाणाः (मनीषाः) म-
 हा विद्याः (सोमम्) आत्म प्रतिविवं (इत्) एव (अच्छ) आभिमु-
 ख्येन (प्रेरयन्ति) (च) (नमस्यन्तीः) नमस्यन्तः ब्रह्माणि योज-
 यन्त्यः सत्यः नं (उपयन्ति) समीपे गच्छन्ति (च) (सयान्त) सङ्ग-

छन्ते^{१५}(च)^{१६}(उशतीः) कामयमानाः महाविद्याः^{१७}(उशन्तं) काम
यमानमात्मप्रतिविंबं^{१८}(आविशन्ति) प्रवशन्ति ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ जलों की २ लहरों के ३ समान ४ शीघ्र गामी ५ महाविद्या
६ आत्म प्रतिविंब को ७ ही ८ सन्मुख ९ प्रेरणा करती हैं १० और ११ ब्रह्म में
संयोजित करती १२ समीप जाती हैं १३ और १४ मास होती हैं १५ और १६
कामयमान महाविद्या १७ कामयमान आत्म प्रतिविंब में १८ प्रवेश कर
ती हैं - ॥ १२ ॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसाद
शर्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पंचमस्याध्यायस्य
सप्तमः खण्डः ॥ ७ ॥ **अथाष्टमः खण्डः**

भ्यावाञ्च ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सोमो देवता

^३पुरोजिती^३वो^३भ्रन्धसः^३सुताय^३मादयित्त्ववे^३। अप
^३श्वान^३थं^३श्नथिष्टन^३सखाये^३दीर्घजिह्वाम्^३। ७^३दु
हे^३(सखायः) वागाद्यत्विजः^३(दे) परारूपः^३(वे) निवृत्तात्मा^३(आत्
सः) भूतात्मनः^३(पुरोजितं) पुरांस्थूलसूक्ष्मकारणदेहानां जेता
तस्मात्^३(सुताय) अभिपुताय^३(मादयित्त्ववे) अत्यन्तं मदकराया
त्मप्रतिविंबाय^३(दीर्घजिह्वाम्) (श्वानम्) कामं^३(अपश्नथिष्टन)
अपश्न थयत् अपवाधध्वम् ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हेवाक् आदि ऋषि रनुष्टुप् छन्दः सोमो देवता
४ भूतात्माके ५ स्थूलसूक्ष्मकारणदेहों का जेता है उस कारण ६ अभिपुत ७
अत्यन्त मदकर आत्म प्रतिविंब के लिये ८ दीर्घजिह्वावाने ९ काम को १० ताड
गाकरो - ॥ १ ॥ ययानिनाइप ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता

^३अयम्पू^३पाराय^३भगः^३सोमः^३पुनानो^३अर्पति^३। पति^३

^१विश्वस्य^२भूमनो^३व्यख्यद्रोदसी^४उभे^५॥२॥८०

(अयम्) (भगः) परमेश्वरस्यैश्वर्यरूपः (रयिः) परमेश्वरस्य धनरूपः (पूषा) सूर्यः (पुनानः) वायु संस्कृतः सन् (अपति) गच्छति (विश्वस्य) सर्वस्य (भूमनः) भूतजानस्य (पतिः) पालयिता (सोमः) सूर्यः (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (व्यख्यत्) स्वतेजसा प्रकाशयति हे आत्मप्रतिविंबतथैवत्वमपि गच्छेत्यर्थः ॥२॥

भाषार्थः - १ यह २ परमेश्वर का ऐश्वर्यरूप ३ परमेश्वर का धनरूप ४ सोमसि माणमें संस्कृत होता ६ चलता है ७ सब ८ प्राणि समूह का ९ स्तानी १० सूर्य ११ दोनों १२ पृथिवी स्वर्ग को अपने तेज से प्रकाशित करता है हे आत्मप्रतिविंब उसी प्रकार नुम भी गगन मंडल को चलो यह अभिप्राय है

॥२॥ ययातिर्नाहुपञ्चपरितुपुच्छन्दः सोमा देवताः

^३सुता^२सोम^३धुमत्तमाः^४सोमा^५इन्द्राय^६मन्दिनेः^७

^१पवित्रवन्तो^२अक्षरन्देवान्^३गच्छन्तु^४वामदाः^५॥३॥८१

(मधुमत्तमाः) अतिशयेन विज्ञानोपेताः (मन्दिनेः) परमेश्वरस्य स्तोतारः नि० (सुतासः) अभिपुताः (पवित्रवन्तः) माणावन्न आत्मप्रतिविंबाः (इन्द्राय) परमेश्वराय (क्षरन्) कमलेषु क्षरन्ति हे आत्मप्रतिविंबाः (वः) युष्माकं (मदाः) (देवान्) (गच्छन्तु) ॥३॥

भाषार्थः - १ अत्यन्त विज्ञान युक्त २ परमेश्वर के स्तोता ३ अभिपुत ४ माणावान् आत्मप्रतिविंब ५ परमेश्वर के लिये ६ कमलों में जाते हैं आत्मप्रतिविंबो ७ नुम्हारे ८ मद ९ देवताओं को १० प्राप्त हों ॥३॥

मनुः सांवरणः ऋषिः शेषं पूर्ववत्

^३सोमाः^२पवन्त^३इन्द्रवो^४स्मभ्यङ्गा^५तु^६वित्तमाः^७।मित्राः^८

स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥४॥ ८२ ॥

महापुरुष पुरुषाणामुपदेशः (मित्राः) भक्ताः यद्वा हिंसा भून्यत्वेन
 सर्वेषां मित्राः (स्वानाः) आत्मरथाः (अरेपसः) निष्पापाः (स्वाध्यः)
 आत्मध्यानतत्पराः (स्वर्विदः) सर्वज्ञाः (गातुविन्तमः) योगमार्गज्ञाः
 (इन्द्रवः) दीमाः (सोमाः) आत्मप्रतिविंवाः (अस्मभ्यम्) (पर्वन्ते)
 सुपुमणा मार्गे गच्छन्ति ॥४॥

भाषार्थः - महापुरुष पुरुषोक्ता उपदेश - १ भक्तवाहिसानकरनेवाले सब
 के मित्र २ आत्मरथस्य ३ निष्पाप ४ आत्मध्यानमें तत्पर ५ सर्वज्ञ ६ योगमार्गज्ञ
 ७ दीम ८ आत्मप्रतिविंवा ९ हमारे लिये १० सुपुमणा मार्गसे जाते हैं ॥४॥

अम्बरीष इति श्वानोद्वात्पुण्यनुपुच्छन्दः सोमो देवता

अभीनो वाजसातमं रयिमर्षशतस्पृहम् ।
 न्दोसहस्रभर्णसन्तु विद्युन्निविभोसहम् ॥५॥ ८३

हे (इन्द्रो) दीप्यमानपरमेश्वर (वाजसातमम्) अन्नस्य विराड्
 रूपान्नस्यातिशयेन दातारं (शतस्पृहम्) बहुभिः स्पृहणीयं (सह
 स्रभर्णसं) बहुविधभरणं। अनेकपोषणयुक्तं (तुविद्युन्निम्) बहु
 यशो युक्तं (विभासहं) महतः प्रकाशस्याभिभवितां (रयिम्) धनं
 योगधनम्वा (नः) अस्मभ्यं (अभ्यर्षं) अभिगमय ॥५॥

भाषार्थः - १ हे दीप्यमानपरमेश्वर २ अन्नवा विराड् रूपसन्नके दाता ३ व
 हुतसे स्पृहणीय ४ अनेकपोषणयुक्त ५ बहुयशयुक्त ६ महाप्रकाशके अभि
 भवित ७ धनवा योगधनको ८ हमें ९ प्राप्त कराओ ॥५॥

अम्बरीष इति श्वानोद्वात्पुण्यनुपुच्छन्दः सोमो देवताः

अभीनवन्ते अद्रुहः प्रियामिन्द्रस्य काम्यम् ।

^{२ ३}त्सन्नं ^{२ १ २ २}पूव आयुनि ^{३ १}जातं ^३रिहन्ति ^{३ १ २}मातरः ॥६॥ ८४
 (अद्बुहः) अद्रोहाः महावाचः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (काम्यम्)
 (प्रियम्) (जातम्) संस्कृतमात्मप्रतिविम्बं (आभिनवते) आभि
 गच्छन्ति नवतिर्गति कर्माणि ० २। १४ (न) यथा (मातरः) गावः
 (वत्सम्) (पूर्व) (आयुनि) प्रथमे वयसि (रिहन्ति) लिहन्ति ॥६॥

भाषार्थः - १. द्रोहभृत्य महावाक् २ परमेश्वरके ३ काम्य ४ प्रिय ५ सं-
 स्कृत आत्मप्रतिविम्बको ६ प्राप्त करते हैं ७ जैसे ८ गौर्दवच्छेको ९ बाल्य
 १० अवस्थामें ११ चाटनी हैं ॥ ६॥

सोमो गुर वश्व देवताः शेषं पूर्ववत्-

^{१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २}आह्वयताय ^{३ १ २}धृषावे ^{३ १ २}धनुष्वन्ति ^{३ १ २}पौंथं ^३स्यम्।
^{१ २ ३ ३ १ २ ३ १ २}शुक्तावयन्त्यसुराय ^{३ १ २}निर्णिजे ^{३ १ २}विषामयं ^{३ १ २}मही
 युवः ॥७॥ ८५

(विषाम्) मेधाविनां (महीयुवः) योगभूमौ योजका गुरवः (अग्रे)
 आदौ) निर्णिजे) स्वरूपशोधनार्थं (ह्वयताय) परमेश्वरेण स्पृ-
 हणीयाय (धृषावे) कामादीनां धर्षणशीलाय (असुराय)
 योगवलवने शिष्याय (पौंस्यम्) पुरुषार्थसाधकं (धनुः) प्रणवा
 ख्यं (आतन्वति) धनुषि ज्यां कुर्वन्ति तथा (शुक्ता) शुक्लानि
 वस्त्राणि (वयन्ति) आच्छादयन्ति ॥७॥

भाषार्थः - १ मेधावी पुरुषोंके २ योगभूमि में योजक गुरुजन ३ आदि
 में ४ स्वरूपशोधनार्थ ५ परमेश्वरके स्पृहणीय ६ काम आदिके धर्षणशी-
 ल ७ योगवलवान् शिष्यके लिये ८ पुरुषार्थसाधक ९ प्रणवनाम धनुषको
 १० ज्यायुक्त करते हैं ११ नधानुक्त वस्त्रोंको १२ धारण करते हैं ॥७॥

ऋजिश्वाभ्वरीपा वृषी वृहती छन्दः सोमो देवता

परित्यं^{३ ३ १} ह्यतं^{२ ३ १ १ २} हारिभ्वभु^{२ ३ १} म्युनन्ति^{३ १ २} वारेणा^{३ १ २} यो

देवान्विश्वा^{३ २ ३} इत्परिमदेन^{३ २ ३} सह^{२ ३} गच्छति ॥ ८ ॥ ८६

(त्यम्) तं (ह्यतम्) सर्वैः स्पृहणीयं (हारिम्) हरितवर्णं (वभुम्) वभुवर्णं सोमम् (वारेणा) वालेन पवित्रेण (परिपुनेन्ति) परिशोधयन्ति (यः) (विश्वान्) सर्वान् (देवान्) (इत्) एव (मदेन) मदकरणरसेन (सह) (परिगच्छति) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ उ स २ सवसे स्पृहणीय ३ हरितवर्ण ४ वभुवर्ण सोमको ५ वाल पवित्रसे ६ शोधन करते हैं ७ जो सोम ८ सव ९ देवताओंको १० ही ११ मदकर रसके १२ साथ १३ प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् (त्यम्) तं। यकारो योग द्योतकः (ह्यतम्) परमेश्वरेण स्पृहणीयं (वभुम्) योगे गतिशीलं। वभुगतौ (हारिम्) मानससूर्यं (वारेणा) सुपुण्याया (परिपुनेन्ति) परिशोधयन्ति (यः) मानससूर्यः (विश्वान्) सर्वान् (देवान्) (इत्) एव (मदेन) मदकरणेन्द्रियरूपरसेन (सह) (परिगच्छति) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ उ स २ परमेश्वरसे स्पृहणीय ३ योगमें गतिशील ४ मानससूर्यको ५ सुपुण्यासे ६ शोधन करते हैं ७ जो मानससूर्य ८ सव ९ देवताओंको १० ही ११ मदकर इन्द्रिय रूपरसके १२ साथ १३ प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

प्रजापतिर्ऋषिः पृषुप् छन्दः सोमो देवता

प्रसुन्वानाया^{१ २ ३ १ २} न्धसा^{२ २ ३ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३} मत्तानवष्ट^३ तद्वचः। अप

श्वानमराधसं^{१ २ ३ ३ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} हता^३ मुखन्तभृगवः ॥ ९ ॥ ८७

(मर्तः) देहाभिमानी मनः (अन्धसः) देहरूपान्नात् (सुन्वानाय)

अभिपूयमाणाय^४ात्मप्रतिविंवाय^५(तत्) (वचः) भक्तियोगसम्ब^६
धि^७नवचनं^८(न) (प्रवष्ट) नाकामयतूतस्मात् (अराधसम्) नि^९
र्धनं^{१०} (अमरवम्) ईशान्चीरहितं (श्वानम्) कामं^{११} (भृगवः) (न)^{१२}
भार्गवाड्व^{१३} (अपहत) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ देहाभिमानि मनने २ देहरूप अन्नसे ३ अभिपूयमाण आ-
त्मप्रतिविंव के लिये ४ उस ५ भक्ति योग सम्बन्धी वचनको ६, ७ नहीं चाहा ८
उसकारण निर्धन ९ ईशान्चीहीन १० कामको ११, १२ भृगु वंशियों की समान
१३ मारो-॥ ८ ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते साम-
वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पंचमाध्यायस्याष्टमः खण्डः ॥ ८ ॥

अथ नवमः खण्डः

कविर्भार्गवः ऋषिर्जगती छन्दः सोमो देवताः

अभिप्रियाणि^३ पवते^२ च^३ नो^४ हि^५ नो^६ नामानि^७ यद्वा^८ अ^९
धिय^{१०} पु^{११} वद्धते^{१२} । आ^{१३} सूर्यस्य^{१४} वृह^{१५} तो^{१६} वृह^{१७} न्नाधि^{१८} रथ^{१९} वि^{२०}
ष्वञ्च^{२१} मरुह^{२२} द्वि^{२३} च^{२४} क्षणः^{२५} ॥ १ ॥ ८ ८

(चनः) अन्नरूपः (हितः) निहितः योगमार्गे स्थापितः (विचक्ष
णः) सर्वस्य द्रष्टा (यहः) समाधिभावापन्नः (वृहन्) महानात्म
प्रतिविंवः (प्रियाणि) भक्तानां प्रियाणि (नामानि) नमनशी
लानि कमलानि (अभिपवते) अभितो गच्छति (येषु) कमलेषु
(आधिवद्धते) अधिकं प्रवृद्धो भवति (वृहतः) महतः (सूर्यस्य)
महापुरुषस्य (विष्वञ्चम्) सर्वां (रथम्) लोकं (आधि) उप
रि (आरुहन्) आरोहति ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ अन्नरूप २ योगमार्गमें स्थापित ३ सबका दृष्टा ४ समष्टि भा
वापन्न ५ महान् आत्म प्रतिविंब ६ भक्तोंके प्रिय ७ कमलोंको ८ प्राप्त करता है
९ जिन कमलोंमें १० अधिक वृद्धि पाता है ११-१२ महासूर्यरूप महा पुरुषके
१३ सर्वगत १४ लोकके १५ ऊपर १६ चढ़ता है ॥१॥

विनियोगः पूर्ववत्

^३अ^१चो^२द^३सो^२नो^३ध^२न्व^३न्त्वि^२न्द^३वः^२प्र^३स्वाना^२सो^३वृ^२ह
^३ह^२व^३पु^२ह^३र^२यः^३वि^२चि^३द^२श^३ना^२ना^३ड^२ष^३यो^२अ^३रा^२त^३यो^२यो
नः^३स^२न्तु^३स^२नि^३ष^२न्तु^३नो^२धि^३यः ॥२॥ ८९

(नः) अस्माकं (स्वनासः) सूयमानाः (इन्दवः) आत्मांशवः (अचो
दसः) अनन्यमेरितः (हरयः) प्राणाः (वृहदेवपु) महा पुरुष पुरुषे
पु (प्रधन्वन्तु) प्रगच्छन्तु धन्वति गतिकर्मानि० २।१४।६५ कि-
ञ्च (नः) अस्माकं (अरातयः) दानराहिताः (अर्यः) स्वामिनः कामा
दयः (इषयः) विषयनिच्छन्तः (चित्) अपि (व्यश्नोनाः) (विगतवि
पयाः) (सन्तु) (नः) अस्मान् (धियः) प्रज्ञाः (सनिषन्त) सम्भज
न्तु ॥२॥

भाषार्थः

१ हमारे २ अभिपूयमाण ३ आत्मांशरूप ४ अनन्यमेरित ५ प्राण ६ महापु-
रुषपुरुषोंमें ७ जान्ने और ८ हमारे ९ अदाता १० विषयेच्छु ११ स्वामीरूप-
काम आदि १२ भी १३ विषयभून्य १४ होशो १५ तुमको १६ बुद्धियां १७ से
वनकरो ॥२॥

विनियोगः पूर्ववत्

^३ए^२ष^३प्र^२को^३श^२म^३धु^२मा^३थं^२अ^३चि^२क्र^३द^२दि^३न्द्र^२स्य^३व^२ज्जा
^३व^२पु^३षा^२व^३पु^२ष्ट^३मः^२अ^३भ्य^२त^३स्य^२सु^३दु^२घो^३घृ^२त^३श्रु^२तो^३वा
आ^३अ^२ष^३न्ति^२प^३य^२सा^३च^२ध^३न^२वः ॥३॥ ९०

भाषार्थः - १ दीप्त आत्मप्रतिविंब २ परमेश्वरके ३ संस्कृत परमधाम
को ४ मकर्षताके साथ ५ प्राप्त करता है ६ सखा भक्त ७ सखा परमेश्वरकी ८
सस्कृत वाणी को ९, १० हिंसित नहीं करता है ११ वह १२ बहुसाधन वाले १३
योगमार्ग द्वारा १४ परमेश्वरमें १५ संयोग को पाता है १६ जैसे १७ मनुष्य १८
युवतीस्त्रियोंके साथ ॥ ४ ॥ कविऋषिः शेषपूर्ववत्

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ ३ ३ २ ३ ३ २ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

धन्नादिवः पवते कृत्यारसादक्षादेवानामनु
माद्यन्नाभिः। हरिः स्तजाना अत्योन सत्वभिर्वृथा
पाजांसि कृणुषे नदीष्वाम् ॥ ५ ॥ ६२

(धन्ना) देहस्वधारकः (कृत्यः) योगयन्तार्हः (रसः) सारभूतः
(देवानाम्) इन्द्रियाणां (दक्षः) बलरूपः (नृभिः) नेताभिर्वागा
द्यत्विग्भिः (अनुमाद्यः) अनुमादनीयः स्तुत्योवा (हरिः) मानससूर्यः
(सत्वभिः) सत्वगुणैः (स्तजानः) स्तज्यमानः (दिवः) मानस
कमलात् (अत्यः) समाष्टिसूर्यः (ने) इव (पवते) ऊर्ध्वगच्छति
(पाजांसि) अन्नामि (नदीषु) इन्द्रियेषु (वृथा) निष्फलानि (कृ
णुते) कुरुते ॥ ५ ॥ **भाषार्थः**

१ देहकाधारक २ योगयन्तयोग्य ३ सारभूत ४ इन्द्रियोका ५ बलरूप ६ नेता
वाक्शादिऋत्विजोंसे ७ अनुमादनीय वास्तुतियोग्य ८ मानससूर्य ९ सत्व
गुणोंसे १० युक्त होता ११ मानसकमलसे १२ १३ समाष्टिसूर्यकी समान १४
ऊपरकोजाताहै १५ औरविषयोंको १६ इन्द्रियोंमें १७ निष्फल १८ करताहै

॥ ५ ॥

विगणऋषिः शेषपूर्ववत्

१ २ ३ १ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

वृषामतीनाम्पवते त्रिचक्षणाः सोमो अहोम्रत
रीतोषसान्दिवः। माणासिन्धूनां कलशांश्च

१ कददिन्द्रस्यहाद्यानिशन्मनीषिभिः ॥६॥ ६३
 (मनीषाम्) मत्तानां (वृषा) वर्षकः (विचक्षणाः) विदद्या (अह्नाः)
 पितृदेवयानसम्बन्धिदिवसां (उषसां) (दिवः) स्वर्गस्य च (प्रत
 रीता) मतरिता (सिन्धूनाम्) इन्द्रियाणां (प्राणा) प्रकर्षेणान्चेष्ट
 यिता (सोमः) आत्मप्रतिविम्बः (पवते) ऊर्ध्वगच्छति (मनीषिभिः)
 मेधाविभिर्वागाद्यत्विग्भिः सह (इन्द्राय) परमेश्वराय (हार्द) ४
 स्नेहे (आविन्) प्रविशन् (कलशान्) कमलरूपगृहान् (आभिः)
 अभिलक्ष्य (अचिक्रदत्) स्तुतिशब्दं करोति ॥ ६॥

भाष्यः - १ मत्ताओंकी २ वृष्टिकरनेवाला ३ विशेषदृष्टा ४ पितृयान
 देवयानसम्बन्धीदिनों ५ उषाकालों ६ औरस्वर्गका ७ मतरिता ८ इन्द्रियोंको
 ९ चेष्टा देनेवाला १० आत्मप्रतिविम्ब ११ उपाकोजाताहै १२ मेधावीवाक्शादि
 अत्विजोंकेसाथ १३ परमेश्वरके १४ स्नेहमें १५ प्रवेश करता १६ कमल
 रूपग्रहोंको १७ देखकर १८ स्तुतिशब्दकोकरताहै ॥६॥

रेणुर्ऋषिर्जगतीच्छन्दः सोमो देवता

त्रिस्मै सप्तर्धेनवो दुदुह्निरे सत्यामाशिरम्परमे
 व्योमनि । चत्वार्यन्याभुवनानि णिजे चारूणि
 चकेयदुतैरवर्द्धत ॥७॥ ६४ नि

(यद्) यदा (अ) आत्मारूपयजमानः (अतैः) योगयज्ञैः (अव-
 र्द्धत) तदा (त्रिः) प्रातः मध्याह्न सायं सवनानि (सप्त) योगभूमय
 (अस्मै) आत्मारूपयजमानाय (शिरम्) मानससूर्यश० १४।१।१
 १० (परमे) (व्योमनि) भृकुत्पत्तुरिक्षे (दुदुह्निरे) दुहन्ति (अन्या)
 (सत्या) (मा) पराशक्तिः (निर्णिजे) मानससूर्यस्य परिशोधना

य^{१६}(चत्वारि)^{१७}(भुवनानि) जागृत्स्वप्नसुषुप्तिंतुरीयारव्यानि^{१८}(चारु
णि) कल्याणानि^{१९}(चक्रै) करोति ॥७॥

भाषार्थः - १ जव २ आत्मारूपयजमानने ३ योगयज्ञोंसे ४ वृद्धिपाईत-
व ५ प्रातः मध्यान्ह सायंकालके सवन ६ और सप्तयोगभूमि ७ इस आत्मा
रूपयजमानके लिये ८ मानस सूर्यको ९ १० भृकुटिके अन्तरिक्षमें ११ देह
ते हैं १२ दूसरी १३ सत्यरूपा १४ पराशक्ति १५ मानससूर्यके शोधनार्थ १६ १७
जागृत्स्वप्नसुषुप्तिनुर्यानामभुवनोंको १८ कल्याणरूप १९ करती है ॥७॥

वेनोभार्गवञ्जरापिर्जगती छन्दः सोमो देवता-

^{१ २} इन्द्राय सोमसुषुतः ^{३ १ २ ३} परिस्त्रवा ^{४ २ ३ १ २} पामीवाभवतुर्
^{५ २} ससासह ^{६ ३ २} मातरसस्य ^{७ ३ २} मत्सत ^{८ ३ १ २ ३} द्वयाविना ^{९ २ ३} द्रवि
^{१० २ ३} णस्वन्त इह सन्त्विन्दवः ॥ ८ ॥ ६५

हे^१(सोम) आत्मप्रतिविंवत्वं^२(सुषुतः) सन्^३(इन्द्राय) परमेश्वरा
य^४(परिस्त्रव) परिगच्छ^५(अमीवा) संसाररोगः^६(रक्षसा) कामे
न^७(सह)(अपभवतु) अपगतो वियुक्तो भवतु^८(द्वयाविनः) द्वैता
वलम्बिनो देहादयः^९(ते) नव^{१०}(रसस्य)(मा)(मत्सत) त्वदीयेन
रसेन मामद्यन्तु^{११}(इन्दवः) इन्द्रियरूपा रसाः^{१२}(इह) योगयज्ञे
(द्रविणस्वन्तः)^{१३} योगधनवन्तः^{१४}(सन्तु) भवन्तु ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंवतुम २ अधिपुत होते ३ परमेश्वरके लिये
४ ऊपरको चलो ५ संसाररोग ६ कामके ७ साथ ८ तुमसे वियोगको पाओ ९
द्वैतावलम्बी देह आदि १० तेरे ११ रससे १२ १३ मदको मत पाओ अर्थात् नून
से असंग हो १४ इन्द्रियरूप रस १५ इसयोगयज्ञमें १६ योगधनवाले १७ हों

॥ ८ ॥

भद्राजोवसुञ्जरापिः शेषं पूर्ववत्

र्षणागच्छन्ति (न) युधा (धेनवः) (गावः) (वर्हिषदः) सुपुमामा
 र्गणासीदन्तः (वचनवन्तः) (उस्त्रियाः) गोरूपावेदाः (ऊधभिः) स्व
 धास्वाहादिरूपैः (परिस्त्रुतं) निर्णीजम्) शुद्धतत्वमसीति महा वाचं
 (धरे) दधिरे यजमानार्थं धारयन्ति ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ प्राणवान् २ इन्द्रियआत्मप्रतिविंब ३, ४ परमेश्वरकी मामि
 को प्रकर्षाके साथ जाते हैं ६, जैसे ७ दुग्धदाता ८ गौ ९ सुपुमामा मार्ग में विराज
 मान १० वचनवान् ११ गौरूपवेद १२ स्वधास्वाहा आदि स्तनों से १३ निकले
 हुए १४ शुद्धतत्वमसीमहावाक् को १५ यजमानके लिये धारण करते हैं ॥ १० ॥

अत्रिन्द्रपिः शेषं पूर्ववत्

अज्जते व्यज्जते सम्भज्जते क्रतुं थं रिहन्ति मध्वो
 भ्यज्जते सिन्धो रुच्छा सेपत यन्त मुक्षणां थं हिर
 एयपावाः पशुमेषु गृभाते ॥ ११ ॥ ६८

आत्मप्रतिविंबः (अज्जते) इन्द्रियैः सह प्रयुज्यते। अनजमिज्ञाणे
 (व्यज्जते) माणौ विशेषेण प्रयुज्यते (सम्भज्जते) अन्तः करणैः
 सम्यक् युज्यते कमलस्थादेवाः (क्रतुम्) योग कर्तारं (रिहन्ति)
 लिहन्ति आस्वादयन्ति (मध्वो) ज्ञानेन श० १४। १५। १६ (सम्य
 ज्जते) समन्तान्मिज्जयन्ति (हिरण्यपावाः) स्वकीयज्योतिषा पु
 नन्तः कमलस्थादेवाः (सिन्धोः) मनसः। मनोवैसमुद्रः श० ७
 १। २। ५२ (उच्छ्रासे) उच्छ्रिते देशे मृकुल्पादि कमलसमूहे (पत
 यन्तं) गच्छन्तं (उक्षणां) सेक्तारं (पशुम्) आत्मप्रतिविंबं। ए
 तावान्वै पशुर्यावान्प्राण आत्मान् च श० ६। ६। २। ७ (अपशु) कम
 लान्तरिक्षेषु (गृभाते) गृह्णन्ति ॥ ११ ॥

भाषार्थः - आत्मप्रतिविंबं १ इन्द्रियों से संयोग पाता है २ प्राणों से संयुक्त होता है ३ अन्तःकरणों से संयोग करता है कमलस्थ देवता ४ योगी को ५ प्यार करते हैं ६ ज्ञानसे ७ मिश्रित करते हैं ८ अपनी ज्योतिसे पवित्र करने कमलस्थ देवता ९ मूत्रके १० उच्छ्रित देशभृकुटि आदिकमल समूहमें ११ जाते १२ सेना १३ आत्मप्रतिविंबको १४ कमलान्तरिक्षोंमें ग्रहण करते हैं ॥ १२

पवित्रकरपिर्जगती छन्दो ब्रह्मणस्पतिर्देवता
 पवित्रन्नेवितन्ब्रह्मणस्पते प्रभुगोत्राणि पर्येषि
 विश्वतः । अतसतनूनतदामो अभ्युते श्रुतासइ
 वहन्तः सन्तदाशत ॥ १२ ॥ ८८

हे (ब्रह्मणस्पते) महावाक् स्वामिन्नात्मप्रतिविंब (ते) तव (पवित्रम्) प्राणं (विततम्) सर्वत्रविस्तृतं (प्रभुः) समर्थस्त्वं (विश्वतः) सर्वतः (गात्राणि) परमेश्वरस्यांगानि (पर्येषि) परिगच्छसि (अतसतनूः) तपोहीनशरीरः (आमः) अपरिपक्वो ऽ संस्कृतो जीवात्मा (न) (अभ्युते) न प्राप्नोति (श्रुतासः) परिपक्वाः संस्कृता भक्ता योगिनः (इत्) एव (वहन्तः) भक्तिं योगम्वाधारयन्तः (तत्) सायुज्यं (समासत) सम्यक् प्राप्नुवन्ति असगतौ ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ हे महावाक् स्वामिन् आत्मप्रतिविंब २ तेरा ३ प्राण ४ सर्वत्रविस्तृत है ५ समर्थतुम ६ सब ओरसे ७ परमेश्वरके अंगोंको ८ प्राप्त करते हो ९ तपभ्रूयशरीरवाला १० अपरिपक्व असंस्कृत जीवात्मा ११, १२ नहीं पाता है १३ परिपक्व संस्कृत भक्त योगी १४ ही १५ भक्ति योगको धारण करते १६ उस सायुज्यको १७ प्राप्त करते हैं ॥ १२ ॥

इति श्रीभृगुवंशार्चनसंज्ञीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते साम

वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य नवमः खण्डः ६

इतिजागतम्

इन्द्रमच्छेति खण्डेः स्मिन् ऋचोद्वादशसंस्थिताः

सकलाउणिाहस्तत्रवह्यन्ते ऋषयः पृथक् ॥

अथदशमः खण्डः

अग्निभ्रासुपऋषिरुणिाक छन्दः सोमादेवताः

^३इन्द्र^३मच्छे^३सुता^३इमे^३वृषाणां^३यन्तु^३हरयः^३।^३भ्रुष्टे^३

जातासइन्द्रवः स्वर्विदः ॥१॥ १००

(भ्रुष्टे) आत्मनाव्याप्तेकारणारव्ये शरीरे । भ्रुगतौ (जातासः) ज

ताः (सुताः) अभिपुताः (इन्द्रवः) दीप्ताः (स्वर्विदः) आत्मनो ज्ञान

रः (इमे) (हरयः) मानससूर्याः (वृषाणां) धर्मकामार्थ मोक्षाणां

वर्धितारं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अच्छे) आसुम् (यन्तु) गच्छन्तु । १

भाषार्थः - १ आत्मासेव्याप्रकारणा शरीरमे २ उत्पन्न ३ अभिपुत ४ दी

प्त ५ आत्मज्ञाना ६ ये ७ मानससूर्य ८ चारोपदार्थके दाता ९ परमेश्वरकी १०

प्राप्तिकेलिये ११ गगनमंडलको चलो ॥१॥

चसुर्मानवऋषिः शेषंपूर्वैवत्

^३प्र^३ध^३न्वा^३सो^३म^३जा^३गृ^३वि^३रि^३न्द्रा^३ये^३न्द्रो^३परि^३स्व^३वा^३द्यु^३

मन्तं^३शु^३ष्म^३मा^३भर^३स्व^३र्विद^३म् ॥२॥ १०१

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (जागृविः) जागरणशीलस्त्वं (प्रधन्व

मकर्षणा गच्छ हे (इन्द्रो) प्रदीप्त (इन्द्राय) परमेश्वराय (परिस्व

व) कमलेषु गृच्छ (द्युमन्तं) दीप्तियुक्तं (स्वर्विदम्) आत्मनो ल

म्भकं (शुष्मम्) योगवलं (आभर) आहरधारय ॥१॥

भाषार्थः - १ हे आत्म प्रतिविंब २ जागरणशीलतुम ३ ऊपरकोचलो ४ हे महातेजस्वी ५ परमेश्वरके लिये ६ कमलोंमें जाओ ७ दीप्ति युक्त ८ आत्म मापक ९ योगबलको १० धारण करो - ॥ २ ॥

पर्वतनारदासृष्याणिकच्छन्दःस्रत्विजोदेवताः

सखाय^१ आनि^२धीद^३त पुना^४नोय^५प्रगाय^६त।शि
मु^७न्नय^८ज्ञैः परि^९भूष^{१०}त^{११}भ्रिये^{१२} ॥ ३ ॥ १०२

हे (सखायः) वागाद्यत्विजः (आनिधीदत) स्तोतु मुपविशत (पु-
नानाय) पूयमानाय शोधमानाय आत्म प्रतिविंबाय (प्रगायत)
प्रकर्षेण गायत (भ्रिये) योगलक्ष्म्यर्थ (यज्ञैः) (परिभूषत) प-
रितोऽलङ्कृत (न) यथा (शिभुम्) वालंपितर आभरणैरलङ्क-
र्वन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे वाक् आदिऋत्विजसखाओ २ स्तुति करने कों वैठो ३ शोधमान आ-
त्म प्रतिविंबके लिये ४ गाओ ५ योगलक्ष्मीके लिये ६ योग यज्ञों से ७ अल-
ङ्कृत करो ८ जैसे ९ बालकको माताप आभरणों से अलंकृत करते हैं ॥ ३ ॥

पर्वतनारदासृषी शेषं पूर्ववत्-

तव^१ सखायो^२ मदाय^३ पुना^४नमभि^५गाय^६त।शिभु^७
न^८हव्यैः^९ स्वद^{१०}यन्त^{११} गूर्ति^{१२}भिः ॥ ४ ॥ १०३ ॥

हे (सखायः) भक्तायोगिनः (वः) युष्माकं (मदायु) अहं ब्रह्मा-
स्मीति मदार्यं (पुनानं) पूयमानं शोधमानं (तम्) आत्मप्रति-
विंबे (शिभुम्) (न) इव (अभिगायत) अभिघृत (हव्यैः) इन्द्रि-
यैः (गूर्तिभिः) स्तुतिभिश्च (स्वन्दयन्त) स्वादू कुरुत ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे भक्त योगियो २ तुम्हारे ३ अहं ब्रह्मास्मि मद्के लिये ४

शोधमानं^५ उप्त आत्म प्रति विवको^{६,७} वालक की समानं^८ स्तुत करो^९ ईन्द्र-
न्द्रियों^{१०} और स्तुतिओं से^{११} स्वादिष्ट करो ॥ ४ ॥

विन ऋषि रुषिणक् छन्दः सोमो देवता-

प्राणाशिभुम्म^३ हीना^४ थं^५ हिन्वन्तृतस्य^६ दीधितम्^७।
विष्वा^८ परिप्रिया^९ भुवदधा^{१०} द्विता^{११} ॥ ५ ॥ १०४

(अथ) अथ (महीनाम्) योगभूमिनां (प्राणा) चेष्टयिता (ऋ-
तस्य) सत्यस्य ब्रह्मणः (शिभुः) (द्विता) द्वैतावलम्बी। आत्मप्र-
तिविवुः (दीधितम्) स्वकीयं ज्योतिः (हिन्वन्) ब्रह्मणि प्रेरयन्
(विष्वा) विष्वा निसर्वाणि (प्रिया) प्रियाणि भौमदिव्यान्नानि
(परिभुवन्) तिरस्करेति ॥ ५ ॥

भाषार्यः - १ तदनन्तर २ योगभूमियो को ३ चेष्टा देने वाला ४.५ ब्रह्म-
पुत्र ६ द्वैतावलम्बी आत्म प्रतिविव ७ अपनी ज्योति को ८ ब्रह्ममें प्रेरणा कर-
ता ९ सब १० प्रिय भौमदिव्यविषयों को ११ तिरस्कार करता है ॥ ५ ॥

मनु ऋषिः शेष पूर्ववत्-

पवस्व^१ देव^२ वीनये^३ इन्दो^४ धारोभिरो^५ जसा^६। आक-
लशम्भधुमा^७ थंत्सोमनः^८ सदः^९ ॥ ६ ॥ १०५

हे (इन्दो) दीमिमन् (सोम) आत्म प्रतिविव (मधुमान्) ब्रह्म-
ज्ञानीत्वं (देववीनये) देवस्य परमेश्वरस्य भक्षणाय (सोजसा)
योगवलेन (नः) अस्माकं (धारोभिः) इन्द्रियशक्तिरूप धारोभिः
सह (पवस्व) ऊर्ध्वगच्छ (कलशं) गगनमण्डलं प्रजापतिम्वा
(आसदः) आसीद ॥ ६ ॥

भाषार्यः - १ हे दीमिमन् २ आत्म प्रतिविव ३ ब्रह्मज्ञानी तुम ४ परम

म्बरकी तृमि कैलिये ५ योगबलद्वारा ६ हमारी ७ इन्द्रियशक्तिरूपधाराओं के साथ ८ ऊपरको चलो ९ गगन मंडल वापरमे म्बर को १० प्राप्त करे ॥ ६ ॥

अग्निर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

सोमः पुनान ऊर्मिणा व्यवार विधावति । अग्नेवा
चः पवमानः कानिक्रदत् ॥ ७ ॥ १०६

(पवमानः) पूतः (पुनानः) शोध्यमानः (सोमः) आत्म प्रतिविंबः
(वाचः) तत्वमसीति महावाचः (अग्ने) (कानिक्रदत्) अहं ब्रह्मा
स्मीति शब्दं कुर्वन् (ऊर्मिणा) वेगेन (अव्यम्) मानससूर्य यो-
ग्यं (वारम्) वालनुल्यां सुपुम्णां (विधावति) ॥ ७ ॥ १०६

भाषार्थः - १ पवित्र २ शोध्यमान ३ आत्म प्रतिविंब ४ तत्वमसि महा-
वाक्के ५ आगे ६ अहंब्रह्मास्मि शब्द को करता ७ वेगसे ८ मानस सूर्य यो-
ग्य ९ वालनुल्यसुपुम्णाकी १० ओर दौड़ता है ॥ ७ ॥

द्वित्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

प्रपुनानाय वेधसे त्सा माय वच उच्यते । भृति
न्भरामेति भिजु जोषते ॥ ८ ॥ १०७ ॥

(पुनानाय) शोध्यमानाय (वेधसे) मेधाविने (मतिभिः) प्रज्ञा
भिः (जुजोषते) प्रीयमाणाय (सोमाय) आत्म प्रति विंबाय (वच-
तत्वमसीति (प्रोच्यते) (न) यथा (भराः) स्वामिनः (भृतिन्)
भृतकाय सम्पाद यन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ शोध्यमान २ मेधावी ३, ४ प्रज्ञाओं से प्रीयमाण ५ आ-
त्म प्रतिविंब के लिये ६ तत्वमसि वाक् ७ उच्चारण किया जाता है ८ जैसे ९
स्वामीजन १० भृतिको भृतक के लिये देता है - ॥ ८ ॥

पर्वतनारदा वृषी शेषं पूर्ववत्

गोमन्त्र इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धनिव । शु
चिञ्चवर्णो माधु गोषुधारय ॥ ६ ॥ १०८

हे (सुदक्ष) सुवल (इन्दो) आत्मप्रतिविंब (सुतः) अभिषुतस्व
(नः) अस्मभ्यं वागा द्यात्विग्भ्यः (अश्ववत्) महा सूर्य वन्तं श
(गोमन्त्र) गोलोकं (धनिव) प्रापयन् २२ २३ २४ (च) (शुचिम्)
दीप्यमानं (वर्णम्) (गोषु) इन्द्रियेषु (आधिधारय) अधिकं प्रा
पय ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ हे सुवल २ आत्मप्रतिविंब ३ अभिषुतनुम ४ हमवाक् आदि ऋत्विजों के
लिये ५ महासूर्यवान ६ गोलोक को ७ प्राप्त कराओ ८ और ९ दीप्यमान १०
वर्णों को ११ इन्द्रियों में १२ प्राप्त कराओ ॥ ६ ॥

पर्वतनारदा वृषी शेषं पूर्ववत्

अस्मभ्यन्त्वा वसुविदं माभिवाणीरनूषत् । गो
भिष्टकणीमभिवासयामसि ॥ १० ॥ १०९

हे आत्मप्रतिविंब (अस्मभ्यम्) अस्माकमथीय (वाणीः) वेद
वाचः (वसुविदं) योगधनस्य ज्ञातारं (त्वा) (अभ्यनूषत्) अ
भिष्टुवन्ति । नूस्तवने वयमात्मारूपयजमानाः (ते) तव (वर्ण
म्) (गोभिः) इन्द्रियशक्तिभिः (अभिवासयामसि) अभिवास
यामः अभित आच्छादयामः ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे आत्मप्रतिविंब १ हमारे लिये २ वेदवचन ३ ४ तुम्हें योगध-
नज्ञाना को ५ स्तुत करते हैं हम आत्मारूप यजमान ६ तेरे ७ वर्णों को ८ इन्द्रि-
यों की शक्तिसे ९ सब ओरसे आच्छादन करते हैं ॥ १० ॥

आग्निश्चाक्षुषः शेषं पूर्ववत्

पवते ह्यतो हरिरतिहरो ऽं सिरै ऽं ह्यो अभ्य
र्षस्तोत्तभ्यो वीरवद्यशः ॥ ११ ॥ ११०

(हर्यतः) परमेश्वरेण स्पृहाणीयः (हरिः) मानस सूर्यः (रं ह्यौ) वेगेन। (ह्योसि) अधोमुखानि कमलानि (स्यतिपवते) अतीत्य गच्छति हे आत्म प्रति विं व (वीरवत्) त्वं (स्तोत्तभ्यः) वागाद्यत्विगम्यः (यशः) (अभ्यर्ष) अभिगमय प्रयच्छ ॥ ११ ॥

भाषार्थः - १ परमेश्वरका स्पृहाणीय २ मानस सूर्य ३ वेगसे ४ अधो मुखकमलोंको ५ सति क्रमण कर जाता है हे आत्म प्रति विं व ६ वीरकीस मानतुम ७ हमवाक् आदि स्तोताओं के लिये ८ यशको ९ दो ॥ ११ ॥

द्वितः ऋषिः शेषं पूर्ववत्

परिको शोश्मधुश्चूतं ऽं सोमः पुनानौ षोषति।
अभिवाणी ऋषीणां ऽं समानूषत ॥ १२ ॥ १११

(पुनानः) शोध्यमानः (सः) मानस सूर्यः (मधुश्चूतम्) ब्रह्म ज्ञानस्य व्यावितारं (कोशम्) गगनमंडलं (पर्यषति) परि गच्छति तं (ऋषीणाम्) वागाद्यत्विजां सप्त (वाणीः) सम छन्दांसि (अभ्यनूषत) अभिषुवन्ति नूस्तवने ॥ १२ ॥

भाषार्थः - १ शोध्यमान २ मानस सूर्य ३ ब्रह्म ज्ञान के दाता ४ गगन मंडलको ५ जाता है उसको ६ वाक् आदि ऋत्विजों की ७ सम छन्द रूपवाणी ८ स्तुत करती हैं ॥ १२ ॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनारयणसुतज्वालाप्रसादशर्मा विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्यानपंचमस्याध्यायस्य दशमः खण्डः ॥ १० ॥ इत्यौषाहम्

अथैकादशखाण्डः

गौरिवीति ऋषिः ककुप छन्दः सोमो देवता-

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोमक्रतु वित्तमो मदः ।

महिद्युस्तमो मदः ॥ १ ॥ ११२

हे (सोम) आत्मप्रतिविवृ (मधुमत्तमः) विज्ञानी (क्रतुवित्तमः) योग्यज्ञस्य प्रज्ञाता (मदः) हृष्टः (द्युस्तमः) अत्यन्त दीप्तः (महिद्युस्तमः) अहं ब्रह्मास्मीति मदयुक्तस्त्वं (इन्द्राय) परमेश्वराय (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ ॥ १ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविव २ विज्ञानी ३ योग्यज्ञ का ज्ञाता ४ हृष्ट ५ अत्यन्त दीप्त ६ अहं ब्रह्मास्मि मदयुक्ततुम ७ परमेश्वर के लिये ८ सुषुम्णा मार्गसे चलो ॥ १ ॥ ऊर्ध्वसदा ऋषिः शेषपूर्ववत्

आभिद्युन्नन्वृहद्यश इषस्पते दि दीहि देवदेव
युम् । वीकोशमध्यमं युव ॥ २ ॥ ११३

वागाद्यत्विजां मार्यना हे (इषस्पते) देहरूपान्नस्य स्वामिन् (देव) विद्वन्नात्मप्रतिविवृत्वं (देवयुम्) देवेन परमेश्वरेणामिज्ञयितारं युमिज्ञो (द्युन्नम्) योगधनं (वृहत्) महत् (यशः) विराड् रूपान्नं (आभिदीदिहि) आभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः किञ्च (मध्यमम्) (कोशम्) भृकुटिकमलं (वियुव) प्रापय ॥ २ ॥

भाषार्थः

वागाद्यत्विजो की मार्यना - १ हे देह रूपान्न के स्वामी २ विद्वान् आत्म प्रतिविवनुम् ३ परमेश्वर से मिलाने वाले ४ योगधन ५ वृहत् और विराट रूप महा अन्नको दि और ८ भृकुटिकमलको १० प्राप्त कराओ ॥ २ ॥

नके धारक आत्म प्रतिविंब को ऽ ही १० मनसे ११ दोहा ॥ ४ ॥

ऋणव ऋषि र्यव मध्या छन्दः सोमो देवता-

^{१२}समुन्वे^३यो^३वसूना^{२२}यो^३राया^३मानेता^{२२}यड्डानाम्^{२२}

सोमो^३यः^३सुक्षितीनाम्^३ ॥ ५ ॥ ११६

(यः) (वसूनाम्) योगधनानां (मानेता) (यः) (श्याम्) योगै
श्वर्याणामानेता (यः) (ड्डानाम्) योगार्हान्नामानानेता (यः)
(सुक्षितीनाम्) योगभूमीनामानेता (सः) (सोमः) आत्म प्र-
तिविंबः (सुन्वे) आत्मारूपयजमानेनाभिषुतोवभूव ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ जो २ योगधनों का ३ प्रापक है ४ जो ५ योगैश्वर्यों का
प्रापक है ६ जो ७ योगार्ह सन्नों का प्रापक है ८ जो ९ योगभूमियों का प्रापक है
१० वह ११ आत्म प्रतिविंब १२ आत्मारूप यजमान द्वारा अभिषुत हुआ ॥ ५ ॥

शक्ति ऋषिः ककुप् छन्दः सोमो देवता-

त्वे^३थ^२ह्या^२इ^२द्व्यम्प^२वमान^३जानि^३मानि^३द्युमत्त^३

मः^३ अमृतत्वाय^३घोषयन्^३ ॥ ६ ॥ ११७

हे (पवमान) शुद्धात्म प्रतिविंब (त्वम्) (हि) (द्व्यम्) भगवत्-
तारसुन्वन्धीनि (जानिमानि) जन्मानि (अमृतत्वाय) मोक्षा-
य (अङ्ग) क्षिप्रं (घोषयन्) भक्तेषु आवयन् (द्युमत्तमः) अतिश-
येन दीप्तिमान् भवसि ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे शुद्ध आत्म प्रतिविंब २ तुम ३ ही ४ भगवत् अवतार संव-
धी ५ जन्मों को ६ मोक्ष कं लिये ७ शीघ्र ८ भक्तों को सुनाते ९ अतिशय दीप्ति-
मान होते हो ॥ ६ ॥ उरु ऋषिः योषं पूर्ववत्-

ए^२पस्य^२धारया^३सुतो^३व्यावारिभिः^३पवते^३मदिन्मः^३

१ २ ३ २ २ २ २
 १. कीडन्नुर्मि रपा मिव ॥ ७ ॥ २१८ ॥

(स्यः) सः यकृरो यौगद्योतकः (एषः) (मदिन्तेमः) अतिशये-
 नतर्पकः (सुतः) अभिपुन आत्म प्रतिविंः (अव्यावारेभिः) अवि-
 मानस सूर्यस्तस्याच्छादकैर्वागाद्युत्विभिः सह (कीडन्) (पव-
 ते) ऊर्ध्वगच्छति (इव) यथा (अपाम्) (ऊर्भिः) (धारया) ॥ ७ ॥

भाषार्थः -

१ वह २ यह ३ अतिशयतर्पक ४ अभिपुन आत्म प्रतिविं-
 व ५ मानस सूर्यके आच्छादक वाक् आदि ऋत्विजोंके साथ ६ कीडाकर
 ता ७ ऊपरको जाना है ८ जैसे ९ जलोंकी १० लहर ११ धारासे ॥ ७ ॥

ऋत्विजाः शेष पूर्ववत्-

२ २ २ ३ २ ३ २ २ २ २ २ २ ३ २ २ ३
 य उस्त्रिया अपिया अन्तरश्मनि निगी अकृत
 दोजसा अभिवृजन्नत्त्रिषे गव्यं मश्व्यं वमीवधृ
 षा वारुज (ओ ३म्) वमीवधृषा वारुज ॥ ८ - २१९

(यः) आत्म प्रतिविंः (उस्त्रियाः) मानस सूर्यस्य रश्मीरूपाः नि-
 श ४ (अपियाः) इन्द्रियान्तरिक्षस्थाः (गाः) इन्द्रिय शक्तीः (ओ-
 जसा) योगवलेन (अश्मनि) (अन्तः) मानस सूर्यमध्ये । अ-
 सौवाऽ आदित्यो ऽश्मा श० टी २। ३। १४ (निरकृन्त) निरच्छि-
 नत् निरगमयत् सत्वं (गव्यं) इन्द्रियसम्बन्धि (अन्व्यम्) प्रा-
 णसम्बन्धि (वृजम्) देहं (अभितोत्त्रिषे) अभितो व्याप्त्रोषि । त-
 नुविस्तारे हे (धृषा) शत्रुधर्षणा शीलत्वं (वमी) (इव) (ओ-
 रुज) कामादीन् जहि खण्डादि समाप्तावपि अन्त्याभ्यासो
 वैदिक शैली ॥ ८ ॥

भाषार्थः -

१ जिस आत्म प्रतिविं वने २ मानस सूर्यकी किरण रूप ३ इ-

न्द्रियालयोंमें स्थित ४ इन्द्रियोंकी शक्तिको ५ योगं बलसे ६, ७ मानस सूर्यके
मध्य ८ प्रासकियावहनुम ९ इन्द्रियसम्बन्धी १० प्राणसम्बन्धी ११ देहको १२
सब शोरसे व्याप्त करते हैं १३ हेशत्रु धर्षण शीलतुम १४, १५ कवचीके समान
१६ काम आदिको मारो—॥८॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते साम
वेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमोऽध्याय समाप्तः ॥५॥

इति पष्ठः प्रपाठकः समाप्तः

सौम्यं पावमानं वापर्वं काण्डं वा समाप्तम्

इति तृतीयं पर्व

अथारण्यं पर्व

वाहस्पत्य भरद्वाज ऋषि र्द्विती छन्द इन्द्रो देवता

अथ षष्ठीऽध्याय आरभ्यते

इन्द्र ज्येष्ठम् आभरं षोडशम् पुं पुं ऋवः ।

यदि द्विष्टे मवज्रहस्त रोदसी उभे सुशिप्र प

प्राः ॥१॥१

हे (वज्रहस्त) वज्रवाहो ज्ञानवज्र धरवा (सुशिप्र) शोभन हनु
कसाकारवा (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वरवा (षोडशम्) अतिशये
नवल करं (पुं पुं) पूरकं (ज्येष्ठम्) (ऋवः) अन्नं विराड् रूपा-
न्नं वा (नः) अस्मभ्यं (आभरं) आहुरप्रयच्छयेन (उभे) (रोदसी
यावा षथिव्यौ (प्राः) पूर्यासि (यत्) अन्नं (द्विष्टे म) धार
यितुमिच्छेम ॥१॥

भाषार्थः - १ हे वज्रवाहो वा ज्ञानवज्र धर २ शोभन हनु वाले वासांकी

र३ इन्द्रवापरमेश्वर४ महावलकर५ पूरक६७ ज्येष्ठान्नवाविराटरूपअन्न
को८८ हमें९दो१० जिससे१० दोनों११ पृथिवीस्वर्गको१२ पूर्ण करते हैं१३
जोअन्न१४ हमधाराकरनाचाहते हैं—॥१॥

मैत्रावरुणोवसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुपब्रह्मन्द्न्द्रोदेवता
इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामाधिष्मता विश्व
रूपयदस्य। ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोददा
धउपस्तुतश्चिदवाक् ॥२॥२

(इन्द्रः) परमेश्वरः (ऋषिनामाधि) ब्रह्माण्डमध्ये (जगतः) सर्व
स्य जगतः (चर्षणीनाम्) कृताकृतज्ञानवतां भूक्तानाञ्च (रा
जा) ईश्वरः (अस्य) (यत्) (विश्वरूपम्) (ततः) रूपात् (दा
शुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय (वसूनि) धनानि (ददाति) (उ
पस्तुतं) सम्यक् स्तुतं (राधः) योगधनं (चित्) अपि (अवाक्)
अस्मदाभिमुखं (चोदत्) प्रेरयति ॥२॥

भाषार्थः - १ परमेश्वर २ ब्रह्माण्डके मध्य ३ सब जगत का ४ और कृत
अकृत ज्ञान वाले भक्तों का ५ स्वामी है ६ इसका ७ जो ८ विश्वरूप है ९ उससे
१० हविर्दत्ता यजमान के लिये ११ धनोंको १२ देता है १३ भले प्रकार स्तुत १४
योगधनको १५ भी १६ हमारे सन्मुख १७ प्रेरण करता है ॥२॥

वामदेवः (गौतमः) ऋषिर्गायत्री ब्रह्मन्द्न्द्रो देवता
यस्यैतमारजोयुजस्तु जजने वनं स्वः। इ
न्द्रस्य रन्त्यम्बुहत् ॥३॥३

(यस्य) (रजोयुजे) ज्योतीरूपस्य (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (इ
न्द्रम्) (वनम्) जलं (स्वः) स्वर्गः (रन्त्यम्) रमणयोग्यमन्नानि

सं (तुजे) दातारि नि० ३।२०।६ (जने) (वृहत्) महत् (आ) स
मन्ता इवति ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १ जिस २ ज्योतिस्वरूप ३ परमेश्वर का ४ यह ५ जल ६ स्त
र्ग ७ रमाणा योग्य अन्न रिक्ष ८ दाता ९ मनुष्य समूह में १० महान् ११ होता
है ॥ ३ ॥ अन्नः शेष इति अतुष्याद्वायवी छन्दो वरुणो देवता-

उत्तमवरुणो पाशमस्मद्विधमविमध्यमं
अथाय । अथादित्य व्रतवयन्त्वानागसोऽ
दितयेस्याम ॥ ४ ॥ ४

हे (वरुण) (उत्तमम्) उत्कृष्टं शिरसि वद्धं (पाशम्) (अस्मद्)
अस्मभ्यम् (उच्छ्रयाय) उत्कृष्टं सिधिलं कुरु (अधमम्) निकृ
ष्टं पादेऽवस्थितं पाशं (अवअथाय) अवाधुस्तात् सिधिली कु
रु (मध्यमम्) नाभिदेशगतं पाशं (विअथाय) वियुज्याशि-
थिली कुरु (अथ) अन्नन्तरं हे (आदित्ये) आदितेः पुत्रवरुण
(वयम्) (तव) (आदितये) अखाण्डिते (व्रते) (अनागसोऽ)
पराधरहिताः (स्याम) भवेम ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे वरुण २ उत्कृष्ट अर्थात् शिर में बंधी ३ पाशको ४ ह-
मारे लिये ५ ऊंचे से शिथिल करो ६ निकृष्ट पाद में अवस्थित पाश को ७ नी-
चे से शिथिल करो ८ नाभिदेश में वर्तमान पाशको ९ हटाकर शिथिल करो-
१० तदनंतर ११ हे आदित्य पुत्र १२ हम १३ तेरे १४ अखाण्डित १५ व्रत में १६ अपराध
रहित १७ होंगे ॥ ४ ॥

द्वितीयोर्थः

हे (वरुण) संसारसमुद्रस्य स्वामिन् परमेश्वर (उत्तमम्) (पाशम्)
देवशरीररूपं (अस्मद्) (उच्छ्रयाय) (अधमम्) पशुपति देह-

रूपं प्राशं (अवभृथाय) (मध्यमम्) नरदेह रूपं प्राशं (विभ्रथा
 य) (अथ) अनन्तरं हे (आदित्य) पराशक्तेः पुत्रपरमेश्वर (वयं
 म्) तव भक्ताः (तव) (आदित्ये) अखंडिते (व्रते) अनागसः
 निरपराधाः (स्याम) भवेम ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे संसार समुद्र के स्वामी परमेश्वर २, ३ देवशरीर रूप पा
 शको ४ हमारे लिये ५ ऊपर से शिथिल करो ६ पशुपती देह रूप पाशको ७ नी
 चे से शिथिल करो ८ नरदेह रूप पाशको ९ विद्युक्त कर शिथिल करो १० नद
 नन्तर ११ हे पराशक्ति के पुत्र ईश्वर १२ हम तेरे भक्त १३ तेरे १४ अखंडित
 १५ व्रतमें १६ निरपराध १७ होवें ॥ ४ ॥

गृत्समदः (साङ्घिरसः) ऋषिश्चतुष्पाङ्गायत्री छन्दः सोमादयो देवताः

त्वया वयम्पुर्वमानेन सोमभरे कृतविचिनुया
 मशश्वत् । तन्नो मित्रावरुणो मामहन्तो मादि
 तिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥ ५ ॥

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (वयम्) योगिनः (त्वया) (पुर्वमाने
 न) पवित्रेण सह (भरे) कामसंग्रामे (शश्वत्) बहु (कृतम्)
 कर्तव्यं कर्म (विचिनुयाम) विशेषेण कुर्याम (नः) अस्माकं
 (तत्) कर्म (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः (आदितिः) बुद्धिः
 (सिन्धुः) मनः (पृथिवी) योगभूमिः (उत) अपिच (द्यौः) भृकु
 टिश्च (मामहन्ताम्) पूजयन्तु ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ हम योगी ३ तुम्ह ४ पवित्र के साथ ५
 कामसंग्राममें ६ बहुत ७ कर्तव्य कर्मको ८ विशेषकर ९ हमारे १० उस कर्म
 को ११ प्राण १२ अपान १३ बुद्धि १४ मन १५ योगभूमि १६ और १७ भृकुटि

१८ स्तुतकरो ॥ ५ ॥

गौतमो वामदेवः ऋषिरेकपाद्गायत्री छन्दो वरुणादयो देवताः

^{३ २२ २३} इमं वर्षणं ^{३ २३ ३} कृणुत ^३ कामिन्मान् ॥ ६ ॥ ६

हे पूर्वमन्त्रोक्ता देवाः (इमम्) (वर्षणम्) वर्षकमात्मप्रतिविं
वं (मा) मामात्मानं (इत्) अपि (एकम्) अभिन्नं (कृणुत)
कुरुत ॥ ६ ॥

भाषार्थः - हेमंत्रोक्तदेवतासो १ इत् २ वृष्टिकर्ता आत्मप्रतिविंवको
३ सौरमुक्तआत्माको ४ भी ५ अभिन्न ६ करो ॥ ६ ॥

अमहीयुः (आङ्गिरसः) ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता

^{२ ३ २ २ ३ २ २ ३ २ २} सन इन्द्राय यज्ये ^{३ २ ३} वरुणाय मरुद्भ्यः । ^३ वरिवो
^{२ २ २ ३} विन्परिस्त्रव ॥ ७ ॥ ७ ॥

हे आत्मप्रतिविंव (वरिवो वित्) योगधनस्य लम्बकः (सः) मान
ससूर्यस्त्वं (नैः) अस्माकं (यज्ये) यष्टव्याय (इन्द्राय) पूरते
राय (वरुणाय) अन्नर्यामिने (मरुद्भ्यः) प्राणोभ्यः (परिस्त्रव)
परिगच्छ ॥ ७ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

^{३ २ २ २ ३ २ ३ २ ३} एना विश्वान्यय आद्युन्नानि मानुषाणाम् ।

^३ सिषो सन्तो वनामहे ॥ ८ ॥ ८ ॥

(एना) एनेनात्मप्रतिविंवेन (मनुष्याणां) सनकादीनां (विश्वानि) सर्वाणि (द्युन्नानि) योगधनानि (अर्यः) अभिगच्छंतः ।
ऋगतौ (आसिपसन्तः) सम्भक्तमिच्छन्तो वागाद्यत्विजो
वयं (वनामहे) भजामहे ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ इत् आत्मप्रतिविंवके द्वार २ सनकादिमहर्षियोंके ३

सर्वयोगधर्मोको ५ भासं करते ६ औरविभागकरना चाहतेवाए, आदिचर-
विजहम ७ सेवन करते है ॥८॥

आत्माऋषिऋषिपुच्छन्दो नंदैवतम्
^{३ १ ३} अहमास्मि ^{३ २} प्रथमजा ^{३ २} ऋतस्य ^{३ २} पूर्वन्देव ^{३ २} भ्यां ^{३ २} अमृतस्य ^{३ २} नाम्ना ^{३ २} । ^{३ २} यामा ^{३ २} ददाति ^{३ २} सद्द्वैतभावदहमन्तं ^{३ २}
 मन्त्रं मन्त्रं न्तं मन्त्रि ॥ ८ ॥ ८

(अहम्) (अहम्) आत्मप्रतिविंवरूपान्तं (देवैभ्यः) इन्द्रिये-
 स्यः (पूर्वम्) आस्मि (अमृतस्य) विनाशरहितस्य (ऋतस्य)
 सत्यस्य परब्रह्मणः (प्रथमजा) पराशक्तिः (नाम) (आस्मि)
 (यः) आत्मारूपयजमानः (मां) मां (ददाति) ब्रह्मणो ददा-
 ति (सः) (इत्) एव (एवम्) परिदृश्यमानप्रकारेण (आवृत्)
 अवति प्राणोन्द्रियादीनिरक्षति (अहम्) अन्तरूपः (अहम्)
 आत्मप्रतिविंवरूपः (अहम्) विषयं (अदन्तं) भक्षयन्तं प्राणोन्द्रि-
 यसमूहं (अहम्) भक्षयामि संसारबंधनेन विनाशयामि ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ मे २ आत्मप्रतिविंवरूपान्तं ३ इन्द्रियोंके लिये ४ आद्यहं
 ५ आविनाशी ६ परब्रह्मकी ७ पराशक्ति ८ नाम ८ हं १० जो आत्मारूपयजमा
 न ११ मुझको १२ ब्रह्मार्पण करता है १३, १४ वही १५ परिदृश्यमान प्रकार
 से १६ प्राणइन्द्रिय आदि को रक्षा करता है १७ अचररूप १८ मे आत्म प्रति विं
 व १९ विषय २० भक्षक प्राणइन्द्रिय समूह को २१ भक्षण करता हूं अर्थात्
 संसारबंधनसे विनाश करता हूं ॥ ८ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नारायणसुनु ज्वाला प्रसादयन्म विरचिते साम
 वेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्यानपञ्चाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथद्वितीयः स्वएडः २

श्रुतकक्षः अपि गीयन्ती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमेतदधारयः कृष्णा सुरोहिणीषु च । परुषाणी
षुरुशत्पयः ॥ १ ॥ १० ॥

हेपरमेश्वर (त्वम्) (कृष्णासु) कृष्णावर्णासु (च) (परुषाणीषु)
पर्ववतीषु नाना वर्णासु (रोहिणीषु) गोषु । इन्द्रियेषु वा (रुशे-
त्) दीप्यमानं (पयः) क्षीरं प्राणम्वा । प्राणः पयः श० १२८ । १।
२० (अधारयः) धारयसि ॥ १ ॥

भाषार्थः - हेपरमेश्वर १ तुम २ कृष्णावर्णा ३ और ४ नाना वर्णावनी
५ गौवा इन्द्रियों में ६ दीप्यमान क्षीरवा प्राण को ७ धारण करते हो ॥ १ ॥

पवित्र ऋषिर्जगती छन्दः सूर्यो देवता-

अरुरुचुत्पसः प्रश्निरग्निः उक्षा मिमेति भुव
नेषु वाजयुः । मायाविनो मामिरे अस्य मायया
नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥ २ ॥ ११ ॥

तदा (उपसः) सम्बन्धी (एग्निः) मानससूर्यः नि० २। १४ (अग्नि-
यः) अग्नौ मुख्यः सन् (अरुरुचुत्) देहं प्रकाशयति (उक्षा) स्वा-
सुभिः सेक्ता मानससूर्यः (वाजयुः) अन्नमिच्छन् (मिमेति)
शब्दं करोति (मायाविनूः) इन्द्रियाणि (अस्य) मानससूर्य-
स्य (भायया) प्रज्ञया (मामिरे) विषयान्निर्मितवन्तः (नृचक्ष-
सः) नृणां दृष्टारः (पितरः) मनोवृत्तयः मनः पितरः श० १४। ४।
३। १३ (गर्भम्) कामं (आदधुः) धारयन्ति ॥ २ ॥

भाषार्थः - तव १ उपासम्बन्धी २ मानससूर्य ३ मुख्य होता ४ देह को प्रका-

शकरता है ५ अपनी किरणों से सींचने वाला मानस सूर्य ६ अन्नको चाइता ७ शब्दको करता है ८ इन्द्रियोंने ९ इस मानस सूर्य की १० प्रजा शक्ति से ११ विशेषों का निर्माणा किया १२ द्रष्टा १३ मनो वृत्तियां १४ काम रूप गर्भ को १५ धारण करती हैं - ॥२॥

द्वयोर्मधुच्छन्दा वैश्वामिनः ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र इन्द्रयोः सचा सम्मिश्र आवचो युजा ।

इन्द्रो वृज्जी हिरण्ययः ॥ ३ ॥ १२

(इन्द्रः) (इन्द्र) परमेश्वर एव (वचो युजा) महावाचा युज्यमानयोः (हययोः) जीवेशयोः (सचा) सहयुगपत् (आसम्मिश्रः) सर्वतः सम्यङ्मिथ्यायिता (इन्द्रः) परमेश्वरः (वृज्जी) ज्ञानवन्न युक्तः (हिरण्ययः) ब्राह्मज्योती रूपः । ज्योतिर्वै हिरण्ययं श० ६।७।१।२ - ॥ ३ ॥

भाषार्थः - १, २ परमेश्वर ही ३ महावाक् द्वारा युज्यमान ४ जीव ईश्वर का ५ साथ ६ संयोग करने वाला है ७ परमेश्वर ८ ज्ञानवन्न युक्त ९ ब्राह्मज्योती रूप है ॥ ३ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

इन्द्रो वाजपुनो वसहस्रं प्रधनेषु च । उग्र उग्राभिः
स्तीभिः ॥ ४ ॥ १३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (उग्रः) शिव रूपस्त्वं (उग्राभिः) अप्रधृष्याभिः (ऊतीभिः) रक्षाभिः (सहस्रधनेषु) योगैश्वर्येषु (नः) (वाजेषु) कामयुद्धेषु (नः) अस्मान् (प्राव) प्रकर्षेण रक्ष ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ शिव रूप तुम ३ अप्रधृष्य ४ रक्षाओं से ५ योगैश्वर्यो ६ और ७ काम युद्धों में ८ हमको ९ रक्षा करो - ॥ ४ ॥

प्रथमऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विश्वेदेवा देवताः

प्रथमश्च यस्य सप्रथमश्च नामानुष्टुभस्य हविषो
हवियत्। धातुद्यतानात्सवितुश्च विष्णोरथन्तः।
रमाजभारो वसिष्ठः ॥ ५ ॥ २४

(यस्य) (हविषः) स्वात्मानि हवनीयस्य (अनुष्टुभस्य) वेदस्य
वागुनुष्टुप् श० १०। ३। १। १ (यत्) (हविः) महावाक् (च)
(प्रथः) विख्यातः (प्रथः) (नाम) (च) अस्ति (स) (वसिष्ठः)
वाग्देवता। वाग्वै वसिष्ठः श० १४। १। २। २ (धातुः) ब्रह्मणाः
(सवितुः) शिवस्य (च) (विष्णोः) (द्युतानात्) द्योतमानात्-
नामतः (रथन्तरं) (साम) (आजहार) आहृतवान् ॥ ५ ॥ २४

भाषार्थः - १ जिस २ अपनी आत्मा में हवन योग्य ३ वेद का ४ जो ५
महावाक् है ६ और ७ विख्यात प्रथम नामवाला १० है ११ उस १२ वाग्देवता ने १३
ब्रह्मा १४ शिव १५ और १६ विष्णु के १७ प्रकाश मान नामसे १८ रथन्तर
१९ सामको २० गाहरण किया - ॥ ५ ॥

गृत्समदऋषिर्गायत्री छन्दो वायुर्देवता-

नियुत्वान्वायवा गृह्यथं भुक्तो अयामितो।
गन्तासि सुहृन्तो गृहम् ॥ ६ ॥ २४

हे (वायो) (नियुत्वान्) नियुतवाहनैर्युक्तस्त्वं (आगाह्यु) आ-
गच्छ (अयम्) (भुक्तः) दीप्यमानः सोमः (ते) तुभ्यं (अयामि)
गृह्णामि। अयुगतौ त्वं (सुन्वतः) सोमाभिपवं कुर्वतो यज-
मानस्य (गृहम्) (गन्ता) (असि) ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हे वायुदेवता २ नियुतनाम वाहनों से युक्ततुम ३ आ-

सो ४ ग्रह ५ दीप्यमान सोम ६ त्रेरेलिये ७ ग्रहण करता हूं तुम ८ सोमाभिपव
कर्त्ता यजमान के ९ गृहमें १० जाने वाले ११ हो—॥ ६॥

अथाध्यात्मम् हे (वायो) प्राण श० ७।१।२।७ (नियुत्वा
न्) नियोजितेन्द्रिय युक्तस्त्वं (आर्गाहि) हृदयं प्राप्नुहि (अयम्)
(शुक्रः) मानससूर्यः श० ४।३।१।२६ (ते) तुभ्यं (अयामि)
गृह्णामि यस्त्वं (सुवृतः) अभिषवं कुर्वतो ममात्मनः (एहम्)
हृदयं (गन्ता) (आसि) ॥ ६॥

भाषार्थः - १ हे प्राण २ नियोजित इन्द्रियोंसे युक्त तुम ३ हृदयको प्रा
प्त करो ४ इस ५ मानससूर्यको ६ त्रेरेलिये ७ ग्रहण करता हूं ८ तुम अभिप
वकर्त्ता मुझ आत्माके ९ गृहहृदयमें १० जाने वाले ११ हो—॥ ६॥

वृमेधपुरुमेधौ द्वावृष्यनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

यज्जायथा अपूर्व्यं मघवन् वृत्रहत्याय । तत्
पृथिवीमप्रथयस्ते दस्तभ्ना उती दिवम् ॥ ७ ॥ १६

हे (अपूर्व्य) त्वत्तो व्यतिरिक्तेन पूर्वेण वर्जित (मघवन्) धनव
न् परमेश्वरत्वं (वृत्रहत्याय) भक्तानां पापनाशाय मोक्षदा
नाय । पाप्मावै वृत्रः श० ६।४।२३ (यत्) यदा (जायथा) प्रा
दुर्भूतः (तत्) तूदा (पृथिवीम्) (अप्रथयः) दृढामकरोः (उत)
आपिच (दिवम्) द्युलोकं (अस्तभ्नाः) निरुद्धाम काशीः ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ अपने पूर्वसे रहित २ धनवन् हे परमेश्वर तुम ३ भक्तों
के पापनाश और मोक्षदानके लिये ४ जब ५ प्रकट हुए ६ तब ७ तुमने पृथि
वीको ८ दृढ किया ९ और १० स्वर्गको ११ निरुद्ध किया ॥ ७ ॥

इति श्रीभृगुवंशावनंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्माविरचिते-

सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पष्ठस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः २

अथ तृतीयः खण्डः

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः प्रजापतिर्देवता-

मायि वच्चा अथो यशो यो यज्ञस्य यत्पयः। पर
मेष्टी प्रजापतिर्दिविद्यामिव दृष्टं हनु ॥ १ ॥ १७

(परमेष्टी) परमलोके स्थितः (प्रजापतिः) परमेश्वरः (मायि)
(वच्चा) ब्राह्मतेजः (दृष्टं हनु) वर्द्धयतु (अथ) (यशः) (उ) अ-
पि (अथ) (यज्ञस्य) (यत्) (पयः) रसोऽमृतं फलं (उ) तदापि
मायि दृष्टं हनु (इव) यथा (दिवि) द्योतमाने स्वर्गे (द्याम्)
द्योतमानां क्रान्तिं ॥ १ ॥

भाष्यार्थः - १ परमलोकमें स्थित २ परमेश्वर ३ सुभक्तं ४ ब्राह्मतेज-
को ५ वच्चाओ ६ तदनन्तर ७ यशको ८ भी वच्चाओ ९ तदनन्तर १० यज्ञ का
११ जो १२ रस अमृत फल है १३ उनको भी दृष्ट करो १४ जैसे १५ द्योतमान
स्वर्गमें १६ द्योतमान क्रान्ति को ॥ १ ॥

गौतम ऋषिर्द्विष्टुप् छन्दः सोमो देवता

सन्तं पयां थं सि समु यन्तु वाजाः संवृषायान्य
भिमानि पाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम
दिवि अर्वा थं स्युन्तं मानिधिष्व ॥ २ ॥ १८

हे (सोम) आत्म प्रतिविंव (ते) तव (पयांसि) प्राणाः श ० १२
८। १। २० (संयन्तु) सङ्गुहन्ताम् (वाजाः) अन्नानीन्द्रिया
णि (समे) संयन्तु (वृषायानि) सन्तः करणानि (उ) आपि (सं-
संयन्तु (अभिमानि पाहः) शत्रूणां कामादीनां हन्ता (अमृता

य) मोक्षाय (आप्यायमानः) समन्ताद्दृष्टमानस्त्वं (उत्तमो
 नि) (अवांसि) अन्नानि प्राणोन्द्रियाणि श० १२। ८। १। २०
 (दिवि) भृकुटिमण्डले (धिष्व) धारय ॥२॥

भाष्यार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ तेरे ३ प्राण ४ समाधिमें चलो ५ अ
 न्नरूप इन्द्रियां ६ समाधिमें चलो ७ अन्तःकरण ८ भी ९ समाधिमें चलो
 १० शत्रु काम आदि के नाशक ११ मोक्ष के लिये १२ सब ओरसे वर्द्धमान
 तुम १३, १४ उत्तम अन्न रूप प्राण इन्द्रियों को १६ भृकुटिमंडल में १६ धा
 रण करो ॥ २॥

विष्णुच्छन्दः सोमो देवता

त्वमिमांशोपधीः सोमविभ्रवास्त्वमपो अजन
 यस्त्वद्गा। त्वमातनोरुवा अन्तरिक्षन्वज्यो
 तिषा वितमो विवर्थ्य ॥३॥ १८

हे (सोम) परमेश्वर (त्वम्) (इमाः) (विभ्रवाः) सर्वाः (शोपधीः)
 (अजनयः) उत्पादितवानसि (त्वम्) (अपः) उदकानि (त्वम्)
 (गाः) पशुन्तुत्यादितवान् (त्वम्) (उरुम्) विस्तीर्णं (अन्तरि
 क्षं) (आतनोः) विस्तारितवानसि (त्वम्) (ज्योतिषो) सूर्यज्यो
 तिषा (तमः) अन्धकारं (विवर्थ्य) विगतकृतवानसि। वृज्व
 राणे ॥३॥ **भाष्यार्थः** - १ हे परमेश्वर २ तुमने ३ इन ४ सब ५

शोपाधियो को ६ उत्पन्न किया ७ तुमने ८ जलो को उत्पन्न किया ९ तुमने
 १० पशुओं को उत्पन्न किया ११ तुमने १२ विस्तीर्ण १३ अन्तरिक्ष को १४ वि
 स्तारित किया १५ तुमने १६ सूर्यज्योतिसे १७ अंधकार को १८ दूर किया ॥३॥

मधुच्छन्दाः ऋषि गीयत्री छन्दोः मिर्देवता

आग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। हो

तार^२त्^३रत्न^१धातमम् ४ ॥ २०

(पुरोहितं) देवानां पुरोहितं (यज्ञस्य) देवानां यज्ञस्य (ऋत्विजम्) (होतारम्) (रत्नधातमम्) अतिशयेन स्वज्योतिषारत्नानां पोषयितारं सर्वव्यापित्वात् (देवम्) (अग्निम्) (ईडे) स्तौमि ॥ ४ ॥

भाषार्थः

१ देवताओं के पुरोहित २ देवयज्ञ के ३ ऋत्विज ४ और होता ५ अपनेज्योतिसे रत्नों के पोषक ६, ७ अग्निदेवता को ८ स्तुत करता हूँ ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् - (पुरोहितम्) पुरां व्याप्ति समाप्ति देहानां हितकरं (यज्ञस्य) योग यज्ञस्य (ऋत्विजम्) (होतारम्) (रत्नधातमं) योगैश्वर्याणां धारकं (देवम्) माया कीडन कैः कीडनशीलं (अग्निम्) आत्माग्निं (ईडे) स्तौमि ॥ ४ ॥

भाषार्थः - १ व्याप्ति समाप्ति देहों के हितकारी २ योग यज्ञ के ३ ऋत्विज ४ और होता ५ योगैश्वर्यों के धारक ६ माया के खिलोंने से कीडणशील ७ आत्माग्नि को ८ स्तुत करता हूँ ॥ ४ ॥

सामदेव ऋषिष्विष्टुषु चन्दो ब्रह्माग्निर्देवता-

तमन्वतप्रथमन्नाम गोनान्तिः सप्तपरम

न्नामजानन् ताजानतीरभ्यन्पतसा आ

विभुवन्नरुणीर्यशसा गावः ॥ ५ ॥ २१

(ते) सनकृदयो महर्षयः (गोनाम्) वेदवाचां (प्रथमम्) मुख्यं (नाम्) प्रणवं (अमन्वत) अजानन् पुनः (रुः) विपदां गायत्री (सप्त) व्याहृतीः (परमम्) (नाम्) (जानन्) अजानन् (ताः) वाचः (जानतीः) सर्वजानत्यः (साः) योगभूमीः

(अभ्यर्चयत) अस्तु वन्ततः (यशसा) विष्णुना । आदित्ये
 यशः श० १४। १। १। ३२ सूर्यो वै सर्वे देवाः श० १३। ७। १। ५
 (आरुणीः) तेजोमय्यः (गावः) वेदवाचः (आविर्भूवन्) मा
 दुरभूवन् ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ उनसनकादिब्रह्मर्षिने २ वेदवचनों के ३ मुख्य ४ नाम
 प्रणव को ५ जाना फिर ६ त्रिपदा गायत्री ७ तमव्याहृती को ८ परमनाम
 ९ जाना १० उनवचनोंने ११ सर्वज्ञ १२ योगभूमियों को १३ स्तुत किया
 १४ फिर विष्णु जी से १५ तेजोमय १६ वेदमंत्र १७ प्रकट हुए ॥ ५ ॥

गृत्समद्वारापिस्त्रिपुषु छन्दो ब्रह्माग्निर्देवता
 समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वन्द्य
 स्पृणान्ति । तम् शुचिं ३ शुचयो दीर्वा ३ से
 मपान्नपातमुपयन्त्यापः ॥ ६ ॥ २२ ॥

(अन्याः) (आपोः) आत्मप्रतिविंवरूपरसाः (सम्) महापुरु-
 षम् (यन्ति) वासुदेवः सर्वमिति ज्ञानयोगेन प्राप्नुवन्ति (अ-
 न्याः) आत्मप्रतिविंवाः (उपयन्ति) भक्ति योगेन समीपे ग-
 च्छन्ति साकारस्य सामिप्यं प्राप्नुवन्ति (नद्यः) इन्द्रियाणि
 (समानम्) सर्वत्रतुल्यं (ऊर्वम्) महान्तं विस्तृतमात्माग्निं
 (प्रणान्ति) प्रीणयन्ति । प्रणप्रीणने (तम्) (उ) एव (अपाम्)
 आपोज्योतीरसो मृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो मिति मंत्रं काथितापां
 (नपातम्) पौत्रं (शुचिम्) निर्मलं (दीर्वांसम्) दीप्यमान
 मात्माग्निं (शुचयः) शुद्धाः (आपोः) आत्मप्रतिविंवरूपाः
 (उपयन्ति) योगेन प्राप्नुवन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः १२ कोई आत्म प्रति विवरूपरस ३ महा पुरुष को ४ मास कर
ते हैं ५ दूसरे आत्म प्रति विव ६ भक्ति योग से सामिष्य को पाते हैं ७ इन्द्रियां ८
सर्वत्र तुल्य ९ महान् आत्माग्नि को १० तृप्त करनी हैं ११, १२ उसी १३ ब्रह्मज्यो
तिरूप जलों के १४ पौत्र १५ निर्मल १६ दीप्यमान आत्माग्नि को १७ शुद्ध
१८ आत्म प्रति विवरूपरस १९ योग से प्राप्त करते हैं ॥ ६ ॥

द्वितीयोर्थः

(अन्याः) वृष्टि भवाः (आपः) (संयन्ति) भूम्यां सङ्गच्छन्ते (अ
न्याः) पूर्वतन्नावस्थिताः (उपयन्ति) उपगच्छन्ति ताः सर्वा आ
पः (समानम्) सह (नद्यः) नदी भूत्वा (ऊर्वम्) समुद्र मध्ये
वर्तमानं वडवानलं (पृणन्ति) प्रीणयन्ति (तम्) (उ) एव (ए
पान्न पातम्) (शुचिं) निर्मलं (दीदिवांसम्) दीप्यमानं वड-
वानलं (शुचयः) शुद्धाः (आपः) (उपयन्ति) समीपे गच्छ-
न्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ दूसरे वर्षाजनित २ जल ३ भूमि में संयोग को पाते हैं ४ दूसरे वहां ही पूर्व
स्थ ५ वर्षाजल में मिलते हैं वे सब जल ६ साथ ७ नदी होकर ८ समुद्र मध्य
वर्तमान वडवानल को तृप्त करते हैं १०, ११ उसी १२ जलों के पुत्र १३ नि
र्मल १४ दीप्यमान वडवानल को १५ शुद्ध १६ जल १७ समीप प्राप्त कर-
ते हैं ॥ ६ ॥

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दो रात्रिर्देवता-

आप्रा गाङ्गा युवाति रन्ध्रः केतुत्समीत्सानि ।

अभूद्ददो निवेशनी विश्वस्य जगता रात्रिः । १७-२३

(भद्रा) सांसारिक सुखकुरी (युवाति) तमसाऽ ज्ञानेन वामिष्ठा
यिञ्जी । युमिष्ठाणो (रात्रिः) रात्रिरुत्थानावस्थावा (आप्रा गात्)

आभिमुख्येन प्रगच्छति (अन्तः) दिवसस्य समाधेर्वा (के
 तून) रश्मीन् प्रज्ञाः वा (समीर्त्सति) सस्य कक्षे मुमिच्छ-
 ति ईरक्षेपे च (भद्रा) कल्याणी (रात्रिः) रात्रिरुत्थाना-
 वस्थावा (विश्वस्य) सर्वस्य (जगतः) निवेशनी (निवेश
 कारिणी (अभूत्) भवति ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ संसारी सुख की दाता २ अज्ञान में युक्त करनी वाली
 ३ रात्रि वा उत्थान अवस्था ४ सन्मुख प्राप्त होती है ५ दिवस वा समाधि की
 ६ किरण वा प्रज्ञा को ७ भले प्रकार फेंकना चाहती है ८ कल्याणी ९ रात्रि-
 वा उत्थान अवस्था १० तक ११ जगत की १२ निवेश कारिणी १३ होती है ॥ ७ ॥

वाहस्यत्यो भरद्वाज ऋषिर्जगती छन्दोभिर्देवता-

प्रक्षस्य वृषाणो अरुषस्य नमहः प्रनोक्चो विद-
 धा जात वेदसो वैश्वानराय मतिन् नव्यं स भु-
 चिः सोम इव प्रवृते चारु रग्ने ॥ ८ ॥ २४

(नः) अस्माकं (प्रक्षस्य) समृक्तस्य व्याप्तस्य (वृषाणः) सेक्त-
 (अरुषस्य) आरोचमान स्यात्प्रतिविंवस्य (महः) पूजायु-
 क्तं (भुचिः) निर्मलं (मतिः) मननीयं (क्चः) क्वचनं (नः) क्षि-
 प्रं (विदधा) योगयज्ञेन (जातवेदसे) सर्वज्ञाय (नव्यसे) सं-
 स्कृताय (वैश्वानराय) ईशामये (प्रवृते) प्रकर्षेण गच्छ-
 ति (इव) यथा (चारुः) कल्याणरूपः (सोमः) आत्म प्रतिविं-
 वः (अग्ने) आत्माग्नये गच्छति ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हमारे २ व्याप्त ३ सेक्ता ४ आरोचमान आत्म प्रतिविं-
 वका ५ पूजायुक्त ६ निर्मल ७ मननीय ८ क्वचन ९ शीघ्र १० योगयज्ञ-

द्वारा ११ सर्वज्ञ १२ संस्कृत १३ ईशामिके लिये १४ जाता है १५ जैसे १६
कल्याणरूप १७ आत्म प्रतिविंब १८ आन्मागिके लिये जाता है ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विश्वे देवा देवताः

विश्वे देवा मम भ्राएवन्तु यज्ञ मुभे रोदसी अपा
न्नपाञ्च मन्म । मा वो वचो थं सि परिचक्ष्याणि
वोच थं सुम्नाष्विदो अन्तमामदेम ॥ ८ ॥ २५ ४

(विश्वे) सर्वे (देवाः) (अपान्नपात्) मध्यस्थानोभिः (च)
(उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (मम) मदीयं (मन्म) मन
नीयं (यज्ञम्) जपयज्ञं (भ्राएवन्तु) हे (देवाः) (वः) युष्माकं
(परिचक्ष्याणि) परिवर्जनीयानि यानि (वचांसि) स्तोत्राणि
(मा) (वोचम्) (वः) युष्माकं (अन्तमोः) भक्ता वयं (सुम्नेषु)
सुखेषु (इत्) इव (मदेम) मोदेम ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ सब २ देवता ३ मध्यस्थानवाला आभि ४ और ५ दोनों ६
पृथिवी स्वर्ग ७ मेरे ८ मननीय ९ जपयज्ञ को १० मुनों ११ हे देवताओ १२ तुम्ह
रे १३ जिन परिवर्जनीय १४ स्तोत्रों को १५, १६ उच्चारण नहीं करूं १७ तुम्हा
रे १८ अन्तम भक्त हमें १९ सुखों में १८ ही १९ मोद को पावं ॥ ८ ॥

वामदेव ऋषिर्महा पांक्ति छन्दो देवा देवताः

यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्र बृहस्पती ।
यशो भृगस्य विन्दतु यशो मा प्रति मुच्यताम् ।

यशस्व्यः ३ः स्याः स थं सदाह म्रवादिता स्याम् १० २६
हे (द्यावापृथिवी) (यशः) (मा) मां स्तोत्रारं (विन्दतु) लभतं
प्राप्नोतु हे (इन्द्र बृहस्पती) इन्द्र बृहस्पती नरनारायणो वा-

(यशः) (मां) मं विन्दन्तु किंच (भगूस्य) योगैश्वर्यस्य (यशः)
 (मां) मं विन्दतु (मां) न (प्रति मुच्यताम्) प्रमुच्यतां (यशः)
 स्वी) (अहम्) (अस्याः) (संसदः) योगभूमेः (प्रवदिता) प्रव-
 क्ता (स्याम्) भूयासम् ॥ १० ॥

भाषार्थः - १ हे एधिर्वा स्वर्ग २ यश ३ मुक्तस्तोता को ४ प्रामकरो
 ५ इन्द्र वृहस्पतिवानर नारायण धिभुक्तको यश ७ प्राप्तको और ८ योगैश्वर्य
 का यश १० मुक्तै प्राप्त करो ११ मुक्तै मत १२ त्यागो १३ यशस्वी १४ मे १५ इस १६
 योगभूमिका १७ प्रवक्ता १८ होऊ ॥ १० ॥

द्विरण्यस्य पञ्चपि खिपुपु छन्द इन्द्रो देवता-
 इन्द्रस्य नवीर्याणि प्रवाच यानि च कार प्र
 यमानि वज्री । अहन्निहि मन्व पस्ततद् प्रव
 क्षणा अभिनत पर्वतानाम् ॥ ११ ॥ २७

(इन्द्रस्य) (प्रथमानि) मुख्यानि (वीर्याणि) पराक्रम यु-
 क्तानि कर्माणि (नु) क्षिप्रं (प्रवचम्) प्रवचीमि (यानि)
 (वज्री) वज्रधरः (चकार) (अहम्) मेघानि ० १ १० (अहन्)
 वृष्टपर्यहनवान् (अनु) पश्चात् (अपः) (तदद्) भूमौ पातित
 वान् (पर्वतानाम्) सम्बन्धिनीः (वक्षणाः) नदीनि ० १ १३
 (आभिनत) कूलद्वय कर्षणेन प्रवाहित वान् ॥ ११ ॥

भाषार्थः - १ इन्द्रके २ मुख्य ३ पराक्रम युक्त कर्मों को ४ शीघ्र
 कहता हूँ ५ जिनको ७ वज्रधारी ने ८ किया ९ मेघको १० वर्षाके लिये ता
 डणाकियां ११ पश्चात् १२ जलों को १३ भूमिपर गिराया १४ पर्वतसम्ब
 धी १५ नादियों को १६ कूलद्वय कर्षण से प्रवाहित किया ॥ ११ ॥

(२६) अहमास्मि यथा भगवद्वाक्यं ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्म
मौ ब्रह्मणा हुतम् ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिनेति-

॥१२॥

भाषार्थः

योगारूढ कहना है १ मैं योग संस्कार से २ सर्वज्ञ ३ आत्मा मि ४ हुं ५ मेरा
६ चक्षु ७ घृत है ८ मेरे ९ मुख में १० वाक् रूप अमृत है ११ ब्रह्मा विष्णु महेश
रूप वा आ मि वायु सूर्य रूप १२ पूजनीय १३, १४ ब्रह्माण्ड का आधार रूप महा
पुरुष १५, १६ नित्य ब्रह्म है १७, १८ सब भोग्य १९ मैं ही हुं ॥ १२ ॥

विश्वामित्र ऋषिः पितृपुत्रं छन्दोऽग्निं देवना-

पात्याग्निविषो अग्रस्पदकपाति यद्दृश्वराणां १
सूर्यस्य । पातिनाभासमशीर्षाणां माग्निः पाति २
देवानामुपमादमृष्वः १३-॥२६॥

(विषः) मेधावीनि० (आग्निः) आत्माग्निः (वैः) जीवात्मारूप-
मुपर्णास्यु । वेतेर्गानि कर्मणो रूपं नै० २। १४। १८ (अग्रम्) मु-
ख्यं (पदम्) स्थानं भृकुटि मण्डलं (पाति) रक्षति (यद्दृः)
महान्नात्माग्निः (सूर्यस्य) अन्नर्थाग्निः (चरणाम्) हादी-
न्तरिक्षं चरत्यनेनेति चरणमन्तरिक्षं (पाति) (नाभा) नाभौ
(सप्तशीर्षाणां) पंचेन्द्रियमनो बुद्ध्याख्यसप्ततेजोभिर्युक्तं जी-
वात्मानं । ऋषिर्वैशिरः श० १। ४। ५। ५ (पाति) (ऋष्वः) सर्व-
दर्शीनि० १। २०-२०, २६-२२। ३७-२४। २३ (आग्निः) आत्मा-
ग्निः (देवानाम्) इन्द्रियाणां (उपमादम्) उपमादकं विषय
ग्रहणशक्तिं (पाति) ॥ २३ ॥

भाषार्थः - १ मेधावी २ आत्माग्नि ३ जीवात्मा रूप पक्षी के ४ मुख्य

५ स्थान भृकुटि मंडल को ६ रक्षा करता है ७ महान् आत्माग्नि ८ अन्त-
र्यामीके ९ हार्दान्तरिक्ष को १० रक्षा करता है ११ नाभि में १२ पंच इन्द्रि-
य मन बुद्धि नाम सात तेज से युक्त जीवात्मा को १३ रक्षा करता है १४
सर्वदर्शी १५ आत्माग्नि १६ इन्द्रियों की १७ उपमादक विषय ग्रहण श-
क्ति को १८ रक्षा करता है ॥१३॥

द्वितीयोर्थः

(विषेः) मेधावी (आग्निः) (वेः) सर्वत्र व्याप्ता या भूम्या (अग्निम्) ४
उपरिभागं (पदं) स्थानं (पाति) रक्षति (यहः) महान्नाभिः
(सूर्यस्य) (चरणम्) मार्गस्वर्गं (पाति) (नाभौ) नाभौ मध्ये
अन्तरिक्षे (सप्तशीर्षाणां) समूहाणां मरुद्गणां (पाति) (ऋष्यः) ४
दर्शनीयोऽयं (आग्निः) (देवानाम्) (उपमादम्) उपमादकं य-
ज्ञं (पाति) ॥१३॥

भाषार्थः

१ मेधावी २ अग्नि ३ सर्वत्र व्याप्त भूमिके ४ उपरिभाग ५ स्थान को ६ रक्षा
करता है ७ महान् अग्नि ८ सूर्यके मार्गस्वर्गको ९ रक्षा करता है १० अन्त-
रिक्षमें ११ सप्त गण मरुद्गण को १२ रक्षा करता है १३ यह दर्शनीय १४
अग्नि १५ देवताओं के १६ उपमादक यज्ञको १७ रक्षा करता है ॥१३॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूगम सूनु ज्वाला मसाद शर्म विरचिते
सामवेदीयब्रह्म भाष्ये चन्द्रो व्याख्याने षष्ठ्याध्यायस्य तृतीयः खंडः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

द्वयोर्वा मदेव ऋषिः पंक्तिश्चन्द्रोऽग्निर्देवता

भोजेन्त्यग्ने समिधान् दीदिवो जिह्वा चरत्यु
न्तरोसनि। सत्वन्ना अग्ने पयसा वसुविद्रयि

वञ्चादृशदोः १॥ ३०

हे (सामिधान) वागाद्यत्विग्भिः सामिध्यमान (दीदिवः) दीम
 (अग्ने) आत्माग्ने (आसनि) आस्ये मुखे (अन्तः) मध्ये (भा
 जन्ती) प्रकाशमाना (जिह्वा) महावाक् नि २१ २२ चरति
 गच्छति वर्त्तते (अग्ने) हे आत्माग्ने (सः) (वसुवित्) भक्ति ध
 नस्य लम्भकः (त्वम्) (दृशे) महा पुरुष दर्शनाय (नेः) अस्म
 भ्यं (पूयसा) अमृतेन सह (रथिम्) भक्ति धनं (वर्चः) तेजश्च
 (अदाः) देहि ॥ २॥

भाष्यार्थः - १ हे वाक् आदि ऋत्विजों से भले प्रकार प्रज्वलित २ दी
 म ३ आत्माग्ने ४, ५ मुख के मध्य ६ प्रकाशमान ७ महावाक् ८ वर्त्तमान है
 ९ हे आत्माग्ने १० वह ११ भक्ति धन के मापक १२ तुम १३ महा पुरुष के द
 र्शनार्थ १४ हमारे लिये १५ अमृत सहित १६ भक्ति धनको १७ और तेज
 को १८ दीजिये ॥ २॥

द्वितीयोर्थः

(सामिधान) ऋत्विग्भिः सामिध्यमान (दीदिवः) दीम (अग्ने)
 (आसनि) तव मुखे (अन्तः) मध्ये (भाजन्ती) प्रकाशमाना
 (जिह्वा) (चरति) हवींषि भक्षयति हे (अग्ने) (सः) (वसुवित्)
 धनलम्भकः (त्वम्) (दृशे) दर्शनाय (नेः) अस्मभ्यं (पूयसा)
 अन्नेन सह (रथिम्) रमणीयं धनं (वर्चः) तेजश्च (अदाः)
 देहि ॥ २॥

भाष्यार्थः १ हे ऋत्विज द्वारा प्रज्वलित २ दीम ३ अग्ने ४ तेरे मुखके ५ म
 ध्य ६ प्रकाशमान ७ जिह्वा ८ हवींषों को भक्षण करती है ९ हे अग्ने १० वह
 ११ धनमापक १२ तुम १३ दर्शन के लिये १४ हमको १५ अन्न सहित १६ र

माणीयधनको १७ औरतेजको १८ दीजिये ॥२॥

वामदेवऋषिःपंक्तिश्चन्द्रऋतवोदेवता-

^३वसन्त^{२२}इन्नु^३रन्त्यो^३ ग्रीष्म^३इन्नु^३रन्त्यः^३ वर्षा^३एय^३
^{२२}नु^३शरदो^३हेमन्तः^३ शिशिर^३इन्नु^३रन्त्यः^३ ॥२॥३१

(वसन्तः) (इन्नु) एव चैत्र वैशाख रूपो वसन्त एव (रन्त्यः) (२) ईशामिः (अन्तं) स्वरूपं। ईशामि रूपस्यः (ग्रीष्मः) (इन्नु) ज्येष्ठा पाद रूपो ग्रीष्म एव (रन्त्यः) ईशामि रूपस्यः (वर्षाणि) आवाण भद्रपद रूपेणावयवी भूतः प्रावृद्ध ऋतुः (अनु) पश्चात् (शरदः) आश्विन कार्तिक रूपेणावयवी भूत ऋतुः (हेमन्तः) मार्गशीर्ष पौष रूपु ऋतुः (शिशिरः) माघ फाल्गुन रूप ऋतुः (इन्नु) अपि (रन्त्यः) ईशामि रूपस्यः यथा श्रुतिः सम्बन्तसरो वैमजापतिरामिः १०।४।३।१-॥२॥

भाषार्थः - १.२ चैत्र वैशाख रूपवसन्तही ३ ईशामि रूपमें स्थित है ४.५ ज्येष्ठापाद रूप ग्रीष्म ही ६ ईशामि रूपमें स्थिति है ७ आवाण भद्रपद रूपवर्षा ऋतु ८ तथा ९ आश्विन कार्तिक रूप शरद ऋतु १०, ११ तथा मार्गशीर्ष पौष रूप शिशिर ऋतु १२ भी १३ ईशामि रूपमें स्थित हैं अर्थात् सब उसके संग है ॥२॥

नारायणऋषिरनुषु चन्द्रः पुरुषोदेवता-

^३सहस्र^३शीर्षाः^३ पुरुषः^३ सहस्राक्षः^३ सहस्रपात्^३। सभू^३
^३मिथु^३ सर्वतो^३ वृत्वा^३ त्याति^३ षट्^३शाङ्गु^३लम् ॥३॥३२

अथ विराट् पुरुषस्य कारणां महा पुरुषं स्तोतियः (पुरुषः) सर्वलोकेषु व्याप्तो महानारायणः (सहस्र शीर्षा) सर्वात्मरूप

त्वादनन्तानि शीर्षाणि यस्य सः (सहस्राक्षः) अनन्तान्यक्षी
 णि यस्य सः (सहस्रं पात्) अनन्ताः पादा यस्य (सः) (भूमिम्)
 व्याप्तिसमाप्तदेह रूपं स्थानं (सर्वतः) तिर्यक् ऊर्ध्वमधश्च (सृ
 त्वा) व्याप्य (दशाङ्गुलम्) नाभेः सुका दशाङ्गुल परिमितं दे
 शं हृदयं (अति) अतिक्रम्य (अतिष्ठत्) अन्तर्यामि रूपेणा
 वास्थितः ॥ १॥

भाष्यार्थः - सब विराट् पुरुषके कारण महा पुरुष की स्तुति करते
 हैं १. सब लोकों में व्याप्त महानारायण २. सर्वात्म होने से अनन्त सिर वा
 ला ३. अनन्त नेत्र वाला ४. अनन्त पाद वाला है ५. वह ६. व्याप्तिसमाप्तिरू
 पस्थान को ७. सब ओर नीचा ऊंचा निरच्छा ८. व्याप्त करके ९. नाभि से दश
 अंगुलि परिमित देश हृदय को १०. पाकर ११. अन्तर्यामी रूपसे स्थित हुआ ॥ १॥

विनियोगः पूर्ववत्

त्रिपादोऽद्वैतपुरुषः पादोऽस्य हा भवत्पुनः

तथा विष्वङ् व्यक्रामदशानाशने अभि ४। ३३

(त्रिपात्) त्रिपादिसूतिरूपः (पुरुषः) महापुरुषः (ऊर्ध्वः) ब्रह्मा
 ण्डादूर्ध्वं (उद्वैत्) उत्कर्षेण स्थितवान् (पुनः) (अस्य) सृष्ट्वा
 नारायणस्य (पादः) चतुर्थांशः (इह) ब्रह्माण्डे (अभवत्)
 व्याप्तोऽभवत् (ततः) ब्रह्माण्डप्रवेशान्तरं (विष्वङ्) विषुस
 र्वत्राञ्चतीति विष्वङ् देवतिर्यगादिरूपेण धिविधः सग (सा
 शानाशने) अशनेन सह वर्तमानं साशनं । अशनादिव्य
 वहारोपेतं चेतनं प्राणं ज्ञानं मग्नं तद्द्रवितमचेतनं गिरिन
 द्यादिकं (अभि) अभिलक्ष्य (व्यक्रामत्) व्याप्तवान् यथाभ

गवद्वाक्यं विष्टभ्याहामिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगादिति
॥४॥

भाषार्थः

१ त्रिपाद विभूतिरूप २ महापुरुष ३ ब्रह्माण्ड से ऊपर ४ प्रत्यक्ष रूपसे स्थि
त हुआ ५ फिर ६ इस महानारायण का ७ चतुर्थांश ८ इस ब्रह्माण्ड में ९
व्याप्त हुआ १० ब्रह्माण्ड प्रवेश के पीछे ११ देवता मनुष्य आदि रूपसे नाना
प्रकार का होता १२ जड़चैतन्य को १३ देखकर १४ उन्हें व्याप्त किया ॥ ४

विनियोगः पूर्ववत्

पुरुष एवदं सर्वं यदन्त व्यञ्ज भाव्यम् । पादो

स्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ५ ॥ ३४ ॥

(इदम्) (सर्वम्) (पुरुषः) महानारायणः (एव) (यत्) (भू
तम्) अतीत ब्रह्म संकल्पजं जगत् (च) (यत्) (भाव्यम्)
भाव्यं ब्रह्म संकल्पजं जगत् (विश्वं) विश्वानि सर्वाणि
(भूतानि) ब्रह्माण्डानि (अस्य) महानारायणस्य (पादः)
चतुर्थांशः (दिवि) महानारायणलोके (अस्य) (त्रिपादे) त्रि
पाद विभूतिरूपं स्वरूपं (अमृतम्) विनाश रहितं यस्मादनन्तं
ब्रह्मैव स्वभागे स्वकीयज्योतिषा महानारायण रूपम भव
त् ॥ ५ ॥

भाषार्थः

१ यद् २ सर्व ३ महानारायण ४ ही है ५ जो ६ अतीत ब्रह्म संकल्पज जगत् है
७ और ८ जो ९ भाव्य ब्रह्म संकल्पज जगत् है १० और सर्व ११ ब्रह्माण्ड १२
इस महानारायण का १३ चतुर्थांश है १४ महानारायण लोक में १५ इस
का १६ त्रिपाद विभूति रूप स्वरूप १७ विनाश रहित है जिस का १८
ब्रह्म ही अपने भाग में अपनी ज्योतिसे महानारायण रूप हुआ ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

तावानस्य महिमा ततो ज्यायो ऽथ ऽश्वपूरुषः।

उत मृतत्वस्य शानो यदून्ननातिरोहति। ६। ३५।

(अम्य) महानारायणस्य (महिमा) (तावान्) तावती (च) इति न (पुरुषः) महानारायणाः (ततः) महिम्नः (ज्यायान्) अतिशयेनाधिकोऽस्ति ब्रह्मनाम्नाऽनन्तत्वात् (उत) अपि च समहानारायणः (अमृतत्वस्य) अमराणाधर्मस्य (ईशानः) ईश्वरः (यत्) यस्मात् (अन्ने) ब्रह्माण्डे। अन्नं वै विराट् श० १२। २। ४। ५। (न) (अतिरोहति) आसक्तो न भवति किन्तु स्वकीयपराशक्त्या व्याप्नोति ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ इस महानारायण की २ महिमा ३ उतनी है ४ यह नही ५ महानारायण ६ उस महिमा से ७ अत्यन्त अधिक है क्योंकि ब्रह्मनामसे अनन्त है ८ और वह महानारायण ९ मोक्षधर्मका १० स्वामी है ११ जिस कारण १२ ब्रह्माण्ड में १३, १४ आसक्त नहीं होता है किन्तु अपनी शक्तिपरासे व्याप्त करता है ॥ ६ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

ततो विराड् जायत विराजोऽधिपूरुषः। सजा

तोऽत्यरिच्यत पञ्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ७ ॥ ३६।

(ततः) महानारायणात् (विराट्) विराट् देहस्तथा (विराजः) तद्देहाभिमानी (पुरुषः) (अधि) तदेव देहमाधिकुरणं कृत्वा (अजायत) (सः) (ज्ञानः) विराजः (अत्यरिच्यत) अनिरिक्तश्रेष्ठोऽभूत् (पञ्चात्) (भूमिम्) ससर्ज (अथ) (उ) तदनन्तरमेव (पुरः) देवमनुष्यादीनां शरणाणां समजं ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १ उम महानारायण मे २ विराट् देह ३ तथा उंस देह का
सभिमानी ४ पुरुष ५ उसी देह को अधिकरण करके ६ उत्पन्न हुआ ७ वह ८
उत्पन्न विराट् पुरुष ९ श्रेष्ठ हुआ १० पीछे ११ भूमि को उत्पन्न किया १२, १३
मदनंतर ही १४ देव मनुष्य आदि के शरीरों को उत्पन्न किया ॥ ७ ॥

वामदेव ऋषिरुपरिहा ज्योतिश्चन्द्रोद्यावापृथिवीदेवते

मन्येवान्द्यावापृथिवीसुभोजसौ + येऽप्र
थेथा ममितमभि योजनम् । द्यावापृथिवीभ
वतं स्योनतेना मुञ्चतमं हंसः ॥ ८ ॥ ३७

हे (द्यावापृथिवी) द्यावापृथिव्यौ (वाम्) युवां (सुभोजसौ)
सुष्टु प्रकाशवलो (मन्ये) अहं जानामि (ये) युवां (अमित
म्) अपरिमितं (योजनम्) ब्रह्मणि युज्यते पुरुषोऽनेनेति
योजनं ब्रह्मज्ञानं (अभ्यप्रथेथाम्) अभिविस्तारयुतम् हे
(द्यावापृथिवी) द्यावापृथिव्यौ युवा मस्माकं (स्योने) सु
खरूपे (भवतम्) (न) अस्मान् (अहंसः) पापात् (मुञ्च
तम्) मोचयतम् ॥ ८ ॥

भाषार्थः - १ हे पृथिवी स्वर्ग २ तुम दोनो को ३ अच्छे प्रकाश वल वा
ला ४ जानता हू ५ जो तुम ६ अपरिमित ७ ब्रह्म ज्ञानको ८ विस्तार देते हो
९ हे पृथिवी स्वर्ग १० हमारे सुख रूप ११ हजिये १२ हमको १३ पापसे १४
छुटाओ ॥ ८ ॥ वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

हरीत इन्द्रमभूत्पुनोते हरिता हरी । तन्वा
स्तु वान्ति कवयः पुरुषा सो वनगवः ॥ ९ ॥ ३८

हे (इन्द्र) महानारायण (हरी) शिवविष्णु (ते) तव (अमर)

पि) पुरुषज्ञापकरूपाणि (उतो) अपिच (हरितो) व्यष्टिस
 माष्टिसूर्यो (ते) नव (हरी) किरणौ (वनर्गवः) वननीयाः सम्भ
 जनीया वेदवचः (कवयः) मेधाविनः (पुरुषासः) पुरुषाश्च
 (तम्) (त्वा) त्वां (स्तुवन्ति) ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ हेमहानारायण २ शिवविष्णु ३ तेरे ४ पुरुषज्ञापक
 रूपहै ५ और ६ व्यष्टि समाष्टि सूर्य ७ तेरी ८ किरण हैं ९ संभजनीय वेदवच
 न १० और मेधावी ११ पुरुष १२ उस १३ तुम्हको १४ स्तुत करते हैं ॥ ६ ॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्द आत्मा देवता

यद्वाच्चो हिरण्यस्य यद्वावच्चो गवामुत। सत्य
 स्य ब्रह्मणो वच्च स्तेन मांसं च स्तजामसि ॥ १० ॥ ३६

ह्यात्मन् (हिरण्यस्य) पराज्योतिषः। ज्योतिर्वै हिरण्यं श० ६। ७
 १। २ (यते) (वच्चः) तेजोऽस्ति (वा) (गवाम्) वैदिक मंत्राणां
 (यते) (वच्चः) तेजोऽस्ति (उत) अपिच (सत्यस्य) (ब्रह्मणः) य
 त् (वच्चः) तेजोऽस्ति (तेन) तेजसा (मां) मां (संस्तज) संयो
 जयत्वं (अम्) ब्रह्म (आसि) ॥ १० ॥

भाषार्थः - हे परमेश्वर १ पराज्योति का २ जो ३ तेज है ४ अथवा ५
 वैदिक मंत्रों को ६ जो ७ तेज है ८ और ९ सत्य १० ब्रह्म का ११ जो तेज है १२
 उस तेजसे १३ तुम्हको १४ संयुक्त करो तुम १५ ब्रह्म १६ हो - ॥ १० ॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

सहस्रं च इन्द्रं दध्याजि। इशस्यस्य महतो विर
 पाशिन। क्रतुन्न नृणां च स्थविरञ्च वाज वृ
 त्तेषु शत्रून् सहना कृधीनः ॥ ११ ॥ ४०

हे (विरपाशिन) विविधवेदशास्त्राणां वक्तः महापुरुष (इन्द्र) परमेश्वर (तत) (सहः) शत्रूणामभिभवनरूपं (शोजे) वलं (ने) अस्मभ्यं (दद्धि) देहि [ददातेश्छान्दसुरूपं लोडि हेद्धिभावादिना] (अस्य) (महतः) वलस्य (देश) ईश्वरो भवासि (स) त्वं (ने) अस्माकं (कृतुम्) यज्ञं (नृणाम्) धनं (चः) (वाजम्) वलं (स्थावरं) अतिशयेन प्रवृद्धं (काधि) कुरु (वृत्रेषु) पापपुरुषेषु वर्तमानान् (ने) अस्माकं (शत्रून्) (हने) नाशय ॥ ११ ॥

भाषार्थः - १ हे विविधवेदशास्त्रो के वक्ता महापुरुष २ परमेश्वर ३ वह ४ शत्रुजयी ५ वल ६ हमें ७ दो ८ इस ९ महान् वल के १० स्वामी हो ११ वह नुम १२ हमारे १३ यज्ञ १४ धन १५ और १६ वलको १७ अत्यन्त प्रवृद्ध १८ करो १९ पापपुरुषो मे वर्तमान २० हमारे २१ शत्रुओं को २२ मारो ॥ ११ ॥

सामवेदत्रयपरिनुष्टुप्छन्दो गावो देवता.

सहर्षभाः स्सहवत्सा उदेत विष्वा रूपाणि वि
भ्रती द्विधीः । उरुः एथुरयवो अस्तु लोक इमाश्च
पसु प्रपाणा इह स्तु ॥ १२ ॥ ४२ ॥

हे वैदिकवायुपधेनवः (विष्वा) सर्वाणि (रूपाणि) (विभ्रती) विभ्रत्यः (द्विधी) आधिदेवाध्यात्मरूपौ स्तनौ यासांताः । यूयं (सहर्षभाः) प्राणरूपवृषभेण सहिताः (सहवत्साः) मनोवत्से नसहिताः (उदेत) आगच्छत (अयम्) (उरुः) महान् (एथु) विस्तीर्णः (लोकः) ब्रह्मपुर देहः (वे) युष्माकं (अस्तु) (इमाः) (आपः) कमलान्तरिक्षाणि (सुप्रपाणाः) सुरवेन प्रकथेण

पानुं प्राप्नुं योग्यानि सन्ति (इह) (स्त) भवत उपविशत यथा
 ऋतिः वाचं धेनुमुपासीत तस्याः प्राणः ऋषभो मनो वत्सः श०
 १४।८।टी १—॥१२॥

भाष्यः - हे वैदिक वाक् रूप गौशो १ सव २ रूपों को ३ धारण कर
 रती ४ आधिदैवाध्यात्म स्तन वाली तुम ५ प्राण रूप वृषभ ६ और मन रूप
 वछड़ा के साथ ७ आशो ८ यह ही महान् ९ विस्तीर्ण १० ब्रह्मपुर शरीर
 ११ तुम्हारा १३ हो १४ ये १५ कमलान्तरिक्ष १६ सुखसे प्राप्ति योग्य हैं १७
 यहां १८ हैरो—॥१२॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनु ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सा
 मवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठ्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४॥

अथ पञ्चमः खण्डः

वैखानस ऋषयोजगती छन्दोभिर्देवता

अग्नीष्युषिपवसे आसुवोजमिषञ्चनः।

आरे वाधस्व दुच्छुताम् ॥१॥ ४२

हे (अग्ने) आत्माग्नेत्वं (आयुषि) प्राण रूपान्नानि । अयमनि
 रुक्तः प्राणसोऽस्यैष आयुरेव श० ४।२।३।१ अन्नं हि प्राणः
 श० ३।८।४।८ नि० २।७ (पवसे) शोधयसि । पूशोधे (नः) अ
 स्मभ्यं (ऊर्जम्) विराड् रूपान्नं (चू) (द्वयम्) अमृत वृष्टिं (आ
 सुव) आभिमुख्येन प्रेरय (दुच्छुताम्) कामादीनां (आरे)
 प्राप्तौ । ऋगतौ (वाधस्व) सम्पीडय ॥१॥

भाष्यः - १ हे आत्माग्ने तुम २ प्राण रूप अन्नों को ३ शोधन करते
 हो ४ हमारे लिये ५ विराट् रूप अन्न ६ और ७ अमृत वर्षा को ८ सम्मुख

प्रेरण करो ष्टकामशादिकी १० प्राप्तिमें ११ पीडित करो ॥ १ ॥

विभ्राट् ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता-

विभ्राड्वृहत्पिवतुसोस्यम्मध्वायुदधधज
पतावविहृतम् । वातजूतीयोऽभिहृतम्
नाप्रजाः पिपार्तिवहुधाविराजति ॥ २ ॥ ४३

(विभ्राट्) विभ्राजमानः विशेषेण दीप्यमानः सूर्यरूपः परमे-
श्वरः (यज्ञपतौ) यज्ञमाने (अभिहृतम्) अकुटिलं अखंडितं
दृक्कौटिल्ये (आयुः) आयुरन्तवा (दधत्) धारयन्तन्ते (वृहत्)
महत् (सोस्यम्) आत्मप्रतिविंबं (मधु) प्राणं श० १४। १। ३।
३० (पिवतु) (युः) (वातजूतः) समाष्टिप्राणेन सेवितुः सूर्यरूपः
परमेश्वरः (त्मना) आत्मन् आत्मानि (प्रजाः) (पिपार्ति) वृष्ट्य
दिप्रदानेन पालयति (वहुधा) नाना रूपेण (विराजति) स
र्वात्मकत्वात् ॥ २ ॥

भाषार्थः - १ विशेषदीप्यमानसूर्यरूपपरमेश्वर २ यज्ञमान में ३
अखंडित ४ आयुवाअन्तको ५ धारण करता अन्तमें ६ महान् ७ आत्मप्र
तिविंबको ८ और प्राणको ष्टपानकरो १० जो ११ समाष्टिप्राणसे सेवितसु
र्य १२ अपने आत्मा में १३ प्रजाओंको १४ वृष्टिप्रदान आदिसे पालनकरता
है १५ और नाना रूपसे १६ विराजमान है सर्वात्मा होनेसे ॥ २ ॥

कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता-

चित्रन्दवानामुदगादनीकञ्चसुमित्रस्य
वरुणस्याम्नः । आप्राद्यावापथिवी अन्तरि
क्ष्थं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुष्व ॥ ३ ॥ ४४

(देवनाम्) समष्टीन्द्रियाणां (अनीकम्) जीवनसाधनं। अन्
जीवने अनित्यनेन अन- ईकन् (चित्रम्) आश्रयं करं (मि
त्रस्य) समष्टिप्राणस्य (वरुणस्य) समस्य पानस्य (अग्नेः)
वैश्वानराग्ने (चक्षुः) दर्शनसाधनं सूर्यमण्डलंतत्रस्थं
(जगतः) जङ्गमस्य (च) (तस्थुषुः) स्थावरस्य (आत्मा) (सू
र्यः) सूर्यरूपः परमेश्वरः (उदगोत्) प्रादुरभवत् (द्यावापृथि
वी) द्यावापृथिव्यौ (अन्तरिक्षम्) (आप्राः) आपूरितवान्

॥ ३ ॥

भाष्यार्थः

१ समष्टिन्द्रियोंका २ जीवनसाधन ३ आश्रयकर्ता ४ समष्टिप्राण-
का ५ समष्टिअपानका ६ और वैश्वानर अग्निका ७ दर्शनसाधनसूर्यमं
डलहै उसमेंस्थित ८ चर ९ और १० अचरका ११ आत्मा १२ सूर्यरूपपरमे
श्वर प्रकट हुआ १३ और १४ पृथिवीस्वर्ग १५ अन्तरिक्षको १६ अपनेते
जसे पूर्ण किया ॥ ३ ॥

सार्पराज्ञीनाम ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता

आयङ्गैः पृश्निर्कमीदसदन्मातरम्पुरः।

पितरञ्च प्रयत्स्वः ॥ ४ ॥ ४५

(अयम्) (गौः) विराडात्मा। विराड्वैगौः श० ७। ५। २। १६ (पृश्निः)
सूर्यः नि० २। १४ (पुरः) उदयाचलात् (प्रयन्) प्रकर्षेण शी
घ्रं गच्छन् (मातरम्) दक्षिणायने भूलोकं (च) उत्तरायणे
(पितरम्) वृष्ट्यादिद्वारा सर्वस्य पालकं (स्वः) स्वर्ग (असदन्)
प्राप्नोति (आक्रमीत) सुमेरुना कामति प्रदक्षिणं करोतीत्य
र्थः ॥ ४ ॥

भाष्यार्थः

१यह २विराडात्मा ३ सूर्य ४ उदयाचलसे ५ शीघ्रचलता ६ दक्षिणायन
में भूलोक को ७ और उत्तरायण में ८ दृष्ट्यादि से सबके पालक ९ स्वर्ग-
को १० प्राप्त करता है ११ सुमेरु को प्रदक्षिण करता है ॥ ४ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

^{३ १ २}अन्तश्चरति ^{३ ३३}रोचनास्य ^{३ १ २}प्राणादपानती ^{३ २ २२}व्य

^३ख्यन्महिषा ^{३ ३}दिवम् ॥ ५ ॥ ४६

(अस्य) सूर्यस्य (रोचना) ज्योतिः (प्राणात्) प्राणनंनाड़ी
भिरूर्ध्व वायोर्निगमनंतथा विधात्प्राणादनन्तरं (अपानती)
अपाननंनाड़ीभिरवाङ्मुखं वायोर्नयनंतत कुर्वन्ती (अन्तः)
द्यावापृथिव्योर्मध्ये (चरति) गच्छतिस (महिषः) महान्स
मष्टि मूर्तिः सूर्यः (दिवम्) स्वर्गमन्नरिक्षञ्च (व्यख्यत्) प्र-
काशयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ इस सूर्य की २ ज्योति ३ पूरक के पीछे ४ रेचक को क
रती ५ पृथिवी स्वर्ग के मध्य ६ वर्तमान है वह ७ महान्स मष्टि मूर्ति सूर्य
८ स्वर्ग और अन्नरिक्ष को ९ प्रकाशित करता है ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

^३त्रिंशद्भामविराजति ^{३ ३३}वाक्पतङ्गायधीय

^{३ ३ ३}ने। प्रतिवस्तारहद्युभिः ॥ ६ ॥ ४७

(वस्तुः) वस्तु याचने वस्त्यते याच्यते भक्तैर्वस्तुः परमेश्वरः
(रहद्युभिः) (२) अग्निः (३) अर्कमण्डलं (ह) सोममण्डलं
तेषां दीप्तिभिः (त्रिंशद्भाम) त्रिंशन्मुहूर्त्तात्मक महो रात्रं (वि-
राजति) विविधं प्रकाशयति। राज दीप्तौ तस्मै (पतङ्गाय)।

परमेश्वरायं । पतङ्गोऽश्वः नि० १।२४ असौवा आदित्य एषोऽश्वः
 श० ६।३।१।२६ सूर्यो वै सर्वदेवाः श० १३।७।१।५ (वाक्) च
 ग्रीरूपा (प्रतिधीयते) प्रतिमुखं धार्यते ॥ ६ ॥

भाषार्थः - १ भक्तों से या अन्य मान परमेश्वर २ षाड्भिः सूर्य चन्द्रमा कीर्ति
 सिद्धारा ३ त्रिंशत् मुहूर्त्तरूप दिनरात्रिको ४ बहुविधसे प्रकाशित करता है ५
 उस परमेश्वर के लिये ६ त्रिवेद रूपवाक् ७ प्रत्येक मुखमें धारणा किया जा
 ता है ॥ ६ ॥ वैखानसाऽऽरपयो गायत्री छन्दो नक्षत्राणि देवतानि

अपत्यं तायवो यथा नक्षत्रायन्त्यक्तुभिः । सू
 राय विश्वं चक्षसे ॥ ७ ॥ ४८

(त्ये) तेयकारो योग द्योतकः (नक्षत्राणि) देवानां गेह रूपा
 णि (अक्तुभिः) रात्रिभिः सह (विश्वं चक्षसे) सर्व प्रकाश का
 य (सूराय) सूर्याय प्रजाभ्यः सूर्यदर्शनलाभाय (अपयन्ति)
 प्रजादृष्टिभ्योऽ दर्शनं प्राप्नुवन्ति (यथा) (तायवः) चौराः
 ॥ ७ ॥

भाषार्थः

१ वे २ नक्षत्रजो कि देवताओं के गृहरूप हैं रातों के साथ ४ सर्व प्रकाशक ५ सू
 र्यके लिये ६ प्रजा दृष्टि से अदर्शन को पाते हैं ७ जैसे ८ चौर ॥ ७ ॥

सूर्यदेवता शेषं पूर्ववत्

अदृशन्नस्य केतवो विरश्मयोजनां अन्तु
 भ्रजन्तो अग्नयो यथा ॥ ८ ॥ ४९

(अस्य) सूर्यस्य (केतवः) मानसज्योती रूपाः (रश्मयः)
 (जनान्तु) प्राणिनां मनसि (व्यदृशन्) विविधरूपा दृश्य
 न्ते (यथा) (भ्रजन्तः) दीप्यमानाः (अग्नयः) ॥ ८ ॥

भाषार्थः - हे सूर्यरूप परमेश्वर तुम १, २ समाष्टि प्राणों को ३ प्राप्त करते ४ उदय होने हो ५ व्याष्टि प्राणों को ६ प्राप्त करते ७ मानस सूर्यरूप उदय हो ते हो ८ कमलान्तरिक्ष समूह ९ स्वर्गलोक को १० प्राप्त करते उदय को पाते हो

॥१०॥

विनियोगः पूर्ववत्

येना^१ पावक^२ चक्षसा^३ भुरायन्^४ ज्ञाना^५ थं^६ येन^७
त्व^८ वरुणा^९ पश्यासि ॥११॥ ५२

हे (पावक) सूर्यस्य शोधक (वरुणा) अनिष्टवारक (अ) सूर्य (त्वम्) (ज्ञानान्) प्राणिनः (तम्) (भुरायन्) जीवरूप सुप्राणि ज्ञ (येन) (चक्षसा) प्रकाशेन (अनुपश्यासि) अनुक्रमेण प्रकाशयसितं प्रकाशं स्तुम इति शेषः ॥११॥

भाषार्थः - १ हे सबके शोधक २ अनिष्टवारक ३ सूर्य ४ तुम ५ प्राणियोंके ६ उस ७ जीवरूपपक्षीको ८ जिस ९ प्रकाशसे १० अनुक्रम पूर्वक प्रकाशित करते हो उस प्रकाश की हम स्तुति करते हैं यह अभिप्राय है - ॥११॥

विनियोगः पूर्ववत्

उद्या^१ मधि^२ रजः^३ पृथ्व^४ हामि^५ मानो^६ अक्तुभिः^७ ष^८
श्य^९ ज्ञन्मानि^{१०} सूर्य ॥१२॥ ५३

हे (सूर्य) त्वं (पृथ्वीनि) (अक्तुभिः) रात्रिभिः सह (मिमानुः) उन्मानयन् (ज्ञन्मानि) अवताराणां जन्मानि (पश्यन्) (पृथु) स्थूलं (रजः) भूलोकं (द्याम्) स्वर्गलोकं (उद्ये) उदयेन प्राप्नोषि ॥१२॥

भाषार्थः

१ हे सूर्य तुम २ दिनों को ३ रातों के साथ ४ निर्माण करते ५ अवतारों के जन्म को ६ देखते ७ भूलोक ८ और स्वर्गलोक को ९ उदयसे प्राप्त करने हो ॥१२॥

विनियोगः पूर्ववत्

अयुक्तसप्तभुन्ध्युवः सूर्यो रथस्य नम्रः। ता
भिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥१३॥ ५४

(सूर्यः) सर्वस्य प्रेरकः सूर्यः रूपः परमेश्वरः (रथस्य) (नम्रः) न
पातयिञ्चः याभिर्युक्तो रथो याति न पतति ता दृश्यः (सप्त) स
प्तसङ्ख्याकाः (शुन्ध्युवः) शोधकाः रश्मयः (अयुक्त) सूर्य
मण्डले योजितवान् (स्वयुक्तिभिः) स्वकीय योजनेन सूर्य
मण्डले सम्बद्धाभिः शक्तिभिरेव (याति) गच्छति स्वयन्त्व
चल इत्यर्थः ॥१३॥

भाषार्थः - १ सवके प्रेरक सूर्यरूप परमेश्वरने २ रथकी ३ धारक
४ सात संख्या वाली ५ शोधक किरणों को ६ सूर्य मंडल में संयुक्त किया
७ अपने मंडल में सम्बद्ध शक्तियों से चलता है आपतौ अचल है यह अ-
भिप्राय है ॥१३॥

विनियोगः पूर्ववत्

सप्तत्वा हरितो रथं वहन्ति देवसूर्यशोचिष्के
शंविचक्षणा ॥१४॥ ५५

हे (देव) द्योतमान (विचक्षणा) सर्वस्य प्रकाशयितुः (सूर्य)
(शोचिष्केशं) शोचीं पितेजां स्येव केशा यस्य तं (त्वां) त्वां (सि
म) (हरितः) रसहरण शीलाः रश्मयः शक्त यो वा (वहन्ति)
द्वादश राशिषु प्रापयन्ति स्वयन्त्वचलाः सि ब्रह्म रूपत्वात् १४
भाषार्थः - १ हे द्योतमान २ सर्वप्रकाशक ३ सूर्य ४ किरणरूप केश
वाले ५ नुमको ६ सात ७ रसहरण शील किरण वा शक्तियां ८ बारह राशि में
प्राप करती है आपतौ ब्रह्म रूप होने से अचल हो यह अभिप्राय है ॥१४॥

इति श्री भृगुवंशावतंसं श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्मापिरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ॥

समाप्तं भारण्यं पर्वं भारण्यकाण्डं वा
इति चतुर्थं स्पर्वं

सामवेदसंहितायां छन्दोऽर्चिकः समाप्तः

एताः प्रकृतितस्त्रिस्तु उपसर्गैस्तु संयुताः नवसंख्या इति भाद्रवैदाध्ययनशास्त्रे
तासामुपसर्गैः सह शकरी छन्दो देवता अथवा भजापति ऋषिराची पं
क्तिश्छन्दो देवता-

अथ महानाम्न्यार्चिकः

विदा^३मघवन्^१विदा^२गातु^३मनु^३शं^३शिषो^३दिशो^३
शिषो^३शचीनाम्पते^३पूर्वाणा^३स्युरूवसो^३ ॥१॥

हे (मघवन्) धनवनपरमेश्वर (विदाः) वेदितव्यं विद्धि (गातुम्) भक्तियोगयज्ञं (विदाः) प्रापय (दिशः) मोक्षमार्गान् (अनु-
शंसिषुः) उपदिश हे (पूर्वाणाम्) बह्वीनां (शचीनाम्) प्रजा-
नां (पते) स्वामिन् (स्युरूवसो) प्रभूतधन (स्य) परमेश्वर-
शिषो) स्वात्मानं देहि । शिषोतिर्दात कर्मानि ० ३।२०।८-॥१॥

भाषार्थः - १ हे धनवनपरमेश्वर २ जान्ने योग्य को जानो ३ भक्ति
योगयज्ञ को ४ प्राप्त कराओ ५ मोक्ष मार्गों को ६ उपदेश करो ७ हे बह्वन् ८
प्रजाओं के ९ स्वामिन् १० बहुधनी ११ परमेश्वर १२ अपने आत्मा को १३
दो-॥१॥ भजापति ऋषि भुरिणायत्री छन्दो देवता-

प्रभिषु^३सोभिषु^३भिः^३स्वाः^३ ३ न्नी^३शुः^३ । प्रचेत^३
न प्रचेत यन्दु^३न्नी^३यन^३इषे^३ ॥२॥

(त्वम्) (आभिः) इदानीं क्रियमाणाभिः (ओभिष्टिभिः) (अभ)
 देहस्तस्योष्टिभिः प्रकृतौ होमैः स्वात्मानं देहीति पूर्वेणान्वयः
 हे (प्रचेतन) प्रशस्तज्ञान (इन्द्र) परमेश्वर (स्वैः) सूर्यः (न)
 इव (संशुः) व्यासस्तुं (द्युम्नाय) योगधनलाभाय (इषे)
 अमृतवृष्टयैच (प्रचेतय) अस्मदीयां भक्तिमवधारय जानी
 हि ॥२॥

भाष्यः

१ तुम २ अवक्रियमाणा ३ प्रकृतिमें देह के होमों से अपने आत्मा को दोष
 हेमहाज्ञानी ४ परमेश्वर ५, ७ सूर्यकी समान ८ व्यास तुम ९ योगधनके-
 लाभार्थ १० और अमृत वर्षा के लिये ११ हमारी भक्ति को जानो ॥२॥

प्रजापति ऋषि रषी ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता-

एवा^३हि^३ श^३क्ता^३ रा^३य^३ वा^३जा^३य^३ व^३ज्जि^३वः । श^३वि^३ष्ट^३व
 जि^३न्तु^३ज्ज^३स^३मं ७ हि^३ष्ट^३ व^३ज्जि^३न्तु^३ज्ज^३स^३ आ^३या^३
 हि^३पि^३व^३म^३त्स्व^३ ॥ ३ ॥ १

(हि) यस्मात् हे (वज्रिवै) वृज्रधरेन्द्र रूप (शविष्ट) अतिश-
 येन बलवन विष्णुरूप (वज्रिन) ज्ञानवज्रधर (महिष्ट) अ-
 तिशयेन दानशील शिव रूप (वज्रिन) विद्यावज्रधर (ब्रह्मा
 रूप) (अ) परमेश्वरत्व (एव) (शक्तः) अभीष्टदाने समर्थः (रो
 यं) योगधनाय (ऋज्जसे) अस्माभिः प्रसाध्यसे । ऋज्ज-
 तिः प्रसाधनकर्मानि० ३।५।८ (वाजाय) विराडरूपान्नाय-
 (ऋज्जसे) प्रमाध्यसे (आयाहि) प्रादुर्भव (पिर्वै) आत्मप्र-
 निर्विंविपिव (मत्स्व) दृष्टोभव ॥ ३ ॥

भाष्यः - १ जिस कारण २ हे वज्रधारी इन्द्र रूप ३ महाबलीविष्णु

रूप ४ ज्ञान वज्रधर ५ महादानी शिवरूप ६ विद्या वज्रधर ७ ब्रह्मारूप पर-
मेश्वर तुम ८ ही ९ सभी दानमें समर्थ हो १० योगधनके लिये ११ हमसे सा-
धन किये जाते हो १२ विराट् रूप अन्न के लिये १३ सिद्ध किये जाते हो १४
प्रकट हुआ जिये १५ आत्म प्रतिविंब को पान करो १६ हृष्ट हुआ जिये—॥३॥

प्रजापति ऋषि रार्ची त्रिषुप छन्द इन्द्रो देवता-

विदोराय सुवीर्यम्भुवो वाजोनाम्पातिवशां
अनु। मं हिष्ठ वज्जिन्नुज्जसे यः शविष्ठः भू
राणाम् ॥ ४ ॥

हे (मं हिष्ठ) अति शयेन दानशील (वज्जिन्) ज्ञान वज्रधर
परमेश्वर (यः) (भूराणाम्) (शविष्ठ) वृत्तवत्तरः स (वाजो-
नाम्) विराट् रूपान्नानां (पातिः) त्वं (राय) योगधनाय (ऋ-
ज्जसे) अस्माभिः साध्यसे (सुवीर्यम्) योगबलं (विदोः) ल-
म्भय प्रापय (वशान्) वशवर्तिनो भक्तान् (अनुभुवः) अनु-
भवगतो भव ॥ ४ ॥

भावार्थः - १ हे वड़े दानशील २ ज्ञान वज्रधर परमेश्वर ३ जो ४
भूरीमें ५ महाबली है वह ६ विराट् रूप अन्नों के ७ स्वामी तुम ८ योगधन
के लिये ९ हमसे सिद्ध किये जाते हो १० योगबल को ११ प्राप्त कराओ १२
वशवर्ती भक्तों को १३ अनुभव में प्राप्त हो ॥ ४ ॥

प्रजापति ऋषि रार्ची ब्रह्मती छन्द इन्द्रो देवता-

यौमं हिष्ठो मघोनामं सुन्नशोचिः ॥ चि
कित्वो भूमिनो नयन्दो विदेत मुस्तुहि ॥ ५ ॥

(यः) (मघोनाम्) धनयतांमध्ये (मं हिष्ठः) अति शयेन दा

ताः (सृष्टुः) सूर्यः (न) इव (शोक्तिः) दीप्तः (इन्द्रः) परमेश्वरः (विदे) विद्यते सर्वे ज्ञायते (तम्) (उ) एव (स्तुहि) स्तुतिं कुरु हे (चिकित्से) ज्ञान स्वरूप (ने) अस्मान् (आभ) अभिलक्ष्य (नय) स्वात्मानं प्रापय ॥ ५ ॥

भाष्यार्थः - १ जो २ धनवानों के मध्य ३ महादानी ४, ५ सूर्य की समा न ६ दीप्त ७ परमेश्वर ८ विद्यमान है सब से जाना जाता है ९, १० उसी की ११ स्तुति करो १२ हे ज्ञान स्वरूप १३ हमको १४ देखकर १५ अपने आत्मा को प्राप्त कराओ ॥ ५ ॥

प्रजापतिर्ऋषिर्भुरिगापी वहती छन्द इन्द्रो देवता-

इंशो हि शक्रस्तमृतयुहवामहे जेतारमपराजितम् । सनः स्वपदनिहिषः क्रतुश्छन्द इन्द्रो तम्वहत् ॥ ६ ॥ २

(हि) यस्मात् (शक्रः) सर्वशक्तिमान् परमेश्वरः (इंशो) इंश्वरोऽस्ति तस्मात् (तम्) (जेतारम्) असुराणां जेतारं (अपराजितम्) (हवामहे) आह्वयामहे (सनः) (क्रतुः) यज्ञ पुरुषः (छन्दः) वेद रूपः (इन्द्रम्) सत्य स्वरूपः (वहत्) महान् परमेश्वरः (ने) अस्माकं (हिषः) द्वेषन् (अति स्वर्षत्) अत्यर्थं मुपतपतु विनाशयतु । स्व शब्दोपतापयोः ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः - १ जिस कारण २ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ३ इंश्वर है उस कारण ४ उस ५ असुरों के जेता ६ अपराजित को ७ हम आह्वान करने हैं वह ८ यज्ञ पुरुष ९ वेद रूप १० सत्य स्वरूप ११ महान् परमेश्वर १२ हमारे १३ द्वेषणों को १४ अत्यन्त विनाश करो ॥ ६ ॥

प्रजापतिर्ऋषिराची जगती छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रन्धनस्य सातये हवामहे जनारमं पराजितम्।

सनः स्वर्षदाति द्विषः सनुः स्वर्षदाति द्विषः ॥७॥

(जनारमं) (अपराजितम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (धनस्य) (सातये) (यु) गधनस्य लाभाय (हवामहे) (सः) (नः) अस्माकं (द्विषः) द्वेषन् (अ) तिस्वर्षत) (सः) (नः) (द्विषः) कामादीन् (अतिस्वर्षत) ॥७॥

भाषार्थः - १ जेता २ अपराजित ३ परमेश्वर को ४ ५ योग धन के लाभार्थ ६ हम आह्वान करते हैं ७ वह ८ हमारे ९ द्वेषियों को १० विनाश करो ११ वह १२ हमारे १३ द्वेषी काम आदि को १४ अत्यन्त विनाश करो - ७ ॥

प्रजापतिर्ऋषिर्भूरिगापीपान्क्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

पूर्वस्य युन्ने आदिवो ७ मुमदाय -

सुन्न आधोहिनो वसो पुत्तिः शोविष्ठ शस्यते। वशीहि

शक्तो नूनन्त नव्ये ७ सन्ध्यसे ॥ ८ ॥

हे (आदिवः) ज्ञानवचन (वसो) वासुदेव (पूर्वस्य) पुरातनस्य (ते) तव (यत) (अमु) मानससूर्यः (मुदाय) अस्तित (नः) अस्मान् वागा द्युत्विजश्च (सुम्न) मोक्षसुखे (धोहि) स्थापयहे (शोविष्ठ) बलवृत्त म (पुत्तिः) जीवात्मना तव पुत्तिः (शस्यते) स्तूयते (हि) यस्मात् (नूनं) अश्रयं (वशी) सर्वस्य नियन्ता (शक्तः) सर्वशक्तिमानसि (नेत) तस्मात् (नव्यम्) संस्कृतात्म प्रतिविंव (सन्ध्यसे) त्वयि प्राक्षिपामि। अ सुक्षेपणै ॥ ८ ॥

भाषार्थः

१ हे ज्ञानवचन २ वासुदेव ३ ४ तुम्ह पुरातन का ५ जो ६ मानससूर्य ७ मदके लिये है उसको ८ और हम वाक् आदि त्र्यल्लिजों को ९ मोक्षसुखमें १० स्थापन करो ११ हे महाबली १२ जीवात्मा से जो तेरी पुत्ति है वह १३ स्तुति की जाती है १४ जिस कारण १५ अवश्य १६ सबके नियन्ता १७ सर्वशक्तिमान हो १८ उस कारण १९ संस्कृत आत्म प्रतिविंव को २० तुममें प्रकृता हं ॥ ८ ॥

प्रजापतिर्ऋषिरार्थं नृपुष्य छन्द इन्द्रो देवता-

प्रभाजनस्य वृद्धसमुर्योषु ब्रवावहे। शूरो यागो पु गच्छति सर्वा सुशोवा अहसुः ॥ ९ ॥ ३

हे (प्रभो) (वृत्रहन्) पापनाशक परमेश्वर (अनस्य) जिज्ञासु समूह
 हस्य (अर्थेषु) ईश्वरेषु गुरुषु मध्ये (संभ्रवामहे) यज्ञमानो ह मप
 त्नीरूपावृद्धिश्च (संभ्रवावहे) सम्भाषां करवावहे कस्य (यः) (भू
 र) (सखा) भक्तानां सखा (सुशेवः) आनन्द स्वरूपः (अइयुः) इ
 न्द्रहितः द्वैत भून्यो वा (गोपु) स्वांभुरूपेषु यजमानेषु (गच्छति
 प्राप्तो भवति ॥ ६ ॥

भाष्यार्थः

१ हे समर्थ २ पापनाशक परमेश्वर ३ जिज्ञासु समूह ४ ईश्वरों वा गुरुओं के
 मध्य ५ में यजमान और मेरी पत्नी वृद्धि दोनो ६ उसके विषय सम्भाषण क
 रें ७ जो ८ भूर ९ भक्तों का सखा १० आनंद स्वरूप ११ अद्वैत १२ अपने किरण
 रूप यजमानों में १३ प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ पञ्चपुरीपपदानि

प्रजापति ऋषिः साम्नी त्रिषुषु छन्दु इन्द्रो देवता

एवाहोऽ ३ ५ ३ ५ ३ ५ एवां ह्यग्ने एवाहीन्द्र एवा

हि पूषन् एवाहि देवाः ॥ १० ॥ ४

हे (एव) सर्व व्यापिन् सर्वस्य गति साधन महा पुरुषत्वं (एवाहि)
 एवम्प्रकार एवासि हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वात्वं (एवान्) (हि)
 एवम्प्रकार एवाऽ सिहे (इन्द्र) इन्द्र ईश्वर वात्वं (एवाहि) एवम्प्र
 कार एवासि हे (पूषन्) सोम मानस सूर्य वात्वं (एवाहि) एवम्प्र
 कार एवासि (देवाः) हे देवाः विद्वांसो वा यूयं (एवाहि) एवम्प्रकार ए
 वस्य यथा पूर्व मन्त्रेषु प्रशंसिताः ॥ १० ॥ ४

भाष्यार्थः - १ हे सर्व व्यापिन् सर्व गति साधन महा पुरुषनुम २ ऐसे ही हो
 ३ हे अग्ने वा आत्माग्नेनुम ४ ५ ऐसे ही हो ६ हे इन्द्र वा ईश्वरनुम ७ ऐसे ही हो
 ८ हे सोम वामानस सूर्यनुम ९ ऐसे ही हो १० हे देवताओं वा विद्वांनोनुम ११
 ऐसे ही हो जिस प्रकार पूर्व मंत्रों में प्रशंसा किये गये ॥ १० ॥ ४ ॥

इति श्री भृगुवंशा वतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा विरचिते साम
 वेदाय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्यान महा नाम्नी व्याख्यानं समाप्तम् ॥

सामवेद साहितायां महानाम्नीयार्चिकः समाप्तः

(हस्ताक्षर सालिगराम फायस्थ कापीनवीस)

लोहमंडी शागरा ॥

